Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

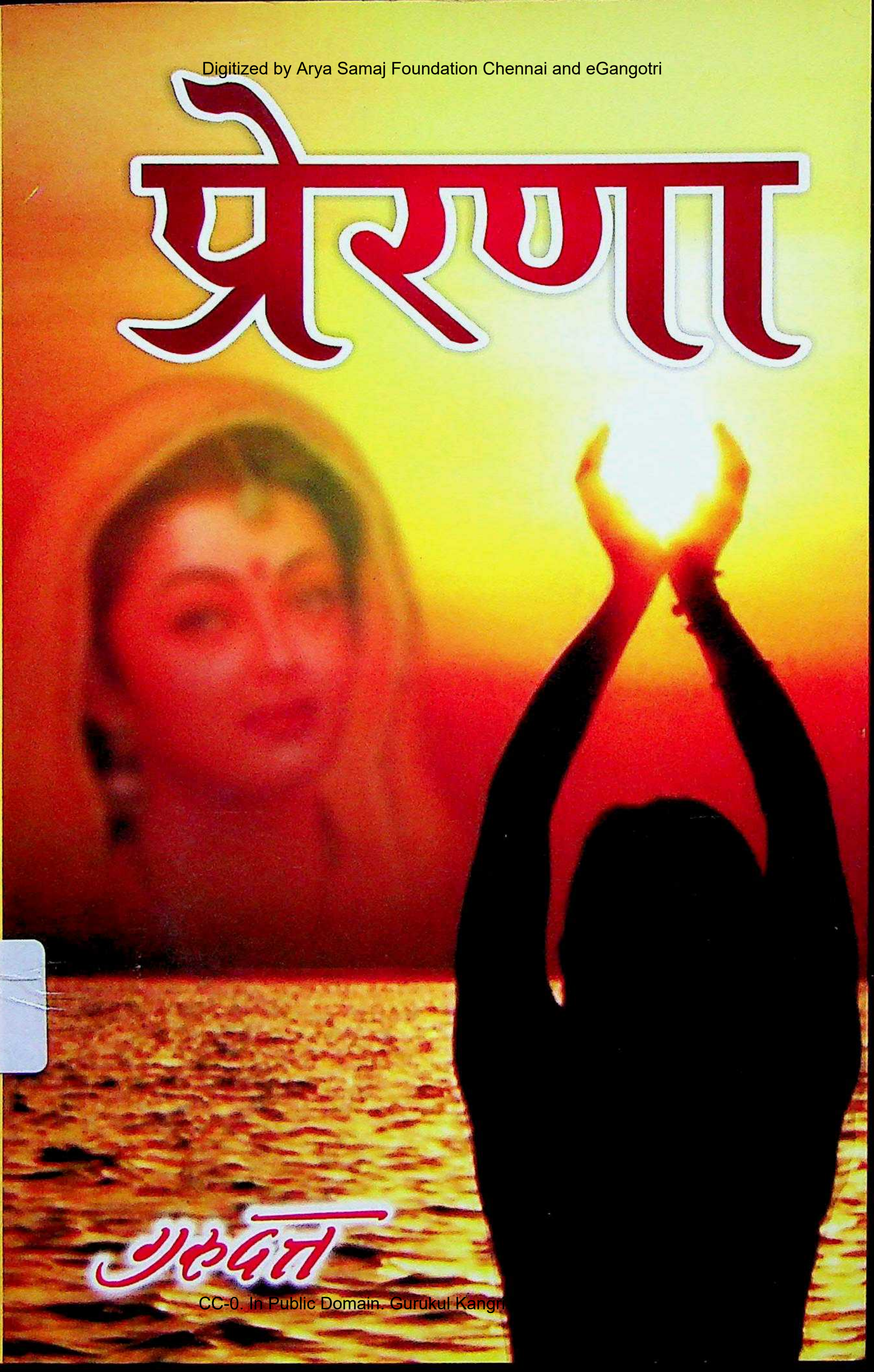

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

43

श्री गुरुदत्त की कुछ पुनःमुद्रित रचनाएँ

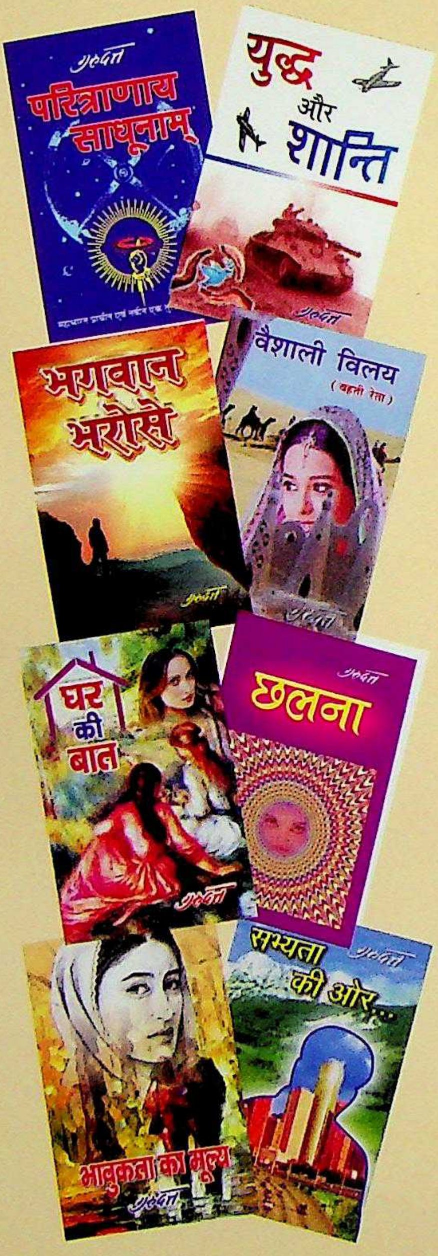

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा

Central Library
167943
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167943

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-P

© ईशान दत्त

मूल्य : ₹ 300.00

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344; फैक्स : 23553624
email : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
website : hindisahityasadan.com

संस्करण : 2016

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

भूमिका

मनुष्य को अच्छे और बुरे कर्म करने की प्रेरणा उसके संस्कारों से मिलती है। संस्कार बनते हैं माता-पिता के घर के वातावरण से, शिक्षा-दीक्षा से और संगत तथा साहित्य से। वातावरण, शिक्षा-दीक्षा इत्यादि पहले तो ज्ञान का रूप होते हैं, परन्तु इससे प्रेरित आचरण के बार-बार पालन से संस्कार बन जाते हैं। यही स्वभाव के रूप में प्रकट होते हैं। संस्कार मन पर अंकित हो संचित रहते हैं और फिर मनुष्य का स्वभाव बन जाते हैं अर्थात् प्रवृत्ति के रूप में प्रेरक बन जाते हैं।

यह भारतीय दर्शन शास्त्रों का मत है कि मन आत्मा के साथ संयुक्त हो एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता है और अपने साथ एक जन्म के संस्कार अगले जन्म में ले जाता है। साथ ही अगले जन्म में कर्म विकर्म की प्रेरणा देता है। यही भाग्य के रूप में फल का दाता हो जाता है।

अत: प्रेरक शक्तियाँ तीन हैं। पूर्वजन्म के संस्कार जो मन अपने साथ लाया है, वर्तमान जन्म के संस्कार तथा वर्तमान जन्म का ज्ञान, जो शिक्षा-दीक्षा, संगत और साहित्य से प्राप्त होता है। ये तीनों प्रेरक शक्तियाँ परस्पर सहायक भी हो सकती हैं और विरोधी भी।

वर्तमान जन्म के संस्कार पूर्वजन्म के संस्कारों के विरोधी भी सकते हैं और सहायक भी। इसी प्रकार इस जन्म का प्राप्त ज्ञान, संस्कारों का, चाहे वे पूर्वजन्म के हों, चाहे वर्तमान जन्म के हों, विरोधी भी हो सकता है तथा सहायक भी।

उदाहरण से बात स्पष्ट हो जाएगी। एक संगीताचार्य मृत्यु के पश्चात किसी कुपथगामी परिवार में नवीन जन्म ले लेता है। पूर्वजन्म का संस्कार वर्तमान कुपथगामी परिवार के जीवन का विरोधी हो जाएगा और एक संगीत की प्रवृत्ति वाला संस्कारित मन कुण्ठित हो संगीतज्ञ नहीं रह सकेगा।

यदि संगीत के संस्कारों वाला मन और आत्मा किसी सात्विक आचरण वाले परिवार में जन्म पा जाता है तो उसकी संगीत की प्रवृत्ति वर्तमान जीवन के सात्विक वातावरण में उसे एक श्रेष्ठ कलाकार बना देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दो जन्मों के संस्कार उसके ज्ञान अथवा अज्ञान से भी समर्थन अथवा विरोध पा सकते हैं।

ज्ञान कार्य करता है बुद्धि के द्वारा। उक्त उदाहरण में ही देखें। संगीतज्ञ को यदि किसी संगीताचार्य की संगत मिल जाती है तो वह उसको संगीत का ज्ञान करा देता है।

इस ज्ञान को बुद्धि ग्रहण करती है और इसका प्रयोग करती है। यदि वही संगीतज्ञ किसी चटनी, अचार आदि खाने वालों की संगत में पड़ जाता है तो वह अपना गला और बुद्धि खराब कर लेता है और फिर पूर्वजन्म के एवं इस जन्म के संगीत के संस्कारों को विलीन करने लगता है।

अभिप्राय यह है कि संस्कारों के अधीन मन प्रेरणा देता है और ज्ञान के आधार पर बुद्धि उस प्रेरणा का विरोध नहीं कर सकती और कहीं मन के संस्कार विकृत हुए तो बुद्धि भी विवश हो उलटे मार्ग पर चलने लगती है।

बुद्धि (कृतकार्यता) दो बातों पर निर्भर करती है। एक तो ज्ञान पर और दूसरे इसके बल पर। बल का अभिप्राय है निर्मलता। ज्ञान का साधन होते हुए भी मलिन और दुर्बल बुद्धि दूषित संस्कारों का विरोध नहीं कर सकती। बुद्धि बलवान और निर्मल होती हुई भी ज्ञान के अभाव में सफल नहीं हो सकती।

मन के संस्कार इन्द्रियों के विषयों से भी प्रेरणा पाते हैं। भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में इस प्रकार लिखा है कि इन्द्रियाँ विषयों से प्रेरित होती हैं। ये अति बलवान हैं परन्तु मन इनसे भी बलवान होता है। यह चाहे तो इन्द्रियों को नियंत्रण में रख सकता है। परन्तु यदि मन के संस्कार ही दूषित हों तो वह इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने के स्थान इन्द्रियों का सहायक हो जाता है। मन से भी बलशाली बुद्धि है और यह मन और इन्द्रियों, दोनों को नियंत्रण में रख सकती है, परन्तु बुद्धि का बल ज्ञान और इसकी निर्मलता में है। अज्ञानयुक्त दुर्बल बुद्धि मन और इन्द्रियों की उच्छृंखलता का विरोध करने के स्थान उनकी सहायक हो जाती है। मन और बुद्धि काम करते हैं आत्मा की शक्ति से।

यह है विषय 'प्रेरणा' उपन्यास का। अन्यथा यह उपन्यास है। इसका किसी स्थान, व्यक्ति अथवा घटना से सम्बन्ध नहीं है। यह है मन और बुद्धि के संघर्ष की कथा।

—*गुरुदत्त*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

संगम नगर में, दो नदियों के संगम पर, नदी-तट के समीप रेता पर कुशासन बिछाए एक व्यक्ति पूजा में लीन था। पूर्व की ओर अभी उषा का प्रकाश होने ही लगा था। प्रभाती नक्षत्र, उषा के प्रकाश से ऊपर, आकाश में मलिन पड़ रही प्रभा से टिमटिमा रहा था।

वह व्यक्ति 'ओ३म् भगवताय नम:' का जाप कर रहा था। एकाएक उसका जाप बन्द हो गया। वह चौंककर आसन से उठा और पूर्व की ओर दोनों हाथ उठाए हुए बोल उठा, "वह देखो! वह देखो!!"

ज्येष्ठ मास का मध्य ही था। नगर में तीव्र गर्मी थी, परन्तु नदी के तट पर शीतलता थी। घरों की ऊष्मा से दु:खी हो, तट पर की शीतल वायु के सेवन के लोभ में स्नान करने वाले बहुत सुबह आते थे। इस पर भी अभी बहुत सवेरा था और अन्य स्नान करने वाले विरले ही वहाँ आए थे। समीप कोई नहीं था जो इस पुजारी के 'देखो-देखो' कहने पर आकर्षित होता।

पुजारी को इस बात का ज्ञान होने में देर नहीं लगी। वह समझ गया कि उसके विस्मय को देखने वाला अथवा उसकी पुकार को सुनने वाला कोई नहीं। पुजारी आसन पर, हाथ जोड़ प्रभाती नक्षत्र की ओर देखते हुए आश्चर्यचकित खड़ा रह गया। अब उसके मुख से अत्यन्त धीमी आवाज़ में निकल रहा था, "भगवन्! रक्षा करो। भगवन् रक्षा करो।"

पुजारी रेशमी धोती बाँधे और सिर से कमर तक निर्वस्त्र था। वहाँ आया तो था जूता पहनकर, परन्तु आसन पर नंगे पाँव खड़ा था। पीतल की तुम्बी के आकार का उसका लोटा, आसन के समीप रखा था।

पुजारी के सिर पर बड़ी-सी चोटी थी। चोटी में उसने गाँठ दी हुई थी। उसने गले में घर के कते सूत का यज्ञोपवीत पहन रखा था।

इस समय एक युवक उसके पीछे आ खड़ा हुआ। नदी के इस ओर, स्नान के लिए आने वाला वह दूसरा व्यक्ति था। पहला वह पुजारी ही था। पुजारी तो पौन घण्टे से वहाँ पर था। उसने स्नान किया था, डिबिया से चन्दन निकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तक पर लेप किया था और फिर आसन जमा अपने नित्य-प्रति के जप में लीन हो गया था। जप करते-करते ही उठकर खड़ा हो, विस्मय में पूर्व की ओर देखते हुए उसने कहा था—'भगवन् रक्षा करो! रक्षा करो!!' इस समय वह युवक आया तो पंडितजी के पीछे खड़ा हो गया।

वह युवक कई दिन से वहाँ आ रहा था। आज वह भी, नित्य से कुछ पहले ही वहाँ पहुँचा था। अपने कमरे की, गरमी से पीड़ित, वह नियत समय से पूर्व ही उठ, शौच से छुट्टी पा नदी-तट की ओर चल पड़ा था। तट पर पहुँच नित्य के विपरीत पुजारी को आश्चर्यवत् खड़े प्रार्थना करते हुए देख, वह भी विस्मय में उसी ओर देखने लगा, जिधर पुजारी देख रहा था। परन्तु उसे उस ओर कुछ भी विशेष दिखाई नहीं दिया। पुजारी के मुख से एकाएक निकला, "हरि ओ३म्! हरि ओ३म्!!"

"क्या है पंडित जी?" पीछे खड़े युवक ने पूछ लिया।

"चमत्कार, अद्भुत, परन्तु अशोभनीय....।"

"क्या और कहाँ?"

"वह देखो।"

"परन्तु वह तो प्रभाती तारा है, पंडितजी! नित्य ही वह वहाँ होता है।"

"ओह! मधु, तुम हो? ठीक है। तुम नहीं देख सकते। इस पर भी वह है। एक चमत्कार हुआ है। इस समय से कुछ ही पहले। वह प्रभाती नक्षत्र आकार में बड़ा होने लगा था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके पेट में कुछ विकार उत्पन्न हो रहा है और पेट फूल रहा है। फिर पेट फूटा और उसमें से एक विद्युत समान तीव्र प्रकाश लिये रेखा निकली और भागी। आते-आते वह रेखा प्रकाश में मद्धम पड़ने लगी। अभी-अभी वह रेखा संगम के जल में समा गई है।

"परन्तु वह देखो।" पंडितजी ने अब पश्चिम की ओर देखते हुए कह दिया, "वह देखो। जल से निकल वही रेखा अब नगर की ओर चल पड़ी है। हाँ, यह अब प्रकाशमान नहीं है। यह एक तारक के समान काले रंग की हो गई है।"

वह युवक, जिसे पंडितजी ने मधु कहकर पुकारा था, अब पश्चिम की ओर देख रहा था। इस समय कुछ अन्य स्नानार्थी भी आ पहुँचे और इन दोनों को पश्चिम की ओर विस्मय में देखते हुए वे भी खड़े हो उसी ओर देखने लगे। अब मधु ने कहा, "पंडितजी! आप बैठकर अपनी पूजा समाप्त करिए। उधर कुछ नहीं है।"

अब फिर पंडितजी को चेतना हुई। वे विस्मय में मधु का मुख देख बोले, "ओह! मैं फिर भूल गया था कि तुम नहीं देख सकते। यह अद्भुत चमत्कार मैंने अपने जीवन में पहली ही बार देखा है। पहले तो मैं समझा था कि देव ने पृथ्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को टूक-टूक कर देने के लिए इसकी ओर वज्र फेंका है, परन्तु वह तो इस संगम के जल में डुबकी लगा शीतल और निस्तेज हो गया। अब उसमें वह प्रकाश भी नहीं, जो उस नक्षत्र से छूट पृथ्वी की ओर आते समय उसमें था। जल से निकलने पर तो वह कृष्ण वर्ण हो गया था। वह नगर में किसी के गृह में चला गया है।

''अब पूजा नहीं करूँगा। मेरा चित्त अस्थिर हो गया है।'' इतना कह पंडितजी ने आसन लपेटकर बगल में दबा लिया। लोटा, जिसमें जल भरा था, उन्होंने उठाया और जूता पहिन वह नगर की ओर चल पड़ा।

मधु समझ रहा था कि पंडितजी प्राणायाम इत्यादि क्रियाओं को सीमा से अधिक करते रहे हैं, इस कारण उनके मस्तिष्क में खुश्की समा गई है और ये दिन में तारे देखने लगे हैं।

मधु का सम्पर्क पंडितजी से हुए छः महीने होने जा रहे थे। वह विश्वविद्यालय में भरती हो चुका था। कॉलेज के प्रथम वर्ष की परीक्षा वह दे चुका था और आजकल कॉलेज से अवकाश होने के कारण, कॉलेज होस्टल से बाहर अपनी ज़मींदारी की कोठी में ठहरा हुआ था।

मधु, नगर से पचास मील के अन्तर पर, एक छोटी-सी ज़मींदारी का मालिक था। इस समय उसकी माँ चन्द्रावती उस ज़मींदारी का प्रबन्ध करती थी। पिछली बार जब वह ज़मींदारी से आया था तो उसका विचार परीक्षा के उपरान्त ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों में ज़मींदारी पर जाने का था, परन्तु वैशाख के अंत में जब वह गाँव को जाने की तैयारी कर रहा था, तो माँ ने उसको लिख दिया था कि वह स्वयं शीघ्र ही नगर में आने वाली है। इस कारण उसे गाँव में आने की आवश्यकता नहीं, वह उसकी नगर में ही प्रतीक्षा करे।

इस आज्ञा से वह निराश और चकित हुआ था, परन्तु माँ की बात की अवज्ञा वह नहीं करना चाहता था। अतः अपने नगर के मकान में रहकर माँ के आने की प्रतीक्षा करने लगा। वैशाख समाप्त हो अब ज्येष्ठ की भी सत्रह तारीख हो चुकी थी और वह बेचैनी से माँ की प्रतीक्षा कर रहा था।

इन्हीं दिनों उपर्युक्त घटना घटी। मधु ने पंडितजी के साथ-साथ चलते हुए कह दिया, ''पंडितजी थोड़ा घी का प्रयोग करना चाहिए। यह दिन के समय तारे दीखना अच्छी बात नहीं है।''

पंडितजी हँस पड़े। हँसते हुए पूछने लगे, ''आज तुम कुछ जल्दी नहीं आ गए हो?''

''हाँ, पंडितजी! आज गरमी कुछ अधिक थी और रात भलीभाँति सो नहीं सका। अभी तीन ही बजे थे कि नींद खुल गई। अतः शौचादि से निवृत्त हो नदी-तट की ठण्डी हवा लेने के लोभ में इधर चल पड़ा था। इच्छा तो यह थी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी-तट पर बैठ ठण्डी हवा में ठण्डे रेत पर कुछ सो सकूँगा, परन्तु आपकी बौखलाहट देख विचार बदल गया है और मुझे यह समझ आया है कि आपको घर तक छोड़ता जाऊँ।''

''तो तुम समझ रहे हो कि मैं पागल हो गया हूँ।''

मधु विस्मय में और ध्यानपूर्वक पंडितजी का मुख देखता हुआ उनके साथ-साथ चलता रहा।

मधु ने ज़मींदारी पर रहते हुए ही मैट्रिक पास किया था। वहाँ उसकी माँ ने एक पंडित उसे पढ़ाने के लिए रखा हुआ था। पंडितजी का नाम था शशिमोहन। शशिमोहन ने बी०ए० पास कर रानी साहिबा के लड़के का ट्यूटर बनना स्वीकार कर लिया था। शशिमोहन मधु को पढ़ाता था और स्वयं वकालत की परीक्षा देने की तैयारी कर रहा था। पिछले वर्ष जब मधु ने मैट्रिक की परीक्षा दी थी, तो पंडित शशिमोहन अपनी वकालत की परीक्षा देने नगर में चला आया था। पंडित शशिमोहन ने मधु को प्राणायाम की क्रिया बताई थी।

एक दिन चन्द्रावती ने पुत्र को प्राणायाम करते देख लिया तो उसने उसे करने से मना किया। माँ का कहना था कि इससे दिमाग में खुश्की समा जाती है और फिर दिन को तारे दिखाई देने लगते हैं। मधु को माँ की यह बात स्मण हो आई थी। आज उसने पंडितजी से यही बात कही थी।

इन पंडितजी का नाम था पंडित भुवनचन्द्र। वे तान्त्रिक विद्वान् के रूप में विख्यात थे। मधु को उनकी ख्याति का तो ज्ञान था, परन्तु उनकी तान्त्रिक योग्यता का अभी आभास नहीं हुआ।

विक्रमी सम्वत् 1949* में मैट्रिक पास कर मधु कॉलेज में भरती होने नगर में आ गया था। प्राइवेट परीक्षा देने पर भी वह फर्स्ट डिवीजन में उत्तीर्ण हुआ था। इस कारण नगर के सर्वप्रसिद्ध सैन्ट्रल म्योर कॉलेज में सहज ही उसे प्रवेश मिल गया था।

:: 2 ::

मधु का पूरा नाम मधुमोहन था। उसने पंडितजी को अपनी बात समझाने के लिए कह दिया, ''जब आकाश में दिन का प्रकाश होने लगा था और आप तारे देख रहे थे तो एक सही दिमाग युवक क्या समझ सकता है ?''

पंडित भुवनचन्द्र ने कह दिया, ''तो तुम मेरी हँसी उड़ाने के लिए कह रहे हो ? तथ्य यह है कि तुम स्वयं देखने की सामर्थ्य नहीं रखते। मुझ से ही यह भूल

*** ईसवी सन् 1892**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई है कि मैं इस दृष्टि से वंचित एक व्यक्ति को इस दृष्टि से देखी बात बता रहा था।''

''किस दृष्टि की पंडितजी ?''

''वह नहीं बताऊँगा। हाँ, उस दृष्टि से देखी एक बात तो तुमको बता ही सकता हूँ। देखो मधु! तुम मुझको एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी दिखाई दिए हो। यही कारण है कि मैं तुममें आत्मीयता अनुभव करता हुआ तुमको कुछ वह कह बैठा, जो देखने की तुममें सामर्थ्य नहीं है। हाँ; एक बात बताता हूँ और वह तुम जानते हो और समझ सकोगे।

''मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि एक बकरी के गले में रस्सी बाँधे हुए एक कस्साब उसे कस्साबखाने को लिये जा रहा है। बकरी जानती है कि वह कहाँ ले जाई जा रही है और वह उधर जाना नहीं चाहती, परन्तु कसाई बलवान है और उसको घसीटे लिये जा रहा है। बकरी जा रही है।''

मधुमोहन इस उपमा का अर्थ नहीं समझा। वह यह भी समझ नहीं सका कि उसके व्यंग्य—*पंडितजी घी का प्रयोग किया करें*—का इस उपमा से क्या सम्बन्ध है। पंडित भुवनचन्द्र ने उसे आश्चर्यवत् अपना मुख देखते हुए पाया तो अपनी बात का अर्थ समझा दिया, ''यह अवस्था तुम्हारी हो रही है। तुम प्रतिभाशाली युवक हो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के गले में रस्सी डाले तुम्हरा मन कस्साब की भाँति, उसे कस्साबखाने को लिये जा रहा है। तुम्हारी बुद्धि व्याकुल हो छटपटा रही है, परन्तु कसाई मन बहुत प्रबल है और बुद्धि बेचारी दुर्बल है।''

इस पर तो मधुमोहन खूब हँसा। हँसकर कहने लगा, ''आप मुझे प्रतिभाशाली मानते हैं, परन्तु उसे मन के पंजे में फँसा मानते हैं। भला उस प्रतिभा का क्या हुआ ? वह मन के बन्धन में है ही क्यों ?

''पंडितजी, एक बात मैं समझ नहीं सका। क्या बुद्धि और मन भिन्न-भिन्न इकाइयाँ हैं ?''

''हाँ; मन संस्कारों का संग्रहालय है और उसका अधिदेवता है। यह संस्कारों के अधीन कार्य करता है। बुद्धि एक दिशा-निर्देशक यन्त्र है। यह संस्कारों के अतिरिक्त कर्त्तव्याकर्त्तव्य तथा धर्माधर्म में निर्णय करने के लिए बनी है। दोनों में संघर्ष प्राय: होता रहता है। इस संघर्ष में विजय उसकी होती है जो दोनों में प्रबल होता है। आत्मा यदि मन के संस्कारों के अधीन व्यवहार करे और बुद्धि के निर्देश को न माने, तो बुद्धि की हत्या हो जाती है। यदि मनुष्य बुद्धि के प्रयोग को अवसर दे तो बुद्धि हत्या से बच जाती है और कसाई-मन को अपने व्यवहार को ठीक करने के लिए कह देती है।''

''पंडितजी, मैं कुछ नहीं समझा।'' मधु ने चिन्तित मन से कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम समझने की तरफ जा रहे हो। घर जाकर विचार करोगे तो सब समझ जाओगे। यदि फिर भी नहीं समझ सके तो मैं कल इसकी व्याख्या बता दूँगा।"

वास्तव में मधु समझ रहा था। वह गाँव जाना चाहता था और माँ ने उसे मना कर दिया था। मन विद्रोह कर जाना चाहता था और बुद्धि कह रही थी कि माँ का कहना मानना चाहिए। उसका मन क्यों गाँव जाने को कह रहा था और बुद्धि उसे क्यों जाने से मना कर रही थी, वह सब समझता था। उसने पंडितजी से कहा था कि वह समझा नहीं। इसमें प्रयोजन यह था कि वह बताना नहीं चाहता था कि पंडितजी की उक्ति ने उसके मन के किस तार को छेड़ा है।

पंडित भुवनचन्द्र उसके मुख पर देखते हुए मुस्करा रहा था, मानो वह उसमें चल रहे द्वन्द्व को देख रहा है। इस समय दोनों उस स्थान पर पहुँच गए थे, जहाँ से दोनों के घर का मार्ग बदलता था। पंडितजी खड़े हो बोले, "मधु, अब तुम जाओ। जो कुछ मैंने कहा है उसे समझने का यत्न करो और बुद्धि का अनुकरण करो। तुम्हारी बुद्धि तुम्हारा मार्ग-दर्शन ठीक ही कर रही है।"

पंडितजी अपने मार्ग पर चल पड़े और मधुमोहन उन्हें जाते हुए देखता रह गया। आखिर उसे समझ आया कि पिछले छः मास के पंडित जी से वार्त्तालाप में इस प्रकार का अवसर कभी नहीं आया था। अभी तक पंडितजी उसकी पढ़ाई, उसके गाँव तथा उसके माता-पिता के विषय में ही प्रश्न किया करते थे। वे उसे योग्य प्रतिभाशाली जीव मानते थे। मधुमोहन भी गणित में अपनी विशेष योग्यता की बात बताया करता था। आज पंडितजी ने कुछ ऐसी बात कही थी, मानो वे मधु के मन की अनेक बातों को जानते हैं।

जब पंडितजी दूर चले गए तो मधु भी अपने ज़मींदारी वाले मकान को चल पड़ा। गर्मी के कारण रात-भर सो न सकने से वह परेशान था और गाँव को भाग जाना चाहता था। परन्तु माँ की आज्ञा थी कि वह नगर में ही उसकी प्रतीक्षा करे। वह माँ की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करने का विचार कर रहा था।

पिछली बार परीक्षा से पहले वह कुछ घंटों के लिए गाँव गया था। माँ ने पूछा था, "पढ़ाई छोड़, यहाँ क्यों चले आए हो?"

"ऐसे ही। माँ, तुमसे मिलने को दिल किया तो चला आया।"

माँ समझ नहीं सकी। मधु का माँ से इतना अनुराग है वह नहीं जानती थी। उसे इससे कुछ उलट बात के अनेक प्रमाण मिल चुके थे। इस कारण उसने पूछ लिया, "कितने दिन के लिए आए हो।"

"माँ, अगले सप्ताह परीक्षा आरम्भ होने वाली है। इस कारण परीक्षा से पहले एक चक्कर गाँव में लगाने का विचार हुआ तो चार बजे की गाड़ी से चल पड़ा। स्टेशन पर कोई इक्का नहीं मिला। इस कारण पैदल ही तीन मील चलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ आ पहुँचा हूँ। सात बजे स्टेशन पर गाड़ी पहुँची और अब आठ बज रहे हैं। रात भर यहाँ रहूँगा और कल प्रातः सात बजे इक्के पर सवार हो साढ़े सात की गाड़ी पकड़ दस बजे नगर में जा पहुँचूँगा। इससे पढ़ाई में कुछ आराम मिल गया है।''

माँ को मधु के एकाएक बिना सूचना दिए आने का कारण ठीक नहीं जँचा। परन्तु उसने मन से यह विचार निकाल लड़के को भोजन कराया और फिर रात उसके सोने के कमरे में बैठ बहुत देर तक उसके कॉलेज और उसकी पढ़ाई की बातें करती रही। उसने अपनी ज़मींदारी की कठिनाई की बातें भी बताईं और कहा, ''मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही हूँ कि कब तुम पढ़ाई समाप्त कर ज़मींदारी का काम सम्भालते हो ?''

यद्यपि मधु के मन में ज़मींदारी के काम के प्रति अरुचि थी, परन्तु उसने आज वह अरुचि, प्रकट नहीं की। इसके विपरीत उसने अपना भावी कार्यक्रम बता दिया। उसने कहा, ''माँ! मैं बी०ए० तक तो पढ़ूँगा ही। इस पर यदि मैं फ़र्स्ट डिवीजन में पास हुआ तो एम०ए० में भी पढ़ूँगा। प्रिंसिपल और मेरा गणित का अध्यापक तो यह कहते हैं कि मैं एक अति योग्य विद्यार्थी हूँ और उस गणित में अपना, अपने परिवार का और अपने देश का नाम उज्ज्वल करूँगा। परन्तु माँ, मैं तो ज़मींदारी का काम करना चाहूँगा।''

माँ इससे प्रसन्न थी। मधु के पिता का देहान्त तो तभी हो चुका था, जब वह तीन वर्ष का था। उसे तो पिता की शक्ल भी भलीभाँति स्मरण नहीं थी। माँ ने ही उसका लालन-पालन किया था। घर पर अध्यापक रखकर ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। जब वह बारह वर्ष की आयु का हुआ था, तो पंडित शशिमोहन मधु का ट्यूटर नियुक्त हो गया और उसने ही मधु के मन में यह बात उत्पन्न की थी कि वह बहुत ही तीव्र बुद्धि रखता है और यदि वह मैट्रिक की परीक्षा पास कर कॉलेज में भरती हो जाएगा तो वह गणित में बहुत ख्याति प्राप्त करेगा।

इससे उत्साहित हो, मधु ने माँ की अरुचि होते हुए भी मैट्रिक की प्राइवेट परीक्षा दी और फिर नगर के कॉलेज में भरती हो गया।

माँ सोने का समय हो जाने पर अपने सोने के कमरे में चली गई और मधु अपने गाँव में एकाएक चले आने के कारण पर विचार करने लगा।

माँ की एक सहायिका मोहिनी थी। उसकी लड़की रेशम से मधु प्रेम करने लगा था और आज वह उससे मिलने के लिए ही आया था। पिछली बार क्रिसमस की छुट्टियों में आया था तो उसका सम्बन्ध रेशम से अधिक गहरा हो गया था और वह उसकी याद में व्याकुल रहा करता था। उसका विचार था कि उससे मिल लेगा तो फिर शान्त चित्त से परीक्षा में बैठ सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु के आने की बात घर भर में फैल गई थी। रेशम को भी उसके आने की सूचना मिल चुकी थी और वह आशा कर रहा था कि वह किसी-न-किसी प्रकार रात को उसके कमरे में आएगी।

वह खाट पर करवटें लेता हुआ उसकी प्रतीक्षा करने लगा। इस समय उसे बेनी कहार की बात स्मरण आ रही थी। बेनी कहार नगर के मकान का चौकीदार था। एक दिन उसने संकेत से बताया था कि रेशम उसके पिता की ही, मोहिनी से लड़की है। मधु को बार-बार यह बात खटकती प्रतीत हो रही थी कि उसने बहिन से सम्बन्ध बना ठीक नहीं किया, परन्तु मन उसको घेर-घार कर गाँव में ले आया था और बुद्धि के बार-बार मना करने पर भी वह खिंचा चला आया था। पलंग पर लेटा हुआ वह मन और बुद्धि के द्वन्द्व में पड़ा था। रेशम नहीं आई और वह प्रतीक्षा में थककर सो गया।

बहुत प्रातःकाल उसे रेशम की संगत मिली और फिर वह बिना विचार किए उसका भोग करता रहा। आधा घण्टा-भर की संगत के बाद रेशम उठी और पूछने लगी, ''अब फिर कब दर्शन होंगे?''

''अगले सप्ताह मेरी परीक्षा आरम्भ होगी। उसके बाद ज्येष्ठ के प्रथम सप्ताह में आऊँगा और फिर दो मास तक घर पर ही रहूँगा।''

''मैं आपके साथ विवाह का प्रस्ताव माँ से करने वाली हूँ।''

''मेरे आने पर करना। माँ मान जाएगी। वह तुमको बहुत चाहती है और मैं तो उसका एक ही लड़का हूँ। वह मान जाएगी।''

इसके उपरान्त मधुमोहन उठा और स्नानादि से निवृत्त हो माँ से मिलने और अल्पाहार लेने चला गया। माँ अल्पाहार तैयार कर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसने मधु को देखते ही कह दिया, ''बहुत देर कर दी मधु! सात बज रहे हैं।''

मधु प्रसन्न-चित्त बोला, ''माँ, मैं स्टेशन पर गाड़ी के समय से पहले पहुँच जाऊँगा।''

''अच्छा जल्दी करो। यह दूध और मिठाई ले लो। इक्का मैंने तैयार करवा रखा है। साथ ले जाने के लिए मिठाई उसमें रखवा दी है।''

मधु ने जल्दी-जल्दी अल्पाहार लिया और माँ के चरण-स्पर्श कर घर से भाग इक्के पर जा बैठा।

पंडित भुवनचन्द्रजी से बकरी और कसाई की कथा सुन मधुमोहन के चित्त में ये सब बातें स्मरण हो आई थीं और वह गम्भीर चिन्ता में निमग्न अपने निवास-गृह की ओर चल पड़ा। वह माँ की आज्ञा का उल्लंघन करे अथवा न करे, इस विषय पर पुनः विचार करने लगा। अब तो उसको अपने भीतर चल रहे द्वन्द्व का स्वरूप भुवनचन्द्र के कथनानुसार प्रकट होने लगा था। वह अनुभव करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था कि उसके भीतर बकरी रूपी बुद्धि के गले में रस्सी डाले उसका मन कसाईखाने की ओर घसीटता हुआ ले जा रहा है।

इससे वह काँप उठा। इसी प्रकार के विचारों में वह मकान पर पहुँचा तो द्वार पर खड़े बेनी चौकीदार ने सूचना दी कि भीतर चरणसिंह बैठा है।

:: 3 ::

चरणसिंह उसका सहपाठी और होस्टल में उसी के कमरे का साथी था। दोनों मित्र हो गए थे और एक-दूसरे से भारी लगाव रखते थे।

चरणसिंह नगर के वकील हरिहरसिंह का पुत्र था। कारण-विशेष से पिता-पुत्र में बनती नहीं थी और माँ ने दोनों के वैमनस्य को प्रकट होने का अवसर न देने के लिए, लड़के को होस्टल में दाखिल करवा रखा था।

मधु तो ज़मींदारी के निवास-गृह में एकान्त न मिलने के कारण होस्टल में रहता था। छुट्टियों से पूर्व ही दोनों 'रूम मेट्स' में बहुत गहरी मित्रता हो चुकी थी। जब मधु ने बताया कि वह अभी गाँव को नहीं जा रहा तो चरणसिंह बहुत प्रसन्न हुआ। दोनों मित्र प्रतिदिन मिला करते थे। कभी मधुमोहन चरणसिंह के घर जाता था और कभी चरणसिंह मधु से मिलने उसके निवास-स्थान पर आ जाया करता था।

अत: मधु को चरण के आने की सूचना पर विस्मय नहीं हुआ। वह मकान की ऊपर की मंज़िल पर अपने कमरे में पहुँचा तो चरणसिंह उसकी मेज़ के दराज़ में से कुछ तस्वीर निकाल कर देख रहा था।

मधु ने कमरे में प्रवेश करते ही पूछ लिया, "क्या ढूँढ रहे हो चरण?"

"ढूँढ नहीं रहा, दादा! तुम दराज़ खुला छोड़ गए थे और उसमें से तस्वीरें दिखाई दी हैं। इन्हें देखने लगा हूँ।

"तुम इस तस्वीर में हो, और ये तुम्हारी माताजी प्रतीत होती हैं। परन्तु ये दूसरी दो और कौन हैं?"

मधु को स्मरण हो आया कि पिछली रात वह उसी तस्वीर को देखता रहा है। इस कारण मेज़ का दराज़ खुला रह गया होगा। ऐसा समझ वह बताने लगा, "यह दूसरी स्त्री हमारे घर में माताजी की सहायता करती है। माता जी इसको बहुत मानती हैं और यह लड़की इसी की है। नाम है रेशम। पिछले वर्ष माताजी नगर में आई थीं तो यह तस्वीर उतरवाई थी।"

"लड़की बहुत सुन्दर है!" चरणसिंह ने कह दिया।

"सच? मैं भी यही समझता हूँ और मेरा बस चले तो मैं इससे विवाह कर लूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो बस की बात नहीं है क्या?"

"बाधाएँ तो हैं।"

"क्या?"

"एक तो यह कि माताजी पसन्द नहीं करेंगी। अपनी एक सहायिका की लड़की से मेरा विवाह पसन्द करेंगी, मुझे सन्देह है। एक और भी कारण है।"

"क्या?"

"यदि किसी से भी न कहो तो बता सकता हूँ।"

"नहीं कहूँगा।"

"अपनी माँ और बहन सरस्वती से भी नहीं?"

चरणसिंह हँस पड़ा। हँसकर बोला, "तो मेरी माताजी से भी डरते हो?"

"हाँ।"

"तो नहीं कहूँगा।"

"यहाँ के नौकर-चाकर कहते हैं कि यह लड़की मेरी बहन है, अर्थात् यह लड़की मोहिनी मौसी की मेरे पिताजी से है।"

चरणसिंह इस बात को सुन गम्भीर विचार में मग्न हो गया। मधुमोहन उसके मुख के बदलते हुए रंग देख रहा था। जब चरणसिंह नहीं बोला तो मधु ने पूछ लिया, "क्यों, तुमको क्या हो गया है?"

"यह लड़की बहुत सुन्दर है। यदि तुम अपनी बहन पर से दृष्टि हटा लो तो मैं विवाह का यत्न कर सकता हूँ।"

मधु बता नहीं सका कि उसका रेशम के साथ किस प्रकार का और कितना सम्बन्ध बन चुका है। इस कारण उसने कह दिया, "मेरी दृष्टि की बात छोड़ो। यह बताओ कि कैसे यत्न करोगे?"

"कई तरीके हैं। माँ से कहूँगा। वह नहीं मानेगी तो फिर तुम्हारे गाँव की यात्रा करूँगा और इस लड़की की माँ से सम्पर्क बनाऊँगा और यदि इसकी माँ भी नहीं मानी तो इसका अपहरण करूँगा।"

मधु विचार कर रहा था कि उसे चरणसिंह के प्रयास करने से पहले ही रेशम से विवाह कर लेना चाहिए। मधु को ध्यान में मग्न देख चरणसिंह ने कह दिया, "क्यों, इस लड़की की स्मृति संवरण नहीं कर सके न?"

मधु उत्तर में केवल मुस्करा दिया। चरणसिंह ने कहा, "वह है ही ऐसी। तस्वीर देखते ही मैं मुग्ध हो गया हूँ।"

"हाँ।" एक शब्द में ही मधु ने उत्तर दिया।

"तो एक और योजना हो सकती है।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''ज़रा विचारकर बताऊँगा।''

''अच्छी बात। बताना, और फिर मैं भी विचार कर लूँ कि मुझे क्या करना चाहिए।''

उस दिन इससे और अधिक बात नहीं हो सकी। चरणसिंह ने शतरंज लगाने के लिए कहा। मधु ने कहा, ''मैंने तो अभी स्नान भी नहीं किया।''

''तब तो ठीक है। जल्दी स्नान कर लो और दो के लिए अल्पाहार का प्रबन्ध करने को कह दो। मैं आज मध्याह्न तक यहाँ रहने का विचार करके आया हूँ।''

चरणसिंह मधु के साथ मध्याह्न तक रहा। दोनों ने इकट्ठे अल्पाहार लिया और फिर शतरंज खेलते रहे।

मध्याह्न के समय बेनी ने आकर कहा, ''भोजन तैयार है।'' चरणसिंह को मानो चेतना हुई। वह बाज़ी आधी छोड़ उठते हुए बोला, ''मैं एक स्थान पर खाना खाने जा रहा हूँ, नहीं तो बाज़ी समाप्त कर ही जाता।''

''अर्थात्, इसे भी हारकर ही जाते।''

चरणसिंह हँस पड़ा और जूता पहन बैठकघर से निकल गया।

मधु भी उठा और रसोईघर में जाने लगा तो बेनी ने एक पत्र देते हुए कहा, ''रानी साहिबा का पत्र आया है। भगवती अभी-अभी आया है और यह पत्र उसने दिया है।''

मधु ने पत्र खोल खड़े-खड़े ही पढ़ लिया। लिखा था—

''प्रिय मधु!

''मेरी इच्छा थी कि तुमको साथ लेकर एक महीने के लिए किसी पहाड़ पर चलूँ। परन्तु आजकल मालगुजारी-वसूली के दिन हैं और बहुत यत्न करने पर भी छुट्टी नहीं पा सकी। अत: अब पहाड़ पर जाने का विचार स्थगित कर दिया है। तुमको नगर में रोक रखना व्यर्थ हुआ। मेरा विचार है कि तुम अब शीघ्र चले आओ।''

इस पत्र से मधु को बहुत प्रसन्नता हुई। उसे रेशम की याद आ गई और वह गम्भीर हो गया। इस पर भी उसने भोजन किया और जाने की तैयारी करने लगा।

चार बजे की गाड़ी से गाँव के रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो घर का इक्का उसे लेने आया हुआ था। यह प्रथा थी कि जब उसके घर पहुँचने की सूचना होती तो घर से इक्का लेने आया होता था। इस बार वह सूचना भेजकर नहीं आ रहा था वरन माँ के बुलाए जाने पर आया था और माँ को आशा थी कि मधु सायं की गाड़ी से भागा आएगा।

उसको मधु के गाँव आने की उत्सुकता का ज्ञान था। पिछली बार परीक्षा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व जब वह एक रात के लिए आया था और प्रातःकाल जाने का विचार बता चुका था, उस दिन चन्द्रावती बहुत सवेरे उठ, स्नान आदि से निवृत्त हो मधु को जगाने उसके कमरे में गई तो कमरे के भीतर से दो व्यक्तियों को बातें करते सुन वह द्वार के बाहर ही खड़ी हो गई थी। उसने द्वार से कान लगाकर सुना तो उसे यह समझ आया कि एक लड़का है और दूसरी लड़की है।

इसी समय द्वार के भीतर का कुण्डा खुलने की आवाज़ हुई तो चन्द्रावती द्वार के एक ओर अँधेरे में खड़ी हो गई। वह देखना चाहती थी कि कौन लड़की है उसके लड़के के कमरे में।

रेशम कमरे से निकली तो कमरे के भीतर के प्रकाश में माँ ने उसको पहचान लिया। रेशम गई तो मधु ने पुनः द्वार बन्द कर भीतर से कुण्डा चढ़ा दिया। चन्द्रावती किंकर्त्तव्यविमूढ़ की भाँति वहाँ खड़ी रह गई। उसने उस समय जल्दी में लड़के से बात न करने का विचार कर लिया। वह समझ रही थी कि मधु अभी तो जा ही रहा है। इस कारण रेशम के विषय में विचार करने को समय अभी है। वह अपने कमरे में लौट आई। तदनन्तर उसने अल्पाहार तैयार करवाया। मधु के जाने के लिए ज़मींदारी का इक्का तैयार करवाया और मधु की प्रतीक्षा करने लगी।

मधु जब चला गया तो उसने एक योजना के अधीन, रेशम की माँ को बुलाकर कहा, ''मोहिनी बहन! रेशम का विवाह कर देना चाहिए।''

''हाँ रानीजी! वह अब सोलह वर्ष की हो चुकी है।''

''तो उसके लिए मधु के चाचा का लड़का है। नाम है श्रीचन्द्र। तुमने देखा भी होगा। कहो तो उनसे बातचीत करूँ। एक बार श्रीचन्द्र की माँ ने बात की थी।''

''मैंने रेशम के लिए एक और लड़का देखा था।''

''कौन?''

''आपका लड़का मधु मुझको बहुत पसन्द है।''

''परन्तु मधु इसे पसन्द नहीं करेगा, विशेष रूप से जब उसे रेशम के जन्म का ज्ञान हुआ तो।''

''उसे ज्ञान क्यों होगा? रानीजी! अगर आप नहीं बताएँगी तो उसे पता नहीं चलेगा। और वैसे वह रेशम को पसन्द करेगा।''

''देखो मोहिनी! तुम जानती हो और मैं भी जानती हूँ कि वे बहन-भाई हैं। यदि इतना जानते हुए हमने इनका विवाह किया तो यह घोर पाप हो जाएगा।''

''कुछ नहीं होगा, रानीजी! पाप-पुण्य कुछ नहीं होगा।''

''और अपनी आत्मा भी मान जाएगी क्या?''

''आत्मा तो किसी ने देखी नहीं, परन्तु लड़का-लड़की जिससे प्रसन्न और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तुष्ट हों, वही सबसे बड़ा पुण्य है।''

इससे चन्द्रावती को सन्देह हो गया कि मधु और रेशम के परस्पर व्यवहार का ज्ञान मोहिनी को है। इस कारण उसने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछ लिया, ''तो तुमको पता है कि उन्होंने एक-दूसरे को पसन्द किया है?''

''हाँ। मुझको सब विदित है। यह विवाह तो होगा।''

''नहीं मोहिनी! यह नहीं होगा। यदि वे परस्पर मिल भी चुके होंगे तो उनको प्रायश्चित्त करना होगा।''

मोहिनी चुप रही। उसका विचार था कि मधु एक मास में आने ही वाला है और तब वह माँ पर बल देकर उसे मना लेगा।

चन्द्रावती ने श्रीचन्द्र की माँ को सन्देश भेज दिया। चन्द्रावती और श्रीचन्द्र की माता में बातचीत होने लगी। मोह्रिनी वहाँ बैठा ली जाती थी, परन्तु वह कुछ कहती नहीं थी। इस समय तक यह निश्चय हो गया कि रेशम को गर्भ ठहर गया है। इससे तो मोहिनी घबराई। वह इस घटना की आशा नहीं करती थी। वह विवाह के लिए राजी हो गई। चन्द्रावती ने दस दिन में विवाह की तैयारी कर दी। विवाह का मुहूर्त्त ज्येष्ठ की तेरह तारीख को निकला। अत: चन्द्रावती ने मधु को बहाना बना नगर में ही रोक दिया और उसे आने के लिए तभी लिखा, जब रेशम की डोली घर से विदा हो गई।

:: 4 ::

मधु इक्के से उतरा तो कर्मू कहार उसका अटैची केस उतारने चला आया। आते ही उसने पूछ लिया, ''बाबू, कहाँ रहे?''

''कालेज में परीक्षा दे रहा था।''

''यहाँ तो रेशम बिटिया का विवाह रच दिया गया है।''

''विवाह? रेशम का? कब हुआ है?''

''कल डोली विदा हुई है।''

मधु को समझने में देर नहीं लगी कि उसकी माँ किसी प्रकार उसके रेशम से सम्बन्ध की बात जान गई होगी और उसने विवाह में उसे जान-बूझकर नहीं आने दिया।

एक बार तो उसके मन में रोष भर गया और वह माँ से लड़ने के लिए तैयार हो गया; परन्तु अगले ही क्षण उसे पंडित भुवनचन्द्र की बात स्मरण हो आई। पंडितजी ने कहा था कि उसका कसाई मन उसकी बकरी रूपी बुद्धि को कसाईखाने लिये जा रहा है। बकरी छटपटा रही है। वह जानती है कि कस्साब उसे कहाँ लिये जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस स्मृति से उसका मस्तिष्क ठण्डा पड़ने लगा। वह मन में विचार करने लगा था कि कोई अदृश्य शक्ति उसकी बुद्धि रूपी बकरी को कसाई से छुड़ाने में सफल हो गई है। वह सोचने लगा कि यह ठीक नहीं हुआ क्या?

इस पर उसका क्रोध शान्त होने लगा। मकान के भीतर माँ के कमरे तक जाते-जाते वह विचार करने लगा था कि माँ से झगड़ा करने से पूर्व ठंडे दिल से विचार कर लेना चाहिए।

माँ के कमरे में पहुँच उसने माँ के चरण स्पर्श किए तो माँ ने आशीर्वाद दिया और कहा, "मधु, अपने कमरे में चलो। अल्पाहार वहीं होगा और मैं भी वहीं आती हूँ।"

माँ ने यह बात इस कारण कही थी कि वह उसे खिला-पिलाकर स्वयं बताएगी और फिर रेशम के जन्म का रहस्य बताएगी।

मधु भी अपने कमरे में जा पूर्ण स्थिति पर विचार करने के लिए समय चाहता था। उसने माँ की बात को तुरन्त मान लिया और अपने कमरे में जा पहुँचा।

वहाँ वह अपनी आरामकुर्सी पर बैठ विचारमग्न हो गया। अब उसका मन कहता था कि माँ से लड़ पड़ना चाहिए। उसने उसे धोखा देकर, झूठ बोलकर यहाँ आने से रोका है। उसकी बुद्धि कहती थी कि पहले माँ की बात और उसके व्यवहार में कारण जानना चाहिए।

यदि माँ ने बहन-भाई में सम्बन्ध होना रोकने के लिए यह किंचित् मात्र झूठ भी बोला है तो इस झूठ को चतुराई का ही नाम दिया जा सकता है। ऐसी चतुराई करने का सबको अधिकार है। वह अन्त में इस परिणाम पर पहुँचा कि यह जानना आवश्यक है कि माँ का इस धोखाधड़ी में उद्देश्य क्या है? और वह उद्देश्य उचित है अथवा नहीं? वह यह भी जानना चाहता था कि रेशम ने विरोध किया था अथवा नहीं और उस विरोध का क्या उत्तर दिया गया था।

इन्हीं विचारों में वह मग्न बैठा था कि नौकरानी आई और उसके सामने तिपाई लगाकर उस पर दूध और मिठाई रख गई। मधु अपने विचारों में इतना लीन था कि उसे पता ही नहीं चला। उसे इस बात का ज्ञान तब हुआ, जब माँ कमरे में आई और उसे कुर्सी की पीठ से सहारा लगा आँखें मूँदे बैठे देखा। सामने दूध, मिठाई इत्यादि बिना छुए रखी थी। माँ ने कहा, "मधु, दूध नहीं पी रहे?"

"ओह! मैंने देखा ही नहीं। माँ, तुम नहीं लोगी?"

"मैं दूध पी चुकी हूँ। मिठाई तुम्हारे साथ लूँगी। कुछ चिन्तित मालूम होते हो? क्या बात है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ, तुमने मुझसे झूठ किसलिए बोला है? रेशम का विवाह मुझे बताए बिना क्यों कर दिया है?"

"देखो मधु! तुमको विदित होना चाहिए कि वह तुम्हारी बहन है। यद्यपि तुम्हारे पिता का मोहिनी बहन से अनुचित सम्बन्ध बना था, परन्तु यह मोहिनी जानती है और मैं भी जानती हूँ कि वह तुम्हारे पिता की सन्तान है।

"साथ ही तुमने भूल से उससे सम्बन्ध बनाया था। मुझको इसका ज्ञान हुआ तो मैंने तुमको उसके विवाह में बुलाना उचित नहीं समझा। यह शास्त्र का विधान है कि बहन-भाई में विवाह नहीं होना चाहिए। इसी कारण तुमको कुछ दूर रखने के लिए थोड़ा झूठ बोलना पड़ा है।

"सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हारे रेशम से रिश्ते की बात मेरे और मोहिनी के अतिरिक्त कुछ अन्य लोग भी जानते हैं। इस कारण विवाह कहीं अन्यत्र कर देना ही ठीक समझा गया है।

"तुम यहाँ होते तो न जाने क्या व्यवहार स्वीकार करते? और फिर कितना हल्ला होता? तुम्हारे व्यवहार की प्रतिक्रिया रेशम पर क्या होती? इन सबके विषय में अनुमान लगाना कठिन समझ यही ठीक समझा गया कि तुमको यहाँ न बुलाया जाए।

"इस थोड़ेसे झूठ का मैं प्रायश्चित्त करूँगी, परन्तु तुमसे यह उचित व्यवहार कराकर मैंने ठीक ही किया है।"

"पर माँ! रेशम ने विरोध नहीं किया?"

"किया था। परन्तु जब उसको बताया गया कि वह तुम्हारी बहन लगती है तो वह रो पड़ी और फिर मान गई।"

"मोहिनी मौसी कहाँ है?"

"वह लड़की के साथ ही उसकी ससुराल में रहने के लिए चली गई है। उसको जो कुछ यहाँ की ज़मींदारी से मिलता था, वह मिलता रहेगा। रेशम को मैंने बहुत बड़ा दहेज दिया है। ठीक वैसे ही उसको विदा किया है, जैसे वह मेरी ही बेटी हो।"

"और मेरे सम्बन्ध के विषय में भी रेशम बक गई थी?"

"नहीं। वह तो मैंने स्वयं देखा था। पिछली बार परीक्षा से पूर्व जब तुम एक रात यहाँ रहने आए थे, मैंने प्रातःकाल पाँच बजे के लगभग उसे तुम्हारे कमरे से निकलते देखा था। मैंने रेशम से पूछा तो उसने मेरे अनुमान को गलत नहीं बताया।"

मधु पूर्ण वृत्तान्त जान, मन में विचार करने लगा कि माँ ने उसकी बुद्धि की हत्या होते-होते बचा ली है। उसे भुवनचन्द्र की उक्ति स्मरण आ रही थी। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ ऐसा अनुभव हुआ था कि मन पापी से बकरी रूपी बुद्धि कस्साबखाने में जाती हुई माँ ने बचा ली है।

उसे गम्भीर विचार में मग्न देख माँ ने पूछ लिया, ''देखो मधु, तुम चाहो तो इस मास में तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध किया जा सकता है। बताओ, करोगे विवाह?''

''नहीं माँ!'' मधु ने चौंककर कहा, ''नहीं। मैं विवाह नहीं करूँगा। मुझसे पहले ही भूल गई है। यह अज्ञानता के कारण हुई थी। अब तो पढ़ाई समाप्त कर ही विवाह की बात होगी।''

''यदि तुम चाहो तो किसी पहाड़ पर घूमने के लिए जा सकते हो।''

''नहीं। मैं नहीं जाऊँगा। मैं अपने साथ पुस्तकें अध्ययन के लिए लाया हूँ और मैं यहाँ गाँव में रहता हुआ भी उकताऊँगा नहीं।''

बात समाप्त हो गई। मधुमोहन सत्य हृदय से समझने लगा था कि वह गड्ढे में गिरता-गिरता बचा है।

वह छुट्टियों के समाप्त होने तक वहाँ रहा। बीच में एक दिन मोहिनी अपनी लड़की रेशम तथा दामाद श्रीचन्द्र के साथ आई। चन्द्रावती ने उनका ऐसे ही स्वागत किया जैसे लड़की और दामाद का करना चाहिए।

मोहिनी मधु से एकान्त में मिली। उसने कहा, ''मधु! यह ठीक नहीं हुआ। मैं चाहती थी कि रेशम तुम्हारी पत्नी बनती, परन्तु स्थिति ऐसी हो गई थी कि विवश मुझे विवाह के लिए स्वीकृति देनी पड़ी।''

''मौसी!'' मधु ने पूछ लिया, ''अब रेशम कैसा अनुभव करती है?''

''मैंने उसे पूर्ण परिस्थिति से अवगत करा दिया है और वह सहन कर गई है। आगे भगवान् भरोसे है।''

मधु रेशम से भी मिला। रेशम ने तो कह दिया, ''मैं आपको भूल नहीं सकती और आपकी माताजी को कभी क्षमा नहीं कर सकती। यह जो मुझे पति के रूप में मिला है, मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। न ही यह इन्सान है। यह पशु प्रतीत होता है।''

''क्या मतलब?''

''आप उससे मिलिए तो आपको पता चल जाएगा।''

मधु श्रीचन्द्र से भी मिला। श्रीचन्द्र ने मधु से मिलकर कह दिया, ''मैं आप लोगों का धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपना हक रेशम पर से उठा लिया है।''

मधु ने शान्त भाव से कहा, ''हमारे घर में रेशम लड़की के रूप में मानी जाती थी और आपको सदा हम घर का दामाद मानकर आपकी प्रतिष्ठा करेंगे।''

उस दिन तक तो श्रीचन्द्र अपनी पत्नी से सर्वथा सन्तुष्ट प्रतीत होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-P
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु यह सन्तोष बहुत दिन तक नहीं रहा। रेशम के गर्भवती होने का पता शीघ्र ही चल गया और उस दिन से रेशम का अपनी सास और अपने श्वसुर से झगड़ा रहने लगा। श्रीचन्द्र समझता था कि उसे एक सुन्दर पत्नी मिली है। यद्यपि वह कुंवारी नहीं तो क्या हुआ? बच्चा होने के उपरान्त वह पुनः उसके काम में ही आएगी। इस कारण वह अपने माता-पिता को समझाने लगा।

श्रीचन्द्र के माता-पिता तब माने जब रेशम की माता मोहिनी ने अपनी योजना उनके सामने रखी। उसने कह दिया, "लड़की के घर कोई लड़का होने दो और उसे चार-पाँच वर्ष की आयु का हो जाने दो, तब लड़के से दावा करवा देंगे कि वह राजा महामाया प्रसाद का नाती होने से ज़मींदारी का मालिक है। मधुमोहन तो राजा साहब का लड़का है ही नहीं।"

इस आशा पर कि इस प्रकार वे दो-ढाई लाख की एक ज़मींदारी के मालिक बन सकते हैं, रेशम की अवस्था को छिपाने का यत्न किया गया।

:: 5 ::

मधुमोहन का कॉलेज खुला तो वह नगर को चला गया। स्टेशन से वह सीधा होस्टल में अपने कमरे में जा पहुँचा। चरणसिंह उसके पीछे वहाँ पहुँचा। उसी दिन कॉलेज खुला था और मधुमोहन अपना सामान कमरे में रख कॉलेज जाने के लिए तैयार खड़ा था कि चरणसिंह आ पहुँचा। उसने मधु से पूछा, "आ गए हो, मधु!"

"हाँ, चरण! मैं तो कॉलेज जा रहा हूँ। पीरियड आरम्भ होने में अभी आधा घण्टा है और वहाँ अन्य साथियों से मिलने का अवसर भी मिल सकेगा।"

"ठहरो। मैं भी चलता हूँ।" उसने अपना सूटकेस कमरे में रखा और चलने के लिए बाहर निकल आया। मधु ने कमरे को ताला लगाया तो दोनों मित्र होस्टल से निकल कॉलेज की ओर चल पड़े।

चलते-चलते चरणसिंह ने पूछ लिया, "मधु! तुम तो बताकर भी नहीं गए?"

"उस दिन तुम जब गए थे, माँ की चिट्ठी लेकर एक आदमी गाँव से आ पहुँचा। इस कारण उसी दिन मैं चार बजे की गाड़ी से गाँव को चला गया।"

"तो अपनी प्रेमिका से मिले हो?"

"मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि उसे अपनी बहन मानूँगा। अतः मैंने उसका विचार छोड़ दिया है।"

"तो मेरे लिए कोशिश कर दो।"

"क्या कोशिश कर दूँ?"

Central Library
167943
Gurukula Kangri (Deemed University) Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''उसके अपहरण में सहायता कर दो।''

''तुम लफंगे की मैं.... ।''

इस समय तक वे कॉलेज के लॉन में जा पहुँचे थे। श्रेणी के कुछ लड़के, जो उनसे पहले पहुँचे हुए थे, इन दोनों को आते देख, इनकी तरफ आने लगे थे। चरणसिंह ने अपने को लफंगा कहते सुना तो खड़ा हो गया और पूर्व इसके कि मधु कुछ समझ सके, उसने तानकर एक मुक्का मधु की कनपटी पर जड़ दिया। तत्पश्चात् उसने कह दिया, ''तो यह लफंगे का प्यार ले लो।''

मुक्का इतना अकस्मात् लगा था कि मधु का मस्तिष्क चकरा गया। वह गिरता-गिरता बहुत कठिनाई से बचा। चरणसिंह ने हँसते हुए कहा, ''लफंगे होने का सबूत मिल गया है न ?'' मधु का सिर चकरा रहा था। वह लॉन में रखी एक बैंच पर बैठ गया और सिर को पकड़कर होश में आने का यत्न करने लगा। उसकी कनपटी और आँख सूजने लगी थी और उस चोट के स्थान पर असह्य पीड़ा होने लगी थी। लॉन में खड़े हुए लड़कों ने चरणसिंह को मधु के मुक्का मारते देखा था और मधु को सिर पकड़कर बैंच पर बैठते देखा था। वे इन दोनों मित्रों में झगड़े का कारण नहीं जानते थे और मधु को, मुक्के के बदले में चरण को पीट उसका कचूमर निकालने की आशा में मधु के चारों ओर एकत्रित हो गए थे। चरणसिंह कुछ अन्तर पर खड़ा था और कुछ लड़के उसके समीप जा पूछने लगे थे, ''क्या हुआ है दोस्त ?''

''कुछ नहीं। कुछ प्यार की बातें हुई हैं।''

इस पर लड़के हँसने लगे।

मधु से भी लड़के पूछने लगे थे, ''क्या बात थी मधु ?''

''भाई ! पीटने वाले से पूछो, किसलिए यह घूँसा लगाया है ?''

लड़के उसकी ओर सहानुभूति से देखते रह गए।

इस समय तक मधु को कुछ चेतना हुई और वह विचार करने लगा कि उसे क्या करना चाहिए। वह उठा और सीधा प्रिंसिपल के कमरे में जा पहुँचा।

लड़कों ने उसे वहाँ जाते देखा तो खिलखिलाकर हँसने लगे। एक ने कह दिया, ''यह कागज़ी पहलवान ही निकला। गया है प्रिंसिपल से शिकायत करने। बेवकूफ है।''

सब लड़के मधु की हँसी उड़ाने लगे। परन्तु चरणसिंह चिन्ता में खड़ा था। एक ने उसके लम्बे हुए मुख को देखा तो पूछ लिया, ''प्रिंसिपल से डर लग रहा है क्या ?''

''नहीं।'' चरणसिंह ने तुरन्त उत्तर दिया और अब वह उसी बैंच पर बैठ गया। इसी समय घण्टी बजी और लड़के अपने-अपने पढ़ाई के कमरों में जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगे। चरणसिंह बैठा रहा। लड़के उससे कह रहे थे कि डरो नहीं, चलो क्लास रूम में। यदि प्रिंसिपल ने जाँच की तो हम तुम्हारी साक्षी भरेंगे।

''क्या साक्षी भरोगे ?'' चरणसिंह ने पूछ लिया।

''यही कि तुमने पीटा ही नहीं। यह तो कहीं बाहर से चोट खाकर आया है।''

चरणसिंह मुस्कराया और पूछने लगा, ''और तुम मेरे लिए झूठ बोलोगे ?''

''बहादुर लड़कों के लिए हमारे मन में सदा सहानुभूति रहती है।''

चरणसिंह ने उत्तर नहीं दिया। इस समय मधुमोहन प्रिंसिपल के कमरे से निकला। उसे देख चरणसिंह उठा और उसकी तरफ बढ़ा। उसने हाथ बढ़ाया हुआ था। यह हाथ उससे मित्रता कर लेने के लिए बढ़ाया गया था। मधु ने उसे आते देखा तो वह इस बार अपनी रक्षा के लिए तत्पर खड़ा हो गया। परन्तु चरणसिंह को हाथ बढ़ाए देख वह मुस्कराया और आगे बढ़कर हाथ मिलाने लगा। लड़कों ने इस प्रकार परस्पर सुलह होते देखी तो हँसते हुए कमरों में चले गए।

मधु क्लास रूम में नहीं गया। वह होस्टल में अपने कमरे को लौट पड़ा। चरणसिंह उसके साथ था।

चरणसिंह ने पूछा, ''डॉक्टर की तरफ चलोगे ?''

''नहीं। मैं तो कमरे में जाकर गरम पानी का सेंक करना चाहता हूँ। मुझे सख्त दर्द हो रहा है।''

दोनों मित्र कमरे में चले गए। चरणसिंह ने लोटा लिया और होस्टल के रसोईघर में जा लोटा भर पानी गरम कर लाया। इस समय तक मधुमोहन मुख की हवा से कपड़ा गरम कर चोट के स्थान पर सेंक करने लगा था।

अब चरणसिंह ने गरम पानी में कपड़ा भिगो उससे सेंक करना आरम्भ कर दिया। एकाएक चरणसिंह को स्मरण हो आया कि डॉक्टर एक पुड़िया दिया करता है, जिससे दर्द तुरन्त हट जाता है। उसने कपड़ा मधु के हाथ में दिया और होस्टल के डॉक्टर से दर्द दूर करने की पुड़िया लेने चल पड़ा।

वह दो पुड़िया ले आया। एक उसने उसी समय ताजे पानी से मधु को खिला दी। इससे दर्द दूर होने लगा। यह देख चरणसिंह ने कह दिया, ''मधु भैया! तुम यहीं आराम करो। इंग्लिश के पीरियड की हाजिरी देकर आता हूँ।''

मधु प्रिंसिपल के पास गया था। प्रिंसिपल ने उसके मुख पर देखा तो मधु ने कह दिया, ''सर! मेरी श्रेणी के एक लड़के ने मेरी कनपटी पर एक घूँसा इतने ज़ोर से मारा है कि मुख सूजता जा रहा है।''

''क्यों मारा है ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''श्रीमान्! यह तो उसे बताना चाहिए।''

''तो मेरे पास किसलिए आए हो?''

'' 'जस्ट टू इन्फार्म यू सर!' यह घटना कॉलेज के अहाते के भीतर हुई है।''

''तो तुम उसकी शिकायत करने आए हो?''

प्रिंसिपल एक अंग्रेज़ मिस्टर मौरिस था। इंग्लैंड में लड़के शिकायत लेकर अध्यापकों के पास नहीं जाते थे। शिकायत करना एक दुर्बलता समझा जाता है। इस कारण प्रिंसिपल ने मधु के वहाँ आने पर प्रसन्नता अनुभव नहीं की।

मधु ने कह दिया, ''मैं शिकायत करने नहीं आया, केवल सूचना देने ही आया हूँ।''

''तो मैं क्या करूँ?''

''यह मैं कैसे बता सकता हूँ, सर! मैं कभी किसी कॉलेज का प्रिंसिपल नहीं रहा।''

''मेरे विद्यार्थी जीवन में लड़के लड़कियों की भाँति शिकायतें करने नहीं जाया करते थे। मधु......।''

प्रिंसिपल की बात को बीच में ही टोककर मधु ने कहा, ''सर! मुझे तीव्र वेदना हो रही है। मैं जा रहा हूँ। मैंने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है।''

प्रिंसिपल भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। इस पर भी एक बात में वह स्पष्ट था। वह समझता था कि यदि यह लड़का अपने पीटने वाले को एक के स्थान पर दो घूँसे मारकर सूचना देने आता तो वह बहुत प्रसन्न होता।

इस पर भी उसने कुछ विचारकर यह निर्णय किया कि वह इन दोनों लड़कों के व्यवहार और पढ़ाई के विषय में पता करेगा। उस समय उसे एम०ए० की अंग्रेज़ी की क्लास लेनी थी। वह पढ़ाने चला गया। एक पीरियड पढ़ाकर उसने सबसे पहले चरणसिंह की जाँच करनी चाही। प्रिंसिपल ने चपरासी के हाथ चरणसिंह को बुला भेजा। इस समय चरणसिंह कॉलेज लौट आया था और अपनी क्लास में बैठा था। अंग्रेज़ी का घण्टा था और अंग्रेज़ी का प्रोफेसर पढ़ा रहा था। चपरासी ने प्रोफेसर को प्रिंसिपल की चिट दी तो प्रोफेसर ने चरणसिंह को प्रिंसिपल से मिलने के लिए कह दिया।

चरणसिंह उठकर प्रिंसिपल के कमरे में जा पहुँचा। प्रिंसिपल इस लड़के को मधु की अपेक्षा दुर्बल देख विस्मय में रह गया। उसके विस्मय का कारण यह था कि यह कैसे मधुमोहन को पीट सका है? प्रिंसिपल ने पूछ लिया, ''तुम चरणसिंह हो?''

''जी।''

''सैकेण्ड ईयर में पढ़ते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''जी।''

''तुमने मधुमोहन को पीटा है?

''जी।''

''क्यों?''

''सर! क्या उसने मेरी शिकायत की है और पीटने के लिए मुझे दण्ड देने को कहा है?''

''उसने केवल सूचना दी है।''

''तो श्रीमान्! जब कोई शिकायत नहीं तो जाँच के लिए कोई कारण नहीं। पहले शिकायत आने दीजिए। उसे अपने मुकद्दमे में 'प्राइमा फेसी केस' स्थापित करने दीजिए। फिर मैं उत्तर दे दूँगा।''

''तुम तो वकीलों की-सी बातें करते हो?''

''जी। मेरे बड़ों में, नगर के दो विख्यात वकील हैं। एक तो पंडित मुक्तानन्द हैं और दूसरे बाबू हरिहरसिंह हैं।''

''ओह!'' प्रिंसिपल ने मुक्तानन्द का नाम सुन सन्तोष प्रकट किया। उसने कहा, ''तब तो ठीक है। तुम अपने परिवार की 'ट्रैडीशन्ज़' का अनुकरण ही कर रहे हो। मुक्तानन्द ने अपने पढ़ाई के दिनों में मार-पीट का रिकॉर्ड कायम किया था।

''अब तुम जा सकते हो। ज़रूरत होगी तो बुला लूँगा।''

:: 6 ::

चरणसिंह प्रसन्न-वदन प्रिंसिपल के कमरे से निकल गया। प्रिंसिपल ने विचार किया कि यह लड़का मुक्तानन्द के काल की याद दिलाने वाला है। प्रिंसिपल इस विचार को मानने वाला था कि लड़कों को अपने झगड़े स्वयं निपटाने का यत्न करना चाहिए। इस कारण वह चरणसिंह के व्यवहार से असंतुष्ट नहीं था। मधुमोहन के व्यवहार को वह समझ नहीं सका था। उसके विचार में पीटे जाने के उपरान्त बताने के लिए आने में कुछ प्रयोजन नहीं था।

कॉलेज समय के उपरान्त चरणसिंह अपने कमरे में आया तो मधु शहर किसी डॉक्टर से सूजी हुई कनपटी पर दवाई लगवाने गया हुआ था। चरणसिंह उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करने लगा। मधु आया तो उसने बताया, ''पीड़ा तो पुड़िया खाने से ठीक हो गई थी। मैं सूजन के लिए औषधि लगवाने गया था। डॉक्टर ने दवाई लगा दी है।''

अगले दिन मधु बहुत प्रातः अपने अध्यापक शशिमोहन से मिलने चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया। शशिमोहन अब नगर में वकालत करता था। उसकी वकालत अब चलने लगी थी और वह अपनी पहली आर्थिक अवस्था से अच्छी हालत में था। वह मानक गंज में एक मकान लेकर रहता था।

मधु जब से नगर में पढ़ने के लिए आया था, प्राय: पंडितजी से मिलता रहता था। छुट्टियों के उपरान्त वह पंडितजी से मिलना आवश्यक समझता था। वह तो पहले ही दिन आता, परन्तु सूजे मुख के साथ आते हुए उसे लज्जा लगी थी। आज सूजन उतर चुकी थी, केवल चोट के स्थान पर नीले रंग का चिह्न रह गया था।

मधु जब पंडित शशिमोहन की बैठक में पहुँचा तो वहाँ पंडित भुवनचन्द्र को बैठे देख चकित रह गया। पंडित शशिमोहन अपने किसी मुवक्किल से अपने कार्यालय में बैठे बातचीत कर रहे थे। पंडितजी रेशमी धोती पहने थे और बदन से नंगे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे सीधे संगम-स्थान से, स्नान-पूजा इत्यादि से निपट लौट रहे हैं। उनके समीप भूमि पर जल से भरा पीतल का तुम्बा रखा हुआ था।

मधुमोहन बैठकघर में पहुँचा तो पंडित भुवनचन्द्र ने उससे पूछ लिया, ''मधुमोहन! कहाँ रहे इतने दिन?''

''पंडितजी! आप संगम स्नान कर सीधे आ रहे मालूम होते हैं?''

''हाँ। और तुम कहाँ से आ रहे हो?''

''कॉलेज में छुट्टियों के कारण गाँव चला गया था। कल ही वहाँ से लौटा हूँ। पंडित शशिमोहन मेरे ट्यूटर रहे हैं और इनसे अब भी मिलने आता रहता हूँ।''

''पंडितजी अभी आ रहे हैं। बैठो।''

मधुमोहन बैठ गया और पूछने लगा, ''माताजी कैसी हैं?''

''ठीक हैं। वे भी विचार करती थीं कि तुम गाँव चले गए होगे जो कभी आए नहीं।''

''कभी उनकी चरण-वन्दना करने आऊँगा।''

''कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम्हारी बकरी रूपी बुद्धि कसाई मन के हाथ से छूट रही है।''

मधु डेढ़ मास पहले की बात स्मरण कर मौन हो गया। वह बताना नहीं चाहता था कि पंडितजी की उक्ति का वह क्या अर्थ लगा रहा है और किस प्रकार कसाई के हाथ से उसकी बकरी छूटी है। परन्तु भुवनचन्द्र ने मुस्कराते हुए अपनी बात को आगे चला दिया। वे कहने लगे, ''उस समय का संकट तो टल गया है। तुम्हारी माताजी इसमें सहायक हो गई हैं; परन्तु मधु, संसार में ऐसे संकट तो पग-पग पर आते रहते हैं। मन और बुद्धि का झगड़ा मनुष्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक कार्य में चलता है। अब यह कनपटी का निशान भी उसी झगड़े का चिह्न नहीं क्या ?''

मधुमोहन तो स्तब्ध बैठा रह गया। मन तथा बुद्धि के, उस काल के झगड़े में, माँ सहायक हुई है और यह कनपटी का निशान उसी मन और बुद्धि के झगड़े का चिह्न नहीं है क्या, यह सुन वह आश्चर्यचकित रह गया। वह जानना चाहता था कि इस कनपटी पर मुक्के की बात और माँ के रेशम को विवाह देने की बात, पंडितजी कितना जानते हैं और कैसे जानते हैं। इस कारण उसने पूछ लिया, ''पंडितजी! मेरे मन और बुद्धि का झगड़ा क्या कनपटी पर लिखा है ?''

''हाँ।''

इस समय पंडित शशिमोहन आ गए। उन्होंने मधु को बैठे देख पूछ लिया, ''मधु, कब आए हो घर से ?''

मधुमोहन ने उठ चरण स्पर्श कर कह दिया, 'माताजी भी आपको नमस्कार कहती थीं। यही कहने के लिए आज आया हूँ।''

''अच्छा। पत्र लिखोगे तो उनको मेरा आशीर्वाद लिखना। तुम पंडितजी को जानते हो ?''

''जी। छुट्टियों से पहले मैं संगम-स्नान के लिए जाया करता था और वहाँ पंडितजी से परिचय हुआ तो फिर घनिष्ठता उत्पन्न हो गई। पंडितजी मुझ पर स्नेह रखते हैं। मैं पंडितजी के घर भी जाया करता हूँ पंडितायिन भी मेरे लिए वात्सल्यता रखती हैं और कभी-कभी दूध भी पिला देती हैं।

''मैंने इस बार माँ से इनका उल्लेख किया था। माँ ने कहा है कि पंडितजी को पंडितायिनजी के साथ गाँव में आने का निमन्त्रण दूँ।''

''मधु! अब घर में एक आर प्राणी भी आ गया है। निमन्त्रण में उसको भी सम्मिलित करना होगा।'' भुवनचन्द्र ने कह दिया।

''कौन है पंडितजी! कोई बकरी इत्यादि है ?''

पंडित भुवनचन्द्र हँस पड़ा और बोला, ''है तो बकरी ही, परन्तु वह तुम्हारी बुद्धि की भाँति किसी कसाई के हाथ में नहीं है। उसी बकरी के विषय में मैं पंडितजी के पास आया हूँ।''

''हाँ।'' शशिमोहन ने कह दिया, ''पंडितजी एक लड़की को गोद ले रहे हैं। पंडितजी, वह इच्छापत्र मैंने लिख छोड़ा है। वह आप ले जाइए। अपनी पत्नी को सुना दीजिए और फिर लड़की के माता-पिता के हस्ताक्षर के लिए भेज दीजिएगा। वहीं गाँव के दो व्यक्तियों के साक्षी के रूप में हस्ताक्षर भी होने चाहिए। उसकी एक प्रति आपके पास रहेगी और एक प्रति लड़की के माता-पिता के पास।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु पंडितजी के घर जाने-आने से जानता था कि उनके कोई संतान नहीं है। अब यह सब सुन उसने कह दिया, ''तो यह बकरी बाँध ली है अपने द्वार पर?''

''हाँ। मगर अभी वह बँधी नहीं है। हाँ, उसे बाँधने का यत्न कर रहा हूँ। इस पर भी यह बाँधना वैसा नहीं होगा जैसा तुम्हारा मन तुम्हारी बुद्धि को बाँधे लिये जाता था।

''देखो मधु! कल तुम्हारी बुद्धि ने तुमको एक भयंकर परिस्थिति में फँसने से बचा दिया है। यदि तुम अपने मन की बात करते तो इस समय अधिक कष्ट में होते।''

मधु, पंडितजी की बातों से चकित तो सदैव ही रहता था। परन्तु उन्होंने तो अब ज्योतिषी की-सी बातें करनी आरम्भ कर दी थीं। वह कुछ पूछने ही जा रहा था कि पंडित शशिमोहन ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, ''क्या हुआ था कल?''

मधुमोहन ने बिना यह बताए कि क्यों उसने चरणसिंह को लफंगा कहा था, पूर्ण घटना का विवरण बता दिया। साथ ही उसने बताया, ''मेरा मन कहता था कि चरणसिंह को इस घूँसे के प्रतिकार में चार घूँसे लगाऊँ। मैं उससे शक्ति में अधिक हूँ और उसे पीट सकता हूँ। परन्तु मेरी बुद्धि में विचार आया कि कॉलेज के अहाते में झगड़ा आरम्भ हुआ है और यदि मैं अपने पीटे जाने का बदला लूँ तो वह भी कॉलेज के अहाते में ही लेना है। इस कारण इसकी सूचना कॉलेज के प्रिंसिपल को दे देनी चाहिए, जिससे वह यह न कहे कि मैंने न्याय तथा दण्ड अपने हाथ में ले लिया है। मैंने प्रिंसिपल को सूचना दे दी है। मैं प्रिंसिपल साहब को कुछ समय भी देना चाहता हूँ कि यदि वे इस विषय में कोई कार्यवाही करना चाहते हैं तो कर लें। इस कारण आज भी चुप रहूँगा और फिर प्रथम अवसर पाते ही उसको इस मुक्के का बदला दे दूँगा।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ।'' पंडित भुवनचन्द्र ने कह दिया, ''मधु की बुद्धि दुर्बल थी। वह मनोद्गारों के आवेग के सामने निस्सहाय हो जाती थी। अब वह प्रबल हो रही है और यदि यह मानव-जीवन के इस रहस्य को समझ अपनी बुद्धि को निर्मल और आत्मा को सबल बना सका तो निःसंदेह यह एक कल्याणकारी जीवन चला सकेगा।

''पिछली बार मैंने इसे एक रहस्य की बात बताई थी। उसके उपरान्त यह मेरे घर नहीं आया। मैं बुद्धि को निर्मल और आत्मा को सुदृढ़ करने का उपाय इसको बता देता।

''देखा मधु, भगवान् ने कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।*
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥
एवं बुद्धेः परं बुद्धवा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥

"यहाँ काम से अभिप्राय है, मन के सब विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनको बुद्धि की सहायता और आत्मा के बल से दबाकर रखो।

"पर मैं तो कहता हूँ कि जब तुम दोनों ने हाथ मिला लिया है और मित्रतापूर्वक रात-भर एक कमरे में सोए रहे हो, तो फिर शान्ति का मार्ग क्यों नहीं अपनाते?" पंडित शशिमोहन ने सुझाव दे दिया।

"पंडितजी!" मधु ने आँखें नीचे कर कह दिया, "शान्तिः शान्तिरेव च। यह शान्ति भविष्य में होने वाली शान्ति का लक्षण नहीं। यह तो तभी हो सकेगा, जब पूर्व की अशान्ति का कारण मिट जाएगा। अभी तो वह कारण बना है और कल की घटना से वह प्रबल ही हुआ है।"

"क्या कारण है जो मिटा नहीं और जो तुम्हारे पीटे जाने से बढ़ा है?"

"चरणसिंह के मन की भावना है कि मैं एक सरलचित्त मित्र हूँ। वह समझता है कि वह मेरा अपमान कर सकता है और मैं उसे हँसी-मजाक में सह जाऊँगा। पीटे जाने से यह भ्रम बढ़ा है और इसको दूर करने का उपाय वर्तमान शान्ति से नहीं हो सकेगा।"

"तो तुम उसको पीटोगे?"

"पंडितजी! आप मेरे गुरु हैं। जैसी आप आज्ञा देंगे, मानूँगा। वैसे मेरी बुद्धि तो यही कहती है।"

इस पर पंडित भुवनचन्द्र ने कह दिया, "पंडितजी! मधु ठीक कह रहा है। मैं बताता हूँ। प्रिंसिपल उसे दण्ड नहीं देगा। इससे तो चरणसिंह का दिमाग और भी बढ़ जाएगा। उसको ठीक मार्ग पर लाने के लिए वर्तमान स्थिति में एक अच्छी पिटाई करनी ही चाहिए।"

"मुझे आशंका है कि कहीं प्रिंसिपल क्रोध में इसे कॉलेज से निकाल ही न दे।"

"कुछ नहीं होगा।" भुवनचन्द्र ने निश्चयात्मक बात की, "इसका अपना कल्याण कॉलेज की शिक्षा के साथ सम्बन्ध नहीं रखता।"

---

* इन्द्रियाँ बहुत प्रबल हैं परन्तु इन्द्रियों से भी प्रबल मन है। मन से प्रबल बुद्धि है और बुद्धि से बलवान आत्मा है। अतः बुद्धि को बलवान कर और मन को आत्मा के अधीन कर अपने घोर शत्रु काम को जीत लो! (भगवद्गीता 3-42,43)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशिमोहन चुप कर गया। अब फिर मधुमोहन को विस्मय हुआ। उसने अब पूछ ही लिया, पंडितजी आप मेरे जीवन के विषय में बहुत-कुछ जानते हैं। मेरे भूत, वर्तमान और भविष्य के विषय में भी ऐसे बता रहे हैं, मानो आपके सामने मैं एक खुली हुई पुस्तक हूँ।''

''हाँ मधु! तुम मेरे लिए बहुत सीमा तक ऐसे ही हो गए हो, जैसे किसी पुस्तक में लिखी कहानी हो। अभी इस कहानी को और पढ़ रहा हूँ।''

''पर आप क्यों और कैसे पढ़ रहे हैं ?''

''यह मैं अभी नहीं बताऊँगा। पहले तुमको एक-दो बातें और बतानी हैं। इसके बताने का समय तो पीछे आएगा।

''अच्छा, तुम दो-तीन दिन तक घर आओगे तो तुमको कुछ बताऊँगा।''

:: 7 ::

मधुमोहन ने दस बजे कॉलेज में उपस्थित होना था। इस कारण वह उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ गुरुजी से जाने की स्वीकृति माँगने लगा, ''अब जाने की स्वीकृति दीजिए। मुझे कॉलेज में उपस्थित होना है।''

''जाओ। इस रविवार को भोजन के समय आना। पंडितजी भी आएँगे।''

मधुमोहन ने दोनों बड़ों के चरण स्पर्श किए और चल दिया। होस्टल में पहुँचा तो चरणसिंह कॉलेज जा चुका था। उसने बिना भोजन किए अपनी पुस्तकें कमरे से लीं और क्लास रूम में जा बैठा।

वह दिन-भर प्रतीक्षा करता रहा कि उसकी सूचना पर प्रिंसिपल साहब ने किसी प्रकार की कार्यवाही करनी है अथवा नहीं। मध्याह्न की विश्रान्ति के समय उसके एक साथी ने यह सूचना दी कि पिछले दिन चरणसिंह को प्रिंसिपल ने बुलाया था और किसी को विदित नहीं कि क्या पूछताछ हुई है। चरणसिंह ने स्वयं उसे कुछ नहीं बताया था। चरणसिंह ने मधु से भी पूछा नहीं था कि उसने प्रिंसिपल से क्या शिकायत की थी और प्रिंसिपल ने क्या आश्वासन दिया था।

मधु कॉलेज आने से पूर्व भोजन नहीं कर सका था। इस कारण वह कॉलेज के रेस्तरां में चला गया। वहाँ चाय और मिठाई ले खाने बैठा ही था कि चरणसिंह आ पहुँचा। चरणसिंह ने उसके समीप बैठ उसकी प्लेट में से मिठाई का एक टुकड़ा उठा खाते हुए कहा, ''आज सुबह-सुबह कहाँ चले गए थे ?''

''गुरुजी को माँ का एक सन्देश देने गया था।''

''मैं तुमसे मिलना चाहता था।''

''क्या काम था ?''

''मैं समझता हूँ कि अब हमारे मन की ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम रेशम के विषय में शान्त चित्त से विचार करें।''

''हाँ, सुनो। मैंने समझ लिया है कि वह मेरी बहन ही है। माँ से बात हुई थी। उसने कहा है कि बहन तो किसी भी लड़की को बनाया जा सकता है। फिर रेशम तो बचपन से हमारे ही घर में रहती रही है। वह बहन के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकती। अत: उसका विवाह माँ ने एक अन्य स्थान पर कर दिया है। वह अपने पति के घर में प्रसन्न प्रतीत होती है।''

''तुम भी बुद्धू हो मधु! इस प्रकार के सम्बन्धों की स्वीकृति माता-पिता कभी नहीं देते और यदि इस तरह युवक बड़ों से पूछ-पूछ कर चलें तो नि:सन्देह यह दुनिया चलनी बन्द हो जाएगी।''

''पर चरण! माता-पिता क्यों इस प्रकार के सम्बन्धों को ठीक नहीं समझते?''

चरण के लिए चाय आई तो उसने और मिठाई मँगवा ली। दोनों खाते रहे। मधु के प्रश्न का उत्तर चरण ने यह दिया, ''उनकी जवानी ढल गई होती है और वे अपने लाभ-हानि को लोक-लाज पर न्यौछावर करने लग जाते हैं।

''मैंने बताया था न कि पुण्य वह है जो लोग पसन्द करें और पाप वह है जो जनसाधारण पसन्द नहीं करते। देखो, मेरे एक संरक्षक हैं। उनका नाम है श्री मुक्तानन्दजी। नगर के एक अति प्रसिद्ध वकील हैं। उनका ही यह कहना है कि पाप-पुण्य की अवहेलना का अर्थ है मूर्ख समाज के 'प्रैजुडिसेज़' (पूर्वग्रहों) का विरोध करना। इसलिए मुख्य बात यह हो जाती है कि हम समाज का विरोध सह सकते हैं अथवा नहीं। इसकी सामर्थ्य पैदा करनी चाहिए और अपने हितों की रक्षा करनी चाहिए।''

मधु को भूख लग रही थी और वह मिठाई खाता और चाय पीता हुआ चरण का मुख देखता रहा। चरण समझ रहा था कि उसकी बातों का प्रभाव मधु के मन पर हो रहा है। इस कारण उसने चाय का एक घूँट निगल कहना जारी रखा, ''इसलिए मैं तो तुमसे यह कहने वाला था कि समाज के रीति-रिवाज पार कर जीने का ढंग सीखो।''

मधु ने अपनी और चरण द्वारा मँगवाई मिठाई समाप्त कर उठते हुए कहा, ''अच्छा। चलना चाहिए। पीरियड शुरू होने वाला है।''

चरण ने जल्दी-जल्दी चाय पीते हुए कह दिया, ''तो दाम दे दो। मैं इसे समाप्त करता हूँ।''

मधु मुस्कराया और उसने पूरा बिल दे दिया। चरणसिंह की जीवन-मीमांसा पर मधु विचार कर रहा था। वह इस मीमांसा के उपरान्त किस क्रिया की प्रेरणा देने वाला था, मधु मन में विचार करता हुआ कॉलेज की मुख्य इमारत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर चल पड़ा। चरणसिंह अपनी रात-भर की विचार की हुई बात बताकर, उस पर मधु की प्रतिक्रिया देखना चाहता था। मधु कुछ उत्तर नहीं दे रहा था।

रेस्तरां में और रेस्तरां से कॉलेज की इमारत तक जाने के मार्ग पर, बहुत-से विद्यार्थी मधु और चरणसिंह को घुल-घुलकर बातें करते देख समझ रहे थे कि दोनों ने परस्पर सन्धि कर ली है और अब फिर उनमें गहरी छनने लगी है।

मधु अपनी श्रेणी में एक अति योग्य विद्यार्थी था। पिछली वार्षिक परीक्षा में वह अपनी श्रेणी में प्रथम रहा था और गणित में उसके सौ में सौ अंक आए थे। इससे उसकी योग्यता के विषय में चर्चा कॉलेज के सभी प्रोफेसरों और श्रेणी के विद्यार्थियों में फैल रही थी। इस पर कॉलेज खुलने के पहले ही दिन की घटना ने मधु को और भी ख्याति प्रदान की थी। इस पर भी सब विस्मय करते थे कि मधु ने एक भी प्रहार किए बिना चरणसिंह से सुलह कर ली थी।

कॉलेज हॉल में पहुँच चरण ने कहा, ''इसी विषय में तुमसे दिल खोलकर सायं अपने कमरे में बात करूँगा।''

''क्या लाभ होगा?''

''मैं तुम्हारी रेशम से सम्बन्ध बनाना चाहता हूँ।''

''मैंने सुना है कि रेशम का पति श्रीचन्द्र बहुत ही ठीक निशाना लगा सकता है और वह सदा अपने हाथ में बन्दूक लिये रहता है।''

इस कथन का अभिप्राय समझ चरणसिंह ने हँसते हुए कहा, ''तो क्या तुम समझते हो कि मैं रेशम से घनिष्ठता उत्पन्न करने के लिए उसके विवाहित पति से स्वीकृति लेने जाऊँगा।''

मधु ने हँसते हुए कहा, ''मैं समझा था कि जैसे तुम मुझको जीवन-मीमांसा पर लेक्चर देते रहते हो, वैसे ही उसको भी उपदेश देने वाले हो।''

''इसलिए मैं कहता हूँ कि तुम बिना सींग के गधे हो। भला यह बताओ तो कि तुम तो मेरे मित्र हो। तुमसे तो मन की बात बता दी है। क्या अपने शत्रु को भी ऐसी बातें बताने जाऊँगा?''

मधु ने अभी भी मुस्कराते हुए कह दिया, ''चरणसिंह! तुमसे किसी भी मूढ़ता की बात की आशा की जा सकती है।''

''सच? मैंने कोई मूढ़ता की बात आज तक की है?''

मधु विचार ही कर रहा था कि उत्तर दे अथवा नहीं कि घण्टी बजी और वे दोनों क्लास रूम में चले गए।

सायंकाल चरणसिंह की बातों से छुट्टी पाने के विचार से मधु कॉलेज से ही बाज़ार घूमने और अपने लिए साबुन, तेल इत्यादि कुछ आवश्यक वस्तुएँ खरीदने चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात वह बाज़ार से आया तो सीधा भोजनशाला में चला गया और वहाँ से कमरे में जा सो रहा। चरण पढ़ रहा था। उसने मधु को खाट पर लेटे चादर ओढ़, मुख मोड़ सोने का यत्न करते देख पूछ लिया, ''मधु, स्वास्थ्य तो ठीक है?''

''हाँ, ठीक है। केवल तुम्हारी जीवन-मीमांसा पर विचार कर रहा हूँ।''

''तो क्या विचार किया है?''

''अभी विचार समाप्त नहीं हुआ। जब किसी परिणाम पर पहुँचूँगा तो बताऊँगा।''

चरणसिंह का विचार था कि मधु रेशम के अपहरण के लिए अपने मन को तैयार कर रहा है। इस कारण उसके भीतर के शैतान को काम करने का अवसर देने के लिए उसे छोड़, वह अपने काम में लग गया।

पाँच ही मिनट में मधु खर्राटे भरने लगा था। चरण विचार करता था कि यह विचार करने का ढंग है भला?

अगले दिन प्रातः मधु पहले उठा और संगम-स्नान के लिए चला गया। वहाँ भुवनचन्द्र से भेंट हुई और मधु ने उस दिन शुक्र तारे से आई प्रकाश किरण के संगम के जल में डुबकी लगा नगर में किसी के घर में समा जाने की बात पर चर्चा आरम्भ कर दी।

''तो तुम उस दिन की बात भूले नहीं?'' पंडितजी ने पूछा।

''वह बात इतनी अनहोनी है कि भूल सकता ही नहीं। मैंने एक गुस्ताखी कर दी थी। मैंने आपको घी खाने की बात कहकर आपकी हँसी उड़ाने का यत्न किया था। पीछे मुझे अपनी कही बात पर शोक हुआ था। इस पर भी आपकी बात समझ नहीं सका और आज तो जिज्ञासा के भाव से पूछ रहा हूँ।''

''बात बहुत ही सरल है। उस दिन जो कुछ मैंने देखा था तुमको बता दिया था। आज उसके अर्थ समझाता हूँ। ये अर्थ मैंने घर पर समाधि की अवस्था में जाने थे।

''हमारे नगर में एक अति प्राणवान व्यक्ति का जन्म हो रहा है। वह प्राणवान व्यक्ति शुक्र लोक से धक्के देकर निकाला गया है। तुमने ययाति की कथा सुनी है अथवा नहीं?''

''जी नहीं।''

''कथा इस प्रकार है—बहुत पुराने काल में ययाति एक अति पुण्यवान राजा था। उसने अपना जीवन दो बातों में व्यय किया था। एक अपनी प्रेमिका के साथ सुख-भोग में और दूसरे यज्ञ, हवन, दान, तपस्या तथा राज्य-धर्म के पालन में। इस पर उसको स्वर्गलोक में स्थान मिल गया।''

परन्तु स्वर्गलोक में ययाति अपने जीवन पर पुनरवलोकन करता हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिमान करने लगा। अत: उसके अभिमान से क्रुद्ध हो देवताओं ने उसे स्वर्ग से पुनः इस भूलोक में धकेल दिया।

''ययाति यहाँ आया तो वह अपने सम्बन्धियों के घर में जा पहुँचा। अर्थात् उनके घर ही उसका जन्म हुआ। वहाँ अपने सम्बन्धियों की सहायता और पुण्य कर्मों के प्रभाव से यह पुन: स्वर्गलोक में प्रवेश पा गया।

''यही बात इस जीव की प्रतीत होती है। किसी पूर्वकाल में किसी लोक में इस जीव ने बहुत यज्ञ, तप, दान इत्यादि सुकृत कार्य किए थे। इसे शुक्र-लोक में स्थान मिला। वहाँ इसको अपने सुकृतों पर बहुत अभिमान हो गया था और वहाँ के अन्य जीवों से मतभेद होने से इसने उनको अपमानित करना आरम्भ किया तो वहाँ के सब जीवों ने मिलकर इसको धकेलकर भू-लोक में भेज दिया है।

''यह जीव दुर्भाग्य से इस देश के इस नगर में उत्पन्न हुआ है। बस अभी तक उस घटना का इतना ही अर्थ समझ में आया है। यदि यह जीव प्राणमय कोष से निकलकर विज्ञानमय कोष में चला गया तो अपने परिवार, अपनी जाति और अपने देश का कल्याण कर सकेगा। अन्यथा यह स्वयं डूबेगा, अपने परिवार को, अपनी जाति को और अपने देश को भी ले डूबेगा। यह भी सम्भव है कि यह मूढ़-मति ठीक मार्ग पर चल पड़े। तब इसके प्राण प्रबल होने से यह अपने सहयोगियों और देश को उन्नति के शिखर पर ले जाएगा।''

''किसलिए?''

''केवल इसलिए कि वह प्राणवान है परन्तु बुद्धिशील नहीं है। बुद्धि आ भी सकती है। देखो मधु! मानव में पाँच 'रखने' हैं। इनको संस्कृत भाषा में कोष कहते हैं। जीवात्मा इन कोषों में विचरता है। एक संतुलित शक्तियों वाले जीवात्मा को इस भू-लोक पर रहते हुए पाँचों कोषों में रहना चाहिए। ये कोष शरीर, मन, प्राण, बुद्धि और परमात्मा के हैं। इनमें उत्तरोत्तर कोषों में अधिक और अधिक रस लेना चाहिए; परन्तु कुछ मूढ़ विद्वान इसके अन्तिम दो कोषों अर्थात् बुद्धि और परमात्मा को छोड़ पहले तीन कोषों अर्थात् शरीर, मन और प्राणों में रहने लगते हैं। यही इस जीव का स्वभाव है। ऐसे जीव में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार विशेष मात्रा में रहते हैं।

''परन्तु भविष्य के विषय में बहुत दूर तक और स्पष्ट रूप में देखना सम्भव नहीं। इसी कारण कहता हूँ कि देखें, यह प्रबल जीव क्या करता है।''

''और कहाँ जन्म हुआ है आपके इस ययाति का?''

''एक हैं पंडित मुक्तानन्द। वे पहाड़ी क्षेत्र के रहने वाले हैं। यहाँ नगर में एक विख्यात वकील हैं।''

मुक्तानन्द का उल्लेख चरणसिंह भी कर रहा था। उसके द्वारा प्रतिपादित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-मीमांसा चरणसिंह ने वर्णन की थी। इससे उसके मन में यह विचार आया कि कदाचित् पंडितजी मुक्तानन्द के विषय में कुछ और भी जानते होंगे। वह उनसे पूछना चाहता था कि वे इस मुक्तानन्द के विषय में कुछ और जानते हैं क्या? परन्तु इस समय वे उसी चौराहे पर पहुँच गए, जहाँ से दोनों का मार्ग बदलता था। मधु को कॉलेज जाना था। इस कारण उसने पंडितजी को कह दिया, "पर पंडितजी! यह तो आपने बताया ही नहीं कि आपको दीखता कैसे है?"

भुवनचन्द्र हँस पड़ा और बोला, "अच्छा, यह भी बताऊँगा। परन्तु किसी दिन घर आओगे तब। यहाँ सड़क पर चलते हुए यह नहीं बताया जा सकता।"

"अच्छा। अवसर पाते ही आऊँगा।"

:: 8 ::

मधुमोहन अपने कमरे में गया तो चरणसिंह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने अपनी गीली धोती खूँटी से लटकाई तो चरणसिंह ने कह दिया "नदी का जल तो आजकल गंदा होगा।"

"नहीं। विशेष गन्दा नहीं। कुछ रेता अधिक हो गया है। हाँ, जब वर्षा मैदानों में होने लगेगी तो मैदानों की मिट्टी भी उसमें आने लगेगी। परन्तु मिट्टी गन्दी ही होती है, यह आवश्यक नहीं।"

"अपनी धोती को देखो, कितनी मैली हो रही है।"

"यह मैले रंग की हो गई है परन्तु चरण, यह गन्दी नहीं कही जा सकती।"

चरणसिंह यह सब नहीं समझ सकता था, अत: उसने बात बदलकर पूछ लिया, "तुम तो रात विचार करने खाट पर लेटे थे, परन्तु एक-दो मिनट में ही खर्राटे भरने लगे थे?"

"हाँ। मैंने बात विचार कर ली तो फिर शान्त चित्त से सो गया था।"

"तो क्या विचार कर लिया है?"

"अभी भोजन कर लें। फिर कॉलेज चलते समय बताऊँगा।"

दोनों भोजनशाला में चले गए। दोनों ने भोजन किया और फिर कमरे में आ कपड़े बदल पुस्तकें और नोटबुक ले कॉलेज को चल पड़े।

चरणसिंह उत्सुकता से मधु की विचारित बात को सुनने के लिए उसके मुख पर देख रहा था। मधुमोहन चुप, प्रसन्नवदन साथ-साथ चलता रहा। कॉलेज का प्रथम घंटा आरम्भ होने में अभी पन्द्रह-बीस मिनट थे। ये दोनों लॉन में पहुँच गए थे। वहाँ बहुत-से विद्यार्थी इधर-उधर घूम रहे थे। ये एक पेड़ के नीचे रखी बैंच की ओर जाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकाएक चरणसिंह खड़ा हो पूछने लगा, "तो क्या उत्तर है मेरे प्रस्ताव का?"

"ओह, हाँ। तुमको अपने विचार बताने हैं।"

इतना कह मधु बिना एक भी शब्द और कहे, चरणसिंह पर पिल पड़ा। दो ही घूँसे खाकर चरण भूमि पर चक्कर खाकर गिर पड़ा। अब मधु ने पाँव की ठोकरों से उसकी मरम्मत आरम्भ कर दी।

चरणसिंह ने 'हा-हा' कहना आरम्भ कर दिया। वह पीड़ा से कराह रहा था। मधु ने उसकी दुर्दशा हो गई समझ, उसे छोड़ दिया। उसकी और अपनी पुस्तकें उठाईं और बैंच पर रखकर, उसके समीप आया और उसे आश्रय दे उठाने लगा। इस समय तक कुछ लड़के, जो दोनों को लड़ते देख समीप आ चारों ओर एकत्रित हो गए थे, चरणसिंह को उठाने में सहायता देने लगे। चरणसिंह के दाँत हिल गए थे और उनसे रक्त बहने लगा था। कपड़े पाँव की ठोकरों से फट गए थे और पूर्ण शरीर पर बूटों की खरोंचों के निशान बन गए थे। मुख और कनपटी पर तो मुक्कों की चोटों के निशान थे।

तीन-चार लड़के चरणसिंह की सहायता के लिए आ गए। उसको भूमि से उठा बैंच पर लिटा दिया गया। एक लड़का भागा-भागा हलवाई की दुकान पर गया और वहाँ से एक गिलास में जल भर लाया।

चरण ने कुल्ला किया और उठकर बैंच पर बैठ गया। इस समय घंटी बजी तो मधुमोहन चरणसिंह को यह कह कि उसे प्रिंसिपल के पास रिपोर्ट कर देनी चाहिए, अपने पढ़ाई के कमरे में चला गया। अंग्रेज़ी की पढ़ाई हो रही थी और मधुमोहन सब लड़कों की भाँति शान्त चित्त से प्रोफेसर साहब से पाठ पढ़ रहा था। अभी पीरियड समाप्त नहीं हुआ था कि प्रिंसिपल का चपरासी आया। प्रोफेसर ने बताया तो मधु उठकर कमरे से बाहर निकल गया।

वह प्रिंसिपल के कमरे में गया तो उसने देखा कि चरणसिंह के मुख पर पट्टियाँ बँधी हुई हैं। शरीर के अन्य भागों पर, जहाँ बूटों की ठोकरें लगी थीं, 'टिंक्चर-आयोडीन' लगी थी।

एक ओर होस्टल के डॉक्टर और कम्पाउंडर खड़े थे। वे अपना मरहम-पट्टी का सामान लपेट जाने की तैयारी कर रहे थे। मधु प्रिंसिपल को 'गुड मॉर्निंग' कर सामने खड़ा हो गया। प्रिंसिपल कुर्सी पर बैठा था। उसने पूछा, "तुमने इसको पीटा है?"

"जी।"

"क्यों?"

"यह इसको बताना चाहिए। यदि यह गलत कहेगा तो फिर मैं इसके गलत कथन का संशोधन कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो कहता है कि कारण का पीटे जाने से सम्बन्ध नहीं। कारण ऐसा नहीं था कि इसे पीटा ही जाना चाहिए था।''

''सर! यह वही लड़का है जिसने दो दिन पहले मुझे पीटा था। इसके पीटे का निशान मेरी कनपटी पर अभी भी दिखाई देता है।''

''तो तुमने उस पीटे जाने का बदला लिया है।''

''जी।''

''मगर यह तो करता है कि उस पीटे जाने के बाद तुमसे सुलह हो गई था?''

''श्रीमान्! वह तो केवल 'सीज फायर' थी।''

''तो उस 'सीज फायर' को किसने भंग किया है?''

''मैंने।''

''क्यों?''

'' 'सीज फायर' की शर्त इसने भंग की थी और मैंने 'सीज फायर' भंग कर दी।''

''क्या शर्त थी जो इसने भंग की थी?''

''जिस कारण युद्ध पहले हुआ था, वह कारण फिर उपस्थित हो गया था। यह इसने किया था।''

''वह क्या कारण था?''

''तो आपने इससे नहीं पूछा?''

प्रिंसिपल युक्ति में दुर्बल पड़ता जाता था। इस कारण उसने बात बदलकर कह दिया, ''तुमने बदला अपराध से अधिक लिया है। साथ ही कानून अपने हाथ में लिया है।''

''यह तो आप बिना कारण जाने कह रहे हैं?''

प्रिंसिपल पेचताब खाने लगा। उसकी प्रत्येक बात को मधुमोहन काट रहा था। उसने पुनः कहा, ''मैंने तुम्हारी चोट देखी थी और इसकी चोट भी देखी है। दोनों में अन्तर तो स्पष्ट है।''

''वह तो इस कारण है कि मैं इससे अधिक शक्तिशाली हूँ। यह तो इसको समझ लेना चाहिए था कि इसको अपने से अधिक ताकतवर से अकारण झगड़ा नहीं करना चाहिए।''

''तो इसने अकारण झगड़ा किया था?''

''मैं ऐसा ही समझ रहा हूँ।''

''तुमको मेरे पास आना चाहिए था। तुम कानून अपने हाथ में नहीं ले सकते।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आया तो था। परन्तु जब मेरी सूचना पर आपने जाँच तक नहीं की तो कानून अपने हाथ में लेने का आरोप आप नहीं लगा सकते।"

"मैं यह मामला कॉलेज कौंसिल में उपस्थित कर देता हूँ और उसके सामने सिफारिश करता हूँ कि तुमको कॉलेज से निकाल दिया जाए।"

"आप कर सकते हैं।"

"ठीक है। तुम श्रेणी में तब तक बैठ नहीं सकते, जब तक तुमको कॉलेज कौंसिल बैठने की स्वीकृति नहीं देगी।"

"थैंक यू सर! क्या मैं अब जा सकता हूँ?"

इस पर तो प्रिंसिपल अन्यमनस्क भाव में खड़ा रह गया। मधु सामने खड़ा था। आखिर प्रिंसिपल ने कहा "जाओ। कॉलेज कौंसिल बुलाएगी तो हाज़िर हो जाना।"

मधु ने 'गुड आफ्टरनून' कहा और चला आया। वह होस्टल में नहीं गया। वह सीधा भुवनचन्द्रजी के घर को चल पड़ा। पिछले दिन पंडितजी ने गुरुजी की बैठक में बैठे हुए कहा था कि चरणसिंह की पिटाई होनी ही चाहिए। अत: वह अपनी कारगुज़ारी बताने के लिए उनसे मिलना चाहता था। पंडित भुवनचन्द्र ने यह भी बताया था कि उसे कॉलेज से निकाला नहीं जाएगा। अत: वह पंडितजी से जानना चाहता था कि कैसे होगा यह?

पंडितजी पूजा में लगे थे। वे घर के मन्दिर में थे। पंडितजी की धर्मपत्नी सुगुणी ने मधु को बैठाया और पूछ लिया, "कैसे आए हो मधु इस समय?"

"पंडितजी से कुछ काम है।"

"तो बैठो। वे आधे घंटे में खाली होंगे। इस समय भगवती की पूजा में हैं।"

"तो संगम पर किसकी पूजा करते हैं?"

"यह तुम उनसे ही पूछना। सुना है तुम्हारी माताजी ने हमको गाँव में आमन्त्रित किया है?"

"जी। मैंने कल पंडितजी को बताया था।"

"हम चलेंगे। जब तुम आगामी छुट्टियों में चलोगे तो हम साथ चलेंगे।"

"मैं तो कदाचित् कॉलेज से एक-दो दिन में ही निकाल दिया जाने वाला हूँ।"

"क्यों?"

"माताजी! एक लड़के को पीट दिया है। उसने प्रिंसिपल से शिकायत कर दी। प्रिंसिपल ने अभी तो मुझे श्रेणी से निकाल दिया है और मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है।"

"वह लड़का मर तो नहीं गया?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, जीवित है।"

"तो फिर कुछ नहीं होगा।"

पंडितजी बाहर आए तो मधुमोहन को वहाँ बैठे देख हँस पड़े। मधु ने उठकर चरण स्पर्श किए तो पंडितजी बोले, "तो तुम आ गए हो यहाँ?"

"जी।"

"देखो मधु! तुम्हें उस लड़के से सहानुभूति प्रकट करने के लिए जाना चाहिए। वह अपने घर चला गया है।"

"परन्तु वहाँ अपमान भी तो हो सकता है?"

"अपमान सहकर भी सहानुभूति तो प्रकट करनी ही चाहिए। वह तुमसे हाथ मिलाने आया था। तुमको अब उससे हाथ मिलाने के लिए जाना चाहिए।"

"मुझे तो कॉलेज में पढ़ाई करने से मना कर दिया गया है।"

"मैं सब जानता हूँ। वह घर पर अपने माता-पिता से सेवा के लोभ में गया है। परन्तु उसे चोटें इतनी सख्त नहीं आईं, जितनी तुमको आई थीं। एक बात तुमसे अधिक है। वह यह कि तुमसे पीटा जाना उसके लिए अप्रत्याशित है। वह तुमको एक बुद्धू, भीरू और मान-अपमान से नीचे समझता था। इसका अभिप्राय यह है कि वह तुमको इतना निर्लज्ज समझता था कि तुमको मान-अपमान की चेतना है ही नहीं।

"तुमने उसकी इन धारणाओं को धक्का लगाया है और अब वह कुछ न समझते हुए अपने घर में खाट पर लेटा है। तुमको वहाँ जाना चाहिए और उसके एक अन्य भ्रम का निवारण करना चाहिए। वह यह कि तुमने यह युद्ध धर्म-युद्ध के भाव से लड़ा है। वैसे तुम्हारा चरणसिंह से द्वेष नहीं, उसके अधर्माचरण से ही द्वेष है।"

"अच्छी बात है। उससे मिलने के उपरान्त मैं आपसे मिलूँगा। मैंने आपसे बहुत-कुछ जानना है।"

"ठीक है। परन्तु उसका अभी समय नहीं आया।"

:: 9 ::

मधुमोहन पंडितजी के घर से सीधा चरणसिंह के घर को चल पड़ा। वह वहाँ पहुँचा तो चरणसिंह का पिता कचहरी गया हुआ था। माँ भी घर पर नहीं थी। चरणसिंह हाय-हाय करता हुआ पलंग पर लेटा था। उसके पलंग के समीप कुर्सी पर, उसकी छोटी बहन सरस्वती बैठ गरम पानी की बोतल से उसकी कनपटी पर सेंक कर रही थी।

चरणसिंह मधु को देख प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती उठी और बैठकघर से उसके लिए एक कुर्सी लेने चली गई। मधु ने चरणसिंह की प्रश्नभरी दृष्टि का उत्तर दे दिया। उसने कहा, "मैं तुमसे हाथ मिलाकर सन्धि करने आया हूँ।"

"सच ? परन्तु यह सन्धि फिर टूट सकती है क्या ?"

"हाँ। यदि तुम सन्धि की शर्त तोड़ोगे।"

"पहली बार जब मैं हाथ मिलाने गया था तो क्या शर्त हुई थी जो मैंने तोड़ी थी ?"

इस समय सरस्वती कुर्सी ले आई। मधु और सरस्वती बैठे तो मधु ने कहा, "तुमने कुछ कहा था, जिस पर मैंने तुम्हें लफंगा कहा था। इस पर मुझे मुक्का लगा। वही बात तुमने कल रात फिर कही थी और उसका उत्तर माँगा था। इस बार तुमको लफंगा कहने के स्थान मैंने थोड़ा पीट देना उचित समझा है। आज फिर सन्धि करने आया हूँ।"

चरणसिंह ने कृतज्ञताभरी दृष्टि से मधु की ओर देखा। इसका कारण यह था कि उसने बहन के सामने वह सारी कथा नहीं बताई, जो रेशम से सम्बन्ध रखती थी। मधु ने हाथ आगे बढ़ाया तो चरणसिंह ने भी हाथ बढ़ा दिया। सरस्वती कुछ न समझती हुई यह नाटक देख रही थी।

चरणसिंह ने अपने मन में सन्तोष अनुभव करते हुए कहा, "मैं तो समझा था कि हमने परसों ही सुलह कर ली थी। आज पता चला है कि सुलह तब तक नहीं हो सकती, जब तक झगड़े का कारण दूर न हो जाए। हमारे मुआमले में तो यह सम्भव हो गया है परन्तु यह सबके साथ नहीं हो सकता।"

"मैं समझता हूँ कि हो सकता है। इसमें मन पर बुद्धि के नियन्त्रण की आवश्यकता होती है।"

"फिर लगे हो फिलॉसफी छाँटने ?"

चरणसिंह इस बात को समझ नहीं सकता था। उसने एक शब्द पढ़ा था 'माइंड'। ज्ञान, बुद्धि, स्मृति, देखना, सुनना इत्यादि अनेक कार्य इस एक मन के ही होते हैं, ऐसा वह मानता था। फिर एक कार्य का नियन्त्रण दूसरे पर कैसे हो सकता था ? एक अंग के भिन्न-भिन्न गुण एक दूसरे पर नियन्त्रण कैसे करें वह समझ नहीं सका था।

पहले तो मधु को भी सन्देह रहता था और स्वयं भी अपने कहने पर विश्वास नहीं करता था, परन्तु जब से पंडित भुवनचन्द्रजी से उसका सम्पर्क बना था, वह पहले से अधिक स्पष्टता से समझने लगा था और अधिक स्पष्टता से कहने भी लगा था।

इस पर भी मधु ने बात बदल दी। वह घायल मित्र को अधिक तंग नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता था। उसने हँसी की बातें करनी आरम्भ कर दीं। उसने कहा, "विद्यार्थी समझ नहीं सके थे कि हम एकाएक क्यों लड़े हैं और फिर इतनी सुगमता से सुलह क्यों कर लेते हैं।"

"दो लड़के मुझे घर पर छोड़ने आए थे। वे भी कह रहे थे कि तुम बहुत ही कुटिल बुद्धि हो। इसलिए मुझे तुमसे अब सुलह नहीं करना चाहिए।"

"उनके कथन के विपरीत मैं तुमको कुटिल तो नहीं समझता था। हाँ, मूढ़ मानता था। परन्तु तुमने जो सफाई अब दी है उससे मुझे तुम्हारी मूर्खता पर भी सन्देह होने लगा है।"

मधु हँस पड़ा। हँसते हुए वह कहने लगा, मूढ़ तो मैं हूँ नहीं। मूढ़ उसको कहते हैं जो नित्य के अनुभवों को भूल जाए और उनसे निकले परिणामों को समझ न सके। मैं ऐसा नहीं हूँ। मुझे अपने बचपन से लेकर आज तक की सब विशेष बातें स्मरण हैं। उनके परिणाम स्मरण हैं। जब कभी कोई मेरे परिणामों को असिद्ध कर देता है तो मैं मान जाता हूँ। यही मार्ग है बुद्धिमान बनने का।"

"तो तुम अपने को मुझसे अधिक बुद्धिमान समझते हो?"

"अभी तक तो समझ ही रहा हूँ।"

इस समय चरणसिंह की माता लौट आई। वह मधु को जानती थी। उसे विदित था कि मधु ने ही चरणसिंह की यह दुर्दशा की है। अत: वह मधु को वहाँ बैठे हँसते-हँसते चरणसिंह से बातें करते देख विस्मय में खड़ी रह गई। मधु ने उठकर पूर्ववत् तारादेवी के चरण स्पर्श किए।

माँ को विस्मय करते देख चरणसिंह ने कह दिया, "माँ, यह मधु है। ज़रा इसके लिए चाय बना दो।"

"बेटा! मेरा दिल अभी ठीक नहीं। देखो, ठीक हो जाता है तो बना देती हूँ।"

इस पर सरस्वती ने कह दिया, "माँ " मैं बना दूँ। चरण दादा भी तो पिएँगे।"

"पर चरण तो मधु के लिए कह रहा है?" तारा ने मन की कटुता प्रकट करते हुए कहा।

"नहीं माँ! चरण दादा के लिए भी चाहिए।" इतना कह सरस्वती उठ भीतर रसोईघर की ओर चली गई।

माँ विस्मय में सरस्वती को जाते देखती रह गई। चरण ने कह दिया, "माँ! यह सुलह करने आया है।"

"पर मैं तो तुम्हारे पापा से प्रिंसिपल के नाम एक पत्र लिखवाकर आई हूँ। वे कहते थे कि इसको पुलिस के हवाले करवाना है। इसने तुमको मार डालने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार से पीटा है। डॉक्टर से सर्टिफिकेट लेकर वे स्वयं पुलिस में रिपोर्ट करने वाले हैं। यदि उनको पता चल गया कि यह यहाँ है तो पुलिस यहीं आ धमकेगी।''

''माँ! यह तुमने क्या किया है?''

''मैंने कुछ नहीं किया। बड़े वकील साहब ने तुम्हारी अवस्था का वृत्तान्त सुन, स्वयं ही यह सब-कुछ किया है।''

''पर माँ, न तो मैं मरने वाला हूँ और न ही मुझे मार डालने वाली चोटें आई हैं।''

''बड़े और छोटे दोनों वकील आने वाले हैं। तुम स्वयं ही बता देना।''

चरणसिंह मुख देखता रह गया। तत्पश्चात् उसने भयभीत हो मधु की ओर देखकर कह दिया, ''मधु! यहाँ से भाग जाओ। कहीं पापा पुलिस ले आए तो बहुत मुश्किल हो जाएगी।''

''चरण! चिन्ता न करो। भागने से कोई बचता नहीं। और फिर सरस्वती बहन चाय बना रही है न। मैं पीकर ही जाऊँगा।''

तारा को चरणसिंह उस समय से अधिक चैतन्य प्रतीत हो रहा था, जब वह अपने पति को सूचना देने गई थी। यह उसने ही राय दी थी कि यह मुआमला पुलिस के हवाले होना चाहिए। मधु का कॉलेज से निकाला जाना उसके लिए पर्याप्त दण्ड नहीं है। वह चाहती थी कि यदि पुलिस आई तो इसके मामूली घावों को देखकर किसी प्रकार की कार्यवाही स्वयं करने से इनकार कर देगी।

इससे वह चुपचाप सरस्वती से खाली की कुर्सी पर बैठ गम्भीर विचार में लीन हो गई। चरणसिंह भी चिन्ता अनुभव कर रहा था। वह मन से इच्छा कर रहा था कि सरस्वती शीघ्र चाय बनाकर लाए और पुलिस तथा मुक्तानन्द इत्यादि के आने से पूर्व ही, मधु घर से चला जाए। वह उसके वहाँ पकड़े जाने को पसन्द नहीं करता था। मधुमोहन ने तारा को इस प्रकार मलिन मुख देखा तो उसे प्रफुल्लित करने के लिए कह दिया, ''माताजी! किस बात की चिन्ता कर रही हैं? मैं पकड़े जाने से नहीं डरता। चरण भैया को पीटने से पूर्व मैंने पीटने के सब परिणामों पर विचार कर लिया था। उसमें हवालात में डाले जाने की सम्भावना पर भी विचार किया था। आपको इस बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।''

चरण! मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी वेदना को कुछ अधिक ही डॉक्टर से प्रकट करना, जिससे मधु ज़रा हवालात का भी रसास्वादन कर सके।''

चरण मुस्करा रहा था। उसने कह दिया, ''हवालात कोई ससुराल नहीं दादा! जिसका रसास्वादन करने की अभिलाषा कर रहे हो।''

मधु के किसी प्रकार का उत्तर देने से पहले सरस्वती चाय बनाकर ले आई और दोनों मित्र चाय पीने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कथा उस काल की है जब देश में चाय का व्यापक प्रचार नहीं था। इस पर भी शिष्ट और धनी परिवारों में इसका चलन होता था। मुक्तानन्द की संगत के कारण चाय हरिहरसिंह के घर में भी चलती थी और मधु को पहले भी, जब कभी वह चरणसिंह के घर आता था, पीने को मिला करती थी।

:: 10 ::

चरणसिंह का पिता हरिहरसिंह मुक्तानन्द का सहपाठी था। मुक्तानन्द पहाड़ी था। उसका बड़ा भाई नगर में वकालत करता था। दोनों मित्र थे और कॉलेज में की जाने वाली शरारतों में प्रायः सहयोगी होते थे। मुक्तानन्द बी०ए० में पढ़ता था कि हरिहरसिंह का विवाह हो गया। हरिहरसिंह की पत्नी से मुक्तानन्द का भी परिचय हुआ तो मुक्तानन्द की घनिष्ठता हरिहरसिंह और तारा से बढ़ने लगी।

मुक्तानन्द बी०ए० में अनुत्तीर्ण हुआ और हरिहरसिंह उत्तीर्ण हो गया। इस पर तो मुक्तानन्द ने आगे पढ़ाई बन्द कर दी और तारा से घनिष्ठ व्यवहार में और भी आगे हो गया। हरिहरसिंह वकालत पढ़ने लगा था।

मुक्तानन्द के बड़े भाई ने उसे हाईकोर्ट की वकालत की प्राइवेट परीक्षा देने के लिए कह दिया और उसे विश्वास दिलाया कि वह सहज ही उत्तीर्ण हो जाएगा। परिणाम यह हुआ कि मुक्तानन्द ने तैयारी कर परीक्षा दे दी। वह पास हो गया। हरिहर अभी पढ़ाई ही कर रहा था कि मुक्तानन्द वकील बन भाई के साथ कचहरी जाने लगा।

इस समय हरिहर के घर लड़का हुआ। लड़का न केवल गौरवर्णीय था, वरन भूरे बालों और शरबती आँखों वाला था। उसकी रूप-रेखा भी हरिहरसिंह तथा उसके परिवार वालों से न मिलकर मुक्तानन्द से अधिक मिलती थी।

हरिहरसिंह के माता-पिता को सन्देह हुआ तो उन्होंने तारा को घर से निकाल देने के लिए हरिहर को कहना आरम्भ कर दिया। हरिहरसिंह सब बात जानता था। इस कारण उसने मुक्तानन्द की सहायता से तारा के लिए माता-पिता से पृथक् मकान ले दिया।

इस समय तक मुक्तानन्द को कचहरी में काम मिलने लगा था। मुक्तानन्द के भाई रामलाल की उसे बहुत सहायता प्राप्त थी। मुक्तानन्द तारा और हरिहर का खर्चा वहन करने लगा। परन्तु हरिहर अपने माता-पिता के साथ रहता था। तारा के लड़के का नाम चरणसिंह रखा गया था।

मुक्तानन्द की जेब में जब रुपये खनखनाने लगे तो उसकी दृष्टि अन्य स्त्रियों पर जाने लगी और उसका तारा के पास आना-जाना कम होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल का काम नगर के अंग्रेज़ों और अर्ध-अंग्रेजों 'एंग्लो-इण्डियंस' से अधिक था। मुक्तानन्द का काम भी उसी समुदाय में जम रहा था।

उसी समुदाय की स्त्रियों से मुक्तानन्द का सम्पर्क बन रहा था और तारा उसे भूलती जाती थी।

तारा ने जब इस स्थिति पर असन्तोष प्रकट किया तो मुक्तानन्द ने कह दिया, ''हरिहर अब वकील बन गया है। कहो तो उससे तुम्हारी सुलह करा दूँ। वैसे आर्थिक सहायता तो मैं देता ही रहूँगा।''

तारा ने इस प्रबन्ध को स्वीकार किया तो मुक्तानन्द हरिहरसिंह को पकड़कर वहाँ ले आया और तारा तथा हरिहर में सुलह हो गई। हरिहर ने स्पष्ट कह दिया, ''मुक्तानन्द! मैं तुम्हारे लड़के का पालन नहीं करूँगा।''

''भाई! यह तुमको किसने कहा है? तुम अपनी बीवी को समेटो, लड़के का प्रबन्ध मैं कर दूँगा।''

परिणाम यह हुआ कि चरणसिंह के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा का भार मुक्तानन्द ने वहन करना आरम्भ कर दिया। तब से यही प्रबन्ध चला आता था। हरिहरसिंह के माता-पिता ने हरिहरसिंह के व्यवहार को पसन्द नहीं किया और हरिहर तारा के साथ पृथक् मकान में रहने लगा।

चरणसिंह जब पाँच वर्ष का हो गया, तो तारा ने एक लड़की को जन्म दिया। वह हरिहरसिंह के रंग-रूप की थी। उसे देख हरिहर के माता-पिता ने यह समझा कि बहू का चलन अब ठीक है और उन्होंने पुत्र से सुलह कर ली।

चरणसिंह का खर्चा मुक्तानन्द देता था। यद्यपि हरिहरसिंह मुक्तानन्द के अधीन एक 'जूनियर' के रूप में कार्य कर रहा था, परन्तु आर्थिक स्थिति अच्छी हो रही थी। इस पर भी घर और सरस्वती का खर्च हरिहर करता था और चरणसिंह को अपने खर्च के लिए मुक्तानन्द के पास जाना पड़ता था।

पहले तो चरणसिंह इस व्यवस्था का अर्थ समझ नहीं सका, परन्तु ज्यों-ज्यों वह सज्ञान होता गया और पुरुष-स्त्री के सम्बन्धों को जानने लगा, तो उसे मुक्तानन्द के अपनी माता से अवैध सम्बन्ध का सन्देह होने लगा।

जब वह कॉलेज में भरती होने जा रहा था तो प्रारम्भिक खर्च के लिए हरिहर ने चरणसिंह को मुक्तानन्द के पास जाने को कहा। चरणसिंह ने इस रहस्य को पिता से ही जानने का निश्चय कर पूछ लिया, ''पिता जी! मुक्तानन्द मुझे इतना रुपया क्यों देता है?''

''वह देता है तो क्यों न लिया जाए?''

''मैं लेने से इनकार नहीं कर रहा। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि वह क्यों देता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अपनी माँ से पूछो या एक बात करो अपना मुख दर्पण में देख लो।''

पिता इससे अधिक स्पष्ट रूप में कह नहीं सका। परन्तु पुत्र को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछ लिया, ''इस पर भी आप माताजी से नाराज़ नहीं हैं। क्यों?''

''चरण!'' हरिहरसिंह ने अपनी जीवन-मीमांसा बता दी, ''मनुष्य एक अति दुर्बल और मूढ़ प्राणी है। यह पशुओं से भी गया-गुजरा है। यदि इसकी भूलों को क्षमा न किया जाए तो इस संसार में कोई भी सुखी न रह सके। तुम भूलें नहीं करते क्या? इसीलिए क्षमा करना मनुष्य का परम धर्म है।''

चरणसिंह को इससे अधिक जानने की आवश्यकता नहीं रही। वह मुक्तानन्द से खर्च ले कॉलेज में भरती हो गया।

कॉलेज में घटनावश उसके कमरे का साथी मधुमोहन बन गया। यद्यपि मधुमोहन भी अभी सर्वथा बालक मात्र ही था, देहात में रहते हुए अपनी नैसर्गिक कामनाओं से प्रेरित हो क्रिया-कलाप करता था, इस पर भी प्रखर बुद्धि रखने के कारण और शशिमोहन की धर्म और व्यवहार-सम्बन्धी प्रारम्भिक शिक्षा के प्रभाव के कारण, वह चरणसिंह पर एक दूसरा प्रभाव डाल रहा था। चरणसिंह में विचार-शक्ति उत्पन्न हो रही थी और स्वाभिमान जागृत हो रहा था।

मधु का चरणसिंह के घर आना-जाना हुआ तो उसे भी चरण के उद्गम स्रोत पर सन्देह होने लगा। ऐसी स्थिति में रेशम की बात आ उपस्थित हुई। रेशम की तस्वीर चरणसिंह की दृष्टि में आ गई और वह उस पर मुग्ध हो गया। इसके परिणामस्वरूप दोनों मित्रों में झगड़ा हो गया और फिर मार-पीट हो गई।

इस मार-पीट ने तो चरणसिंह के मस्तिष्क को एक गहरी चोट पहुँचाई। जब मधु ने चरणसिंह की माता को कहा, ''माताजी! चरण भैया को पीटने से पूर्व मैंने इसके परिणामों पर विचार कर लिया था।'' तो वह अपने से मधु की विलक्षणता पर विचार करने लगा था। उसने तो उसकी कनपटी पर मुक्का लगाने के पहले यह विचार भी नहीं किया था कि सुलह करने से पहले वैमनस्य के कारणों को मिटाना चाहिए। अब भी वह प्रिंसिपल के पास शिकायत करते समय विचार नहीं कर रहा था कि यह मुआमला पुलिस में भी जा सकता है और प्रिंसिपल भी इस पूर्ण घटना में दोषी) है।

मधु चाय पीने लगा था। चरणसिंह भी चाय की चुसकियाँ ले रहा था। माँ अभी भी चिन्तित थी। सरस्वती माँ से पूछने लगी, ''माँ! तुम भी पियोगी?''

तारा ने अभी उत्तर नहीं दिया था कि मुक्तानन्द, हरिहरसिंह और उनके साथ एक डॉक्टर वहाँ आ पहुँचे।

चरणसिंह ने मुस्कराते हुए मुक्तानन्द को नमस्ते की। मधुमोहन हरिहरसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तो जानता था परन्तु मुक्तानन्द को उसने पहले कभी नहीं देखा था। इसपर भी वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। तारा भी उठ खड़ी हुई और सरस्वती के साथ बैठकघर से कुर्सियाँ लेने चली गई।

कुर्सियाँ लाई गईं और सब बैठ गए तो सरस्वती ने पूछ लिया, ''पापा, चाय लाऊँ?''

''नहीं, हम डॉक्टर साहब के यहाँ से शर्बत पीकर आ रहे हैं।''

इस पर चरणसिंह ने कह दिया, ''पापा! मैं इससे आपका परिचय कराना चाहता हूँ। यह है मेरा एक परम मित्र मधुमोहन। इससे मेरा पिछले तीन दिन से किसी विषय पर झगड़ा हो रहा था। इस झगड़े में मारपीट भी हुई है। परन्तु अब हमने परस्पर सन्धि कर ली है और इकट्ठे चाय पी रहे हैं।''

''ओह! तुम भी एक गधे हो। भला इसको यहाँ किसलिए बुला रखा है? मैंने तो पुलिस को इसे हिरासत में लेने के लिए कॉलेज में भेजा है।''

''तब तो पापा! अच्छा ही हुआ है। वहाँ न होने से यह पकड़ा नहीं जाएगा''

''तो मैं इस गुण्डे को पकड़वाने के लिए पुलिस को यहाँ बुला लेता हूँ।''

बातों का सूत्र मधु ने अपने हाथों में लेते हुए कह दिया, ''पर वकील साहब! क्या लाभ होगा पुलिस को यहाँ बुलाने का? चरण मेरे पक्ष में साक्षी करेगा।''

''साक्षी तो पीछे होगी। पहले हवालात का स्वाद तो मिलेगा ही।''

''परन्तु, श्रीमान्! बिना रिपोर्ट लिखाए पुलिस पकड़ लेगी क्या? जब रिपोर्ट लिखाने वाला रिपोर्ट ही नहीं लिखाएगा तो पुलिस पकड़ेगी ही क्यों?''

''क्यों चरण!'' मुक्तानन्द ने उसकी ओर देख पूछ लिया, ''रिपोर्ट करोगे या नहीं?''

''चाचा! साधारण मार-पीट तो हुई है। यह ऐसी नहीं कि मैं उठ-बैठ न सकूँ अथवा पुलिस में जाने की आवश्यकता समझूँ। क्यों डॉक्टर साहब! आप क्या समझते हैं?''

''मैं तो अपनी डायरी में यह लिख आया हूँ कि शदीद चोटें आई हैं। चाकू से आक्रमण किया गया था। चाकू का वार तो कुक्षि में किया गया था, परन्तु तुमने हाथ आगे कर बचा लिया और तुम्हारे हाथ पर चाकू का सख्त घाव लगा है।''

चरणसिंह हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''पर देखिए डॉक्टर साहब! मेरे हाथों पर तो किसी भी प्रकार का घाव नहीं आया। अदालत में हाथ देखा गया और किसी प्रकार का घाव न हुआ तो डॉक्टर साहब झूठी रिपोर्ट देने के आरोप में पकड़ लिये जाएँगे और कदाचित् डॉक्टरी चिकित्सा करने से रोक दिए जाएँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वह घाव तो मैं अभी बना देता हूँ।''

''कैसे?''

''उसके लिए मैं औज़ार साथ लाया हूँ।''

''तो मेरा हाथ अपने औज़ार से काट देंगे?''

इस पर तो तारा लपककर उठ खड़ी हुई। वह चरणसिंह के पलंग पर पाँव की तरफ बैठी थी। उसके मुख से अकस्मात् निकल गया, ''नही वकील साहब! यह नहीं होगा। डॉक्टर तो घाव ठीक करने के लिए बुलाए जाते हैं, घाव बनाने के लिए नहीं।''

अब फिर मधु ने बात आरम्भ कर दी, ''वकील साहब! देख लिया है न? जो लड़ते हैं वे सुलह भी कर सकते हैं। जो लड़ नहीं सकते वे सुलह भी नहीं कर सकते।''

मुक्तानन्द को अपने कॉलेज के दिनों की घटनाएँ स्मरण होने लगी थीं। अन्तर यह था कि वह उक्त उक्ति की दूसरी बात को नहीं कह सकता था। वह कदाचित् इसलिए कि उसने कभी अपने को न लड़ सकने वालों में समझा नहीं था और वह जानता नहीं था कि न लड़ सकने वाले सुलह कर भी सकते हैं अथवा नहीं। उसने लड़के की इस बात को समझने के लिए पूछ लिया, ''पर न लड़ सकने वाले भगाए तो जा सकते हैं?''

''वह सुलह नहीं होती। देखिए, मैं बताता हूँ कि मेरे चरणसिंह को पीटने में एक कारण यह भी था कि इसके मस्तिष्क में कहीं यह न समा जाए कि मैं भीरू हूँ और भीरू होने से प्रिंसिपल के पास गया था। साथ ही भीरूता में ही इससे हाथ मिलाकर सन्धि कर ली थी।''

मुक्तानन्द को चरणसिंह की पिटाई से पहले की घटना का ज्ञान नहीं था, इस कारण वह मधु की बात समझ नहीं सका। वह कुछ न समझता हुआ चरणसिंह का मुख देखने लगा तो चरणसिंह ने संक्षेप में तीन दिन पहले की घटना का वृत्तान्त सुना दिया।

''तो तुमने अपने को बहादुर कहलाने के लिए चरणसिंह को पीटा है?''

''यह इस प्रकार नहीं, श्रीमान्! मैं बहादुर तो था। मैंने यह निश्चय कर रखा था कि चरणसिंह की उच्छृंखलता बन्द करनी है। परन्तु जब प्रिंसिपल ने किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं की, तो मैं चरणसिंह को पाठ पढ़ाना चाहता था। यह तो बिना पीटने के भी हो सकता था, परन्तु जब चरण ने अपने व्यवहार को जारी रखा तो मुझे यह सन्देह हो गया कि यह समझ रहा है कि मैं भीरू हूँ। इसके मुक्के को और प्रिंसिपल की अकर्मण्यता को मैं सहन कर रहा हूँ। इस कारण इसे पीटना आवश्यक हो गया। अब कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह समझ गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मेरा पहले सुलह कर लेना भीरूता अथवा मेरे साधुपन के कारण नहीं था। वह इसे अपनी भूल सुधारने का अवसर देने के लिए था। यह नहीं माना तो पीटना आवश्यक हो गया।''

''और यदि पुलिस पकड़कर ले गई तो?''

''तो मैं छूट जाऊँगा।''

''कैसे छूट जाओगे?''

''यह तो अभी कह नहीं सकता। परन्तु ऐसे झूठे बयानों में छिद्र निकालने कठिन नहीं होंगे, जैसे बयान डॉक्टर साहब तैयार कर रहे हैं।''

मुक्तानन्द देख रहा था कि डॉक्टर को चाकू चलाने की स्वीकृति तारा नहीं देगी। इससे वह परेशान था। डॉक्टर ने भी अपनी 'डायरी' में लिख तो लिया था, परन्तु उसने पुलिस को भेजी जाने वाली रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने से पूर्व हाथ पर घाव बना देने की माँग की थी। इसी कारण वह अपना 'सर्जिकल बॉक्स' साथ लेकर आया था।

डॉक्टर ने प्रश्नभरी दृष्टि से मुक्तानन्द की ओर देखा और मुक्तानन्द तारा के मुख पर देखने लगा। तारा इसका अभिप्राय समझ बोली, ''डॉक्टर साहब, जाइए। आपकी यहाँ आवश्यकता नहीं।''

इस पर चरणसिंह ने कह दिया, ''चाचा! इतना झूठ बोलने और मुकद्देमेबाजी करने से लाभ क्या होगा? मैं समझ गया हूँ कि मधु से झगड़ा करना व्यर्थ था। आप कहें तो मैं मधु का आपसे परिचय करा दूँ?''

''इस किस्म के गुण्डों से परिचय की आवश्यकता नहीं।''

''यह गुण्डा नहीं। सुरमा की जमींदारिन रानी चन्द्रावती का यह एक ही पुत्र है। हमारी श्रेणी का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी है। यह स्वभाव का बहुत अच्छा है।''

मुक्तानन्द की हँसी निकल गई। डॉक्टर अपना 'सर्जिकल बॉक्स' उठा जाने के लिए तैयार हुआ तो मुक्तानन्द परेशानी से मुख देखता रह गया। डॉक्टर ने जाने से पूर्व कह दिया, ''मैं अपना 'बिल' आपके मकान पर भेज दूँगा।'' इतना कह वह मकान से निकल गया।

मुक्तानन्द ने जेब से घड़ी निकाल समय देखा और कह दिया, ''पुलिस को कॉलेज गए एक घण्टा हो चला है। इस समय तक तो उसे यहाँ आ जाना चाहिए था।''

''नहीं आई तो अच्छा ही हुआ है।'' तारा ने कहा।

''क्यों? तुम ही तो कहती थीं कि पुलिस बुलानी चाहिए।''

''जब मैं यहाँ से गई थी तो चरण हाय-हाय और 'मर गया-मर गया' कह रहा था। मुझको क्रोध आ रहा था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों चरण! माँ के सामने बहाना कर रहे थे न?"

"नहीं चाचा! बहाना नहीं कर रहा था। मैं तो अपनी मानसिक वेदना को प्रकट कर रहा था। वह मधु के आने और इसके मुझे पीटने का कारण समझाने से कम हो गई है। अब आपसे इसकी दो बातें सुनकर तो मैं मन से सर्वथा स्वस्थ हो गया हूँ। शरीर पर घाव हैं परन्तु वे शीघ्र ही ठीक हो जाएँगे।"

मुक्तानन्द उठ खड़ा हुआ। इस समय हरिहरसिंह मौन और निर्लेप भाव में खड़ा रहा। चरणसिंह तो इसका कारण जानता था। हरिहरसिंह ने कह रखा था कि वह उसका लड़का नहीं है और वह उसकी भलाई-बुराई में कोई रुचि नहीं रखता। आज उसने अपने मन की अवस्था का साकार रूप ही दिखाया था।

मुक्तानन्द गया तो हरिहर भी अपने कमरे में चला गया। हरिहरसिंह के व्यवहार को मधु ने भी देखा था और वह चरणसिंह और मुक्तानन्द के मुखों पर समानता के लक्षण देख समझने लगा था। परन्तु तारा के सामने होने से वह कुछ कह नहीं सका। वह भी उठा और बोला, "चरण! मुझे अब चलना चाहिए। कदाचित् पुलिस मेरे कमरे के द्वार के बाहर बैठी मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी।"

"तो यहीं रह जाओ न!" तारा ने कह दिया।

"नहीं माताजी! छिपकर बैठने से तो मैं अपने को दोषी प्रकट करूँगा।"

:: 11 ::

मधु विचार कर रहा था कि पुलिस उसके कमरे के बाहर उसे पकड़ने के लिए बैठी होगी। वह विचार कर रहा था कि यदि ऐसी बात हुई तो पंडित शशिमोहन से उसकी जमानत का प्रबन्ध करने के लिए सन्देश भेज देगा।

उसको विस्मय हुआ, जब उसने वहाँ कमरे के बाहर किसी को नहीं देखा। उसने साथ के कमरे वालों से पूछा तो उसे पता चला कि पुलिस कॉलेज में आई थी और प्रिंसिपल से मिलकर चली गई है। उसने समझा कि प्रिंसिपल ने किसी प्रकार बात टाल दी है।

उसे हैरानी तो इस बात की थी कि मुक्तानन्द जैसा ख्याति का वकील कैसे झूठा मुकद्दमा बनवाने के लिए यत्न करने लगा था। उसके यत्न को तारा और चरणसिंह ने विफल कर दिया था, अन्यथा वह तो इस मार-पीट को एक संगीन वारदात बनवाने वाला था।

वह निश्चिंत हो अपने कमरे में बैठ अपना ध्यान पढ़ाई में लगाने लगा। इस समय उसकी श्रेणी के कुछ विद्यार्थी, जो होस्टल में रहते थे, उससे सब बात पूछने चले आए। बात यह थी कि मधु और चरण का झगड़ा उस दिन पूर्ण कॉलेज में चर्चा का विषय बन गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु ने बहुत ही संक्षेप में झगड़े का वृत्तान्त बता दिया। उसने कहा, ''चरणसिंह मेरी हँसी उड़ाया करता था। मैंने उसे मना किया। वह माना नहीं। इस पर परसों मैंने उसे एक कटु वचन कहा था। उसने मेरी कनपटी पर मुक्का लगा दिया। मैं तो उसी समय उसको पीटने वाला था, परन्तु यह विचार कर कि प्रिंसिपल को सूचना दे देनी चाहिए और यदि वह स्वयं किसी प्रकार की जाँच करना चाहे तोकर ले। उसकी जाँच के उपरांत पीटूँगा तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

''प्रिंसिपल ने जाँच नहीं की और चरण ने हाथ मिला मेरा मजाक उड़ाना चाहा। साथ ही उसने हाथ मिलाने के उपरान्त भी मेरी हँसी उड़ानी जारी रखी। इसलिए दो दिन का अवसर प्रिंसिपल को देकर मैंने चरणसिंह को पीट दिया है।''

लड़के इस व्यवहार से मधु के प्रशंसक हो गए। वे पूछने लगे, ''कॉलेज कौंसिल में तुम किस प्रकार अपनी सफाई उपस्थित करना चाहते हो?''

''मेरी सफाई यही है कि जब प्रिंसिपल ने मेरी सूचना पर जाँच नहीं की तो मैंने अपनी रक्षा के लिए उसे पीटा है। यदि उसे नहीं पीटता तो वह सब दुर्बल लड़कों को पीटता फिरता।''

''इससे तो तुमको दंड मिल जाएगा।''

''क्या दंड हो सकता है?''

''यह चर्चा थी कि तुमको कॉलेज से निकाल दिया जाएगा।''

''तो मैं निकल जाऊँगा। मुझे इस प्रकार के कॉलेज में पढ़ने से लाभ प्रतीत नहीं होता।''

अगले दिन प्रात:काल चपरासी प्रिंसिपल की लिखित आज्ञा लाया कि मधुमोहन को उस दिन चार बजे बाद दोपहर, कॉलेज कौंसिल के सामने प्रिंसिपल के कमरे में हाजिर होकर अपने कार्य की सफाई पेश करनी चाहिए।

सायं चार बजे वह कॉलेज कार्यालय में पहुँचा तो चरणसिंह वहाँ उपस्थित था। मधु ने उसे देख पूछ लिया, ''तो चरण! तुमको भी आज ही बुलाया है?''

''नहीं! मैं तो अपने-आप ही आया हूँ। मुझे कॉलेज के एक विद्यार्थी ने बताया था कि तुमको यहाँ बुलाया गया है।''

''तो तुम किसलिए आए हो?''

''मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने साक्षी के रूप में उपस्थित कर दो।''

''मैं तो बिना किसी साक्षी के ही अपनी बात कहने के लिए आया हूँ।''

''फिर भी, चाहो तो उपस्थित कर देना। कम-से-कम मैं यह जानने आया हूँ कि तुमने क्या बयान दिए हैं, जिससे मैं अपनी बारी पर तुम्हारे कथन का समर्थन कर सकूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमोहन ने कार्यालय से एक कागज़ के टुकड़े पर अपना नाम लिखकर प्रिंसिपल के कमरे में भेज दिया। वहाँ कौंसिल बैठी हुई थी।

कौंसिल में चार प्रोफेसर और पाँचवें प्रिंसिपल थे। मधु को बुलाने से पूर्व प्रिंसिपल ने पूर्ण घटना का वृत्तान्त जैसा उसे विदित था बता दिया। कौंसिल में गणित के प्रोफेसर मिस्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष भी थे। मधु घोष का सर्वप्रिय विद्यार्थी था। पिछली परीक्षा में वह सौ में से सौ अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ था। इस कारण वह प्रिंसिपल का बयान सुनकर मधु का पक्ष लेने लगा। उसने प्रिंसिपल से पूछना आरम्भ कर दिया, ''आपने मधुमोहन के पीटे जाने के कारण की जाँच क्यों नहीं की ?''

''मधु से पूछा था। उसने बताया नहीं। चरणसिंह से पूछा था तो वह बोला कि कारण का पीटने से कोई सम्बन्ध नहीं। साथ ही चरणसिंह कह रहा था कि उसने मधुमोहन से सुलह कर ली है। मैं विद्यार्थियों को अपने झगड़े स्वयं निपटाने के पक्ष में हूँ। इस कारण मैंने बात को आगे नहीं चलाया।''

''तो यह सिद्ध हो गया,'' घोष ने कह दिया, ''कि चरणसिंह ने अकारण पीटा था। कारण का कार्य से सम्बन्ध होता है। वह कहता है कि कारण का पीटने से सम्बन्ध नहीं, अर्थात् उसने अकारण पीटा है।

''पर मैं तो समझता हूँ कि कारण तो था। यह मधु से पता चलेगा। अन्यथा, मैं समझता हूँ कि चरणसिंह के दिमाग़ में खराबी ही मधु के पीटे जाने में कारण हो सकती है।''

प्रिंसिपल एक साहित्यिक व्यक्ति था। उसने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.एल. किया था और इसी गुण के कारण वह प्रिंसिपल नियुक्त हुआ था। साहित्यिक होने के कारण, भावुकता से ओत-प्रोत, वह युक्ति नहीं कर सकता था। इस कारण घोष की युक्ति का उत्तर नहीं दे सका।

इस पर मिस्टर घोष ने कह दिया, ''मैं प्रिंसिपल साहब से यह पूछना चाहता हूँ, क्या वह बताएँगे कि जब मुआमला उनके ज्ञान में आ गया तो उनको जाँच कर दोषी का पता क्यों नहीं करना चाहिए था ? क्या वे अब भी अपनी इस नीति को ठीक समझते हैं कि विद्यार्थियों को अपने झगड़े स्वयं निपटा लेने चाहिएँ ?''

प्रिंसिपल ने यह कह दिया, ''हमारे यहाँ इंग्लैड में यही ठीक माना जाता है।''

''तो फिर अब इस मुआमले को कौंसिल में किसलिए लाया गया है ?'

प्रिंसिपल ने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि पहले मधुमोहन से पूछताछ कर लेनी चाहिए। चरणसिंह के 'गार्जियन' मिस्टर मुक्तानन्द ने पत्र में लिखा है कि वह इतना घायल हो गया है कि एक सप्ताह तक 'बैड' से हिल नहीं सकेगा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मधु से पूछताछ कर उसे क्लास में बैठने की स्वीकृति दे देनी चाहिए और शेष मामला सात दिन के उपरान्त चलाना चाहिए। तब तक चरणसिंह अपने बयान दे सकेगा।''

मधु को बुलाया गया। वह जब 'गुड मार्निंग' कर सामने खड़ा हुआ तो घोष ने उससे पूछना आरम्भ कर दिया, ''मधुमोहन! क्या तुम बता सकते हो कि पहले चरण ने तुमको क्यों पीटा था?''

''जी। मैंने उसको 'लफंगा' कहा था। इस पर उसने मुझे कनपटी पर जबरदस्त मुक्का मारा था।''

''लफगा का क्या अर्थ होता है?''

''ए वर्थलैस फैलो।''

''यह तुमने उसे किसलिए कहा था?''

''उसने मेरी बहन से विवाह करने की इच्छा प्रकट की थी। तो मैंने कहा था कि वह ऐसा है। विवाह नहीं हो सकेगा।''

इस पर प्रिंसिपल ने कहा, ''मगर वह तो कहता था कि तुमसे उसकी सुलह हो गई थी।''

''हुई थी। मगर श्रीमान्। जब तक अपराधी अपने अपराध का पश्चात्ताप न करे, सुलह स्थिर नहीं रह सकती। यही बात चरणसिंह से हुई थी। उसने अपनी रट मेरी बहन से विवाह की जारी रखी। मैंने समझा कि चरणसिंह को अभी तक अनुभव नहीं हुआ कि उसने कुछ खराबी की है। अतः मैंने उसको यह अनुभव कराने के लिए कि उसे अपना व्यवहार सुधारना चाहिए, सुलह तोड़कर उसे पीटा।

''इस पर भी मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यदि प्रिंसिपल साहब जाँच कर उसे उसका दोष बता देते तो वह मान जाता और फिर उसे पीटने की आवश्यकता न रहती।''

प्रिंसिपल ने कह दिया, ''तुमने तो उसको इतना पीटा है कि वह घायल हो घर पर पड़ा है और सात दिन तक वह यहाँ आ नहीं सकता।''

''मगर श्रीमान्! वह तो बाहर कार्यालय में बैठा है।''

''सच? उसके 'गार्जियन' मिस्टर मुक्तानन्द ने यही लिखा था।''

''तो उसने ग़लत लिखा मालूम होता है। वह बाहर आया है और यह जानकर आया है कि कौंसिल बैठी है और वह उसके सामने अपने बयान देना चाहता है।''

इस पर घोष ने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि उसे भी बुला लेना चाहिए।''

प्रिंसिपल ने घण्टी बजाई। चपरासी भीतर आया तो कार्यालय से चरणसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुला लिया गया। अब वह भी मधु के साथ खड़ा हो गया। मिस्टर घोष ने उससे पूछ लिया, ''चरणसिंह! क्या तुम बता सकते हो कि मधु ने तुमको क्यों पीटा है?''

''कल मैं यह समझ रहा था कि मेरे साथ मधु ने बहुत अन्याय किया है, परन्तु अब विचार करने पर मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मैंने एक भारी अपराध किया था और उसका मुझे पीट देना ठीक ही था।''

''तुम भूल भी कर सकते हो।'' प्रिंसिपल ने उसकी सहायता करते हुए कहा। ''बताओ क्या अपराध किया था?''

''मैंने मधु से एक बात कही थी। इसने मेरे लिए एक अपमानजनक शब्द कह दिया। परिणामस्वरूप मैंने इसको एक मुक्का जड़ दिया। पीछे मैंने इससे हाथ मिला सुलह कर ली। इसने सुलह का पालन किया और वह अपमानजनक शब्द मेरे लिए पुनः नहीं कहा। परन्तु मैंने वही बात पुनः ही कही, जिस पर इसने वह अपमानजनक शब्द कहा था। इस पर इसने मुझे पीट दिया। मैं समझता था कि यह मेरा अधिकार है कि मैं इसको जो चाहे कहूँ और इससे जैसा चाहूँ व्यवहार करूँ। यह मेरी भूल थी और यही मेरा अपराध था।''

अब पुनः घोष ने प्रश्न पूछ लिया, ''तुम अपना ऐसा अधिकार क्यों मानते थे?''

इस पर चरणसिंह ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं इसको मूढ़मति मानता था और अपने को एक चतुर और व्यवहारकुशल युवक। मेरे मस्तिष्क में यह बात बैठी हुई थी कि चतुर लोग मूर्खों से ऐसा व्यवहार कर सकते हैं।''

इस पर तो कौंसिल क़े पाँचों सदस्य हँसने लगे। प्रिंसिपल ने लड़कों के बाहर जाने से पूर्व चरणसिंह से पूछ लिया, ''तुम अपने पीटे जाने का मधु को क्या दण्ड दिया जाना उचित समझते हो?''

चरणसिंह एक क्षण तक मौन रहकर बोला, ''यह पीटा जाना तो स्वयं एक दण्ड था। दण्ड देने वाले को दण्ड नहीं दिया जा सकता। वह दण्ड देने के लिए दण्ड का भागी नहीं होता। जजों के लिए ऐसा ही विधान है।''

प्रिंसिपल समझ रहा था कि यह मुक्तानन्द का कोई सम्बन्धी है। तभी वह इतना कानून छाँट रहा है। उसे ज़रा डाँट देने के लिए उसने कह दिया, ''यह तो कानून है, मगर जज की नीयत खराब भी हो सकती है, अथवा वह भूल भी कर सकता है।''

''श्रीमान!'' चरणसिंह का सतर्क उत्तर था, ''यह देखना उससे उच्च जजों, मेरा अभिप्राय है, हाईकोर्ट के जजों, का अधिकार है, एक अपराधी का नहीं।''

कौंसिल के सदस्य भी चरणसिंह के व्यवहार और वक्तव्य पर विस्मय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे। वे समझ रहे थे कि चरणसिंह मधुमोहन को बचाने का यत्न कर रहा है और अति योग्यता से कर रहा है।

प्रिंसिपल ने बात अभी भी नहीं छोड़ी। उसने पूछ लिया, "चरण! मधु को जज किसने नियुक्त किया था?"

"आपने। जब आपने उसकी सूचना पर किसी प्रकार की जाँच नहीं की तो यह स्वाभाविक था कि वह अपनी रक्षा के लिए अपराधी को दण्ड दे।"

घोष ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अब इनको बाहर भेजकर हमें विचार करना चाहिए।"

दोनों विद्यार्थियों को बाहर भेजकर प्रिंसिपल ने कहा, "मैं मानता हूँ कि मुझसे भूल हुई थी। परन्तु वह अनुमान में भूल थी। इसे 'एरर इन जजमेन्ट' ही कहा जा सकता है। मैंने बदमाश चरणसिंह पर विश्वास कर लिया था कि दोनों में सुलह हो गई है। वास्तव में इसने सच्चे हृदय से सुलह नहीं की थी।

"इसलिए मेरी सम्मति है कि चरणसिंह को कॉलेज से निकाल देना चाहिए। इसने मुझे धोखा दिया है।"

घोष साहब की न्यायिक बुद्धि को यह बात भी पसन्द नहीं आई। उसने मुस्कराते हुए कह दिया, "मैं समझता हूँ कि चरणसिंह और प्रिंसिपल साहब के व्यवहार में समान भूल है। दोनों की भूल 'एरर इन जजमेन्ट' ही है। प्रिंसिपल साहब ने यह अनुमान लगा लिया था कि विद्यार्थी इतने बुद्धिमान हो गए हैं कि वे स्वेच्छा और स्वतन्त्रता से न्याय-पथ को ग्रहण कर सकते हैं। यह 'एरर इन जजमेन्ट' थी। इसी प्रकार चरणसिंह भी बदमाश नहीं है। यदि इसका मन कलुषित होता तो वह इस प्रकार इस कौंसिल के सामने आकर अपने अपराध को इतने शब्दों में स्वीकार न करता। यह कौंसिल तो उसके जीवन को बरबाद कर सकती है। उस बेचारे ने भी 'एरर इन जजमेन्ट' ही की है। वह समझ रहा था कि संसार में चतुर और कार्यकुशल लोगों का अधिकार है कि वे सरलचित्त लोगों को उंगलियों पर नचाएँ।

"यह सिद्धान्त मिथ्या है और उसका यह अनुमान भी गलत सिद्ध हुआ है कि मधुमोहन बुद्धू और सरलचित्त है। मुझे तो उसके व्यवहार में एक बुद्धिशील और अति कुशल युवक के लक्षण दिखाई देते हैं।"

कौंसिल के सब सदस्य प्रोफेसर घोष के विचार से सहमत थे। परन्तु प्रश्न यह था कि कौंसिल क्या निर्णय दे। कौंसिल की इस मीटिंग में प्रोफेसर घोष प्रभावी भाग ले रहा था। इस कारण इस प्रश्न पर सब घोष साहब का मुख देखने लगे। घोष ने इस समस्या का भी सुझाव उपस्थित कर दिया।

उसने कहा, "प्रस्ताव इस प्रकार स्वीकार होना चाहिए। कौंसिल को यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकर अनुभव हुआ है कि चरणसिंह और मधुमोहन में पुन: मैत्री स्थापित हो गई है। मंत्री की सौगन्ध दोनों ने कौंसिल के समक्ष उठाई है और कौंसिल को विश्वास करने में पर्याप्त कारण दिखाई देता है कि इस बार दोनों वचनबद्ध रहेंगे।

"प्रिंसिपल साहब ने यह अनुभव किया है कि कॉलेज के लड़कों को अभी यह स्वतन्त्रता नहीं दी जा सकती कि वे अपने झगड़े स्वयं निपटा सकें। इस कारण प्रिंसिपल अब लड़कों के प्रत्येक प्रकार के झगड़े की, जो कॉलेज के अहाते में होंगे, स्वयं देख-रेख करेंगे और उन पर उचित कार्यवाही किया करेंगे।"

सब सदस्यों ने इस वक्तव्य को स्वीकार किया और कौंसिल की बैठक समाप्त हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा परिच्छेद

उक्त घटना के छः वर्ष उपरान्त की बात है। मधुमोहन ने एम०ए० गणित में पास कर लिया था। इस काल में मधु का सम्पर्क पंडित भुवन चन्द्र से अति घनिष्ठ हो चुका था।

मधु पंडितजी की भूतकाल, वर्तमान काल की परोक्ष और भविष्य की बातों के जान सकने के रहस्य को समझ चुका था। उसको यह विदित हो चुका था कि पंडितजी दुर्गा के उपासक हैं। दुर्गा की भक्ति के आश्रय वे योग द्वारा समाधि अवस्था को प्राप्त कर चुके थे। जब भी वे समाधि अवस्था में होते थे, उनके समक्ष पूर्ण संसार का मूल रहस्य ऐसे स्पष्ट हो जाया करता था जैसे कोई बालक किसी ज्ञानवान माता के सामने क्रीड़ाएँ करता दिखाई देता है।

मधु को जब विश्वास हो गया कि यह स्थिति न्यूनाधिक सीमा तक प्रत्येक मनुष्य प्राप्त कर सकता है, तो वह भी इस सिद्धि को प्राप्त करने में लीन हो गया था। इस दिशा में प्रयास करते हुए कॉलेज की पढ़ाई गौण और आत्मोन्नति मुख्य हो गई थी। इस पर भी वह अपनी श्रेणी में अन्त तक सर्वश्रेष्ठ रहा था। यह उसमें मन, बुद्धि और आत्मा को एक विचार-बिन्दु पर केन्द्रित कर सकने की शक्ति के कारण ही था।

इन छः वर्षों में एक बात और हुई थी। मुक्तानन्द और मधुमोहन में परिचय हुआ था और फिर लगाव भी हो गया था। इस परिचय का आरम्भ चरणसिंह के घायल होने के बाद मधु से सुलह के समय हुआ था। मुक्तानन्द को मधु विशेष प्रतिभायुक्त विद्यार्थी समझ में आया था। उसके यह पूछने पर कि यदि उस पर मुकद्दमा चला तो वह क्या करेगा, उसके सतर्क उत्तर ने कि वह छूट जाएगा, उसे बहुत ही प्रभावित किया था। वह समझ गया था कि मधु न केवल प्रतिभाशाली है, वरन स्वाभिमान और आत्मविश्वास से भी भरा हुआ है।

अगले दिन उसको पता चला कि चरणसिंह ने कॉलेज कौंसिल में जाकर मधु की सफाई प्रस्तुत की है। इस पर वह मधु को भाग्यशाली भी समझने लगा। अतः उसने चरण के साथ मधु को भी अपने घर पर बुलाना आरम्भ कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित भुवनचन्द्र को विदित था कि मधुमोहन और मुक्तानन्द में मेल-जोल है। इस कारण उसने मुक्तानन्द के विषय में अपनी पूर्ण जानकारी मधु को बता दी थी।

भुवनचन्द्र ने बताया था कि मुक्तानन्द प्राणमय कोष का जीव है। पंडितजी ने उसे समझाया था कि उपनिषद् में मनुष्य के जीवात्मा को पाँच कोषों में कैद हुआ कहा जाता है। अन्नमय कोष शरीर है। मनोमय कोष मन और इन्द्रियों के बन्धन हैं। प्राणमय कोष शरीर के अवयवों में कार्य करने की शक्ति का बन्धन है। विज्ञानमय कोष बुद्धि का संसार है। इन चारों बन्धनों से छूटकर अन्तिम कोष आनन्दमय है। यह है परमात्मा का लोक। जब जीवात्मा परमात्मा के घेरे में आ जाता है तो फिर वह इतना लम्बा-चौड़ा मैदान अपनी क्रीड़ा के लिए पा जाता है कि स्वतन्त्र ही कहा जा सकता है।

पंडित भुवनचन्द्र ने एक बात और बताई थी कि ये सब कोष एक-दूसरे के ऊपर हैं। अन्नमय कोष सबके भीतर का कोष है। इसमें बँधा जीव तो बाहर के कोषों से अनभिज्ञ होता है। इस कोष में ही सीमित रहने वाले जीव सर्वथा पशु समान होते हैं। उनका पूर्ण प्रयास शरीर का पालन ही रह जाता है।

इससे बाहर का कोष है मनोमय कोष। इस कोष में पहुँच मनुष्य शरीर, मन तथा इन्द्रियों में विचरता है। यह स्थिति भी पशु समान ही है।

अन्नमय तथा मनोमय कोष से बाहर का खोल है प्राणमय कोष। इसमें पहुँचा जीव शरीर, मन, इन्द्रियों और कार्य करने की क्षमता में ही विचरता है। प्राणमय कोष में रहता हुआ वह शरीर के भोग भोगता है। मन और इन्द्रियों के भोगों का भी रसास्वादन करता है।

यही अवस्था मुक्तानन्द की है और इसी स्थिति में उसके घर उत्पन्न होने वाला लड़का है।

पंडित शशिमोहन ने पंडित भुवनचन्द्र से कहा भी था कि मधु को मुक्तानन्द की संगत से बचाना चाहिए। भुवनचन्द्र का कहना था, ''मैंने मधु को मुक्तानन्द के जीवात्मा की वास्तविक स्थिति का दर्शन करा दिया है। अब उसके दोषों से बचना अथवा उनमें बह जाना उसके आत्मा का कार्य है। कोई किसी के कहने पर सुधरता अथवा बिगड़ता नहीं। वस्तु स्थिति का ज्ञान तो करा दिया गया है। शेष उसके अपने विचार करने की बात है।''

मुक्तानन्द मधुमोहन की बुद्धि की तीव्रता और स्वच्छता के चमत्कार देखने के लिए उसको अपने घर पर बुलाता रहता था और मधु नगर के एक विख्यात व्यक्ति से सम्पर्क के लोभ में वहाँ जाता रहता था।

चरणसिंह ने बी०ए० करके वकालत पास कर ली थी। उसने वकालत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करनी आरम्भ कर दी थी। हरिहरसिंह अब स्वतन्त्र प्रैक्टिस करता था। चरणसिंह ने तो आरम्भ से ही स्वतन्त्र कार्य करना आरम्भ कर दिया था।

यद्यपि चरणसिंह मुक्तानन्द से अपने सम्बन्ध को जानता था, इस पर भी वह यह जान कि उसने ही उसकी माँ को पथभ्रष्ट किया था और फिर पीछे अधिक सुन्दर स्त्रियों को प्राप्त कर सकने की क्षमता होने पर उसका त्याग कर दिया था, वह मुक्तानन्द से घुल-मिल नहीं सका था। उसके अन्तरात्मा में उसके प्रति तिरस्कार का भाव ही बना रहता था।

मुक्तानन्द भी चरणसिंह को मोटी बुद्धि का आदमी मानता था। उसकी रुचि मधुमोहन में थी। जब से उसने एम०ए० फर्स्ट डिवीजन में फर्स्ट रहकर किया था, मुक्तानन्द उसे कानून पढ़ने की प्रेरणा दे रहा था। मधु मान नहीं रहा था। एक दिन उसने पूछ ही लिया था, "तो तुम क्या करना चाहते हो?"

"जो चाहता हूँ कर रहा हूँ।"

"क्या कर रहे हो?"

"संसार के बन्धनों से मुक्ति पा रहा हूँ।"

"तो संन्यास ले रहे हो?"

"जी नहीं। मैं विवाह करने की इच्छा कर रहा हूँ।"

"तो संसार कैसे छूटेगा?"

"वकील साहब! संसार छूटता नहीं। संसार विजय किया जाता है। संसार के बहुत-से 'रखने' हैं। मैं ऐसे रखने में पहुँच गया हूँ, जहाँ रहते हुए मैं प्राण, मन और शरीर पर अधिकार पा चुका हूँ। परन्तु इससे ऊपर का भी एक रखना है। वहाँ पहुँचकर फिर और कुछ पाने को नहीं रह जाता। परन्तु वहाँ पहुँचे हुए को सब-कुछ, जो उसके भीतर है, वह सब प्राप्त होता है।"

"और वह क्या है?"

"उसे आनन्दमय कोष कहते हैं। वह ब्रह्म लोक है। शेष विज्ञानमय कोष अर्थात् बुद्धि का घर, प्राणमय कोष अर्थात् कार्य करने का स्थान, मनोमय कोष, भोग का स्थान और अन्नमय कोष, शरीर का पालन, सब उसके भीतर आ जाते हैं और रहते हैं। मुझसे कुछ भी छूटा नहीं, परन्तु मैं सब पर अधिकार पा गया हूँ।"

मुक्तानन्द ने हँसकर कहा, "मेरा विचार है थोड़ी मलाई-मक्खन खाया करो। मैं समझता हूँ गणित को सीमा से अधिक सीखते हुए मस्तिष्क में खुश्की बढ़ रही है।"

मधुमोहन भी हँस पड़ा। उसे अपने पंडित भुवनचन्द्र को कहे वाक्य स्मरण हो आए थे। उसने भी एक बार पंडितजी को कहा था कि उनको घी कुछ अधिक खाना चाहिए। इस समानता पर ही वह हँसा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तानन्द ने इस मूढ़ पक्षी को फाँसने की योजना बना ली। उसने कह दिया, "आज रात मेरे यहाँ भोजन करना। मैं तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करना चाहता हूँ।"

मधु मुस्कराता हुआ चुप रहा।

मुक्तानन्द ने इस समय अपना शहर के भीतर का मकान बेच डाला था और 'सिविल लाइन्ज' में एक विशाल कोठी ले उसको सब सुख-सुविधाओं और भोग-विलास के साधनों से सम्पन्न कर रखा था। उसका मकान, मधु की माता रानी चन्द्रावती ने मोल ले लिया था। मधु अब ज़मींदारी के पुराने मकान को छोड़ मुक्तानन्द वाले मकान में रहता था।

मधु ने रात के खाने पर आने का वचन नहीं दिया। न ही उसने इनकार किया था। वह अब भी प्रातः संगम-स्नान के लिए जाया करता था और वहाँ पूजा-पाठ भी करने लगा था। इसके अतिरिक्त वह घर में भी धारणा, ध्यान और समाधि का अभ्यास किया करता था। घर की ज़मींदारी थी। माँ खर्चा भेज रही थी और वह अपने विचार से आत्मोन्नति में लीन था।

पंडित भुवनचन्द्र ने अपनी छोटी साली मीना को गोद ले लिया था। तब वह नौ वर्ष की थी, जब गोद लिया था और अब वह पन्द्रह वर्ष की हो गई थी।

इन दिनों भुवनचन्द्र से भी मधु के विवाह की बात हुई थी। पंडितजी ने पूछा, "मधु, विवाह करोगे?"

"पंडितजी! मधु, फक्कड़ को, जो जीवन में एक पैसा पैदा करना भी नहीं सीखा, कौन अपनी लड़की देगा?"

"पर मैंने यह तो नहीं पूछा कि कौन लड़की तुमको दे रहा है अथवा नहीं। मैंने तो तुम्हारी बात पूछी है। विवाह करोगे?"

"यदि कोई मेरे मार्ग में बाधक न बनने वाली लड़की मिल गई तो विवाह कर लूँगा। माँ ज़मींदारी का मालिक चाहती है।"

"यह ठीक ही है। ऐसा होना ही चाहिए।"

इसके उपरान्त इस विषय में कोई बात नहीं हुई थी। इसके कुछ दिन पीछे ही मुक्तानन्द ने कहा था, "रात को आना, मैं तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर दूँगा।"

मधु इसे केवल हँसी मान वहाँ से चला आया।

:: 2 ::

मुक्तानन्द की कोठी से वह घर पर आया तो माँ को चिन्तित भाव में बैठे देख उसने चरण स्पर्श कर सामने खड़े-खड़े ही पूछा, "माँ! तुम चिंतित दिखाई देती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। इसी कारण अकस्मात् यहाँ आ पहुँची हूँ।"

मधु भी अब बैठ गया और प्रश्नभरी दृष्टि से माँ के मुख पर देखने लगा।

चन्द्रावती ने बताया, "कल मुझे सब-जज के न्यायालय से एक नोटिस मिला है कि मैं अदालत में हाजिर होकर बताऊँ कि क्यों न रेशम के लड़के रघुवीर को ज़मींदारी का उत्तराधिकारी मान लिया जाए।"

"इसमें कारण क्या बताया है?" मधु ने पूछ लिया।

"यही कि तुम अपने पिता के पुत्र नहीं हो और रेशम तुम्हारे पिता की लड़की है।"

"और वस्तुस्थिति क्या है?"

चन्द्रावती ने आँखें नीचे कर कहा, "तुम हो तो अपने पिता के पुत्र ही, परन्तु तुम्हारा बीजारोपण विवाह के पहले हुआ था। जन्म विवाह के सात मास पीछे हुआ था। रेशम के विषय में तो तुम जानते ही हो कि वह तुम्हारे पिता से तुम्हारी बहन है, परन्तु मोहिनी का कभी भी विवाह तुम्हारे पिता से नहीं हुआ। इस पर भी जो कुछ लड़की का अधिकार हो सकता है, वह उसे दिया जा रहा है।"

"देखो माँ! जहाँ तक विवाह का सम्बन्ध है इसकी कीमत कानून से कुछ भी होती हो, परन्तु बुद्धि में कुछ नहीं। मुख्य बात सन्तान से है। वह विवाह के पहले हुई अथवा पीछे हुई, विवाह करके हुई अथवा बिना विवाह के हुई, यह विचारणीय नहीं है।

"मुख्य बात है कि हम दोनों एक ही पिता की सन्तान हैं। इस कारण मेरी दृष्टि में तो वह बहन ही है। मैं एक सुझाव देता हूँ।"

"क्या?"

"रेशम बहन से सुलह कर ली जाय। उसके लड़के को उत्तराधिकारी मान लिया जाए और वह मुकद्दमा वापस ले ले।"

"और तुम?"

"मैं इस योग्य हूँ कि अपने निर्वाह के लिए पैदा कर सकूँ। साथ ही मैं विवाह करने का विचार नहीं रखता।"

"परन्तु तुम्हारे पंडित भुवनचन्द्र ने तो एक पत्र में लिखा है कि तुम विवाह की इच्छा कर रहे हो? मैं उनके पत्र का उत्तर स्वयं यहाँ आकर देना चाहती थी कि यह नोटिस मिल गया है।"

"माँ! वह विचार तो रेशम बहन के इस दावा करने से पहले था। मैं अब अपना विचार बदल रहा हूँ।"

"मैं एक विचार लेकर आई हूँ।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''रेशम के घर वाले को मुकद्दमे में परास्त किया जाए और फिर पीछे उनसे सुलह की जाय। तब मैं उसके लड़के को ज़मींदारी में कुछ शर्तों के साथ तुम्हारे लड़कों के बराबर अधिकार दे दूँगी।''

''माँ! क्या लाभ होगा मुकद्दमेबाजी से?''

''यह मेरे और तुम्हारे मान का प्रश्न है। मैं यह समझी हूँ कि रेशम से तुम्हारे विवाह का मेरे द्वारा विरोध करने का मोहिनी यह बदला ले रही है। मैंने उसके अधिकारों पर आघात नहीं किया। वह अपनी अनुचित इच्छा की पूर्ति न हो सकने का बदला ले रही है। जो कुछ एक लड़की को मिलना चाहिए, दिया जा रहा है।

''इस पर भी मैं रेशम के लड़के से न्याय करने का ही विचार कर रही थी; परन्तु मधु, वह तो यह सिद्ध कर रही है कि मैं तुम्हारे पिता की निष्ठावान पत्नी नहीं थी और तुम किसी अन्य के पुत्र हो। यह सिद्ध किया जाना मैं कैसे सहन कर सकती हूँ।''

मधु चुप कर गया। वह भी मन में विचार करने लगा था कि एक बार तो श्रीचन्द्र इत्यादि को मुकद्दमे में पराजित करना ही पड़ेगा। उसे चुप देख चन्द्रावती ने कहा, ''किसी योग्य वकील को करना है। मैं मुक्तानन्द को यह मुकद्दमा करने के लिए नियुक्त करना चाहती हूँ।''

''शशिमोहन जी को क्यों नहीं?''

''नहीं मधु! वह कचहरी के कार्यों के लिए उपयुक्त व्यक्ति नहीं है।''

''तो वे किस योग्य हैं?''

''पूजा-पाठ, जप-ध्यान और शिक्षा इत्यादि के लिए।''

मधु को माँ का यह विश्लेषण ठीक प्रतीत हुआ था। परन्तु वह मुक्तानन्द पर विश्वास नहीं कर सकता था। वह विपक्षी से मिलकर मुकद्दमा खराब भी कर सकता था।

मधु ने मुक्तानन्द के विषय में अपना सन्देह बताया तो चन्द्रावती ने कह दिया, ''तुमको उसकी निगहबानी करनी होगी और तुम मुकद्दमे तक नगर में ही रहोगे।''

मधु माँ को न नहीं कर सका। इस पर माँ ने आगे कह दिया, ''तुम रात के खाने के बाद मुक्तानन्द से मिल लो और कल प्रातःकाल का समय मुकद्दमे के विषय में बातचीत करने का निश्चय कर आओ। मैं रात भुवनचन्द्रजी से मिलने जा रही हूँ।''

''कुछ काम है?''

''तुम्हारे विवाह के सम्बन्ध में बात करनी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उन्होंने किसी लड़की का प्रस्ताव किया है?"

"किसी लड़की का नाम तो नहीं लिखा। केवल यह लिखा है कि इस विषय में मुझे उनसे और पंडित शशिमोहन से बात करने के लिए यहाँ आना चाहिए। मैं उनके मन की बात जानना चाहती हूँ।"

मधु को कुछ ऐसा सन्देह हुआ था कि भुवनचन्द्र मीना के विषय में विचार करते होंगे। वह मन में कल्पना करने लगा था कि वह कैसी रहेगी। एक बात वह उसके पक्ष में समझता था। वह यह कि वह उसके आध्यात्मिक जीवन में बाधा नहीं बनेगी।

मधु ने माँ से अपने मन का संशय वर्णन नहीं किया। चन्द्रावती ने अपनी घोड़ागाड़ी तैयार करवाई और भुवनचन्द्रजी के मकान पर जा पहुँची।

मधु विचार कर रहा था कि मुक्तानन्द ने भी उसे एक लड़की दिखाने के लिए कहा है। उसने समझा कि मुक्तानन्द के किसी सम्बन्धी की लड़की होगी, जो वह दिखाना चाहता है। यद्यपि निमन्त्रण के समय उसने मुक्तानन्द के सम्बन्धी की लड़की में अरुचि ही अनुभव की थी; परन्तु अब माँ के इसी कार्य से वहाँ जाने की बात पर वह पुनः मुक्तानन्द के प्रस्ताव के विषय में विचार करने लगा। उसे यह सम्बन्ध जीवन की प्रगति में बाधक ही प्रतीत हो रहा था।

रात के खाने पर मुक्तानन्द के घर जाने में अभी दो घंटे का समय था। वह एक पुस्तक ले पढ़ने लगा था कि चरणसिंह आ गया।

"आइए वकील साहब!" मधु ने पुस्तक से मुख उठा चरणसिंह का अभिवादन करते हुए कहा।

चरणसिंह ने बैठते हुए कहा, "माँ कई दिन से कह रही थी कि मैं तुमको पकड़कर घर ले आऊँ, परन्तु समय ही नहीं मिलता था। आज कठिनाई से समय निकाला है। चलो, रात का खाना वहाँ खाएँगे और फिर तुमको यहीं छोड़ जाऊँगा।"

मधु ने पुस्तक एक ओर रखते हुए कहा, "रात को खाने का निमन्त्रण तो मुक्तानन्दजी ने दिया है। कुछ मुझे अपना भी काम है। हाँ, वहाँ जाने में अभी दो घण्टे शेष हैं। कहो तो इस समय तुम्हारी माँ से मिलने चल सकता हूँ।"

"पर तुम रात के खाने के समय मुक्तानन्द के यहाँ किसलिए जा रहे हो? वहाँ तो इस समय सुरा-सुन्दरी-पान का कार्यक्रम होता है। आज शनिवार है।"

"तो होता रहे। मुझे उनसे अपना कुछ काम है।"

"तो ऐसा कर यहाँ से अपने घर चलते हैं और वहाँ से मुक्तानन्द के यहाँ दोनों चलेंगे। मैं तो सदा आमन्त्रित हूँ। ज़रा तुम जैसे साधु को वहाँ के वातावरण में छटपटाते देखने में मजा आएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। मैं भी देखना चाहता हूँ कि ये मूर्ख मद्य-पान में क्या रस लेते हैं।"

दोनों मित्र चल पड़े। चरणसिंह अभी भी अपने पिता हरिहरसिंह के घर में ही रहता था, इस पर भी दोनों के पृथक्-पृथक् कार्य थे, पृथक्-पृथक् बैठकघर थे, पृथक्-पृथक् मुन्शी थे और पृथक्-पृथक् ग्राहक थे। कभी ऐसा भी हो जाता था कि पिता-पुत्र कचहरी में, मुकद्दमे में एक-दूसरे के मुकाबले में जा खड़े होते थे। ऐसी स्थिति में दूसरे वकील पिता-पुत्र में बहस होती सुनने में रुचि लेते थे।

चरणसिंह का कार्य हरिहरसिंह से अधिक चल रहा था। यद्यपि हरिहर अब मुक्तानन्द से स्वतन्त्र कार्य कर रहा था, इस पर भी मुक्तानन्द चरणसिंह की सहायता करता रहता था।

चरणसिंह की माँ, बहन और हरिहरसिंह मकान में पृथक् रहते थे और चरणसिंह रसोइया पृथक् रखकर, अपना पृथक् मकान बनाए हुए था। मधु इस स्थिति को जानता था। इस कारण उसने चलते-चलते पूछ लिया, "यह चाय का निमन्त्रण माताजी की तरफ से दे रहे हो अथवा अपनी तरफ से?"

"बुलाया माताजी ने है, पर चाय तुम मेरी बैठक में पियोगे।"

"तब तो ठीक है।"

"मैं वहीं माताजी को बुला लूँगा।"

"कुछ विशेष कांम है क्या?"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ मेरे विवाह की चर्चा होने वाली है।"

"तो तुम विवाह कर रहे हो?"

"और बिना माताजी द्वारा पसन्द की हुई लड़की से।"

"कौन है वह?"

"अपने मुन्शी की लड़की है।"

"तुमने पसन्द की है क्या?" चलते-चलते मधु ने खड़े हो पूछ लिया।

"नहीं मधु! उसने मुझको पसन्द किया है।"

"पर मुंशी तो मुसलमान है?"

"हाँ, मगर शादी हिन्दुआना तरीके से होगी।"

"यह कैसे हो सकेगी?"

"यहाँ एक आर्य समाज है। मैंने वहाँ से पता किया है। वे इसको सम्भव मानते हैं।"

"तुम्हारी माताजी मेरे द्वारा तुमको शादी न करने की प्रेरणा देना चाहती हैं क्या?"

"मुझको यही समझ में आ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं तो इसमें निष्पक्ष रहूँगा।"

"माताजी यह समझती हैं कि तुम पूजा-पाठ, स्नान-ध्यान करने वाले युवक हो। तुम एक ठाकुर के मुसलमान की बेटी से विवाह करने के विरुद्ध होगे।"

"पर मैं न तो इसके पक्ष में हूँ न ही विपक्ष में।"

"पक्ष में क्यों नहीं ?"

"इसलिए कि मैं लड़की को अथवा लड़की के माता-पिता को जानता नहीं। इस कारण इसमें कुछ सम्मति अथवा प्रेरणा नहीं दूँगा।"

"लड़की तो दिखाई जा सकती है।"

"देखकर क्या करूँगा? उसके विचार और आचरण को भी तो देखना चाहिए।"

"वह भी दिखा दूँगा।"

"मगर उसकी क्या आवश्यकता है! देखो चरण! इन विषयों में मैं तुमसे कम बुद्धिमान हूँ। तुम मुक्तानन्दजी से राय क्यों नहीं करते ?"

"वे अपने भाई की लड़की से मेरा विवाह कराना चाहते हैं।"

इस समय वे घर पर पहुँच गए।

:: 3 ::

हरिहरसिंह कहीं बाहर से आ रहा था। मधु उसको नमस्कार करने वहाँ ठहर गया। हरिहरसिंह ने सदा से प्रतिकूल आगे बढ़कर मधु से हाथ मिलाया और पूछ लिया, "कहाँ रहते हो आजकल ?"

तीनों मकान के भीतर जा रहे थे। मधुमोहन को हाथ मिलाने पर विस्मय हुआ था। इस पर भी उसने अपने विस्मय को प्रकट किए बिना कह दिया, "यहीं नगर में रह रहा हूँ।"

"पर तुम तो पास हो गए हो न ?"

"जी।"

"तुमको तो किसी विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बनने का यत्न करना चाहिए।"

"विचार कर रहा हूँ। कुछ दिन हुए प्रोफेसर पी० सी० घोष ने भी कहा था। राजधानी में एक स्थान है। उन्होंने अपनी ओर से वहाँ लिखा है। वे चाहते हैं कि यदि वहाँ से काम मिलने का प्रस्ताव आए तो मुझे अस्वीकार नहीं करना चाहिए।"

इस समय सब चरणसिंह की बैठक में जा बैठे। हरिहर ने कहना जारी रखा, "मुक्तानन्द भी एक दिन कह रहे थे कि यदि मधु देश की सरकार का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना पसन्द करे तो वह तुमको वहाँ भेज सकता है। वाइसराय के वित्त-सचिव उसके एक परिचित हैं।''

''हाँ। उन्होंने एक दिन कुछ ऐसी बात कही थी; परन्तु उनका कहना था कि वहाँ पर उन्नति के लिए एक सुन्दर पत्नी से विवाह करना होगा। वे एक सुन्दर पत्नी ढूँढने का भी आश्वासन दे रहे थे।''

''मुझे पता है वे किस लड़की की बात कर रहे हैं, परन्तु उस लड़की की माँ मुक्तानन्द द्वारा निर्वाचित लड़के को लड़की के समीप फटकने भी नहीं देगी।''

''यह क्यों?''

''वह कुछ धर्म-कर्म में विश्वास रखने वाली औरत है और वह मुक्तानन्द के सब परिचितों को भ्रष्ट चरित्र का मानती है।''

''तब तो भापा! उस लड़की की बात विचारणीय हो गई है। मैंने तो यह समझ अरुचि प्रकट की थी कि मुक्तानन्दजी के परिचित स्त्री, पुरुष और परिवार उस जैसे ही होंगे।''

हरिहरसिंह मुस्कराता हुआ उसका मुख देख रहा था। इस समय तारा आ गई। मधु ने उठकर चरण स्पर्श किए तो तारा ने आशीर्वाद दे कहा, ''मधु! माना कि तुम एम०ए० में बहुत अच्छे अंक लेकर पास हुए हो। परन्तु इसका यह मतलब कैसे निकल आया कि अपने पूर्व परिचितों से मिलना-जुलना ही छोड़ दिया जाए?''

''माताजी! यह बात नहीं। मैं एक काम में अभी लगा हूँ। उसमें बहुत समय लग रहा है। इस कारण सबसे मेल-जोल कम हो गया है।''

''किस बात की तैयारी हो रही है?''

मधु ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, ''सरस्वती बहन नहीं आ रही क्या?''

''नहीं। वह लज्जा अनुभव कर रही है। उसी के विवाह के विषय में ही तुमसे राय करने के लिए तुमको बुलाया है।''

''ओह! मैं समझा था कि चरणसिंह के विवाह की बात होने वाली है।''

''इसके विवाह में हमारी रुचि नहीं रही। जब यह हमारा कहा मानता नहीं तो इसके बारे में हमने विचार करना ही छोड़ दिया है।''

''पर माँ!'' चरणसिंह ने कह दिया, ''तुम तो मेरे विवाह का विरोध करती थीं। यदि अब रुचि लेनी छोड़ दी है तो मैं यह समझता हूँ कि विरोध करना छोड़ दिया है। इससे अगला पग सहयोग का है। माँ! वह भी तुम करोगी। मुझे विश्वास है।''

''अच्छी बात है। तुम्हारा यह विचार पूरा हो, मैं यही कह सकती हूँ। परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के विचार का विषय सरस्वती है।''

बैरा चाय ले आया था। चरणसिंह का बैरा भी मुसलमान था। चरणसिंह ने सिविलियन क्लब के रेस्तराँ से अंग्रेज़ी मिठाई मँगवाई हुई थी। इसमें केक, पेस्ट्री, पेटीज़ इत्यादि थे। तारा तो रसगुल्ले और चम-चम खाने लगी। मधु ने पेस्ट्री कभी खाई नहीं थी। एक-दो बार मुक्तानन्द के यहाँ जब कोई अंग्रेज मेहमान आता था तो उसकी प्लेट में पड़ी देखी थी। उसने चरणसिंह से पूछ लिया, ''यह क्या है?''

''दादा! खाकर देखो।''

मधु ने खाई। स्वादिष्ट थी। तारा हँस पड़ी और बोली, ''इसमें मुर्गी का अण्डा पड़ा है।''

''तभी,'' मधु ने विचार करते और स्वाद लेते हुए कहा, ''मैं भी विचार कर रहा था कि यह इतनी स्वादिष्ट क्यों है?''

''तो तुम्हें पसन्द है?'' तारा ने पूछ लिया।

''माताजी! स्वादिष्ट होना और पसन्द होना दो बिल्कुल पृथक्-पृथक् बाते हैं।''

''और धर्म के विपरीत होना?''

''वह एक पृथक् बात है। उसका भी स्वादिष्ट होने अथवा पसन्द होने से सम्बन्ध नहीं।''

''तो अधर्मयुक्त बात भी पसन्द कर सकते हो?''

''यदि पसन्द करने में कोई प्रबल कारण हो। देखिए, किसी मनुष्य की हत्या करना महापाप है। परन्तु भगवान् कृष्ण ने तो स्थान-स्थान पर अर्जुन को कहा है कि युद्ध करो और दुष्टों को मारो। साथ ही भगवान् के विराट स्वरूप में तो भीष्म, द्रोण इत्यादि भगवान् की दाढ़ों में पिसते हुए दिखाए थे। दुर्योधन इत्यादि पिस गए थे और उनके शरीर के अवशेष भगवान् के दाँतों में लगे दिखाई देते थे।''

''तो तुमने मुर्गी के अंडे को द्रोण, भीष्म इत्यादि मान लिया है?''

''उससे भी बहुत कम महत्व का और निर्दोष।''

हरिहरसिंह समय व्यर्थ गँवाया जाता देख बात बदलकर कहने लगा, ''छोड़ो इस बात को। बताओ सरस्वती विवाह के योग्य प्रतीत होती है या नहीं?''

''यह तो उसकी माँ ही बता सकती है।'' मधु ने कह दिया, ''देखने में तो वह सज्ञान प्रतीत होती है।''

''तारा का यह प्रस्ताव है कि उसे मधुमोहन के घर भेज दिया जाए।''

''पर भापा वह तो! मधु की बहन है। वह तो उसके घर जा ही सकती है। क्या मधु ने उसे आने से कभी मना किया है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारा बोल उठी, "हम उसे तुम्हारी पत्नी के रूप में भेजने का विचार रखते हैं।"

"देखिए माताजी! सरस्वती बहुत ही सभ्य, सुशील और समझदार लड़की है। परन्तु बिना माँ के उसे पतोहू बनाए वह मेरी बहन ही रह सकती है। माताजी आजकल आई हुई हैं। मैं समझता हूँ, यह प्रस्ताव आप उनके सामने करेंगे तो ठीक रहेगा।

"एक बात मैं और बता दूँ। आज मेरे नक्षत्र बहुत उच्च हैं। पिछले तीन घंटे में मेरे विवाह का यह तीसरा प्रस्ताव है। मेरा विचार है कि आप को इसमें जल्दी करनी चाहिए, अन्यथा गाड़ी छूट गई तो वापस प्लेटफार्म पर नहीं आ सकेगी।"

इस पर तो सब गम्भीर विचार में निमग्न हो गए। कितने ही मिनट तक सब मौन हो मिठाई इत्यादि लेते रहे।

एकाएक तारा बोल उठी, "वे इस समय कहाँ होंगी?"

"पंडित भुवनचन्द्रजी के घर गई हैं। पंडितजी ने मेरे विवाह के विषय में बातचीत करने के लिए उनको लिखा था और वे इसी विषय में विचार करने के लिए यहाँ आई हैं। सम्भवतः पंडितजी ने अपनी गोद ली लड़की के विषय में लिखा होगा। इस पर भी यह मेरा अनुमान ही है।

"इसके अतिरिक्त एक अन्य लड़की है। उसका प्रस्ताव मुक्तानन्दजी की ओर से हुआ है। उस लड़की को देखने मैं रात के खाने के समय जा रहा हूँ। मैं उनको भी यह सुझाव दूँगा कि माताजी की पतोहू ही मेरी पत्नी होगी।"

हरिहर ने एक बात कह दी। उसने कहा, "मैं लड़की के विवाह पर बीस हज़ार नकद देने वाला हूँ।"

"परन्तु भापा! आप ठाकुर हैं, मैं कायस्थ हूँ। यह बात ठीक बैठेगी नहीं।"

"तो ब्राह्मण और कायस्थ की बात ठीक बैठ सकेगी क्या?"

"आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

"तुम अपनी बात बताओ।"

"मेरी आपत्ति का प्रश्न ही नहीं बनता। मैं तो आप दोनों की जाति से नीचे की जाति का हूँ। यह तो आप लोगों के विचार की बात है।"

"मुर्गी का अण्डा खा जाने वाले को हम पसन्द कर लेंगे।" तारा ने कह दिया।

"और पंडितजी जानते हैं कि मैं मांस भी खा लेता हूँ। इस कारण विवाह न तो रुकेगा न होगा। मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आप देर कर रहे हैं।"

यह संकेत था इस बात का कि उनको उसकी माँ से तुरन्त मिलना चाहिए। हरिहरसिंह उठ खड़ा हुआ और बोला, "तारा, चलो। यह चरण सदा हमारे कामों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बाधा ही बना रहता है। एक महीने से इसे कह रहे थे। इसको बहन के काम के लिए अवकाश ही नहीं रहा।''

मधु मुस्कराता हुआ चरणसिंह की ओर देखता रहा। चरणसिंह गम्भीर बैठा था। उसने हाँ अथवा न कुछ नहीं की।

तारा और हरिहरसिंह जाने से पूर्व बोले, ''मधु! तुम हमारी यहाँ प्रतीक्षा करना। हम अभी आ रहे है।''

''भापा! मेरे यहाँ होने-न-होने से कुछ बनने-बिगड़ने वाला नहीं। सब कुछ माताजी के अधीन है।''

वे बैठकघर से निकल गए। उनके चले जाने पर चरणसिंह ने कहा, ''मैं जानता हूँ कि सरस्वती तुमको भाई ही मानती है और तुम्हारा उससे विवाह शुभ नहीं होगा। मैंने एक और लड़का उसके लिए देखा है, परन्तु पहले तुम लोग निर्णय कर लो, पीछे बताऊँगा।''

''मैं माताजी के आदेश की अवहेलना नहीं करूँगा, परन्तु यदि मुझसे पूछा गया तो मैं सरस्वती के भावों का आदर करूँगा।''

''तो उसके भावों का ज्ञान तुमको करा दूँ? कहो तो उसे यहाँ बुलाऊँ?''

''नहीं चरण! उसने जो कुछ कहना है माताजी से ही कह ले। मैं इस विषय में स्वयं कुछ भी जानना तथा करना नहीं चाहता।''

चरणसिंह ने जेब से घड़ी निकाल देखी और कह दिया, ''मुक्तानन्दजी के घर चलने के समय में अभी आधा घण्टा है।''

''यदि हम आधा घंटा पहले जा पहुँचे तो कुछ हानि होगी क्या?''

चरणसिंह ने विचार किया और पूछ लिया, ''क्या काम है उनसे?''

''कुछ उनके व्यवसाय-सम्बन्धी है।''

''तब तो अवश्य पहले चलना चाहिए।''

दोनों घर से निकले और इक्के में सवार हो सिविल लाइन्ज़ की ओर चल दिए।

:: 4 ::

जब ये कोठी में पहुँचे तो मुक्तानन्द अपने कार्यालय के बाहर बड़ा कुछ लोगों से बातें कर रहा था। ये दोनों उधर ही चले गए और कुछ अन्तर पर खड़े हो मुक्तानन्द के अवकाश पाने की प्रतीक्षा करने लगे। उनका विचार था कि वकील साहब अपने ग्राहकों से बातें कर रहे हैं।

मुक्तानन्द उनसे अवकाश पा चरणसिंह इत्यादि की ओर घूमा और पूछने लगा, ''मधु! चरणसिंह तुमको लाया है अथवा तुम चरणसिंह को लाए हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! मैं इसे साथ लाया हूँ।"

"किसलिए?"

"आपने कहा था न कि मेरे योग्य विवाह के लिए लड़की दिखाएँगे। मैं चरणसिंह को इस प्रकार की बातों में अपने से अधिक योग्य मानता हूँ। इस कारण इससे राय करने के लिए इसको साथ ले आया हूँ।"

"पर यह तो महामूर्ख है। साथ ही लड़की के आने का समय अभी नहीं हुआ। अभी आधा घण्टा है।"

"मैं इस समय आपसे एक अन्य बात के सम्बन्ध में राय करने आया हूँ। माताजी आपसे व्यावसायिक परामर्श करना चाहती हैं। कल किस समय उनको यहाँ ले आऊँ?"

मुक्तानन्द ने गम्भीर हो मधुमोहन की ओर देखते हुए कहा, "तो तुम्हारी माताजी नगर में हैं?"

"जी।"

"उनको सब-जज का नोटिस मिल गया है क्या?"

मधु को इस सूचना पर विस्मय हुआ, परन्तु उसने बिना अपने मन की अवस्था प्रकट किए कह दिया, "जी।"

"तो उनको कल ठीक आठ बजे प्रातःकाल ले आओ।"

"आपको नोटिस का ज्ञान कैसे?"

"यह कल सुबह ही बताऊँगा।"

"माताजी पूछती थीं कि परामर्श के लिए आपकी कितनी फ़ीस है?"

"यह भी कल सुबह बताऊँगा। इधर आओ। दोनों आ जाओ।"

दोनों वकील साहब के पीछे-पीछे चले गए। मुक्तानन्द उनको कोठी के अन्तःपुर की ओर ले चला। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। चरणसिंह तो उधर कई बार जा चुका था। तारा का मेल मुक्तानन्द की पत्नी कस्तूरी से था और चरणसिंह बचपन से ही मुक्तानन्द की विवाहिता से मिलता रहता था। परन्तु मधु के लिए कोठी के इस ओर आने का प्रथम अवसर था।

मुक्तानन्द उसे एक बगल के कमरे में ले गया। वहाँ पाँच वर्ष की आयु का एक लड़का झालरदार कोट और बाज़ार में बैंड बजाने वाले की-सी घुटनों तक 'ब्रोचिज' और सिर पर स्कॉटिश ढंग की टोपी पहने एक लड़की से बातें कर रहा था।

वह लड़की किसी ऐंग्लो-इण्डियन की सन्तान मालूम होती थी। गोरी, भूरे बालों तथा नीली आँखों वाली लड़की लड़के की वयस की ही प्रतीत होती थी।

दोनों पिता को, कमरे में दो अन्य पुरुषों के साथ आते देख सहमे-से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देने लगे थे। चरणसिंह तो उनसे परिचित था। इस कारण उसने लड़के को सम्बोधन कर कह दिया, ''हैलो माणिक! क्या हो रहा है?''

''ओह भैया! मैंने तुमको देखा ही नहीं। हम सब एक खेल खेलने में लगे थे।''

''क्या?''

माणिक ने प्रश्नभरी दृष्टि से बच्चों की ओर देखा तो लड़की ने कह दिया, ''दैट इज़ ए चिलड्रन्स गेम।''

''ओह! तो मैं नहीं खेल सकता वह?''

''यू आर टू बिग फार दैट।'' लड़की ने कह दिया।

अब मुक्तानन्द ने लड़के को आज्ञा के भाव में कहा, ''लुक डियर। यह हैं मिस्टर मधुमोहन एम०ए०; ये अपने प्रान्त में प्रथम रहकर उत्तीर्ण हुए हैं।''

माणिक ने पिता को 'थैंक यू' कह और आगे बढ़कर मधु से हाथ मिलाते हुए कहा, ''आई एम सर, माणिक लाल। सन ऑफ़ माई इलस्ट्रियस फादर मिस्टर मुक्तानन्द ऐडवोकेट।''

''ओह!'' मधु ने कह दिया, ''यू हैव ए फादर टू?''

माणिक इस व्यंग्य का अर्थ नहीं समझ सका। परन्तु मुक्तानन्द खिल-खिलाकर हँस पड़ा और बोला, ''यैस। ही हैज़। मगर मधु, तुमने लड़के को परेशान कर दिया है। यह नहीं जानता कि बिना बाप के भी कोई लड़का हो सकता है।''

''अच्छा माणिक!'' मुक्तानन्द ने बात बदल दी, ''देखो, ये मधुमोहन कल से तुम्हारे 'ट्यूटर' नियुक्त हो रहे हैं।''

''कैसे पापा?''

''मैं नियुक्त कर रहा हूँ और मैं तुम्हारा 'ट्यूटर' नियुक्त करने की सामर्थ्य रखता हूँ।''

माणिक अभी भी परेशान था। उसने कहा, ''पर मेरी एक 'ट्यूट्रैस' तो पहले है।''

''हाँ। उसे भी मैंने नियुक्त किया है और इसे भी। वह 'ट्यूट्रैस' रहेगी और यह 'ट्यूटर'।''

''यह किसलिए, पापा!''

''तुम अब एक बच्चे से कुमार बनते जाते हो। इस बदलने वाले काल में ऐसा ही होता है।''

''आई डोन्ट लाइक इट।''

''दिस इज़ माई आर्डर।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने बात समाप्त कर दी।

सब लोग उस कमरे से बाहर आ गए। मधु ने घूमकर देखा। इनके जाने से माणिक का मुख खिल उठा और वह अपनी साथिन से बातचीत करने के लिए उसकी तरफ घूम गया।

ये लोग अब डाइनिंग हॉल में जा पहुँचे। अभी कोई नहीं आया था। चरणसिंह ने मुक्तानन्द से कह दिया, ''भापा! मधु मुर्गी का अण्डा खा लेता है।''

''मुझे मालूम है।''

''तो आपने इसे कभी खिलाया है?''

''नहीं, इसने मेरे यहाँ कभी कोई ऐसी वस्तु नहीं खाई। यह केवल चाय ही पीता है। मगर मैं जानता हूँ कि विचारशील लोग खाने-पीने में धर्म नहीं मानते।''

मुक्तानन्द ने मुस्कराते हुए मधु की ओर देखा और कह दिया, ''इसको विवाह में भी जाति-पाँति पर विश्वास नहीं हो सकता। एक बात और है चरण! इसके विवाह के विषय में वे विचार नहीं हैं जो प्राय: मजहबी लोगों के होते हैं।''

''क्या मतलब भापा?''

''यही कि सन्तान तो पुरुष-स्त्री के समागम से होती है, वेद मन्त्रों या कुरआन की आयतों से नहीं होती।''

चरणसिंह हँस पड़ा। मधु मुस्कराता हुआ देख रहा था। मुक्तानन्द ने कह दिया, ''मैं आज इसके लिए ऐना स्मिथ प्रोपोज़ करने वाला हूँ।''

''ओह! भापा, मेरा विचार था कि कमला का प्रस्ताव होने वाला है।''

''नहीं, वह तो तुम्हारे लिए था। वह इसके योग्य नहीं।''

''भापा! इतनी कृपादृष्टि मधु पर क्यों है?''

''यह तुमसे प्रत्येक बात में अधिक योग्य है।''

''परन्तु भापा! ऐना तो अभी भी टेबल पर बैठ 'शैम्पेन' लेती है और तब तक मेज़ से नहीं उठती जब तक 'टिप्सी' नहीं हो जाती।''

''यह उसका गुण है। मधु मद्य को छूता नहीं। इस कारण दोनों का विवाह हो जाएगा तो एक की मद्य दूसरे के ताजे पानी से हल्की हो जाएगी।''

तीनों हँसने लगे। इस समय दो लड़िकियाँ और एक वृद्ध महाशय वहाँ आ गए। मुक्तानन्द ने उनका परिचय करा दिया, ''ये हैं मिस्टर स्मिथ। रिटायर्ड ऐग्ज़ेक्टिव इंजीनियर। अब ये हिन्दुस्तान में ही रह रहे हैं। यहाँ इन्होंने अपनी कोठी बनवा ली है। ये इनकी दो लड़कियाँ हैं। यह बड़ी है सिल्विया स्मिथ और यह है छोटी ऐना स्मिथ। बड़ी माणिक की 'ट्यूट्रेस' है और छोटी के विषय में मैं बता चुका हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''और मिस्टर स्मिथ! यह मेरे एक नौजवान मित्र हैं, मिस्टर मधुमोहन। विश्वविद्यालय से बहुत ऊँचे अंक लेकर एम०ए० पास किया है। मैं इसके लिए भारत सरकार के फाइनेंस विभाग में इसे किसी ऊँची पदवी पर नियुक्त कराने का यत्न कर रहा हूँ।''

यह परिचय समाप्त ही हुआ था कि लड़कियों का एक झुण्ड प्रौढ़ावस्था की एक स्त्री के साथ आ गया। इस झुण्ड में बड़ी औरत के अतिरिक्त चार लड़कियाँ थीं। वे मुक्तानन्द से मिल रही थीं कि सिल्विया और ऐना चरणसिंह और मधुमोहन को लेकर मेज़ के एक कोने पर जा बैठीं। इस समय घण्टी बजी। यह इस बात की सूचना थी कि खाना तैयार है। मुक्तानन्द भी नए मेहमानों के माथ मेज़ पर आ बैठा। मुक्तानन्द चरणसिंह इत्यादि के सामने बैठा था। यह प्रौढ़ा स्त्री मुक्तानन्द के दाहिने और मि० स्मिथ के बाईं ओर बैठ गई और चारों लड़कियाँ उनके आसपास बैठ गईं। इधर बीच में चरणसिंह और मधुमोहन बैठे थे और मधु के साथ ऐना बैठी थी और चरणसिंह के साथ सिल्विया थी।

ऐना ने धीरे से कह दिया, ''वकील साहब ने आपके विषय में बहन से पहले बताया हुआ था।''

''सच?''

''हाँ। उनका कहना था कि आप एक 'डिजायरेबल हस्बैंड' हैं। आप एक ज़मींदारी के मालिक हैं और आपका कोई भाई नहीं।''

''तो इच्छित पति के ये गुण हैं?''

''ये सब गुण आवश्यक तो नहीं। इस पर भी ये गुण अति आकर्षक हैं।''

''ओह! मगर यह सुझाव आपकी बहन से था या आपसे?''

''बहन तो विवाह नहीं कर रही। पर मैं विवाह की इच्छा करती हूँ। आप मेरे विषय में क्या समझते हैं?''

''आप देखने में बहुत अच्छी लगती हैं।''

''तो मैं सुन्दर नहीं हूँ?''

''क्या सुन्दर होना अच्छा होने में नहीं आता?''

ऐना कुछ निरुत्तर हो बोली, ''अच्छा' एक बहुत विस्तृत अर्थों वाला शब्द है। मैं अपनी रूप-रेखा के विषय में सुनना चाहती थी।''

''और मैं रूप-रेखा के अतिरिक्त भी बता रहा था। वैसे ऐना, तुम बहुत सुन्दर हो।''

''आप मुझे पसन्द करते हैं?''

''बहुत।''

''मैं बहुत खुश हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होना ही चाहिए। परन्तु एक बात तुमको समझ लेनी चाहिए। वह यह कि मैं एक हिन्दुस्तानी हूँ।"

"इससे क्या होता है?"

"मेरी शादी का प्रबन्ध मेरी माँ करेगी।"

"यह तो बहुत बुरी बात है।"

"मैं इसको बहुत अच्छी बात मानता हूँ।"

"अगर वह मुझको पसन्द न करे तो?"

"मगर, कौन है जो तुम जैसी अच्छी लड़की को पसन्द नहीं करेगा?"

"तो उसको भी आप यहाँ लाए हैं?"

"मुझे तो विदित नहीं था कि मेरे विवाह का प्रस्ताव होना है। यह तो अभी तुमने ही बताया है।"

"तो इस 'डैविल' मुक्तानन्द ने आपको बताया नहीं?"

"ऐना डीयर! मैं उसका अपने 'फादर' की तरह मान करता हूँ।"

"मगर उसे बताना चाहिए था। उसने आपका नाम मेरी बहन को मेरे 'हस्बैंड' के रूप में बताया हुआ है।"

"तुम्हारी बहन को यह तुम्हें अभी नहीं बताना चाहिए था। जब तक मेरे मन में इसकी प्रतिक्रिया का ज्ञान न हो जाता, तब तक तुम्हें बताना ठीक नहीं था।"

ऐना रूठ गई और मुख मोड़ अपने साथ बैठी लड़की से बातें करने लगी। चरणसिंह सिल्विया से घुल-घुलकर बातें कर रहा था। मधु अब बिना किसी बात करने वाले के होने से चुपचाप बैठा था। बैरा सामने सोडा और व्हिस्की तथा गिलास रख गया था। सिल्विया, ऐना और लड़कियों के सामने हरे अंगूरी रंग की शराब थी। मधु के सामने स्कॉच व्हिस्की थी। मधु ने अपनी बोतल उठाकर ऐना के सामने रख दी।

ऐना ने मधु की ओर देखकर पूछ लिया, "यह किसलिए?"

"मैं पीता नहीं और जो वस्तु बचे वह हमें अपनी पत्नी के पास जमा कर देनी चाहिए।"

"मैं इसका क्या करूँ?"

"जो मन में आए। यह तुम्हारी सम्पत्ति है।"

ऐना 'पत्नी' का शब्द सुन खिल उठी थी। उसने पूछ लिया, "तो आपने मुझको अपनी पत्नी माना है?"

"माना नहीं, 'प्रपोज' किया है। यही तुम्हारे विषय में मैं अपनी माँ के सामने कहने वाला हूँ।"

"यह मुझको पसन्द नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पसन्द-नापसन्द का प्रश्न नहीं। यह मेरे और मेरी माँ के पसन्द करने की बात है।"

"मुझे आश्चर्य है कि आप जितना पढ़ा-लिखा और इतनी बड़ी आयु का युवक भला बच्चों की भाँति ऐसी बातें माँ से क्यों करेगा?"

"इसलिए कि मैं माँ के सामने हमेशा बच्चा ही रहूँगा। क्या तुम अपनी माँ अथवा बड़ी बहन से बड़ी आयु की हो गई हो अथवा हो रही हो?"

ऐना इस बात को समझ नहीं सकी। उसने 'शैम्पेन' की बोतल से अपने गिलास में डालकर चुस्कियाँ लेनी आरम्भ कर दीं। सब शराब और सोडा भूख उकसाने के लिए ले रहे थे। अब खाना परोसा गया। साथ-साथ वह खाया जाने लगा था। 'मछली फ्राइड' थी और आलू की चिप्स थीं। मधु ने मछली के टुकड़े उठा ऐना की प्लेट में रख दिए और आलू अपने पास रहने दिए। साथ में उबली सब्जी भी थी। वह भी मधु ने अपनी प्लेट में डाल ली।

इस प्रकार खाना चल रहा था। जब भी कोई आमिष पदार्थ आता, मधु उठाकर या तो चरणसिंह की प्लेट में या ऐना की प्लेट में रख देता था। वह स्वयं खाली सोडा, आलू, चिप्स, उबली सब्जियाँ और डबलरोटी की 'स्लाइसिज' ही ले रहा था।

एक बार ऐना ने पूछा भी, "आप तो कुछ खा ही नहीं रहे हैं?"

"खा तो रहा हूँ।"

"यह तो बहुत कम है?"

"हम हिन्दुस्तानियों में यह नियम है कि जब तक बच्चों और औरतों का पेट नहीं भर जाता, तब तक हम खुद नहीं खाते।"

"यह तो बहुत अच्छा है।"

"हम अपने अधीन सबका पेट भरकर पीछे-खाते हैं। वह यहाँ तो कर नहीं सकता। इस पर भी मैं आपको देता जाता हूँ। जब आप कह देंगी कि आपका पेट भर गया है और आप और नहीं खा सकतीं, तब तक मैं देता जाऊँगा।"

ऐना कभी 'शैम्पेन' और कभी 'व्हिस्की' लेती जाती थी। वास्तव में उसको नशा चढ़ रहा था और वह भूलती जाती थी कि उसकी अपनी बोतल कौन-सी है।

:: 5 ::

बर्फ में ठण्डे किए फल, आइसक्रीम इत्यादि से खाना समाप्त हुआ। इस समय रात के साढ़े ग्यारह बज रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब मद्य की गर्मी और नशा अनुभव कर रहे थे। मुक्तानन्द उठा तो सब उठ खड़े हुए। वह प्रौढ़ावस्था की औरत झूमती हुई मुक्तानन्द के पास आ पहुँची। मुक्तानन्द उठकर मधु और ऐना के पास आ पूछने लगा, ''तुम दोनों ने बातचीत कर ली है या नहीं ?''

उत्तर ऐना ने दिया, ''इसने मुझे पत्नी कहकर पुकारा है।''

मुक्तानन्द हँसता हुआ मधु की ओर देखने लगा तो मधु ने कह दिया, ''यह मेरा प्रस्ताव था।''

''तो तुमने 'प्रोपोज़' किया है।''

''मैं इसको पत्नी के रूप में माँ के सामने 'प्रोपोज़' करूँगा परन्तु जब वह मेरा प्रस्ताव स्वीकार करेगी, तो बात पक्की होगी।''

''ऐनी हाऊ, ए गुड बिगिनिंग।'' मुक्तानन्द ने कहा ही था कि वह औरत आ गई। ''मिस्टर आनन्द! ऐवरी बॉडी इज़ फीलिंग हाट। वुई वुड लाइक टू हैव ए डिप इन दि टैंक।''

''मैडम! दूसरों से राय कर लो। मुझे आपत्ति नहीं।''

उसने ऊँची आवाज़ में कहा, ''तालाब में शरीर ठण्डा करने और मस्तिष्क स्थिर करने के लिए प्रस्ताव है।''

सब लड़कियों ने हुर्रे का नारा लगा दिया। उसी कमरे से 'टैंक हॉल' को मार्ग जाता था। सब उधर भाग गए, सिल्विया और ऐना भी। पुरुष वर्ग वहीं खड़े रहे। केवल चार पुरुष थे—मुक्तानन्द, चरणसिंह, मधु और मिस्टर स्मिथ। छः लड़कियाँ थीं।

मुक्तानन्द ने कहा, ''पानी में डुबकी ले लेंगी तो इनका नशा उतर जाएगा और घरों को मजे में जा सकेंगी।''

वैसे तो मुक्तानन्द ने भी मद्य का सेवन किया था, परन्तु वह होश-हवास में था। केवल उसके मुख पर रक्त का संचार अधिक हो गया था। मिस्टर स्मिथ तो अंट-शंट बातें करने लगा था। चरणसिंह मुक्तानन्द की भाँति अपने पाँव पर खड़ा था, परन्तु वह बोल नहीं रहा था।

मधु ने मुक्तानन्द से कहा, ''अब हमको जाने की स्वीकृति दीजिए।''

''तो तुम मछलियों को तैरते नहीं देखना चाहते ?''

मधु समझा नहीं। चरणसिंह हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, ''मधु, ठहरो। 'इट विल बी ए फाइन साईट टु लुक ऐट'।''

मुक्तानन्द ने मधु की बाँह में बाँह डाली और उसे एक दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ पुरुषों के 'बेदिंग सूट' लटक रहे थे। मुक्तानन्द और चरणसिंह ने पहनने आरम्भ कर दिए। ''तुम नहीं पहनोगे ?'' मुक्तानन्द ने मधु से पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने तो एक बूँद भी नहीं पी। इसलिए मुझे शरीर और मस्तिष्क को ठण्डा करने की आवश्यकता नहीं है।"

"तो ठीक है। तुम मिस्टर स्मिथ के समीप खड़े हो तमाशा देखो।"

मिस्टर स्मिथ मधु की बाँह में बाँह डालकर उसे तालाब वाले हॉल में ले गया। प्रायः लड़कियों ने 'बेदिंग-ड्रैस' पहनी हुई थी। ऐना का शरीर अन्य सब लड़कियों से दुबला-पतला था। उसको सूट ढीला आया था। उतनी छोटी पोशाक उसे मिली नहीं।

सब लड़कियाँ तालाब में उछल-कूद मचा रही थीं। ऐना भी उनमें थी। दूसरी लड़कियों की पोशाक शरीर के साथ सटकर लगी हुई थी और उनके शरीर की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। ऐना की पोशाक ढीली होने के कारण शरीर से लटक रही थी। साथ ही उसमें पानी भर जाने से वह तैरने और दूसरों से कलोल करने में बाधा अनुभव कर रही थी।

जब पुरुष लोग वहाँ पहुँचे तो ऐना अपनी पोशाक को उतार रही थी। उसने पोशाक उतारी तो सर्वथा नग्न हो गई और इस प्रकार तैरने में सुविधा अनुभव करने लगी। मधु यह सब दृश्य देख स्तब्ध रह गया। वह समझता था कि चरणसिंह और मुक्तानन्द के टैंक में घुसने पर लड़कियाँ आपत्ति करेंगी। परन्तु ऐना ने भी आपत्ति नहीं की। इससे अधिक वह देख नहीं सका। चरणसिंह सिल्विया के पीछे तैरकर उसे पकड़ने में लगा हुआ था।

मधु ने अपनी बाँह मिस्टर स्मिथ की बाँह से निकाली और बाहर को निकल गया। स्मिथ भी उसके साथ बाहर चला आया।

मधु ने बाहर कमरे में आकर कहा, "मैं जा रहा हूँ।"

"कहाँ?"

"अपने घर।"

"तो यह पसन्द नहीं आया? यह सब सुन्दर नहीं है क्या?"

"बहुत सुन्दर है, बाबा!" यह कह मधु कोठी से बाहर निकल गया। वह पैदल ही घर पहुँचा। माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उस समय रात के सवा बारह बज रहे थे। मधु ने माँ को देखा तो पूछ लिया, "माँ! तुम अभी सोई नहीं?"

"और तुम नित्य रात को इसी समय आया करते हो?"

"नहीं माँ! मुक्तानन्द के यहाँ खाना खाने लगा तो साढ़े नौ बजे आरम्भ होकर साढ़े ग्यारह बजे समाप्त हुआ। वे लोग तो अभी टैंक में नहा रहे थे। मैं चला आया हूँ। यदि पता होता कि तुम मेरी प्रतीक्षा कर रही हो तो मैं बीच में ही उठकर चला आता।"

"खैर, कुछ हानि नहीं हुई। साढ़े बारह ही बजे हैं। सुनो। मैं तुमसे राय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोना चाहती थी। भुवनचन्द्र की गोद ली लड़की का प्रस्ताव है। मैंने पूछा, आपने मधु से बात की है क्या?

"पंडितजी ने कहा, 'जब आप स्वीकार करेंगी तो पीछे उसको राजी कर लेंगे।'

"मैंने कह दिया कि वह अब सज्ञान और पढ़-लिखकर विद्वान हो गया है। इस कारण मैं उससे राय किए बिना कुछ बात कर नहीं सकती।"

"वहाँ पंडित शशिमोहन भी मिल गए थे। वे भी लड़की की प्रशंसा करते थे।"

"माँ! तुम क्या कहती हो?"

"देखो, जब मैं वापस यहाँ आई तो तुम्हारे मित्र के माता-पिता मेरी प्रतीक्षा में बैठे थे। वे बोले कि वे अपनी लड़की का तुमसे विवाह करना चाहते हैं। तुम मान गए हो, परन्तु मेरी स्वीकृति के बिना विवाह नहीं हो सकता।"

"तो माँ! इस लड़की को भी देख लो। मगर एक बात है।"

"क्या?"

"निश्चय करने से पहले इन लड़कियों से भी पूछ लेना कि वे मुझको क्या मानती हैं और क्या मानने को तैयार हैं?"

"मीना से तो बातचीत हुई है। उसने कहा है, मुझे आपकी और आपके पुत्र की सेवा करने का सौभाग्य मिलेगा तो यथाशक्ति करूँगी।"

मैंने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और वह सौभाग्य कैसे मिलेगा?"

वह कहने लगी, "मौसीजी, आप आज्ञा करेंगी तो मिल जाएगा।"

"तो उसकी स्वीकृति ले आई हो?" मधु ने पूछा।

"हाँ; परन्तु चरण की बहन की क्या बात है?"

"मैं समझता हूँ तुम उससे यह स्वीकृति प्राप्त नहीं कर सकोगी। वह मेरे प्रति भाई का भाव रखती है।"

"तब तो ठीक है। यह बताकर तुमने मेरे चित्त को शान्ति दी है। मैं मन से मीना को पसन्द कर आई हूँ।"

"पर माँ! एक अन्य समस्या भी तुम्हारे सामने आने वाली है। एक एंग्लो-इण्डियन लड़की मुक्तानन्द ने दिखाई है। वह सुन्दर है। उसने अपने पूर्ण शरीर को नग्न कर दिखा दिया है। मुक्तानन्द उसके विषय में तुमसे पूछने वाला है।"

"तो तुम क्या कहते हो?"

"इससे विवाह तो होगा नहीं। जो विवाह के पहले नग्न हो घूम सकती है, वह विवाह के पीछे क्या करेगी, कल्पना ही की जा सकती है। परन्तु माँ! यदि मुकद्दमा मुक्तानन्द के हाथ में देना है तो सावधानी से चलना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मुक्तानन्द की वह क्या है?"

"मैं क्या जानूँ इतना कह सकता हूँ कि वह चाहता है कि मैं इस सुन्दर लड़की से विवाह कर लूँ तो सरकारी नौकरी मिल जाएगी और शीघ्र ही तरक्की हो सकेगी। वह एक दिन कहता था कि बड़े-बड़े सरकारी ओहदों पर सुन्दर पत्नियाँ उन्नति में सहायक हो सकती हैं।"

"तुम सरकारी नौकरी करना चाहते हो?"

"नहीं माँ! मैं तुमको मुक्तानन्द की मन:स्थिति बता रहा हूँ। मैं तो यह कुछ नहीं करूँगा।"

"अच्छी बात है। कल उससे किस समय मिलना होगा?"

"ठीक आठ बजे।"

:: 6 ::

अगले दिन रविवार था। मधु और चन्द्रावती मुक्तानन्द के घर पहुँचे तो वकील साहब अभी सोकर उठे नहीं थे। चपरासी ने उनको बैठक में बिठाया और कहा, "साहब अभी सोने के कमरे में हैं।"

"तो कुछ देर में आएँ?"

"नहीं। यदि उन्होंने समय दिया है तो अवश्य समय पर आएँगे।" अभी चन्द्रावती और मधु विस्मय में एक-दूसरे का मुख देख ही रहे थे कि चरणसिंह 'स्लीपिंग सूट' के ऊपर रेशमी नाईट गाउन पहने बैठक के बाहर से गुजरा। उसने मधु इत्यादि को वहाँ बैठे देखा तो भीतर आ गया और चन्द्रावती को नमस्ते कर अपने वहाँ होने की सफाई देने लगा, "मधु! रात इतना खा-पी गया था कि घर नहीं जा सका और वकील साहब ने कहा, यहीं सो जाऊँ।"

"अब भी घर जा सकोगे या नहीं मैं यहाँ से तुम्हारे घर जाने वाली हूँ।" चन्द्रावती ने पूछ लिया।

"कुछ काम है, माताजी!"

"कल सायंकाल तुम्हारे माता-पिता मुझसे मिलने आए थे और बदले में मैं उनसे मिलने के लिए जाना चाहती हूँ।"

"तो मैं आपके साथ चलूँगा। वकील साहब आने ही वाले हैं और जब तक आप उनसे बातचीत करेंगी मैं तैयार हो जाऊँगा।" इतना कह चरणसिंह तैयार होने के लिए बैठक से बाहर चला गया।

इसके तुरन्त ही पीछे मुक्तानन्द दफ्तर के पहनावे में आ पहुँचा। पहुँचते ही उसने बैठक में लगी घड़ी की ओर देखकर कह दिया, "आप कुछ जल्दी आ गए हैं। अभी आठ नहीं बजे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ।'' चन्द्रावती ने हाथ जोड़ नमस्ते करते हुए कहा, ''हमने कुछ दूर से आना था, इसलिए कुछ जल्दी ही चल पड़े थे। मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट का विचारकर ही ऐसा किया गया है।''

जब चन्द्रावती ने अपनी बात बतानी चाही तो मुक्तानन्द उनको दफ्तर में ले गया और कागज़-पैन्सिल ले मुकद्दमे की विशेष बातें उसने लिखनी आरम्भ कर दीं। चन्द्रावती ने बिना कुछ भी छिपाए पूर्ण परिस्थिति का वर्णन कर दिया, ''मैं समझती हूँ कि मधु ज़मींदारी का ठीक उत्तराधिकारी है। इसे ज़मींदारी मिलनी चाहिए। पीछे यह उसे रेशम के लड़के को दे अथवा अपनी पत्नी के लड़के को दे, यह इसके अपने विचार करने की बात होगी।''

''इसका अर्थ मैं यह समझा हूँ,'' मुक्तानन्द ने पूछ लिया, ''कि आप रेशम के लड़के को कुछ देने का विचार भी रखती हैं।''

''मधु ने बताया है कि वह उसे उचित भाग देने का विचार रखता है।''

''तो अभी क्यों नहीं दे देतीं?''

उत्तर चन्द्रावती ने दिया, ''यह मुकद्दमा हम ज़मींदारी पाने के लिए नहीं लड़ रहे। यह मान-अपमान का प्रश्न है। मेरे चरित्र और पति के प्रति मेरी निष्ठा को कलुषित करने का यत्न किया गया है।''

''और कितना कुछ इस पर व्यय कर सकती हैं?''

''आप बताइये कि क्या खर्चा बैठ जाएगा?''

''यदि कोई असामान्य स्थिति उत्पन्न न हुई तो वकील और उसके मुन्शी का खर्चा 'प्रिवी कौन्सिल' तक बीस हज़ार रुपया और शेष अदालती खर्चा पाँच हज़ार रुपया।''

''मैं समझती हूँ,'' चन्द्रावती ने कह दिया, ''रेशम प्रथम अदालत से आगे जाने की सामर्थ्य नहीं रखती। इस पर भी मैं 'प्रिवी कौन्सिल' तक जाने के लिए तैयार हूँ।''

''हाँ, तो इतना कुछ तो गाँठ में बाँधकर ही चलना होगा।''

''यह सब बँधा रखा है। आपको इस समय कितना नजर किया जाए?''

''एक हज़ार सायंकाल तक पहुँच जाए तो मैं कल प्रातःकाल जवाब-दावा तैयार कर सकूँगा।''

''हो जाएगा।''

मुक्तानन्द ने कागज़ एक फाइल में लगा दिया और फाइल को मेज़ के दराज़ में रखकर मुस्कराते हुए पूछने लगा, ''मधु! रात के प्रस्ताव की बात माँ से कही है?''

मधु ने मुस्कराते हुए कह दिया, ''कही थी। परन्तु माँ ने ऐना को आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेडरूम से सोने की पोशाक में निकलते देख लिया है।''

मुक्तानन्द विस्मय में पड़ गया। एक क्षण तक मधु का मुख देख वह पूछने लगा, ''यह मैथेमैटिकल कैलकुलेशन है या साइन्टिफिक ऑब्जरवेशन?''

''दोनों के मिश्रण का।''

''तो तुम उससे विवाह नहीं करोगे?''

''मैंने यह नहीं कहा। मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि यह बात मेरे प्रस्ताव के विरोध में जाती है। यह तो जब ऐना माँ से मिलने आएगी तो अपनी सफाई दे लेगी।''

''तुमको इसमें क्या आपत्ति है?''

''कुछ नहीं। यदि माँ ने ऐना के पक्ष में निर्णय दिया तो मैं यूरोपियन आचार-विचारयुक्त एक पत्नी और गृहस्थ चलाने के लिए दूसरी पत्नी बना लूँगा। एक तालाब में मछलियों की भाँति तैरने के लिए रहेगी।''

''तो तुम दो विवाह करोगे?'' मुक्तानन्द ने हँसते हुए पूछ लिया।

''हमारे धर्मशास्त्र में मना नहीं।''

मुक्तानन्द भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। इस पर उसने चन्द्रावती से प्रश्न पूछ लिया। वह मधु के वार्त्तालाप से इतना तो समझ गई थी कि मधु ने मुक्तानन्द और ऐना के अनुचित सम्बन्ध का अनुमान लगाया है और वह ठीक निकला है। चन्द्रावती मुक्तानन्द को प्रश्नभरी मुद्रा में देख मुस्कराती हुई बोली, ''ऐना को मुझसे मिलना चाहिए। मैं उसको अपना घर और अपना रहन-सहन दिखा दूँगी। यदि वह इस पर भी मधु से विवाह करना चाहेगी तो वैसी सुन्दर लड़की को कौन इनकार कर सकता है! परन्तु आज की घटना के उपरान्त धर्मपालन के लिए मधु को दूसरा विवाह करना होगा।''

''विवाह से धर्मपालन होता है क्या?''

''जी। पाँच प्रकार के कर्म हैं जो पति-पत्नी मिलकर करते हैं। इनको हमारे समाज में पंच महायज्ञ कहते हैं। एक है सन्तान पैदा कर वंश को चलाना; दूसरा है माता-पिता के सुकृत कार्यों को चलाना; तीसरा अपने पूर्वजों की स्मृति और ज्ञान-विज्ञान को चलाना; चौथा अपने अधीन नौकर-चाकरों का पालना करना और पाँचवाँ पशुओं का पालन करना। ये पति-पत्नी के कार्य हैं।''

''यह सब व्यर्थ है। वास्तविक बात है एक सुन्दर स्त्री पर अपना अधिकार बनाना।''

''हाँ, यह भी किया जा सकता है, परन्तु इसका पहली बातों से विरोध नहीं है।''

''तब तो काम बन जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप उससे कहिए कि मुझसे मिल ले।"

इस समय चरणसिंह कपड़े पहन तैयार हो वहाँ आ गया। मधु और चन्द्रावती चरणसिंह के साथ चलने के लिए उठे तो चन्द्रावती ने कह दिया, "मध्याह्न-उपरान्त मधु आपके पास आपकी फ़ीस लेकर पहुँचेगा।"

वे कार्यालय से निकले ही थे कि सिल्विया और ऐना मिस्टर स्मिथ के साथ कोठी से निकलती दिखाई दीं। मधु ने ऐना की ओर संकेत कर माँ को बता दिया, "माँ, वह है ऐना। साथ ही उसका बड़ी बहन सिल्विया है।"

"मधु!" चरणसिंह ने पूछ लिया, "तो तुम ऐना से विवाह कर रहे हो?"

"यह निश्चय करना माँ का काम है। मैं तो सब-कुछ माँ को बता रहा हूँ, जिससे माँ को निश्चय करने में सहायता मिल सके।"

"तब तो ठीक है। माताजी को कह दो कि मुझसे भी कुछ बातें पूछेंगी तो मैं बता सकूँगा।"

चन्द्रावती ने बात समाप्त करते हुए कह दिया, "अभी तो सरस्वती की बात विचारणीय है।"

चरणसिंह चुप रहा। चन्द्रावती अपनी घोड़ागाड़ी में वहाँ आई थी। ये तीनों उसमें सवार हो चल दिए।

चरणसिंह जानता था कि सरस्वती मधु से विवाह पसन्द नहीं करेगी और उसने इस बात का संकेत मधु को दे रखा था। वह स्वयं यह नहीं चाहता था कि उसका मित्र स्मिथ की लड़कियों के मोहजाल में फँस जाए। परन्तु चन्द्रावती ने बात टाल दी थी। इस कारण उन लड़कियों के विषय में वह कुछ अधिक बता नहीं सका।

चन्द्रावती ने बात चरणसिंह पर बदल दी, "मैं तुम्हारे इस स्थान पर रात सोने की आशा नहीं करती थी।"

"मधु भी तो रात यहाँ आया था।"

"उसने मुझको सब-कुछ बता दिया है, परन्तु यह नहीं बताया था कि चरणसिंह मुक्तानन्द की कोठी में ही सो गया है?"

"माताजी! रात कुछ अधिक पी गया था। इस कारण घर नहीं जा सका। मधु तो पीता नहीं। साथ ही यह एक निर्जीव प्राणी है। इसको सुरा, सुन्दरी, धन, वैभव कुछ भी मोह नहीं सकता। पर मुझमें तो जड़ता नहीं है।"

"ठीक है।" चन्द्रावती ने कह दिया, "जड़ता न सही, पर मूढ़ता तो नहीं होनी चाहिए।"

चरणसिंह इन दोनों शब्दों के अर्थों में अन्तर पर विचार करने लगा। मधु माँ को इतनी तत्व की बात कहते सुन फड़क उठा। उसने चरणसिंह को समझाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए कह दिया, ''जड़ता है मेज़-कुर्सी इत्यादि की-सी। तुम मुझ में वही भाव देखते हो। इस विषय पर बात नहीं हो रही। बात तो तुम जैसे जीवधारी की हो रही है। जीवधारी के लक्षण केवल चलना ही नहीं, वरन शुभ दिशा में चलना भी है। चरण, जीवन का लक्षण 'डिस्क्रीशन और डायरेक्शन' (इच्छा और प्रेरणा) भी है। केवल चलना जीवन का लक्ष्य है, परन्तु जीवात्मा का नहीं। जीवन तो मेज़, कुर्सी, नदी, नालों, पर्वत, नक्षत्रों में भी है, परन्तु उनमें जीवात्मा नहीं।''

''तो तुममें जीवात्मा नहीं ?'' चरणसिंह ने हँसते हुए कहा, ''मधु! तुमने माना है कि तुममें जड़ता है।''

मधु ने मुस्कराते हुए कहा, ''माँ ने यह कहा है कि तुममें जड़ता न सही, पर मूढ़ता भी तो नहीं होनी चाहिए।

''देखो मैं बताता हूँ। मैं कल रात जड़वत् बना था। यह मैं अपनी इच्छा से बना था। इसमें भी इच्छा प्रधान थी और इच्छा जीवात्मा के कारण है। इच्छा से जड़ हो जाना अथवा चेतन हो जाना, एक अति उन्नत आत्मा का लक्षण है। परन्तु चेतन होकर चेतना को मिथ्या दिशा में अथवा सत्य दिशा में ले जाना बुद्धि का काम है। जब चेतना कार्य करे तो बुद्धि उसकी दिशा निश्चित करती है। यदि ठीक दिशा निश्चय करे तो बुद्धिशीलता कही जाती है और मिथ्या दिशा स्वीकार करे तो मूढ़ता कहलाती है।''

चन्द्रावती अपनी बात का, इस प्रकार मधु से स्पष्टीकरण सुन सन्तुष्ट थी। उसने अब चरणसिंह से पूछ लिया, ''तुम विवाह कब कर रहे हो ?''

''मधु दादा के साथ-साथ।''

''मैं इसके विवाह का प्रबन्ध करके ही गाँव जाना चाहती हूँ।''

''मतलब यह कि मेरा विवाह भी सम्पन्न करके ही जाएँगी।''

''यह मेरे अधीन नहीं। तुम्हारी माँ क्या कहती है ?''

''वह तो मेरा विवाह मुक्तानन्द की एक भतीजी के साथ करना चाहती है।''

''और तुम ?''

''मैं आपसे स्वीकार की गई लड़की से विवाह करने का विचार रखता हूँ।''

मधु हँस पड़ा। दोनों मधु का मुख देखने लगे। मधु ने कहा, ''भैया चरण! माँ को लड़की दिखाई है क्या ?''

''दिखा दूँगा। पहले मधु दादा के लिए देख लें।''

चन्द्रावती ने स्पष्ट कह दिया, ''देखो चरण! अगर लड़की ने मुझे माँ कह दिया तो मैं उसे तुमसे विवाह करने की सम्मति कभी नहीं दे सकूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 7 ::

चरणसिंह को यह युक्ति समझ नहीं आई। वह प्रश्नभरी दृष्टि से चन्द्रावती का मुख देखने लगा। परन्तु इस समय घोड़ागाड़ी चरणसिंह के मकान पर जा पहुँची थी। इस कारण वार्तालाप बन्द हो गया और तीनों मकान में जा पहुँचे। हरिहरसिंह और तारा चन्द्रावती की प्रतीक्षा में वहाँ द्वार पर खड़े थे। वे कुछ उदास और गम्भीर मुख बनाए हुए थे। मधु ने उनके गम्भीर मुखों को देखा तो हरिहरसिंह से पूछ लिया, भापा, क्या हुआ है ?''

''कुछ हुआ है। भीतर आओ। बताते हैं।''

सब चरणसिंह की बैठक में पहुँच गए। जब सब बैठ गए तो प्रातः के अल्पाहार का प्रबन्ध होने लगा। चन्द्रावती ने कह दिया, ''नहीं। अल्पाहार मैं घर जाकर लूँगी। घर पर मेहमान आने वाले हैं।''

''तब तो बातचीत तुरन्त आरम्भ करनी चाहिए।'' तारा ने कह दिया, ''आज प्रातःकाल सरस्वती ने असंदिग्ध शब्दों में कहा है कि मधु को वह अपना ऐसे ही भाई मानती है जैसे चरण दादा को। अतः उससे विवाह हो ही नहीं सकता।''

''क्या मैं सरस्वती से नहीं मिल सकती ?'' चन्द्रावती ने पूछ लिया।''

''आइये। वह रात से भूख-हड़ताल किए हुए है।''

''और माँजी'' मधु ने तारा से पूछ लिया, ''मुझे बहन सरस्वती से मिलने की स्वीकृति नहीं क्या ?''

''अब किसी को किसी भी बात की मनाही नहीं।'' तारा ने विक्षुब्ध मनोभाव में कह दिया, ''सरस्वती, चरण, मधु, सब जो मन में आए कर सकते हैं।''

''क्यों चरण! तुम भी माँ का कहा नहीं मानते ?'' चन्द्रावती ने पूछ लिया।

''माताजी! यह बात नहीं। वास्तविक स्थिति यह है कि माँ किसी की भी बात नहीं मानती। सरस्वती की, अपने बेटे चरणसिंह की और फिर अपने पति की भी।''

चन्द्रावती ने इस पारिवारिक झगड़े से निकलने के लिए कह दिया, ''चरण! मैं तुम्हारे पारिवारिक झगड़े में झाँकना नहीं चाहती।''

''वाह माताजी! अभी तो आप कह रही थीं कि यदि निर्वाचित लड़की ने आपको माँ कह दिया तो आप उसे मुझसे विवाह की स्वीकृति नहीं देंगी। और अगर मैं आपको माँ कह दूँगा तो आप उसे मुझसे विवाह करने के लिए क्यों नहीं कहेंगी ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रावती हँस पड़ी और हँसती हुई बोली, ''परन्तु चरण! तुम माँ कहते हुए मेरा कहा तो मानोगे नहीं ?''

''आप कहकर देखिए। मानता हूँ या नहीं।''

''अच्छी बात। पहले सरस्वती से मिल लूँ।'' चन्द्रावती ने हरिहर के कक्ष में जाते हुए चरणसिंह, मधु और हरिहर को कह दिया, ''आप पुरुष लोग बाहर बैठें। हम स्त्री वर्ग की बातों में आपको झाँकना नहीं चाहिए।''

दस मिनट में ही सरस्वती को लिये हुए दोनों स्त्रियाँ बाहर आईं और फिर उसके उपरान्त कोई बात नहीं हुई। कुछ देर इधर-उधर की बातें कर चन्द्रावती ने कह दिया, ''मैं सरस्वती को अपने साथ ले जा रही हूँ।''

पुरुष वर्ग विस्मय में चन्द्रावती का मुख देखने लगा। चन्द्रावती ने उनका समाधान करने के लिए कह दिया, ''यह अपने भाई मधु की बहू को देखने जा रही है।''

चरण ने पूछ लिया, ''तो माताजी! मेरे विषय में ?''

''कहाँ है तुम्हारा निर्वाचिता ?''

''आपके घर के पड़ोस में ही है।''

''तो क्या मुझको उसके घर जाना चाहिए ?''

''नहीं, उसको आपके घर में आना चाहिए।''

''तो आ जाए। बताओ किस समय आ सकेगी ?''

''आज रविवार है। उसका पिता घर पर ही होगा। यदि वह मान गया तो अभी ले आऊँगा।''

चन्द्रावती विचार करने लगी। उसने समझा कि तारा को भी साथ ले चलना चाहिए। इस कारण उसने कह दिया, ''तारा बहन! तुम मधु की बहू को देखने नहीं चलोगी ?''

''कहाँ है वह ?''

''उसके माता-पिता और मधु के गुरुजी घर पर आने वाले हैं। वे मेरे घर में अल्पाहार लेंगे। यदि बात निश्चय हो गई तो फिर लड़की को उसके माता-पिता के घर देखने चलेंगे।''

''तो बात का निश्चय अभी होना है ?''

''रात तो यही बात थी, परन्तु अब सरस्वती के विचार जानने के बाद निश्चय ही समझती हूँ।''

''और अभी लड़की को देखने जाएँगी ?''

''हाँ। मैं तो आज अथवा अधिक-से-अधिक कल तक विवाह कर देना चाहती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बिना अपने सम्बन्धियों को बुलाए?"

"विवाह गाँव में जाकर होगा। सम्बन्धी सब एकत्रित हो जाएँगे।"

"माताजी! बहुत जल्दी-जल्दी चल रही हैं।" चरणसिंह का प्रश्न था।

"हाँ; जड़त्व नहीं रहा न। इच्छा ने इसे दूर कर दिया है और चेतना जागृत हो गई है। मैं इस चेतना को दिशा देना चाहती हूँ, जिससे यह मूढ़ता न करने लगे।"

"तो माताजी! कुछ थोड़ी-सी चेतना यहाँ जागृत करती जाइए।"

सब उठ पड़े। तारा ने कहा, "बहन जी! ज़रा ठहरिए। मैं कपड़े बदल आऊँ। मैं भी इस चेतना में भागीदार बनना चाहती हूँ।"

चन्द्रावती ने तारा की बात का उत्तर नहीं दिया। तारा अपने कक्ष में वस्त्र बदलने चली गई थी। उसने चरणसिंह को कह दिया, "मैं तो यह देख रही हूँ कि यहाँ नगर में चेतना तो चारों ओर व्याप्त है, परन्तु मूड़ता लिये हुए है। मुझे आज मुक्तानन्द के घर कुछ देखकर यह समझ आया है कदाचित् मधु भी इस चेतना में भागीदार हो रहा है। इस कारण इसे मूढ़ता से बचाने के लिए जल्दी मचा रही हूँ।"

चरणसिंह की समझ में बात आने लगी थी। मधु ने सिल्विया के साथ जाती हुई ऐना को दिखाया था, तो उसने रात का, तालाब में मछलियों के कल्लोल का भी उल्लेख माँ से कर दिया होगा। अब उसे यह भी समझ आने लगा था कि क्यों चन्द्रावती कह रही थी कि यदि उसकी होने वाली पत्नी उसे माँ कह देगी तो वह उसको उससे विवाह की सम्मति नहीं देगी। वह विचार करता था कि मधु ने अवश्य उसके विषय में भी माँ को कुछ बताया होगा और चन्द्रावती के कहने का अर्थ यह है कि उस जैसे आवारा लड़के से वह अपनी लड़की का विवाह नहीं कर सकती।

स्थिति के इस विश्लेषण से वह अपनी पत्नी को चन्द्रावती के सामने लाने में डरने लगा था। इस पर भी करीमन, यह उस लड़की का नाम था, के वायदों पर विश्वास कर वह आज ही सब-कुछ निश्चय कर लेने के विचार से चन्द्रावती के साथ चल पड़ा। चन्द्रावती की गाड़ी सवारियों से ठसाठस भर गई। चन्द्रावती, तारा और सरस्वती एक सीट पर बैठ गईं और दूसरी सीट पर मधु तथा चरणसिंह बैठ गए।

घोड़ागाड़ी नगर में चन्द्रावती के मकान के सामने जा खड़ी हुई। वहाँ दो गाड़ियाँ पहले ही खड़ी थीं। चन्द्रावती ने उनको देख कह दिया, "पंडित जी आ गए हैं, परन्तु दो गाड़ियाँ हैं। कुछ लोग और भी प्रतीत होते हैं।"

और लोग थे, पंडित शशिमोहन की पत्नी और बच्चे। शशिमोहन तो पंडित भुवनचन्द्र के साथ आने वाले ही थे। भीतर जाकर चन्द्रावती के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि मीना भी सबके साथ वहाँ बैठी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्रावती और उसके साथ सरस्वती इत्यादि को देख शशिमोहन ने कह दिया, ''रानी साहिबा! आप इनको ले आई हैं। यह तो बहुत ठीक हुआ है। देखिए।'' उसने एक कोने में रखे एक थाल में नारियल, छुहारे, केसर, चावल, पुष्पमाला की ओर संकेत कर कह दिया, ''हम तो शकुन के लिए तैयार होकर आए हैं।

''मेरी धर्मपत्नी चन्द्रकला, मेरी लड़की सौभाग्यवती और यह मेरा लड़का केशव, ये भी इस अवसर पर उपस्थित होना चाहते थे। इनको भी साथ ले आया हूँ।''

चन्द्रावती ने सबको बैठाते हुए पहले चरणसिंह का, पीछे उसकी बहन सरस्वती और फिर उसकी माँ तारादेवी का परिचय करा दिया। इसके उपरान्त उसने कहा, ''मैं मधु से पूछकर यह निश्चय कर चुकी हूँ कि सगाई और फिर तुरन्त ही विवाह हो जाना चाहिए।''

''परन्तु,'' भुवनचन्द्र ने कह दिया, ''हम इतनी जल्दी प्रबन्ध नहीं कर सकेंगे।''

''क्या प्रबन्ध करना है?''

''मीना के माता-पिता और अपने भाई-बन्धुओं को बुलाना है।''

''यदि आज उनको निमन्त्रण भेज दें तो कब तक वे आ सकेंगे?''

''मैं तो ऐसा विचार नहीं करता, परन्तु वे मुहूर्त्त की प्रतीक्षा करेंगे।''

''अभिप्राय यह कि मुहूर्त्त निकलवाना होगा?''

''जी।''

''यह मेरे वश से बाहर की बात है। आप शकुन दीजिए और फिर मुहूर्त्त निकाल यहीं तिथि-काल निश्चित कर दीजिए।''

''तो यह मधु की इच्छा है?'' शशिमोहन ने मुस्कराते हुए मधुमोहन की ओर देखकर पूछ लिया।

''नहीं पंडितजी। यह मधु को माँ का सुझाव है।'' चन्द्रावती ने कहा।

इससे यह बात समाप्त हो गई। भुवनचन्द्र उठा और कोने में रखे थाल और पुष्प-पत्र उठा लाया। वे लाकर मधुमोहन के सामने रख दिए गए। तदुपरान्त मीना उठी और उसने थाल पर से लाल रेशमी कपड़ा उठाया और अपने अँगूठे पर केशर ले मधु के मस्तक पर तिलक कर दिया। उसके ऊपर चावल लगा मीना ने पुष्पमाला ले मधु के गले में डाल हाथ जोड़ दिए। एक क्षण ऐसे खड़े रहने के उपरान्त वह चन्द्रावती की ओर घूमी और उनके चरण स्पर्श करने को झुकी तो चन्द्रावती ने उसे उठा अपने समीप बैठा लिया और पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब भुवनचन्द्र और सगुणी उठे। सगुणी ने नारियल-छुहारे मधु की झोली में डाले तो पंडितजी ने थाल में रखी एक मुहर मधु के हाथ में दे पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया। इस समय शशिमोहन की पत्नी एक थाल ले आई। उसमें मिठाई थी। उसने मिठाई का थाल सामने रखकर उसमें से एक लड्डू मधु को खिला दिया।

इस पर बधाइयाँ दी गईं और शगुन की रस्म पूरी हुई।

चन्द्रावती जाने से पूर्व घर के नौकरों को अल्पाहार का प्रबन्ध करने के लिए कह गई थी। भुवनचन्द्र ने तो अब वहाँ का अन्न-जल लेना स्वीकार नहीं किया, परन्तु चन्द्रावती के आग्रह पर शशिमोहन और उसके घर के लोग तैयार हो गए। पंडित भुवनचन्द्र बैठे रहे।

अब चरणसिंह ने चन्द्रावती के कान में कह दिया, ''माताजी! इनके सामने मेरी नौका भी पार लगा दीजिए।''

''पर मेरा कहा मानोगे?''

''जरूर मानूँगा।''

''तो रात के समय मुक्तानन्द के घर कभी नहीं जाना होगा।''

''नहीं जाऊँगा।''

''तो जाओ, ले आओ अपनी पत्नी और उसके माता-पिता को।''

जब चरणसिंह चन्द्रावती से यह बातचीत कर रहा था तो मधु को सन्देह हो रहा था कि वह अपनी पत्नी को वहीं लाने के लिए कह रहा है। वह उठकर माँ को पूर्ण स्थिति से अवगत करने आया। उसका विचार था कि एक मुसलमान की लड़की से कुछ पूछना और निश्चय करना होगा। पीछे ही बात पक्की हो सकेगी। वे सब बातें वहाँ भुवनचन्द्र और शशिमोहन के सामने कराना नहीं चाहता था। परन्तु उसके माँ के पास जाने से पूर्व चरणसिंह चन्द्रावती की स्वीकृति ले बैठकघर से जा चुका था।

मधु ने माँ से पूछ लिया, ''चरणसिंह क्या कह रहा था?''

''वह अपनी पत्नी और उसके माता-पिता को ला बात पक्की करना चाहता है। मैं भी यही समझती हूँ कि इन दोनों विद्वानों के सामने बात हो जाए तो ठीक रहेगा।''

''पर माँ! जानती हो कि वह कौन है?''

''कौन है?''

''चरण के अपने मुन्शी नबी बख्श की लड़की है।''

चन्द्रावती मुसलमान की लड़की से चरण के विवाह की बात सुन भौंचक्की हो मुख देखती रह गई। इस पर मधु ने कह दिया, पहले स्वयं देख-भालकर पीछे ही इन ब्राह्मण देवताओं के सामने बात करनी चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वह तो चला गया है।"

"कहो तो मैं उसे दूसरे कमरे में बैठा दूँ? जब ये लोग चले जाएँगे तो बात करना।"

चन्द्रावती परेशानी अनुभव करने लगी। उसने कुछ विचार कर कहा, "अच्छा। उनको दूसरे कमरे में बैठाना। मैं पंडित भुवनचन्द्रजी को रोकने का यत्न करूँगी। उनके सामने बात हो जाए तो ठीक है।

"पंडितजी, एक ब्राह्मण कन्या का विवाह एक कायस्थ के लड़के से तो करने पर तैयार हो गए हैं। देखें, ये एक हिन्दू युवक का मुसलमान लड़की से विवाह करने-न-करने में क्या युक्ति देते हैं।"

मधु माँ का मुख देखता रह गया। वर्तमान परिस्थिति में यही प्रबन्ध उत्तम समझ, वह चुप कर रहा। सब लोग खाना-पीना कर रहे थे कि चरणसिंह अपने साथ मियां नबी बख्श और बुर्के में दो औरतों को लिये हुए वहाँ आ पहुँचा। मधु उनको आया देख बाहर आ गया और उन सबको एक बगल के कमरे में ले गया। वहाँ उनको बैठाकर उसने कहा, "भोजन के उपरान्त रानी साहिबा आपसे मिलेंगी।"

:: 8 ::

नबी बख्श और उसकी पत्नी तथा लड़की कुर्सियों पर बैठीं तो मधु चरणसिंह को वहाँ ले गया, जहाँ खाना-पीना हो रहा था। उसे अपने समीप बैठाकर खाना खाने के लिए कह, बोला, "चरण! तुमको माँ को यह तो बता देना चाहिए था कि ये लोग मुसलमान हैं।"

"इसकी क्या ज़रूरत थी?"

"माँ, पंडित शशिमोहन इत्यादि के सामने बात करना नहीं चाहती। ये ब्राह्मण देवता इस बात से घबरा जाएँगे।"

"मैंने समझा था कि जब ये एक ब्राह्मण लड़की कायस्थ के घर भेज रहे हैं तो यहाँ तो उल्टी गंगा बहने वाली है।"

"मेरी बात दूसरी है, चरण। पंडितजी मुझे पिछले पाँच वर्ष से जानते हैं। वे तो मुझको ब्राह्मण ही मानते हैं।"

"भाई, मैं तो इनको बड़ी आशा दिलाकर यहाँ लाया हूँ। कोई तरकीब निकालो। मेरा विवाह भी तुम्हारे विवाह के साथ ही होगा।"

"वह भी देख लिया जाएगा।"

मधु विचार कर रहा था कि पंडित भुवनचन्द्र लड़की से अति कठोर व्रत कराना चाहेगा, और यह न तो करना चाहेगी और न ही कर सकेगी। इससे काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बिगड़ जाएगा। इसी कारण वह परेशान था।

चरण अब अपने मन में जोड़-तोड़ लगाने लगा था। जब खाना-पीना समाप्त हुआ तो चन्द्रावती उठी और पंडित भुवनचन्द्रजी के पास जाकर खड़ी हो गई। शशिमोहन और उसकी पत्नी तथा बच्चे जाने को तैयार हुए तो चन्द्रावती ने उनके सामने शशिमोहनजी को कह दिया, ''पंडित जी! मीना के पिता यहाँ ठहरेंगे और मीना के विवाह का मुहूर्त्त निकालकर ही जाएँगे। ये अभी कुछ देर ठहरेंगे।''

शशिमोहन ने प्रश्नभरी दृष्टि से भुवनचन्द्र की ओर देखा तो भुवनचन्द्र ने कहा, ''आप मीना और सगुणी को ले जाइए, मैं कुछ देर में आऊँगा।''

जब शशिमोहन इत्यादि विदा हो गए तो चन्द्रावती पंडितजी, तारा और सरस्वती को लेकर उस कमरे में चली गई, जहाँ मियाँ नबी बख्श बैठा था। चरणसिंह वहाँ खड़ा उनको समझा रहा था।

''हाँ चरणसिंह! बताओ, यह क्या मामला है?''

''माताजी! यह एक लड़की है। नाम है करीमन। इसके पिता ये हैं। इनका नाम है नबी बख्श। यह मुझसे विवाह करना चाहती है।''

''और तुम इसको क्या सिखा-पढ़ा रहे थे?''

''सिर्फ यह कि यह लड़की आपको माँजी न कहे।''

चन्द्रावती बात समझ हँसने लगी। पंडित भुवनचन्द्र ने इस हँसने का अर्थ न समझ पूछ लिया, ''तुम तो मधु के मित्र हो न?''

''जी।''

''भला तुम्हारी बनने वाली पत्नी तुम्हारे मित्र की माँ को माँ क्यों न माने?''

''पंडितजी! माने जो मरजी, मगर मुँह से न कहे। यह इसलिए कि माँजी ने कहा है कि यदि इसने माँजी कहकर पुकारा तो ये इसे अपनी लड़की समझ लेंगी और फिर यह अपनी लड़की का विवाह मुझसे नहीं कर सकतीं।''

''क्यों?''

''इसलिए कि मेरी बहन ने आज मधुमोहन से विवाह करने से इनकार कर दिया है।''

''सच? भला क्यों?''

''वह उसको भाई समझती है और बहन भाई से विवाह नहीं कर सकती। इसीलिए माताजी की लड़की मुझे भाई मान मुझसे विवाह नहीं कर सकेगी।''

''पंडितजी भी हँस पड़े। हँसकर वे पूछने लगे, ''तो यह क्या कहकर इनको पुकारे?''

''मौसी, अम्मी, अथवा और जो मर्जी। सिर्फ माताजी के लिए मना कर रहा था।'' चरण ने अपने कहने का अर्थ समझा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर तुम इससे विवाह ही क्यों करते हो ? बीवी बनाने से बहन बनाना तो और भी अच्छा है।''

''इसमें दो कारण हैं। एक तो यह कि यह मुझसे विवाह करना चाहती है और में-हूँ राजपूत। राजपूत किसी लड़की की माँग को ठुकरा नहीं सकते।''

''ओह! और दूसरा क्या कारण है?''

''वह यह है कि यह.....यह...... ।''

''हाँ-हाँ; कहो न! यह क्या है?''

''जी। यह बहुत ही सुन्दर है।''

''तो यह बात है। अच्छा बहन चन्द्रावती! मुझे यहाँ किसलिए लाई हो?''

''चरणसिंह चाहता है कि मैं इसकी होने वाली पत्नी को आशीर्वाद दे दूँ।''

''इसकी अपनी माताजी क्या कहती हैं?'' भुवनचन्द्र ने तारा की ओर देखकर पूछ लिया।

''मैं तो यह कहती हूँ कि यह मुसलमानिन है।''

''तो आप यह नहीं चाहतीं?''

''अपने घर में कैसे रखूँ?''

''तो इसको पृथक् घर बना लेने दीजिए।''

इसका उत्तर चरणसिंह ने दे दिया, ''पंडितजी, वह तो मैंने पहले ही रखा हुआ है। माँ मेरी रसोई में नहीं खाती और मैं इनकी रसोई में नहीं खाता।''

''यह तो अच्छी बात नहीं है।''

''तो क्या करूँ?''

''मेरी राय मानो। तुम करीमन से विवाह कर लो और करीमन से वचन ले लो कि तुम्हारा कहा माना करे। पत्नी को पति का कहा मानना चाहिए।''

''यह वचन तो यह कर देगी।''

''और तुम दो घण्टे नित्य मेरे पास आकर प्रायश्चित्त करो। यह प्रायश्चित्त तब तक चलेगा जब तक तुम्हारा विवाह नहीं हो जाता।''

''पर मैं कोई पाप कर रहा हूँ जो प्रायश्चित्त करूँ?''

''यदि यह करो तो मैं तुम्हारे विवाह का आज ही मुहूर्त्त निकाल देता हूँ। यही काम अभी मधु के लिए करने वाला हूँ। तुम्हारा भी साथ ही कर दूँगा।''

नबी बख्श ने झुककर पंडितजी के चरण स्पर्श कर दिए। उसने कहा, ''खुदाबन्द ताला आपकी उमर दराज़ करे। आपने हमारी एक बहुत बड़ी मुश्किल हल कर दी है।''

''यह मुश्किल नहीं। तुम सब बाहर के कमरे में आ जाओ। वहाँ बैठकर बात समझा देता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडितजी बैठकघर में आए तो बाकी सब लोग भी वहाँ चले आए। सब आकर बैठ गए।

पंडितजी ने बुर्कों की ओर देखकर चरणसिंह से पूछ लिया, ''कौन है तुम्हारी होने वाली बहू?''

''यह है पंडितजी।'' उसने एक बुर्के की ओर उंगली से संकेत कर कह दिया।

''इधर आओ बेटी!'' पंडितजी ने उस बुर्के को सम्बोधन कर कहा। उसे अपने सामने कुर्सी पर बैठाकर पूछा, ''तुम चरणसिंह से विवाह करना चाहती हो?''

''जी।'' लड़की ने धीरे से कहा।

''क्या आयु है तुम्हारी?''

लड़की ने माँ की तरफ देखा तो मियाँ नबी बख्श बोल उठा, ''पंडित जी! यह बीस साल से ऊपर है।''

''मियाँ नबी बख्श तुम इस शादी को मंजूर करते हो?''

''साहब! लड़की हठ कर रही है। हमने कहा है कि ये बहुत बड़े वकील हैं। पर यह मानती नहीं। हम मजबूर हो गए हैं।''

''इस मजबूरी में चरणसिंह का कितना हाथ है?''

''इतना ही जितना किसी युवक का खूबसूरत लड़की के वालदैन पर हो सकता है। यह हमारी मिन्नत करता रहता है।''

''लड़की की भी मिन्नत करता है?''

''जी नहीं। लड़की इसकी मिन्नत करती है और यह हमारी मिन्नत करता है।''

''और तुम क्या कहते हो?''

''यही कि अपने माता-पिता की रज़ामन्दी ले लो।''

''अच्छा करीमन तुमको वायदा करना होगा कि तुम अपने खाविन्द के साथ रहोगी और हमेशा उसका कहा मानोगी।''

''जी। यह तो मैं कई बार कह चुकी हूँ।''

''देखो, खुदाबन्द ताला को हाज़िर-नाज़िर समझकर यह वायदा करो कि तुम अपने मन से अपने खाविन्द की वफादार बीवी बनकर रहोगी, हमेशा उसका कहा मानोगी।''

करीमन ने जब यह बात दुहरा दी तो भुवनचन्द्र ने चरणसिंह को कहा, ''इधर आओ, चरणसिंह!''

वह आया तो पंडितजी ने कहा, ''तुम इसे कहो कि तुम अपने सब बड़ों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने और सर्वव्यापक परमात्मा के सामने यह वचन देते हो कि तुम इस लड़की को, जब तक यह तुम्हारा कहा मानती रहेगी, इससे धर्मयुक्त और प्रेममय व्यवहार रखोगे। इसकी सब धर्मयुक्त अभिलाषाओं को पूर्ण करते रहोगे।''

चरणसिंह ने यह वचन कहे तो पंडितजी ने कहा, ''तुम यह वचन देते हो कि तुमने इस भोली-भाली लड़की के मन में जो लोभ उत्पन्न किया है, उसका प्रायश्चित्त मेरे पास नित्य दो घण्टे आकर करोगे।''

''करूँगा।''

''तो हम तुम्हारे और मधु के विवाह का मुहूर्त्त निकाल देते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा परिच्छेद

सम्वत् 1955 आ गया था। चरणसिंह और मधु के विवाह को पाँच वर्ष व्यतीत हो चुके थे। चरणसिंह के घर में दो बच्चे भी हो चुके थे। एक लड़का था और एक लड़की थी। मधु के अभी कोई सन्तान नहीं हुई थी।

सरस्वती का विवाह एक सिविल इन्जीनियर से हो गया था। उसके भी एक लड़का हो चुका था और उसका पति अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए इंगलैंड दो वर्ष की पढ़ाई करने गया हुआ था। वैसे वह नगर निगम में नौकरी करता था और वहाँ से दो वर्ष की छुट्टी लेकर गया था।

चन्द्रावती रेशम के पति श्रीचन्द्र से चलाए मुकद्दमे में जीत गई थीं। मुकद्दमा हाईकोर्ट तक गया था और जब वहाँ पर रेशम के लड़के को ज़मींदारी का उत्तराधिकारी नहीं माना गया तो श्रीचन्द्र ने दम तोड़ दिया। वह प्रिवी कौन्सिल में जाने का साहस नहीं कर सका। सब-जज का फैसला ही हाईकोर्ट में स्वीकार हो गया। सब-जज ने यह कहा कि जब चन्द्रावती के लड़का उत्पन्न हुआ था, तब इसके पति को यह विदित था कि लड़का विवाह के सात महीने के उपरान्त उत्पन्न हुआ है। यह सिद्ध हो गया है कि चन्द्रावती और महामाया प्रसाद का विवाह हुआ है। वह विवाह लड़का उत्पन्न होने पर भी कायम रहा। यह भी सिद्ध हो चुका है कि मधुमोहन विवाह के उपरान्त उत्पन्न हुआ था और उसके पिता ने लड़के के उत्पन्न होने पर दावतें की थीं, जश्न मनाया था और लड़के के संस्कार किए थे। ये सब बातें यह सिद्ध करती हैं कि मधुमोहन, महामाया प्रसाद का ही लड़का है।

''मधुमोहन के जन्म के उपरान्त महामाया प्रसाद तीन वर्ष तक जीवित रहा और इस काल में कभी महामाया प्रसाद और चन्द्रावती में झगड़ा हुआ हो अथवा मधुमोहन का तिरस्कार हुआ हो, ऐसा सिद्ध नहीं हो सका।''

''इसके विपरीत रेशम महामाया प्रसाद की लड़की है, यह सिद्ध नहीं किया जा सका। रेशम की माँ मोहिनी महामाया प्रसाद के जीवनकाल में और पीछे भी ज़मींदार के घर में एक 'मेड सर्वेन्ट' के रूप में ही रही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस फैसले को हाईकोर्ट तक रद्द नहीं कराया जा सका। चार वर्ष तक मुकद्दमा चलता रहा और मधुमोहन मुक्तानन्द के सिर पर सवार रहा। वह मुकद्दमे की प्रत्येक गतिविधि में रुचि लेता रहा और वकील साहब के लिए वस्तुस्थिति और उसके लिए प्रमाण उपस्थित करने में सहायता करता रहा।

इस मुकद्दमे के काल में चरणसिंह मुक्तानन्द के सहायक वकील के रूप में सहायता करता रहा था। वह इस मुकद्दमे में किसी प्रकार की फ़ीस नहीं ले रहा था।

जब करीमन, जिसका नाम पंडित भुवनचन्द्र ने इन्द्रा रख दिया था, के दूसरा गर्भ ठहरा तो चरणसिंह ने चिन्ता व्यक्त करते हुए मधु से पूछ लिया, "मधु! क्या बात है? भाभी मीना तो अभी भी हल्की-फुल्की चलती फिरती हैं और यहाँ तो दूसरी सृष्टि का निर्माण हो रहा है।"

मधु हँस पड़ा। उसने कह दिया, "चरण! यह इच्छा से स्वीकार की हुई जड़ता है। जब इच्छा होगी तो इस जड़ता में चेतना का संचार कर दिया जाएगा।

"देखो चरण! एक शास्त्र है बृहदारण्यक उपनिषद्। उसमें लिखा है कि पहले सब-कुछ मृत्यु तुल्य था। सब-कुछ सोया हुआ था। फिर परमात्मा की इच्छा हुई कि यह आत्मवान् हो जाए और तब उसमें गति उत्पन्न हुई। प्रकृति के कण-कण में चेतना का संचार हो गया और यह सब चराचर जगत बन गया।

"यही बात यहाँ है। अभी सब-कुछ सोया हुआ है। जब इच्छा होगी तो यह अद्भुत सृष्टि हो जाएगी।"

"और वह चेतना कब होगी?"

"जब तक बहन रेशम द्वारा चलाए मुकद्दमे का निर्णय नहीं होता, यह जड़ता चेतना में नहीं आएगी।"

"और इस जड़ता के लिए भाभी मीना कभी झगड़ा नहीं करती?"

"तुमको क्या दिखाई देता है? कभी चिन्तित, नाराज़ अथवा असन्तुष्ट दिखाई दी है?"

"मैं समझता हूँ कि तुमने उसे भी जड़ बना रखा है।"

"बलपूर्वक नहीं, प्रत्युत समझा-बुझाकर। स्वेच्छा से स्वीकार की जड़ता, जिसे अंग्रेज़ी में inertia कहते हैं, भी कर्म ही है। कारण यह कि इस प्रकार स्वीकार की गई जड़ता के लिए भी तो प्रयत्न की आवश्यकता रहती है। इसे हम संयम कहते हैं।

"एक बात और बता दूँ। एक नदी में बहता हुआ लकड़ी का लट्ठा चल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देता है, परन्तु वास्तव में वह जड़ ही है। कारण यह कि उस लट्ठे की गति लट्ठे की अपनी करनी से नहीं हो रही। उसमें तो नदी के बहाव से गति उत्पन्न हुई है। अभिप्राय यह कि हमारी जड़ता और तुम्हारी गतिशीलता में भारी अन्तर है। यह कर्म है और तुम्हारा अकर्म है। तुम लोग काल के बहाव में एक लट्ठे की भाँति बहते हुए अपने को चेतन मान रहे हो। हो तुम जड़ ही।''

चरणसिंह अब तक मधुमोहन की स्पष्ट युक्तियों को सुनने का अभ्यस्त हो चुका था। उसने समीप बैठी अपनी पत्नी इन्द्रा से कह दिया, ''देखो इन्द्रा! मधु कह रहा है कि हम जो बच्चे पैदा कर रहे हैं, वे तो जड़ हैं और यह तथा भाभी मीना जो कुछ भी निर्माण नहीं कर रहे, चेतन हैं।''

इन्द्रा ने कहा, ''हाँ, पिछली बार जब मैं इनके गाँव गई थी तो भाभी ने मुझे कहा था कि मुकद्दमे का निर्णय सुनने के उपरान्त सन्तान निर्माण में यत्न करेंगे।

''पर मैंने उसको भी कहा था और दादा से भी कहती हूँ कि जमाने के बहाव में बहते जाने में भी आनन्द है।''

मधु और चरण हँस पड़े।

मुकद्दमे का फैसला हुआ। तब श्रीचन्द्र ने रेशम को कह दिया, ''तुम्हारे कहने पर तो मैं बरबाद हो गया हूँ। घर की सब जमा पूँजी लग चुकी है। कुछ ऊपर से ऋण लेकर भी लगाना पड़ा है। अब और कुछ नहीं करूँगा।''

रेशम बहुत चिन्तित और अपनी करतूत पर लज्जा अनुभव करने लगी। घर की आर्थिक अवस्था बहुत पतली हो गई थी।

इस समय मधुमोहन का एक पत्र श्रीचन्द्र तथा रेशम के नाम पहुँचा। मधु ने लिखा था—

''बहन रेशम तथा आदरणीय जीजाजी, नमस्ते।

''अब अपील करने की तिथि निकल गई है और आपने अपील नहीं की। इसलिए मैं समझता हूँ कि आपको हमसे मेल-मुलाकात पुनः पैदा करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

''यह बहुत ही अच्छा हो कि आप अगले रविवार को नगर में हमारे मकान पर पधारने की कृपा करें। बहन रेशम से मिले चिरकाल हो गया है।

''उस दिन कुछ शुभ बात है जो आपको बताने की है। पूर्ण आशा है कि भाई का निमन्त्रण बहन स्वीकार करेगी और अपने साथ रघुवीरशरण और उसके पिता को लेती आएगी।''

रेशम को चन्द्रावती के परिवार से पुनः सुलह कर लेने में ही कल्याण समझ आ रहा था और इस निमन्त्रण को वह एक ईश्वर-प्रदत्त अवसर मान पति और पुत्र को लेकर चन्द्रावती के नगर वाले मकान में जा पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ, पुत्र और बहू ने अपने इन झगड़ा करने वाले सम्बन्धियों का ऐसे ही स्वागत किया जैसे उनमें कोई वैमनस्य था ही नहीं।

स्वागत एवं आवभगत के उपरान्त चन्द्रावती ने बताया कि अगले दिन हम यहाँ एक यज्ञ कर रहे हैं और मधु का कहना था कि यज्ञ सफल नहीं हो सकता जब तक बहन रेशम और उसके पति श्रीचन्द्र तथा रघुवीरशरण उपस्थित न हों।

''माताजी, यह यज्ञ किस उपलक्ष्य में किया जा रहा है?'' रेशम ने पूछ लिया।

''यह तुमको कल पता चल जाएगा। तुम्हारी माता मोहिनी ने मरते समय एक बात मुझे कही थी और मैंने वचन दिया था कि मैं वह बात पूर्ण करूँगी।''

अगले दिन पंडित शशिमोहन पुरोहित बन यज्ञ कराने लगे। पंडित भुवनचन्द्र और उनकी पत्नी सगुणी तथा चरणसिंह, उसकी पत्नी इन्द्रा और उनके दो बच्चे करण और इन्दु भी उपस्थित थे। मुक्तानन्द और उनका लड़का माणिक भी उपस्थित थे। इन्द्रा के माता-पिता भी आमन्त्रित थे।

हवन तो प्रातः पाँच बजे से आरम्भ हुआ था, परन्तु ये सब लोग और कुछ अन्य मित्र-सम्बन्धी गाँव अथवा नगर से दिन के दस बजे से पहले ही आ गए थे। दस बजे हवन की पूर्णाहुति दी गई।

हवन के उपरान्त मधु ने अपनी माँ की ओर से एक घोषणा की। उसने कहा, ''माँ ने इस यज्ञ के अवसर पर एक दान-पत्र लिखा है। उस दान-पत्र का व्यवहार आज इस समय से ही आरम्भ होगा। इस दान-पत्र में उन्होंने घर की पूर्ण चल-अचल सम्पत्ति को तीन भागों में बाँट दिया है। एक भाग उन्होंने गाँव में एक विद्यालय चलाने के लिए दान कर दिया है। दूसरा भाग उन्होंने रेशम के लड़के रघुवीरशरण के नाम कर दिया है। उसका प्रबन्ध उसके पिता के हाथ में होगा। वह भाग रघुवीर की सन्तान को ही मिल सकेगा। यदि किसी कारण से सन्तान न हुई तो यह वापस हो जाएगा। तीसरा भाग उन्होंने मेरे नाम कर दिया है और उसका प्रबन्ध अभी अपने पास रखा है।

''आज का यज्ञ और इसमें दी जाने वाली दान-दक्षिणा तो साँझे खाते में से ही है, परन्तु इस यज्ञ के उपरान्त तीनों भागीदार अपने-अपने भाग पर अधिकार पा लेंगे और वे उसे अपनी इच्छा से प्रयोग करेंगे।

''विद्यालय के लिए एक समिति बना दी गई है। उसमें पाँच सदस्य हैं। एक वर्तमान यज्ञ के पुरोहित पंडित शशिमोहन, दूसरे पंडित भुवनचन्द्रजी, तीसरे माताजी स्वयं हैं, चौथा मैं हूँ और पाँचवें श्रीचन्द्रजी हैं।

''यह यज्ञ इसी निमित्त किया गया है और आप सब लोगों को इस दान-पत्र में साक्षी के रूप में माना गया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब चकित थे और चन्द्रावती की प्रशंसा कर रहे थे। वहाँ उपस्थित प्रायः सब लोग जानते थे कि चन्द्रावती और श्रीचन्द्र में पिछले चार वर्षों से मुकद्दमा चल रहा था।

सब में यज्ञ का प्रसाद बाँटा गया और यज्ञ समाप्त हुआ।

पुरोहित पंडित शशिमोहन भोजन के समय तक ठहरे और मुक्तानन्द ने जाते समय मधु से कहा, "माणिक कह रहा है कि तुम उसको पढ़ाने का कार्य छोड़ रहे हो।"

"जी नहीं। यह समझा नहीं। मैंने उसे कहा है कि आज तक मैं उसके घर पर जाकर पढ़ाता रहा हूँ। आज से वह मेरे घर में आकर पढ़ा करेगा।

"इसमें कारण यह है कि मैं एक व्यवसाय चलाने का यत्न कर रहा हूँ और उस व्यवसाय में मुझे आने-जाने का अवकाश नहीं मिलेगा।"

"पर तुम व्यवसाय कर ही किसलिए रहे हो? क्या माँ के इस दान-पत्र से पेट भरने में कमी हो गई है?"

"यह बात नहीं, पंडितजी! मैं ऋषि ऋण उतारने का यत्न करना चाहता हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"मैंने अपने पूर्वजों के संचित ज्ञान से लाभ उठाया है और उस ज्ञान की वृद्धि और उसके प्रसार में योगदान देकर उनके ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ।"

"लड़का तुम्हारे यहाँ आकर नहीं पढ़ेगा। उसकी माँ उसे घर से बाहर जाकर पढ़ने की स्वीकृति नहीं दे सकती।"

"मुझे इसमें कारण प्रतीत नहीं हो सका।"

जब से रेशम के पति के साथ मुकद्दमा शुरू हुआ था, मधुमोहन माणिक के ट्यूटर का कार्य कर रहा था। इस कार्य में मधु की एक नीति थी। वह यह कि मुक्तानन्द से अधिक से अधिक सम्पर्क बनाए रखे।

:: 2 ::

इस आयोजन के दो सूत्र थे। एक ऐना स्मिथ और दूसरा माणिक। ऐना स्मिथ से परिचय प्राप्त करने के पहले ही दिन मधु उसके चरित्र को भलीभाँति समझ गया था। ऐना शराब के नशे में बक गई थी कि वह ज़मींदार के मालिक की पत्नी बन रानी बनना चाहती है। उसके लोभ की बात मधु जान गया था।

इसके अतिरिक्त अगले ही दिन मुक्तानन्द से ऐना की सिफारिश में कारण जान गया था। मुक्तानन्द लड़कियों से सम्पर्क बनाता था और फिर अपनी रुचि बदल जाने पर उस लड़की को कहीं न कहीं स्थिर जीवन दिलाने में सहायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता रहता था। दो उदाहरण तो मधु को पहले ही विदित थे। उसने तारा से सम्पर्क बनाया था और फिर उसके पति तथा सास-श्वसुर से अनबन हो जाने पर तब तक तारा और उससे होने वाले अपने बच्चे का भरण-पोषण करता रहा था, जब तक तारा और हरिहरसिंह में सुलह नहीं हो गई थी।

एक अन्य उदाहरण भी उसे विदित था। मुक्तानन्द की एक गवर्नेस से घनिष्ठता हुई तो उसके गर्भ ठहर गया। मुक्तानन्द ने उसका विवाह अपने एक मुसलमान मित्र वकील से करा दिया था और उसके लड़के सादिक हुसैन के पालन-पोषण और शिक्षा का खर्चा दे रहा था।

इस कारण मधु को सन्देह था कि ऐना भी उसी श्रेणी की लड़की है और अब उससे छुटकारा पाने के लिए ही मुक्तानन्द यह प्रबन्ध करना चाहता था। मधु को यह पसन्द नहीं था। अगले दिन जब वह अपनी माता के साथ मुक्तानन्द को मुकद्दमा बताने गया था तो उसने अपनी माँ को ऐना दिखा दी थी।

मुक्तानन्द ने ऐना को मधु की माँ से मिलने के लिए कहा, साथ ही यह बता दिया कि मधु की माँ किसी न किसी प्रकार यह जान गई है कि वह उस रात उसके बेडरूम में रही है।

ऐना मुक्तानन्द से कहती रही कि वह मधु की माँ से मिलेगी, परन्तु वह साहस कर उसके पास जा नहीं सकी।

मधु से जब भी बात होती, तो मधु ऐना को कह देता कि उसे उसकी माँ से मिलना चाहिए। इसी काल में ऐना के गर्भ ठहर गया था और मुक्तानन्द को उसे मसूरी प्रसव के लिए भेजना पड़ा। वहाँ उसका एक पब्लिक स्कूल के मास्टर से परिचय हुआ और उससे विवाह हो गया।

मधु माणिक को सायंकाल मिलने जाता था और उसे उर्दू तथा फारसी पढ़ाता था। यद्यपि मधु अपने को इन भाषाओं के पढ़ाने में योग्य नहीं मानता था, परन्तु वह मुकद्दमे तक उर्दू और फारसी का टूटा-फूटा ज्ञान माणिक को कराता रहा।

एक-आध बार मधु ने मुक्तानन्द से कहा भी था कि वह माणिक को गणित पढ़ा दिया करेगा, परन्तु मुक्तानन्द का कहना था कि गणित एक व्यर्थ की दिमागी बीमारी है।

मधु ने समझाने का यत्न किया, गणित प्राय: सब विज्ञानों का मूल है और इससे भी अधिक, यह विद्यार्थी में युक्ति करने का ढंग बताता है। परन्तु मुक्तानन्द का यह विश्वास था कि युक्ति करना ज्ञान के आश्रय है। जिस विषय से जीविकोपार्जन करना है, उस विषय का अच्छा ज्ञान प्राप्त करने से उस विषय में युक्ति करना आ आता है। वह अपना उदाहरण दे देता था। वह कहा करता था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"जब मैं किसी मुकद्दमे की सब बातों को जान और समझ जाता हूँ और सम्बन्धित विषय के कानून को जान लेता हूँ तो युक्तियाँ स्वयमेव मेरे मस्तिष्क में स्फुरित होने लगती हैं।"

मधु यह जानता था कि ज्ञान-संचय और फिर उस ज्ञान का प्रयोग दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। ज्ञान-संचय मिथ्या दिशा में भी प्रयुक्त हो सकता है। वह यह भी जानता था कि मन और बुद्धि दो भिन्न-भिन्न यन्त्र हैं जो मनुष्य को मिले हैं। मन ज्ञान संचय करता है और बुद्धि उस ज्ञान के प्रयोग का ढंग बताती है। उसका अपना यह मत था कि बुद्धि को सबल और तीक्ष्ण करने के लिए गणित एक सुगम और सहज उपाय है।

परन्तु जब मुक्तानन्द ने गणित को तिरस्कार की दृष्टि से देखा तो वह चुप कर गया।

माणिक मधु से बहुत प्रसन्न था। कारण यह कि मधु उसमें रुचि लेना छोड़ चुका था और वह अपने को उस सब काल में स्वतन्त्र मानता था, जिस काल में मधु वहाँ उसके पास रहता था।

परन्तु यह भी बात रह नहीं सकी। मुकद्दमा समाप्त हुआ तो मधु किसी बहाने की खोज में रहने लगा जिससे वह माणिक की जिम्मेदारी से मुक्त हो सके। इस समय एक घटना घटी।

माणिक इस समय दस वर्ष से ऊपर हो चुका था। मधु का प्रयत्न था कि माणिक में मानवता की भावना उत्पन्न करे। एक दिन मधु माणिक से मिलने उसके कमरे में जा पहुँचा। उसने देखा कि घर की एक नौकरानी माणिक के कमरे में उसके पलंग पर बैठी अपनी छाती नग्न किए माणिक के मुख में देने का यत्न कर रही है। एक क्षण तक तो मधु अपने व्यवहार का निश्चय नहीं कर सका, परन्तु उस नौकरानी ने माणिक को अपने से पृथक् कर अपनी छाती को ढाँपते हुए कहा, "मास्टर साहब! आपको सूचना देकर भीतर आना चाहिए।"

"क्यों माणिक! तुम क्या चाहते हो?"

माणिक लाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह सिर नीचा किए बैठा रहा।

"तुम यह क्या कर रहे थे?"

"यह कहती थी कि मैं इसे चूसूँ।"

"और क्या मिलता है तुमको इससे?"

"कुछ नहीं। मगर यह कहती है कि ऐसे करने से मैं इसका पुत्र हो गया हूँ।"

"तो तुम अभी माँ का दूध पीने वाले बच्चे हो?"

"यह यही समझती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अच्छा देखो। या तो इस औरत को इस कमरे में आने से मना कर दो या मैं तुम्हारे इस कमरे में नहीं आऊँगा।''

''तो आप मेरे ट्यूटर कैसे रह सकेंगे?''

''अब तुम मेरे घर पर आ जाया करो और मैं तुमको वहाँ पर पढ़ा दिया करूँगा।''

माणिक प्रसन्न था। वह तो घर से बाहर जाने की स्वतन्त्रता चाहता था, परन्तु मुक्तानन्द ने उसे मधु के घर जाने की स्वीकृति नहीं दी। बहाना उसकी माँ का लगा दिया।

मधु ने भी कह दिया, ''तो मैं विवश हूँ।''

जब मधु ने बताया कि वह ऋषि-ऋण उतारने के लिए व्यवसाय कर रहा है तो मुक्तानन्द ने पूछ लिया, ''क्या काम कर रहे हो, अपने संचित ज्ञान के परिवर्धन और परिमार्जन के लिए?''

''मैं एक साप्ताहिक पत्रिका निकाल रहा हूँ और जनसाधारण को वह ज्ञान देने का यत्न करूँगा, जिससे उसका विस्तार हो सके।''

''अंग्रेज़ी में निकालोगे?''

''जी नहीं। हिन्दी में।''

''बस तुम अपनी माँ का दिवाला निकालोगे। किस मूर्ख ने यह विचार तुम्हारे मस्तिष्क में घुसेड़ दिया है?''

मधु यह बताना नहीं चाहता था। उसने अपने माथे पर उंगली रखकर कह दिया, ''इस मूढ़ पुरुष ने।''

''तो इस मूढ़ का कहा मत मानो।''

''इसको मना कर दूँगा कि माँ का दिवाला न निकाले।''

''तो रुपये के लिए कहीं डाका डालोगे? देखो, मधु! हिन्दी जानने वाली जनता समाचारपत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने में रुचि नहीं रखती। फिर पत्र-पत्रिकाएँ बिना विज्ञापनों की आय के चल नहीं सकतीं। हिन्दी पत्रिका में कोई विज्ञापन नहीं देगा। कारण यह कि हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने वाले कीमती वस्तुओं के ग्राहक नहीं होते।''

''मैं डाके डालने की योजना बना रहा हूँ।''

''ओह! तब तो तुम माणिक के ट्यूटर नहीं रह सकते।''

:: 3 ::

साप्ताहिक पत्रिका का विचार उसके मन में एक मराठा युवक गोविन्द हरि फड़के ने उत्पन्न किया था। इस विचार-बीज के लिए भूमि एक पंजाबी युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौधरी हरिदत्त ने तैयार की थी।

मधु पिछले वर्ष मुकद्दमे के सिलसिले में राजधानी गया था। मुक्तानंद ने उसे एक पत्र चौधरी विमलानन्द सानियाल के नाम दिया था।

मधु फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा करने के लिए चढ़ा था कि उसका परिचय एक पंजाबी युवक से हो गया। वह पंजाबी युवक सामने की 'बर्थ' पर अधिकार जमाए हुए था।

मधु अभी डिब्बे में अपना बिस्तर लगाने ही लगा था कि एक गोरा यात्री आया और मधु को नीचे के बर्थ पर बिस्तर बिछाते देख बोला, "तुम ऊपर के बर्थ पर बिस्तर बिछाओ।"

"क्यों?"

"बिकाज आई से। (क्योंकि मैं कहता हूँ।)"

"बट हू आर यू ऐण्ड वाट आर यू? (लेकिन तुम कौन हो और क्या हो?)"

"डोण्ट यू सी दैट आई बिलांग टू दी रूलिंग क्लास हीयर। (तुम देखते नहीं कि मैं शासक श्रेणी में से हूँ।)"

"नो; आई डोण्ट सी दैट। (नहीं; मैं नहीं देखता।)"

"दैन आई विल मेक यू सी। (तो मैं तुमको दिखा दूँगा।)"

इतना कह यात्री बाहर चला गया। सामने की सीट पर बैठा युवक बिना कुछ कहे उठकर बाहर निकला और डिब्बे के द्वार के समीप खड़ा हो गया। मधु इसका अर्थ नहीं समझा। उसने अपना बिस्तर बिछा दिया और उस पर निश्चिन्त हो बैठ गया। गोरे यात्री का सामान लिये कुली वहाँ खड़ा था। कुछ ही मिनट में बाहर हल्ला सुन, मधु भी डिब्बे से निकल आया। उस पंजाबी युवक ने रेल के एक बाबू का हाथ पकड़ा हुआ था और बाबू शोर मचा रहा था, 'पुलिस! पुलिस!!'

मधु ने बाबू से कहा, "शोर क्यों मचा रहे हो? बताओ क्या बात है?"

"मैं इस कम्पार्टमेंट में सीट रिज़र्व करने आया हूँ।"

"ठीक है। मगर कौन सी सीट?"

"सीट नम्बर तीन।"

यह सीट थी जो पंजाबी युवक ने ली हुई थी। पंजाबी युवक ने कहा, "मैं तो इस सीट पर पिछले पाँच सौ मील से यात्रा कर रहा हूँ। यह तुम यहाँ इस स्टेशन से कैसे रिज़र्व कर सकते हो?"

इस पर गोरे यात्री ने रेल के बाबू से कह दिया, "मिस्टर, दैन रिज़र्व नम्बर वन। (बाबू, नम्बर एक की सीट रिज़र्व कर दो।)"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर तो रेल का बाबू गोरे यात्री का मुख देखने लगा। उसने उसे दफ्तर में कहा था कि नम्बर तीन का बर्थ रिज़र्व कर दो। वह ऐसा रेल के रजिस्टर में लिखकर रिजर्वेशन कार्ड बनाकर लाया था। परन्तु यहाँ पर आकर वह नम्बर बदल रहा था। पंजाबी ने बाबू का केवल हाथ ही नहीं पकड़ा था, वरन उसे मुक्का तान धमकाया भी था। इस समय लोग प्लेटफार्म पर एकत्रित हो गए थे और उस पंजाबी युवक ने डिब्बे के द्वार में खड़े होकर लोगों को कहना शुरू कर दिया, "मैं तुम लोगों को गवाह बना रहा हूँ कि यह बाबू यह 'परची' अब लगा रहा है जब यह गाड़ी छूटने वाली है और जब हम इस डिब्बे में सवार हो चुके हैं। रेल के कायदे से यह बात बाबू कर नहीं सकता। यह करेगा तो मैं एक ही मुक्के से इसके दाँत निकाल दूँगा।"

बाबू देख रहा था कि गोरे यात्री ने भूल से गलत नम्बर लिखा दिया है और वह एक ऐसे यात्री को उठा रहा है, जो पहले से इस गाड़ी में यात्रा कर रहा है।

इस पर रेल के बाबू ने पंजाबी को यह कहा, "मैं आपको नहीं उठाता। मैं इस दूसरे बाबू से कहता हूँ कि यह नीचे की सीट छोड़ ऊपर चला जाए।"

मधु ने कहा, "जरा यह पर्ची दिखाओ, जो तुम यहाँ लगाने लगे थे।"

बाबू ने पर्ची दिखा दी और जेब से पेन्सिल निकाल ली। वह तीन काट कर सीट का नम्बर एक करने वाला था।

मधु ने यह पर्ची पकड़ी, पढ़ी और जेब में रख ली और कहा, "नई पर्ची ले आओ।"

बाबू भी यही चाहता था, परन्तु इन्जिन ने सीटी बजा दी। रेल का बाबू गार्ड को संकेत करने लगा कि गाड़ी रोक ले।

गार्ड ने सीटी बजा दी थी। मधु ने यात्री को कह दिया, "गाड़ी को चलने दो, मैं तुमको नीचे की सीट दे दूँगा।"

यात्री समझ गया कि हिन्दुस्तानी रोब में आ गया है। इस कारण उसने कुली से सामान वहीं रखा लिया और गार्ड को संकेत से कहने लगा, "इट इज़ आल राईट। नाउ लेट दी ट्रेन मूव। (अब सब ठीक है। गाड़ी चलने दो।)"

गार्ड ने सीटी बजा दी। ट्रेन चल पड़ी। ज्यों ही ट्रेन चली, पंजाबी युवक ने गोरे यात्री का सामान ऊपर की सीट पर रखकर उसे अपनी सीट पर बैठा कर कहा, "देखो साहब! अगर रास्ते में भलीभाँति पीटा नहीं जाना चाहते तो ऊपर की सीट ले लो।"

"बट यू कॉन्ट टच मी (किन्तु तुम मुझको छू नहीं सकते।)"

पंजाबी युवक ने अंग्रेज़ी में कहा, "पर मैं तुमको पीट सकता हूँ।"

मधु अपने कुर्ते की बाँहें ऊपर कर तैयार हो गया। गोरे यात्री ने देखा कि दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मुकाबले में वह अकेला दुर्बल पड़ जाएगा। इस कारण उसने कह दिया, ''मुझ अकेले को तुम दो मिलकर पीटोगे?''

''नहीं। मैं अकेला ही तुम्हारा मलीदा बनाने के लिए काफी हूँ।'' मधु का उत्तर था।

''मगर तुम कानून अपने हाथ में लोगे?''

''वह तुमने लिया है और मैं तुमको दंड दूँगा।''

गोरे यात्री के मन में विश्वास था कि उसकी हिमायत तो पूर्ण हिन्दुस्तान की सरकार करेगी। इस कारण बोल उठा, ''तो हम मुक्केबाजी कर सकते हैं। परन्तु यदि मुझे कोई गम्भीर चोट आई तो मैं तुमको पुलिस के हवाले कर दूँगा।''

''वह अगले स्टेशन से पहले नहीं होगा। तब तक तुम जीवित नहीं रहोगे।'' इतना कहते-कहते मधु ने एक मुक्का गोरे यात्री की कुक्षि में कस कर लगा दिया।

गोरे यात्री की कुक्षि में तीव्र वेदना हुई। वह सीट से उठा था और अब फिर बैठ गया। वह कुक्षि पर हाथ रखे हुए बोला, ''मैं देखूँगा कि अगले स्टेशन पर तुम हवालात में डाल दिए जाओगे।''

इस पर मधु ने एक मुक्का उसके मुख पर लगा दिया। इससे तो वह चक्कर खाकर भूमि पर अचेत हो लेट गया।

गाड़ी खटाखट जा रही थी। इसके उपरान्त मधु लैवेटरी के पानी में रूमाल भिगो लाया और गोरे यात्री की आँखों पर फेरने लगा। यात्री को होश आया तो मधु को, जिसने उसकी यह दशा की थी, उसे होश में लाने का यत्न करते देख वह समझा वह डर गया है कि कहीं मर न जाऊँ। इससे बोला, ''कदाचित् तुम मुझे मरता देख डर गए थे?''

''नहीं मिस्टर! तुम मर जाते तो मैं तुम्हारा शव बाहर फेंक चुका होता। मगर मैं अचेत आदमी को पीटने में अपना अपमान समझता हूँ। पीटने का मजा तो सचेत आदमी को ही है।

''इसलिए खड़े हो जाओ और मैं तुमसे मुक्केबाजी तब तक करूँगा, जब तक तुम मर नहीं जाते।''

''परन्तु मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''तुमने स्वयं कानून हाथ में लिया है और झूठा आरोप मुझ पर लगाया है कि मैं कानून हाथ में ले रहा हूँ। तुम जैसे झूठे व्यक्ति को पीटना ही चाहिए।''

इस समय तक वह गोरा यात्री डरने लगा था। उसने कह दिया, ''हम सुलह नहीं कर सकते क्या?''

''कर सकते हैं। तुम मुझसे क्षमा माँगो कि तुमने मुझ पर झूठा आरोप लगाया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आई ऐम सोरी। (मुझे इसका अफसोस है।)''

''आल राईट।'' मधु ने हाथ बढ़ाकर मिलाया और कहा, ''अब हम मित्र हैं। आप कितनी दूर जा रहे हैं?''

''मैं तो राजधानी तक जा रहा हूँ।''

''तो हम इकट्ठे यात्रा करेंगे।''

''हाँ।'' यात्री ने उत्तर दिया।

''अगर तुम मुझको समझा दो कि तुमको ऊपर की सीट पर चढ़ने में मुझसे अधिक कष्ट होता है तो मैं तुम्हारे साथ सहानुभूति के कारण अपनी नीचे की सीट खाली कर दूँगा।''

''सच?''

''हाँ।''

''तो सुनो। मैं प्रान्त के एक पश्चिमी ज़िले में डिप्टी कमिश्नर हूँ और मैं समझता हूँ कि हमने, मेरा मतलब है अंग्रेज़ों ने अपने बल और बुद्धि से यहाँ इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया का राज्य स्थापित किया है और यह हमारा अधिकार है कि हम प्रत्एक विशेषाधिकारयुक्त स्थिति को प्राप्त करें। मेरा आपसे व्यवहार मेरी इसी धारणा के अनुकूल था।

''परन्तु आपके एक घूँसे ने मेरी धारणा में एक परिवर्तन उत्पन्न किया है। वह यह कि यहाँ भी कुछ लोग ऐसे उत्पन्न हो गए हैं जो बल और बुद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। आप उस वर्ग के ही प्रतीत होते हैं।

''यह हमारी नीति है कि हम उस वर्ग से मित्रता बनाकर रखें और रहें जो बल और बुद्धि के स्वामी हैं।

''इसी कारण मैंने अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लिया है और मैं अब आपका मित्र बन गया हूँ।''

इस स्पष्टवादिता पर दोनों विपक्षी हँसने लगे। वह गोरा यात्री इस हँसने का अर्थ न समझ प्रश्नभरी दृष्टि से उनका मुख देखने लगा।

पंजाबी युवक ने हँसकर पूछ लिया, ''क्या आप स्कॉटलैंड के रहने वाले हैं?''

''हाँ। मगर यह आपने कैसे जाना है?''

''मैं इंग्लैंड में रह आया हूँ और वहाँ स्कॉटिश, आयरिश और इंगलिश, तीनों क्षेत्रों के रहने वालों के चरित्रों का अध्ययन करता रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि वहाँ के सब क्षेत्रों के रहने वालों में से स्कॉटलैंड के लोग अधिक सरलचित्त, स्पष्टवादी और बुद्धिशील हैं। ठेठ इंग्लिशमैन धूर्त, लोभी और मूढ़ होता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काटलैंड का यह रहने वाला अधिकारी अपनी प्रशंसा सुन प्रसन्न ही हुआ। उसने संतोष प्रकट करते हुए कहा, ''मुझे प्रसन्नता है कि आप इंग्लैंड में रह आए हैं। कदाचित् यही कारण है कि यह निर्भीकता और सतर्कता आपने दिखाई है।''

इस पर दोनों भारतीय पुनः हँसने लगे। अब गोरा यात्री भी अधिक आश्वस्त हो हँसने लगा था। उसने हँसते हुए मधु से पूछ लिया, ''क्या आप भी इंग्लैंड हो आए हैं?''

अब मधु ने गंभीर भाव में कहा, ''नहीं। मैं अपने देश से बाहर कभी नहीं गया। यदि यह कहूँ कि अपने ज़िला से बाहर भी पहली बार ही जा रहा हूँ तो अधिक ठीक होगा।

''मेरे हँसने का कारण यह नहीं था कि मैं आपके जन्म-स्थान के विषय में जान गया था। मेरा हँसने का कारण यह था कि एक मुक्के के लगने से आपकी बुद्धि कार्य करने लगी है। जो धूल आपकी बुद्धि पर शासन की कुर्सी पर बैठने से जमी थी, एक ही घूँसे से झड़ गई है।''

इस पर गोरे यात्री ने हँसते हुए कह दिया, ''मित्र! भूल रहे हो। एक नहीं दो घूँसों ने यह चमत्कार किया है। प्रथम घूँसे ने तो केवल क्रोध की ही सृष्टि की थी।''

''हाँ; परन्तु मैं तो केवल 'इफैक्टिव ब्लो' (प्रभावी चोट) का ही उल्लेख कर रहा था।''

''मैं विचार करता हूँ कि आपके इस कथन ने मेरे मन पर सबसे अधिक प्रभाव उत्पन्न किया था कि अचेत व्यक्ति को पीटने में कोई मजा नहीं और आप मुझे सचेत इसलिए कर रहे थे कि मुझे घूँसों का मजा लेने के योग्य बना दें।''

इस पर तीनों हँसने लगे। मधु ने कहा, ''मैंने यह बात इसीलिए कही थी कि मेरा आपको पीटना किसी द्वेष के भाव से नहीं था, वरन अधिकार से उत्पन्न धूल को आपकी बुद्धि से झाड़ने के लिए था। और अब मैं देखता हूँ कि एक ही मुक्के ने बहुत सीमा तक अपना कार्य सफलतापूर्वक कर दिया है।''

इस घटना ने उस पंजाबी युवक और मधु में मित्रता उत्पन्न कर दी थी।

:: 4 ::

मधुमोहन और वह पंजाबी युवक, दोनों, जब ये राजधानी के स्टेशन पर पहुँचे तो बहुत गहरे मित्र हो चुके थे। जब कुली डिब्बे में से सामान निकाल रहे थे तो पंजाबी युवक ने मधु से पूछा, ''आप कहाँ ठहर रहे हैं?''

''मैं यहाँ श्री विमलानन्द सानियाल ऐडवोकेट से मिलने के लिए आया हूँ। उनको अपने प्रान्त के हाईकोर्ट में एक मुकद्दमे की बहस के लिए नियुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता हूँ। वैसे तो एक घण्टे का काम है, इस पर भी वकील साहब से भेंट होने में एक-दो दिन भी लग सकते हैं। इस कारण किसी होटल में ठहर जाऊँगा।

"और उन्हीं वकील साहब के घर पर क्यों नहीं ठहरते ?"

"मेरा उनसे पूर्व परिचय नहीं और फिर एक अपरिचित व्यक्ति के घर पर जा धमकने को वे कैसा मानेंगे, कह नहीं सकता।"

"मैं उन्हीं के घर ठहरने के लिए जा रहा हूँ। मैं आपका परिचय करा दूँगा और आप मेरे मित्र के नाते वहाँ चलिए।"

मधु विचार करने लगा। फिर कुछ विचार कर बोला, "बात तो ठीक है। वहाँ रहने से काम शीघ्र भी हो सकता है और सम्भव है रात रहना ही न पड़े। परन्तु आपका उनसे कैसा सम्बन्ध है ? कहीं उस सम्बन्ध पर सीमा से अधिक दबाव तो नहीं पड़ जाएगा।"

"नहीं। ऐसी कोई बात नहीं। रही सम्बन्ध की बात, वह तो आपको चलकर ही पता लग सकेगा। मेरी प्रार्थना मानिए। आप मेरे साथ चलिए मैं आपको अपने अधिक समीप पाता हूँ। आइए।"

दोनों स्टेशन से बाहर निकले तो सानियाल बाबू की घोड़ागाड़ी स्टेशन पर उनको लेने आई हुई थी। इससे मधु को समझ आया कि पंजाबी युवक चौधरी हरिदत्त सानियाल बाबू से भलीभाँति परिचित है। इससे कुछ संकोच रहित हो वह उसके साथ गाड़ी में बैठ गया।

सानियाल बाबू की कोठी में पहुँचे तो एक बंगाली लड़की भीतर से निकल हरिदत्त को हाथ जोड़ नमस्कार कर, मधु की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखने लगी।

पंजाबी युवक ने मुस्कराते हुए मधु का परिचय दे दिया। उसने बताया—

"सरलाजी यह मेरे एक घनिष्ठ मित्र हैं, नाम है मधुमोहन। इनको बाबूजी से कुछ काम है और मेरे साथ यहाँ ठहरेंगे।"

"और मिस्टर मधु! ये मेरी धर्म-पत्नी सरलाजी हैं। ये अपने पिता जी के घर आई हुई हैं और मैं इनको इनके पति के घर ले जाने के लिए आया हूँ।"

मधु समझ गया कि चौधरी हरिदत्त सानियाल बाबू का दामाद है। इससे वह बहुत प्रसन्न था।

मधु को एक पृथक् कमरे में ठहरा दिया गया। सानियाल बाबू किसी मुकद्दमे के सम्बन्ध में राजधानी से बाहर गए हुए थे और मधु को तीन दिन तक उनकी प्रतीक्षा में वहाँ रहना पड़ा।

इन तीन दिनों में जहाँ हरिदत्त और मधु में विचार-विनिमय हुआ है। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिदत्त के एक मित्र गोविन्द हरि फड़के से भी भेंट और विचार-विनिमय हुआ।

यह गोविन्द हरि की ही योजना थी कि मधु जैसे योग्य व्यक्ति को एक पत्र अपने नगर में चलाना चाहिए। गोविन्द हरि का कहना था, "देश में विदेशियों का राज्य है। यह हमारे ह्रास का एक महान कारण हो रहा है। मुसलमानी काल में उतना ह्रास नहीं हुआ था, कारण यह कि मुसलमान मूर्ख और जड़ बुद्धि शासक थे। वे शासन और शासित को अधीन रखने का एक ही उपाय जानते थे। वह था बल। हमारी जाति की विशेष प्रवृत्ति के कारण, उनका वह बल-प्रयोग तुरन्त प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं कर सका। परन्तु उसकी प्रतिक्रिया हुई थी और इस्लाम का राज्य भारत में से निकल गया। अब हमारा चतुर और धूर्त अंग्रेज़ी जाति से वास्ता पड़ गया है। इनकी करतूतों को जन-जन के मन पर अंकित करना चाहिए। जनसाधारण के मन पर शासक यह अंकित कर रहे हैं कि इनका राज्य भारत में एक ईश्वरीय देन है। शान्ति और व्यवस्था स्थापित करने में यह इस देश के सब पहले के राज्यों से अधिक योग्य है।

"इससे देश में ही दो पक्ष हो गए हैं। एक वे, जो अंग्रेज़ी राज्य से प्रेम करने लगे हैं। दूसरा वर्ग है जो स्वाभाविक रूप से विदेशी राज्य के पक्ष में नहीं है। अंग्रेज़ जन-मानस को अपनी ओर करता जाता है और देश से परकीय राज्य हटाने वालों की संख्या कम हो रही है।

"यदि देश में वह पक्ष प्रबल हो गया जो परकीय राज्य को ईश्वरीय देन समझता है तो देश अनन्त काल तक पराधीन बना रहेगा और यहाँ के लोग वैसे ही पतित, मूर्ख और अज्ञानी हो जाएँगे जैसे अफ्रीका के हब्शी हैं।"

"अंग्रेज़ी शासन हमारे युवकों के मन में यह बात बैठा रहा है कि इस देश के मूल निवासी भील, गौण्ड, नाग इत्यादि जंगली जातियाँ हैं और हम लोग एक क्रूर, निर्दयी और बलशाली जाति की सन्तान हैं। आर्य जाति बाहर से इस देश में आई और उसने यहाँ के मूल निवासियों को मार-मार कर जंगलों में भगा दिया था। आर्य जाति की सन्तान हम हैं।"

"मित्र! यह मिथ्या इतिहास बताकर जन-जन के मन में अपने पूर्वजों के प्रति घृणा उत्पन्न करने का यत्न, यह एक बात है। भील, गौण्ड इत्यादि जंगली जातियों के संरक्षक बन अंग्रेज़ उनको यहाँ के उन्नत लोगों का विरोधी बना रहे हैं, यह दूसरी बात है। इस घरेलू वैमनस्य से अंग्रेज़ मध्यस्थ और शासक बना रहेगा।

"इसका विरोध करने के लिए जनमानस को इतिहास और वर्तमान वस्तुस्थिति से सुपरिचित करने की आवश्यकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देश में राज्य एक महान उपकारी एवं अपकारी कार्य करने की सामर्थ्य रखता है। यदि राज्य अपने लोगों का हो तो वह अपनों का उपकार करेगा, अन्यथा अपकार करेगा।"

इस प्रकार की बातों से मधु को अपना जीवन-कार्य दिखाई देने लगा था। मधु तीन दिन राजधानी में रहा। सानियाल साहब को मुकद्दमे में बहस करने के लिए तैयार कर वह लौटा और स्वयं राष्ट्र-सेवा की विधि जान आया। वह अपनी पढ़ाई का सदुपयोग करने का ढंग सीख आया।

लौटते समय चौधरी हरिदत्त और उनकी धर्म-पत्नी सरलादेवी इकट्ठे ही एक गाड़ी में लौटे और मार्ग में हरिदत्त ने मधु को एक अन्य महापुरुष, जो यहाँ उन्नीसवीं शताब्दी में अवतीर्ण हुए थे, का वृत्तान्त बता दिया। ये महापुरुष थे स्वामी दयानन्द सरस्वती। स्वामीजी का संक्षिप्त जीवन-चरित्र बताकर हरिदत्त ने उनके विचारों पर विशेष व्याख्या कर दी। हरिदत्त ने बताया, "एक सहस्र वर्ष के विदेशी राज्य के उपरान्त स्वामी जी प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने यह घोषणा की थी कि देशी राज्य कितना भी दोषपूर्ण क्यों न हो, अच्छे-से-अच्छे विदेशी राज्य से बढ़िया होता है। देशी राज्य वह है जो देश के धर्म, संस्कृति और परम्पराओं की रक्षा तथा विकास के लिए कार्य करे। और विदेशी राज्य वह है जो देश की इन मान्यताओं को विनष्ट करने का यत्न करे। मुसलमानी राज्य और अंग्रेज़ी राज्य दोनों इस दृष्टि से विदेशी राज्य हैं।

"मुसलमान हमारा धर्म, हमारी संस्कृति और परम्पराओं को बलपूर्वक विनष्ट करने का यत्न करता था। अंग्रेज़ी राज्य भी तो यही कर रहा है। यह धन, शिक्षा द्वारा और राज्य की ओर से विदेशीय धर्म, पाश्चात्य संस्कृति और प्रथाओं को अधिमान देकर यहाँ की विधियों को नष्ट कर रहा है।"

चौधरी हरिदत्त की इस व्याख्या से मधु के मन में कई नए विचार उत्पन्न हुए। उसने उनके समाधान के लिए पूछ लिया, "यह नैकटाई, कोट पहनना परम्पराओं में आता है या नहीं?"

हरिदत्त इंग्लैण्ड से बैरिस्टर बनकर आया था और स्वामी दयानन्द के जीवन और उनके राष्ट्र-मीमांसा की वकालत करता हुआ भी स्वयं यूरोपियन स्टाइल का पहरावा पहनता था। मधु ने जब से कॉलिज छोड़ा था, वह अपने प्रान्त का पहरावा अर्थात् धोती, कुर्ता और देशी जूता पहनने लगा था।

हरिदत्त इस प्रश्न से भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। आखिर उसको मानना पड़ा कि वह यह पहरावा पहनकर भूल कर रहा है। इस भूल को स्वीकार करने पर मधु ने कह दिया, "आप स्वामी दयानन्द के अनुयायी होते हुए भी विदेशी परम्पराओं को मानने वाले प्रतीत होते हैं और सानियाल बाबू, स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयानन्द के नाम से अपरिचित होते हुए भी देशी परम्पराओं का अधिक पालन करते है।''

हरिदत्त इस परस्पर विरोधी बात को अपने में देख आश्चर्यचकित हो मुख देखता रह गया। इस समय मधु को पंडित भुवनचन्द्र की युक्ति स्मरण आ गई। उसने वह हरिदत्त को सुना दी। उसने कहा, ''आपमें एक बकरी है। उसके गले में रस्सी बाँधे हुए कसाई उसे कस्साबखाने में लिये जा रहा है। बकरी जानती है कि वह कस्साबखाने को ले जाई जा रही है। वह छटपटा रही है, परन्तु कसाई बड़ा बलशाली है और वह उसे घसीटता हुआ पग-पग कर कस्साबखाने की ओर लिये जा रहा है।''

हरिदत्त इस उपमा का अर्थ नहीं समझा और मधु का मुख देखता रहा। मधु ने अपनी उपमा का अर्थ पंडित भुवनचंद्र के शब्दों में ही बता दिया, ''आपकी बुद्धि बकरी है। वह आपको स्वामीजी की शिक्षा से ठीक मार्ग पर ले जाना चाहती है, पर मन आपका कसाई है जो विलायत के संस्कार लिये हुए उस बुद्धि को विदेशी राज्य के कस्साबखाने की ओर लिये जा रहा है। आप स्वामीजी की शिक्षा से प्रभावित बुद्धि की हत्या करने वाले हैं। बुद्धि छटपटा रही है और मन संस्कारों से अभिभूत, बेचारी बुद्धि के गले में रस्सी बाँधे बलपूर्वक उधर ही लिये जा रहा है।''

चौधरी हरिदत्त मधु की इस उपमा और युक्ति से अति प्रभावित हुआ और मधु स्वयं स्वामीजी की राष्ट्र-मीमांसा के विचार में पड़ गया।

हरिदत्त और गोविन्द हरि फड़के के विचारों से मधु के मन में क्रान्ति उत्पन्न हो गई थी।

:: 5 ::

मधुमोहन और फड़के परस्पर पत्र-व्यवहार कर रहे थे। परिणामस्वरूप रेशम के लड़के के नाम एक-तिहाई ज़मींदारी भेंट करने के दिन से चार दिन पूर्व ही गोविन्द हरि का भेजा एक कार्यकर्त्ता मधु के पास आ गया था। उस दिन तक दोनों ने पूर्ण योजना बनाकर कार्य आरम्भ कर दिया था।

चन्द्रावती ने मधु के इस काम को पसन्द किया था और उसने इस काम को चलाने के लिए दस हज़ार रुपया दिया था। मधु ने एक दिन पूर्व दारा गंज में एक हाथ से चलाने वाला पुराने प्रैस मोल ले लिया था और फड़के का भेजा हुआ व्यक्ति, नीलकण्ठ मोरे उस प्रैस को मरम्मत इत्यादि करवा कर चालू करने में लीन था।

जब मुक्तानन्द ने समाचारपत्र की योजना सुनी तो यह कह कि मधु माणिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ट्यूटर नहीं रहेगा, जाने लगा। उस समय चन्द्रावती मुक्तानन्द की गाड़ी में बहुत-सी मिठाई, यज्ञ के प्रसाद के रूप में रखवाकर आ रही थी। वह मुक्तानन्द और माणिक को जाने के लिए खड़ा देख हाथ जोड़ बोली, ''आप कस्तूरी बहन को नहीं लाए, इसलिए यज्ञ के प्रसाद रूप में मिठाई उनके लिए गाड़ी में रखवा दी है।''

''पर मैं तो आपको यह कहने के लिए खड़ा हूँ कि मधु आपकी शेष ज़मींदारी को बरबाद करने की योजना बना बैठा है।''

''सच? तो आप उसको समझा दीजिए।''

''वह समझता तो है नहीं। मैं रानीजी को बता देना चाहता हूँ कि यह पत्रिका का काम सर्वथा विनाशकारी कार्य है। मधु इस प्रकार के काम की योग्यता नहीं रखता।''

चन्द्रावती मधु की योजना का बाहरी रूप जानती थी और वह इस योजना के उद्देश्य को सराहनीय मानकर ही, उसको लिए उनके दस सहस्र नकद देने पर तैयार हुई थी। मुक्तानन्द तो कह कर चला गया परन्तु चन्द्रावती मधु के साथ पंडित शशिमोहन के सम्मुख बातचीत करने जा बैठी।

पंडित शशिमोहन, मधु की पूर्ण योजना सुन और उसके आर्थिक पक्ष पर मनन कर कहने लगा, ''देखो मधु! यह कार्य जलती अग्नि पर चलना है। इसके लिए तुमको माताजी से पृथक् हो जाना चाहिए, नहीं तो सब-कुछ विनष्ट हो जाएगा।''

मधु को इस संकेत और मुक्तानन्द की भविष्यवाणी पर विस्मय नहीं हुआ। इस कारण उसने माँ की ओर देख कह दिया, ''माँ! तुम मुझे बेदखल कर दो।''

''किसलिए?''

''गुरुजी का तथा मुक्तानन्दजी का विचार है कि यह घाटे की योजना है और इसमें पूर्ण ज़मींदारी समाप्त हो जायगी।''

''पंडितजी! यह बताइए कि इस कार्य से देश और जाति को कुछ लाभ भी होगा अथवा नहीं?''

''हाँ! यह महाकल्याणकारी कार्य है, परन्तु इसमें कई वर्षों तक घाटे की ही आशंका है।''

''मधु! तुम चिन्ता न करो। कार्य करो। आज यह यज्ञ किया है। इसमें तुमने बहन का कल्याण किया है। इस थोड़े-से कल्याण में तुमने एक-तिहाई ज़मींदारी का हवन कर दिया है और यह तो बहुत बड़ा यज्ञ करने जा रहे हो। इससे बहुत बड़े कल्याण की हम आशा कर रहे हैं। इस यज्ञ में पूर्ण ज़मींदारी भी हवन करनी पड़े तो कर दूँगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु माँ के मन की भावना सुन कृतज्ञता से भरा हुआ उठा और माँ के चरण स्पर्श कर बोला, ''माँ! यत्न करूँगा कि उद्देश्य की सिद्धि सहज ही हो सके।''

वास्तव में मधुमोहन अपनी माँ और पत्नी को इस कार्य के लिए तैयार एक वर्ष से कर रहा था और वे दोनों मधु के इस कार्य से सन्तुष्ट थीं।

इस पर भी यथार्थ योजना, जो गोविन्द हरि फड़के की थी और जिसको कार्यान्वित करने के लिए नीलकण्ठ मोरे आया था, वह मधु के अतिरिक्त अन्य किसी को विदित नहीं थी।

नीलकण्ठ ने अपना परिचय देते हुए बताया था—

''हमारी एक संस्था है। उसका नाम प्रार्थना सभा है। हम परमात्मा पर अगाध विश्वास रखते हैं और सदा उससे प्रार्थना करते रहते हैं कि वह हममें सामर्थ्य उत्पन्न करे कि हम देश से विदेशियों का राज्य समाप्त कर दें।

''एक स्वामी नित्यानन्द थे। वे किसी समय महर्षि दयानन्द के साथ रहे थे। वहीं उन्होंने यह दीक्षा ली थी कि हमारा धर्म और हमारी संस्कृति इस विदेशी राज्य में बच नहीं सकती। अंग्रेज़ी राज्य हमारी जाति की जड़ों को खोखला कर रहा है।

''यह प्रार्थना सभा उन्होंने ही स्थापित की थी और वे इसमें प्रार्थना किया करते थे। प्रार्थना का सदा अन्त इस प्रकार होता था—'भगवान् हमको बुद्धि और बल दे कि हम इस विदेशी राज्य को उखाड़ फेंकें।'

''हमारी इन प्रार्थनाओं की सूचना सरकार को मिली तो सरकार ने अपने जासूस भेज सभा की देख-रेख आरम्भ कर दी। एक दिन प्रार्थना सभा पर छापा मारा गया। प्रार्थना में सम्मिलित बहुत से लोग भाग जाने में सफल हो गए। इस पर भी स्वामी नित्यानन्द और कुछ एक लोग पकड़ लिये गए। पकड़े हुओं में मैं भी एक था।

''एक वर्ष बन्दी रखकर मुझे छोड़ा गया तो प्रार्थना सभा आलोप हो चुकी थी, परन्तु उसके स्थान पर एक गुप्त संस्था 'हिन्दू संरक्षिणी सभा' बन गई है। उसके कर्त्ता-धर्त्ता गोविन्द हरिजी हैं।

''अब हमारी सभाएँ गुप्त होती हैं। उसके सदस्य हम परीक्षा के उपरांत बनाते हैं। हम देश में यहाँ के प्राचीन धर्म, संस्कृति और परम्पराओं को चलाने वाला राज्य स्थापित करना चाहते हैं।

''गोविन्द हरि ने उसी 'हिन्दू संरक्षिणी सभा' की ओर से मुझे यहाँ आपके पत्र को चलाने के लिए भेजा है।''

''कितना समय लगेगा पत्रिका को आरम्भ करने में?''

''पत्रिका तो निकल जाएगी दो-चार मास में ही, परन्तु इसका खर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकालने के लिए विशेष प्रयत्न करना होगा। कोई पत्र ज्यों-ज्यों चलता है, उसमें घाटा बढ़ता जाता है। कारण यह है कि पत्र का दाम हम उतना नहीं रख सकते, जितना उस पर खर्चा बैठता है। इस कारण चलता हुआ पत्र घाटे का सौदा है। इस घाटे को पूरा करने के लिए मुझे यहाँ भेजा गया है और मैं जहाँ प्रैस से अतिरिक्त आय करने का यत्न करूँगा, वहाँ आपकी पत्रिका के लिए विज्ञापन लाने का यत्न भी करूँगा। इसमें कई वर्ष भी लग सकते हैं।''

''तो आप इतने दिन तक यहाँ रहेंगे?''

''हाँ। जब तक कार्य को समझने वाला कोई मैनेजर तैयार नहीं हो जाता, तब तक रहना ही पड़ेगा।''

''आपको यहाँ रखने का खर्चा कितना देना पड़ेगा?''

''मैं वेतन नहीं लूँगा। मुझे उसकी आवश्यकता नहीं। मैंने विवाह किया नहीं। मुझे अपने लिए भोजन, वस्त्र और सोने को एक खाट चाहिए, यह भी स्वयं उपलब्ध करने का मैं यत्न करूँगा।''

मधु के सामने चित्र स्पष्ट हो गया। वह समझ गया कि उसे अपना जीवन इसी कार्य में लगाना होगा। नीलकंठ ने एक बात और कह दी—

''आपको जनमत तैयार कर यह शिक्षा देनी है कि अंग्रेज़ी राज्य धर्म, जाति और व्यक्ति के लिए भी अत्यन्त हानिकर है। दूसरी बात यह कि इस देश में सरकार देश के धर्म और देश की संस्कृति की पालक होनी चाहिए। तीसरी बात यह कि इस क्रान्ति को लाने के लिए युवकों का आह्वान करना है।''

यह सब योजना मधु को विदित थी और वह समझ रहा था कि जब पंडित शशिमोहन ने यह कहा है कि समाचारपत्र चलाना तो जलती आग पर चलने के समान है, तो पंडितजी उसके कार्य का अनुमान ठीक ही लगा रहे हैं।

माँ को तो इस कार्य का केवल यही रूप दिखाई दिया था, जो मुक्तानन्द ने देखा था।

मधु सैकेण्ड-हैण्ड छापाखाना ले, उसकी मरम्मत और उसकी कमी की पूर्तियों में लगा तो फिर घर को भूल गया। चन्द्रावती और मीना ज़मींदारी पर चली गई थीं और मोरे और मधु पत्र निकालने के प्रारम्भिक कार्य में लीन हो गए। तीन महीने लग गए छापाखाने की मरम्मत में। मोरे इस कार्य में सिद्धहस्त था और मधु उसकी सहायता करता रहता था। मधु को एक बार छापाखाने के कलपुर्जे इत्यादि लेने के लिए तथा नया टाइप खरीदने के लिए बम्बई भी जाना पड़ा।

इन दिनों वह कभी-कभी शनिवार सायंकाल की गाड़ी से अपने गाँव सरमा में जाता, रविवार अपनी माँ तथा पत्नी की संगत में रहता और सोमवार प्रातः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापस नगर में आ जाया करता था।

माघ प्रतिपदा सम्वत् 1955 विक्रमी को साप्ताहिक पत्र 'व्यवस्था' का प्रथम अंक प्रकाशित हो गया। नगर से बाहर मधु ने अपने मित्रों को बीस-बीस प्रतियाँ, पत्रिका के दाम पर अथवा बिना दाम के वितरण करने के लिए भेज दीं। गोविन्द हरि फड़के तथा हरिदत्त को सौ-सौ प्रतियाँ भेजी गई थीं।

नगर में सब परिचितों को एक-एक प्रति डाक द्वारा भेज दी गई। इनमें मुक्तानन्द और चरणसिंह भी थे। अपने गाँव में एक सतीश पाण्डे थे। वे परिवार के पुरोहित थे। मधु ने एक सौ प्रतियाँ उन्हें नि:शुल्क वितरण के लिए भेज दीं।

मुक्तानन्द को प्रात: की डाक में एक हिन्दी की पत्रिका मिली तो उसने किसी अशिक्षित वैद्य की दवाइयों का विज्ञापन समझ रद्दी की टोकरी में फेंक दी।

चरणसिंह और हरिहरसिंह की डाक एक ही डिब्बे में डाली जाती थी। अत: पत्रिका की एक प्रति हरिहरसिंह के हाथ में आ गई। उसने खोलकर देखी तो समझा कि कोई मूर्ख व्यक्ति यह कानूनी पत्रिका हिन्दी में निकाल, अपनी जीविका चलाना चाहता है और निश्चय ही एक वर्ष में दिवाला निकाल भाग जाएगा।

चरणसिंह की वकालत ज़ोरों से चल रही थी। दिन निकलते ही उसके ग्राहक उसकी बैठक में जमा होने आरम्भ हो जाया करते थे। उसका मुंशी नबी बख्श पहले ही वहाँ आ जाता था और नए मुकद्दमे में पूछताछ आरम्भ कर देता था।

इसके विपरीत हरिहरसिंह के पास काम कम था। इस कारण उसे डाक बटोरने और पढ़ने के लिए समय रहता था। आज उसने चरणसिंह की डाक मुन्शीजी को दी तो मुन्शी ने डाक बाँट दी। चिट्ठियाँ एक ओर, तथा अंग्रेज़ी के पत्र-पत्रिकाएँ दूसरी ओर कीं तो आज एक तीसरी श्रेणी की वस्तु दिखाई दी। यह हिन्दी की पत्रिका थी। नबी बख्श की लड़की, जिसका नाम चरणसिंह ने इन्द्रा रख दिया था, हिन्दी जानती थी। नबी बख्श यह समझा कि साहब ने यह पत्रिका अपनी पत्नी के लिए मँगवाई है। अत: उसने चपरासी द्वारा वह पत्रिका भीतर भेज दी।

प्रात: के अल्पाहार के समय चरणसिंह अपने ग्राहकों को सुन उनसे निबटकर भीतर आया तो इन्द्रा खाने की मेज पर बैठी इस नई आई पत्रिका को पढ़ रही थी। चरणसिंह ने उसके समीप कुर्सी पर बैठते हुए पूछ लिया, "क्या पढ़ा जा रहा है?"

चरणसिंह का भी यही विचार था कि शृंगार के सामान के विज्ञापन पढ़े जा रहे होंगे। इन्द्रा पति के प्रश्न को सुन हँस पड़ी। उसने हँसते हुए पत्र से मुख ऊपर उठाया और पूछ लिया, "तो आपने यह पढ़ा नहीं और भीतर भेज दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या भेज दिया है?"

"यह देखिए।" उसने पत्र के प्रथम पृष्ठ पर सम्पादक के नाम पर उंगली रखते हुए कहा।

चरणसिंह ने पढ़ा। लिखा था, सम्पादक मधुमोहन।

"अरे, तो मधु पत्रकार बन गया है?"

"बहुत मजेदार बातें लिखी हैं।"

"कहाँ से निकाला है उसने यह?"

"यहीं दारागंज का पता है।"

"तो मधु नगर में ही है। मैं समझा था कि वह गाँव में है जो कई महीनों से मिला नहीं। यज्ञ वाले दिन वह कहता था कि उसकी साध पूरी हुई है और अब वह अपनी पत्नी की सेवा भी करेगा।"

इन्द्रा हँस पड़ी और बोली, "तो यह पत्नी की सेवा आरम्भ कर दी है। सुनिए, क्या सेवा हो रही है?"

इन्द्रा ने अग्रलेख की कुछ पंक्तियाँ पढ़कर सुना दीं। उसने सुनाया—"राज्य निष्पक्ष नहीं हो सकता। यह अपने देश का पक्ष लेने के लिए निर्माण किया गया है। अत: किसी विदेशी जाति का राज्य अधीन देश के पक्ष में हो ही नहीं सकता। वह अपने ही देश का पक्ष लेगा। जब-जब भी शासक देश और शासित देश के हित परस्पर विरोधी होंगे शासक अपने देश का हित करेगा और शासित देश उसका विरोध करेगा। यह एक स्वाभाविक कार्य है।

"इस कारण प्रत्येक देश में अपने देश वालों का राज्य होना चाहिए।"

बैरा खाना परोस गया था। चरणसिंह ने अपनी प्लेट में दूध, दलिया डालते हुए कह दिया, "यह तो सरासर विद्रोह है।"

"किससे?" इन्द्रा का प्रश्न था।

"अगेन्स्ट द गवर्नमैंट इस्टैबलिश्ड बाई लॉ। (कानून से स्थापित सरकार के विपरीत।)"

"यही तो वह लिख रहा है, अंग्रेज़ी सरकार कानून से स्थापित सरकार नहीं है। यह बन्दूकों और संगीनों की नोंकों पर स्थापित हुई है। हाँ स्थापित होने के उपरांत इस सरकार ने कानून बना लिये हैं, परन्तु यह कानून से स्थापित हुई है मिथ्यावाद है।...."

"मैं उससे मिलूँगा और उसे सचेत करना चाहता हूँ। वह आग से खेल रहा है।"

"ठीक है। उसको पकड़कर यहाँ ले आइएगा। बहुत दिन से उसके दर्शन नहीं हुए। साथ ही मैं जानना चाहती हूँ कि उसकी पत्नी की सेवा का कुछ फल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल रहा है अथवा नहीं।''

''हाँ। आज कचहरी से आते समय उसके मकान पर जाकर उसे ले आऊँगा।''

उस दिन कचहरी में एक मुकद्दमे में वह मुक्तानन्द के विपक्ष में वकालत कर रहा था। मुकद्दमा नगर के एक लखपति सेठ के पुत्रों में था। सेठ की दो पत्नियाँ थीं। एक से दो पुत्र थे और दूसरी से एक लड़का और एक लड़की। बड़ी पत्नी के बड़े पुत्र की सहानुभूति अपनी छोटी माँ के अल्पायु बच्चों के साथ थी। इस पर भी मुक्तानन्द की राय से बड़ा, मंझला और छोटा भाई, सब अपने-अपने पक्ष को लेकर कचहरी में आए थे। छोटे अल्पायु बच्चों का मुकद्दमा चरणसिंह कर रहा था। मंझले भाई की ओर मुक्तानन्द था और बड़े भाई की ओर से हरिहरसिंह मुकद्दमा कर रहे थे।

मुकद्दमा अति रोचक ढंग से चल रहा था और चरणसिंह तथा हरिहरसिंह पिता-पुत्र दोनों में झड़प देखने, बहुत-से वकील भी एकत्रित हो जाते थे।

इस दिन मंझले भाई के दो साक्षी उपस्थित हुए थे और उन पर चरणसिंह ने जिरह की थी। इन साक्षियों का कहना था कि सेठजी का दूसरा विवाह हुआ ही नहीं था। इस पर चरणसिंह ने अपनी जिरह में उसको पानी-पानी कर दिया।

एक हुक्मचन्द ने कहा था, ''मैं सेठजी के मामा का लड़का हूँ। मैंने सेठजी का दूसरा विवाह होते नहीं देखा।''

वकील ने जिरह की, ''तुम कहते हो विवाह नहीं हुआ?''

''मेरी जानकारी में नहीं हुआ।''

''इसलिए न कि तुम विवाह में उपस्थित नहीं थे?''

''जी।''

''तुम अपने पिता के विवाह में उपस्थित थे क्या?''

''यह कैसे हो सकता था?''

:: 6 ::

''ठीक है। यही तो जानना चाहता हूँ कि तुम अपने पिता के विवाह में उपस्थित नहीं हो सकते थे और नहीं हुए थे, तो क्या तुम यह कहते हो कि तुम्हारी माँ का विवाह हुआ ही नहीं?''

गवाह ने जज से कहा, ''हुजूर, यह वकील मुझको गाली दे रहा है।''

जज ने प्रश्नभरी दृष्टि से चरणसिंह की तरफ देखा तो चरणसिंह ने कह दिया, ''हुजूर! इसके पिता के विवाह का उदाहरण देने का मतलब सिर्फ यह है कि मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि जब कोई किसी कार्य में उपस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हुआ तो वह किसी कारण से भी हो सकता था। उपस्थित न हो सकने में कारण कुछ भी हो, यह इस बात का प्रमाण नहीं हो सकता कि विवाह नहीं हुआ।''

जज हँस पड़ा। उसने गवाह से पूछा, ''तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता का विवाह हुआ था?''

''जी।''

अब फिर चरणसिंह ने पूछ लिया, ''हाँ। तो कैसे जानते हो?''

''माँ ने बताया था।''

''तो तुमने सेठजी से पूछा था कि उन्होंने विवाह किया है या नहीं?''

''नहीं। मैंने कभी नहीं पूछा।''

''और अगर तुम्हारी माँ यह नहीं बताती कि उसका कभी तुम्हारे पिता से विवाह हुआ था, तो यह मान लेने में कोई कारण नहीं हो सकता कि तुम्हारे पिता का तुम्हारी माँ से विवाह नहीं हुआ था।''

जज ने चरणसिंह को कह दिया, ''इस युक्ति को बन्द करो। तुमने अपनी बात सिद्ध कर दी कि गवाह कुछ ऐसी बात कह रहा है जिसका ज्ञान इसको नहीं है।''

इस प्रकार युक्तियाँ चल रही थीं।

आज मुकद्दमे की सुनवाई समाप्त हुई तो तीनों वकील कोर्ट रूम से बाहर आ खड़े हुए। मुक्तानन्द अपना 'हवाना' सिगार निकाल सुलगाने लगा तो उसने हरिहर से दियासलाई माँग ली। हरिहर ने अपनी जेब को हाथ लगाकर देखा कि उसके पास माचिस की डिबिया नहीं है। उसने चरणसिंह की ओर हाथ बढ़ा दिया। चरणसिंह ने कह दिया, ''मैंने सिगरेट पीना छोड़ दिया है, इसलिए दियासलाई रखता ही नहीं।''

''क्यों? इस नियामत से वंचित क्यों?''

''मेरी बीवी को तम्बाकू की गंध पसन्द नहीं।''

''तुम मधु के चेले होते जाते हो?''

इस पर चरणसिंह को मधु की बात स्मरण हो आई। उसने कह दिया, ''मधु ने हिन्दी में एक साप्ताहिक पत्र निकाला है। आज उसकी पहली प्रति मिली है।''

''ओह! हिन्दी का एक पैकेट मेरी डाक में भी आया था, परन्तु मैंने तो उसे दवाइयों का इश्तहार समझ रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है।''

''बहुत जबरदस्त लिखा है।''

''क्या लिखा है?''

''लिखा है कि अंग्रेज़ी राज्य हिन्दुस्तान में कानून से स्थापित नहीं हुआ। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदूकों और संगीनों के बल पर स्थापित हुआ है। इसलिए इसको हटाना किसी ऐसी सरकार का हटाना नहीं जो कानून से स्थापित हुई है।''

''यह तो बगावत है।''

''मगर यह युक्ति तो है। अगर पहले कोई सरकार कानून से स्थापित की गई हो तो फिर उसको हटाना विद्रोह है। अंग्रेज़ी सरकार को हटाना विद्रोह नहीं। यह युद्ध कहा जा सकता है और युद्ध करना मान का कार्य है। विद्रोह एक घृणित कार्य है।''

मुक्तानन्द चरणसिंह की युक्ति सुन मुख देखता रह गया। वह युक्ति का उत्तर तो नहीं दे सका, इस पर भी वह जानता था कि कानून शक्तिशाली का पक्ष लेता है। इस कारण उसने चिंता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, ''कहाँ है वह?''

''यहीं नगर में ही है। मैं उससे मिलने जा रहा हूँ। पिछले तीन महीने से उसके दर्शन नहीं हुए।''

''अच्छा। जाओगे तो उसे रात के खाने के समय मेरे यहाँ ले आना। मैं उससे बात करूँगा।''

''वह खाने के समय आ तो जाएगा, मगर उसको भय लगा रहता है कि कोई ऐना जैसी और न वहाँ मिल जाए।''

मुक्तानन्द हँस पड़ा और बोला, ''बहुत डरपोक है?''

''जी नहीं। हक़ीकत यह है कि जो विरोधी को देखते ही हथियार डाल देना अपना धर्म समझता है, उसकी बहादुरी की तो परीक्षा ही नहीं हो सकती। जिसने विरोधी का मुकाबला करना हो, डर और चिन्ता तो वही कर सकता है। मैं समझता हूँ कि यह डर नहीं। यह युद्ध करने की चिन्ता है।''

''मगर किसी औरत से मुहब्बत करना युद्ध लड़ना है क्या?''

''वह यही समझता है।''

''वह मूर्ख है। अच्छा उसे खाने से पहले ले आना।''

''यत्न करूँगा।''

:: 7 ::

कचहरी समाप्त होने पर चरणसिंह रानी चन्द्रावती के नगर वाले मकान पर जा पहुँचा। वहाँ से पता चला कि मधु बाबू दारागंज में अपने छापाखाना के ऊपर की मंज़िल पर एक कमरे में रहते हैं और वह अब कोठी में नहीं आते।

चरणसिंह वहाँ जा पहुँचा। पत्रिका का नाम-पट्ट लगा था। भीतर जाने पर हाथ से चलाई जाने वाली मुद्रण मशीन लगी दिखाई दी। तीन मिस्त्री उस पर काम कर रहे थे। चरणसिंह ने मधु बाबू के विषय में पूछा तो एक कर्मचारी ने मुस्कराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा, "बाबू एक बड़ा-सा बंडल अखबारों का लेकर बाज़ार की ओर गए थे। मध्याह्न पूर्व के गए हुए हैं अभी तक नहीं लौटे।"

"भोजन नहीं किया क्या?"

"वह तो दस बजे ही कर लेते हैं।"

"यहाँ कोई अन्य जानकार है?"

"छापेखाने के मैनेजर बाबू नीलकण्ठ मोरे हैं। वे पिछले कमरे में उपस्थित हैं।"

चरणसिंह बताए कमरे में चला गया। नीलकण्ठ मोरे ने वकीलों के काले कोट और स्टिफ कॉलर में एक व्यक्ति को आते देखा तो उठकर हाथ मिलाया और फिर उनको मेज़ की दूसरी तरफ बैठाकर पूछ लिया, "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"मैं मधुमोहनजी से मिलने आया था।"

"वे यहाँ नहीं हैं। पता नहीं कब तक आएँगे।"

"आप क्या काम करते हैं?"

"मैं पत्रिका तथा छापेखाने का मैनेजर हूँ।"

"आज आपके पत्र का प्रथम अंक मिला है। उसी के सम्बन्ध में सम्पादक महोदय से मिलने आया था।"

"आप फरमाइए। यदि मैं कुछ बता सका तो सेवा कर दूँगा।"

"पहला अंक कितना छपा है?"

"पाँच हज़ार।"

"सब बिक गया है क्या?"

नीलकण्ठ ने मुस्कराकर कहा, "बिक्री का अभी तक एक पैसा भी प्राप्त नहीं हुआ। हाँ, हम तीन सहस्र से ऊपर वितरण कर चुके हैं।"

"क्या दाम है इसका?"

"एक आना।"

"ट्रेड रेट बताइए।"

"पचास प्रतियाँ दो रुपये दस आने में, एक सौ प्रतियाँ पाँच रुपये में और पाँच सौ प्रतियाँ बीस रुपये में।"

"तो ऐसा करिए, मुझे सौ प्रतियाँ दे दीजिए।"

नीलकण्ठ ने सौ प्रतियों का एक बण्डल कागज़ में लपेटकर दिया तो चरणसिंह ने पाँच रुपये सामने रख दिए। नीलकण्ठ रसीद काटने लगा तो चरणसिंह ने पूछ लिया, "खर्च कैसे चलता है? इस दाम में तो इतना कागज़ भी नहीं आता?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''जी। हम यत्न कर रहे हैं कि प्रैस पर 'जॉब वर्क' किया करें।''

''तो इसमें कुछ सफलता मिल रही है?''

''जी। मैं आज भी तीन सौ रुपये के काम का आर्डर बाज़ार से लाया हूँ।''

''तब तो काम चल जाएगा?''

''यह अभी पर्याप्त नहीं।''

''तो कितना पर्याप्त होगा?''

''जब एक सहस्र रुपये प्रति सप्ताह का काम मिले और वह हमारी मशीन से हो सके।''

''अच्छा, आप 'विज़िटिंग कार्ड' भी छाप सकते हैं?''

''जी। छाप सकेंगे।''

चरणसिंह ने जेब से अपना कार्ड निकाला और पूछ लिया, ''ऐसा छाप देंगे?''

''जी। छाप देंगे। परन्तु इसका प्लेट बना है क्या?''

''प्लेट तो नहीं है?''

''तो प्लेट बनवाना पड़ेगा। इसमें दो रुपये सैकड़ा छपवाई और प्लेट दाम पाँच रुपया पृथक् होगा।''

''तो पाँच सौ छपवा दीजिए।''

नीलकण्ठ ने आर्डर फार्म निकाला और उस पर काम का ब्यौरा लिखकर दाम लिख दिया और नीचे हस्ताक्षर करा लिये।

चरणसिंह ने अपना नाम और पता लिखा तो नीलकण्ठ ने कार्ड पर पता पढ़ा, कुछ विचारकर कहा, ''आपको पत्रिका तो हमने कल भेजी थी।''

''हाँ, मिली है। इसी से तो आया हूँ।''

''आपने पढ़ी है?''

''नहीं। उसके अग्रलेख में से कुछ पंक्तियाँ सुनी हैं। उनके विषय में ही बातचीत करने आया हूँ।''

''तो आपको फिर आने का कष्ट करना पड़ेगा।''

''नहीं। मधु बाबू से मेरा कार्ड दिखाकर कह दें कि मैं आया था और मिलना चाहता हूँ।''

नीलकण्ठ ने जब कह देने का वचन दिया तो चरणसिंह उठ पड़ा और पत्रिकाओं का बण्डल उठा मकान से निकल आया। वह अपने ताँगे में सवार हो चला तो उसे एक बात सूझी। उसने विचार किया कि शायद मधु बाज़ार में अपनी पत्रिका स्वयं बेच रहा हो। इस विचार के आते ही उसने ताँगे के कोचवान को कह दिया, ''चौक की तरफ ले चलो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका अनुमान ठीक निकला। मधु सड़क के किनारे खड़ा अखबार बेच रहा था।

चरणसिंह को एक बात सूझी। उसने ताँगा कुछ अन्तर पर खड़ा कर लिया और कोचवान को पत्रिकाओं का बण्डल देकर बोला, "तुम मधु बाबू के समीप खड़े होकर बिना दाम के यह बाँटना आरम्भ कर दो।"

कोचवान मधु को जानता था। वह मुस्कराया और मजाक समझ बण्डल ले मधु से कुछ अन्तर पर खड़ा हो ऊँचे-ऊँचे कहने लगा, "आ जाओ मुफ्त में। पत्रिका मुफ्त में।"

कुछ लोग दाम देकर मधु से खरीद रहे थे। वे कोचवान की आवाज़ सुन मधु को छोड़ उधर चले गए। मधु ने कोचवान को देखा और पहचाना। फिर दूर टाँगे के पास चरणसिंह को खड़ा देख समझ गया। इस पर उसे अनदेखा प्रकट कर आवाज़ देता रहा, "ताजा व्यवस्थापक। एक आने में। एक आने में।"

एक आदमी कोचवान से मुफ्त लेकर आया तो मधु से बोला, "वह तो मुफ्त बाँट रहा है?"

"ठीक है। मुफ्त वहाँ से ले। दाम देकर लेना हो तो यहाँ से लें।" मध्याह्न काल से लेकर इस समय तक मधु ने एक सौ प्रतियाँ बेची थीं। अब लोग काम-काज से लौट रहे थे और बिक्री तेज थी, परन्तु लोग कोचवान की ओर जाने लगे थे। मधु बिना विचलित हुए खड़ा 'एक आने में' कहता रहा।

चरणसिंह ने दूर से देखा कि लोग कोचवान से पत्रिकाएँ ले रहे हैं। इस पर भी मधु अपने स्थान पर खड़ा आवाज़ लगा रहा है। उसने समझा कि मधु ने कोचवान को या तो पहचाना नहीं अथवा उसे देखा नहीं।

इस विचार पर वह ताँगे को छोड़ स्वयं वहाँ आ गया, जहाँ कोचवान खड़ा बाँट रहा था और उसके हाथ से शेष पत्रिकाएँ लेकर मधु के बिलकुल समीप खड़ा हो जो भी लेने आए उसको कह देता, "यह बाबू एक आने में देता है और मैं बिना दाम के देता हूँ।"

अब तो मधुमोहन हँस पड़ा। लोग वकीलों के पहरावे में खड़े एक व्यक्ति को अखबार बाँटते देख एकत्रित होने लगे और तमाशा देखने लगे।

जब मधुमोहन हँसा तो चरणसिंह ने उसके हाथ से शेष पत्रिकाएँ लेकर चारों ओर खड़े लोगों में फेंक दीं। लोग पत्रिकाओं को उठाने लपके तो चरणसिंह ने मधु की बाँह में बाँह डाल कहा, "सब बिक गई हैं न? आओ चलें।"

"कहाँ?"

"इन्द्रा चाय पर प्रतीक्षा कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! तो उसने भेजा है कि दादा की दुकान पर लूट मचा दो?"

"हाँ।"

"यह तो कानून के खिलाफ है।"

"तो दावा दायर कर दो।"

"अच्छी बात है। चलो, करता हूँ।" मधु चरणसिंह के साथ ताँगे की ओर चल पड़ा। कोचवान ने भी अपने हाथ की शेष प्रतियाँ लुटा दीं और ताँगा चलाने के लिए चल पड़ा।

जब ताँगा चरणसिंह के मकान की तरफ चल पड़ा तो मधु ने कहा, "वकील होकर यह डाका डालना तो ठीक नहीं। वकील को तो दुगुना दण्ड मिलना चाहिए।"

"पहले मुकद्दमा दायर करो। लूट मचने के गवाह पेश करो, फिर बताओ कि तुम्हारा माल चोरी का नहीं था, तभी तो अदालत दण्ड देगी, और अदालत को भी तो रिश्वत दी जा सकती है।"

"अच्छी बात। जब इतनी अन्धेरगर्दी है तो चुपचाप अन्याय सहन करूँगा, मुकद्दमा नहीं करूँगा।"

"देखो मधु!" चरणसिंह ने बात बदल दी, "तुम्हारे पत्र के विषय में मुक्तानन्द तुमसे मिलना चाहता है।"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"भैया! यह बताओ कि क्या हानि होगी उसकी बात सुनकर?"

"मगर उसमें कुछ अक्ल है भी?"

"माताजी का मुकद्दमा तो जिता दिया है उसने ही।"

"यह उसने अपनी प्रतिभा के कारण नहीं, अपने विस्तृत ज्ञान के आधार पर जीता है। इस पर भी वह कभी जीत न सकता यदि उसके ज्ञान को ठीक दिशा देने वाला मैं नहीं होता।"

"उसने तो बहुत-से मुकद्दमों के हवाले इकट्ठे कर लिये थे, परन्तु कौन हवाला हमारे पक्ष में जाता है और किस प्रकार जाता है, यह तो मैं बताता था। यदि मैं नहीं होता तो उसका सब ज्ञान भी उसकी सहायता नहीं कर सकता था।"

चरणसिंह यह बात जानता था। मुक्तानन्द भिन्न-भिन्न हाईकोर्टों में हुए फैसलों का 'विश्व कोष' माना जाता था, परन्तु वह उन फैसलों को ठीक प्रकार से उपस्थित नहीं कर सकता था। वह स्वयं यह कला समझ गया था, परन्तु उस कला का प्रयोग तो वह तब से करने में सफल होने लगा था जब से उसने सिगरेट तथा शराब पीनी छोड़ी थी और मधु के बताए ढंग के अनुसार धारणा, ध्यान और चिन्तन करना आरम्भ किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी उसने कह दिया, ''मधु भैया! उसकी बात सुन लेने में हानि नहीं।''

:: 8 ::

घर पहुँचकर मधु इन्द्रा के सामने बैठा तो इन्द्रा ने पति से पूछ लिया, ''कहाँ से पकड़ लाए हैं भैया को ? मैं भी तो इनको ढूँढती हुई इनके घर गई थी।''

चरणसिंह ने मधु से मिलने की कहानी बताई तो इन्द्रा हँस पड़ी और हँसकर कहने लगी, ''ऐसा त्याग और ऐसी तपस्या तो किसी प्रेमिका के लिए ही की जा सकती है।''

''हाँ, भाभी, परन्तु यह किसी प्रेमिका के लिए नहीं। यह तो जननी के लिए है।''

इन्द्रा इसका अर्थ समझ ही रही थी कि चरणसिंह ने पूछ लिया, ''तो माँ ने घर से निकाल दिया है ?''

चरणसिंह को अपनी बात का अर्थ न समझते देख मधु बोला, चरण, माँ के चरणों में बैठा हुआ ही तो ये सुमन उसकी भेंट कर रहा हूँ।''

''तो क्या ज़मींदारी बिक गई है ?'' चरण ने अभी भी बात न समझते हुए पूछ लिया।

मधु खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''चरण भैया तो बुद्धू-के-बुद्धू ही रहे। सरल-सी बात भी समझ नहीं सके।''

इस पर इन्द्रा ने कह दिया, ''भैया ठीक कह रहे हैं। ये अपनी योग्यता के फूल माँ के चरणों में चढ़ा रहे हैं। मगर माँ चन्द्रावती नहीं, ये भारत माता की बात कर रहे हैं।''

चरणसिंह भारत माता नाम के किसी प्राणी को जानता नहीं था। इसको जानने के लिए भारतीय साहित्य हिन्दी भाषा में पढ़ने की आवश्यकता थी।

मधु ने बंकिम के भजन का एक पद बोल दिया, ''सुजलां सुफलां मलयज शीतलां। शस्य श्यामलां। मातरम्। वन्दे मातरम्।''

चरणसिंह ने अभी भी न समझते हुए कह दिया, ''भैया! सीधी-सीधी बात करो।''

इस पर तो मधु और इन्द्रा दोनों हँस पड़े।

इनकी हँसी की आवाज़ सुन सरस्वती आ गई। उसने हाथ में पत्रिका की एक प्रति पकड़ी हुई थी। सरस्वती ने हाथ जोड़ नमस्ते कर कह दिया, ''पत्रकार दादा! कहाँ रहे हो इतने दिन तक ?''

''तो सरस्वती बहन यहाँ है ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे तो एक वर्ष हो गया है, यहाँ रहते हुए।"

"और मुन्ना के पिता?"

"वे विलायत पढ़ाई करने गए हैं।"

"मुझे तो यह विदित ही नहीं था।"

"खैर, अब तो विदित हो गया है। अब तो आशा कर सकती हूँ कि दादा कभी सरस्वती बहन की भी सुध लिया करेंगे। आज प्रातः पिताजी अल्पाहार लेने आए तो यह मुझको दे गए। उनका विचार यह था कि मथुरा की सुख संचारक कम्पनी का विज्ञापन है। वे तो देवनागरी पढ़ नहीं सकते।

"पढ़ने लगी तो रस आने लगा और लिखने वाले का नाम जानने की उत्सुकता उत्पन्न हो गई। प्रथम पृष्ठ पर दादा का नाम पढ़ा तो चित्त गद्गद हो गया। दादा गणित तो पढ़े हैं, यह पता नहीं था कि कानून भी जानते हैं। अभी पिताजी आए थे तो मैंने पूछ लिया कि अंग्रेज़ी सरकार कानून से स्थापित सरकार नहीं क्या?

"इस पर वे मेरा मुख देखने लगे। तो मैंने आपके पत्र का पूर्ण लेख पढ़कर सुना दिया। वे बिना बोले सिर हिलाते हुए चले गए।

"मैं उनके मौन पर विचार ही कर रही थी कि दादा और भाभी के हँसने की आवाज़ आने लगी। इसलिए दादा को इस सफल प्रयास पर बधाई देने चली आई हूँ।"

"किस कारण इसको सफल कहती हो?"

"इस कारण कि इसके पढ़ने से मन, लिखी बात माने बिना रहता ही नहीं। ज्यों-ज्यों पढ़ती गई बात समझती गई और दादा के कथन को सत्य मानती गई।"

मधु इस विश्लेषण को सुन प्रसन्न था, परन्तु चरणसिंह ने अब मन की बात स्पष्ट कर कहा, "सरस्वती! जिस बात का ज्ञान न हो उसमें बात करना शोभा नहीं देता। तुमने कानून पढ़ा नहीं और न ही दादा ने पढ़ा है। अनपढ़ की बात को एक अनपढ़ ही मान सकता है। मैं तो यह पूछता हूँ कि कानून तो यह कहता है कि 'हिज़ मैजेस्टी' की सरकार कानून से स्थापित है। यह नहीं कि कानून से बनी है। बनना और स्थापित होना दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। इस कारण मधु का यह कहना कि 'हिज़ मैजेस्टी' की सरकार को उखाड़ फेंकना कानून के खिलाफ नहीं, गलत है।"

मधु के उत्तर देने से पूर्व इन्द्रा बोल उठी, "तो आपका मतलब है कि सुग्रीव की पत्नी पर बाली का अधिकार कानून के अनुसार था और उसको छुड़ाना कानून के खिलाफ था?"

चरणसिंह ने कभी अपनी माँ से अथवा चलते-फिरते लोगों से राम-रावण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की कथा सुनी थी, परन्तु वह इसकी व्याख्या नहीं जानता था। इन्द्रा ने तो रामायण पढ़ी थी, जब वह अभी मुसलमान ही थी। नबी बख्श की पत्नी एक हिन्दू बनिए की लड़की थी। नबी बख्श उसे बाप के घर से भगा लाया था। सुखिया ही अपनी लड़की करीमन का चरणसिंह से विवाह करने की योजना बना बैठी थी और उसकी योजना सफल हुई थी। सुखिया ने ही इन्द्रा को रामायण पढ़ाई थी।

चरणसिंह सुग्रीव और बाली की कथा न जानते हुए कहने लगा, "तो तुम सहस्त्रों वर्ष पूर्व की बात आज के कानून से जोड़ रही हो? यही तो औरत और मर्द में अन्तर है।"

अब मधु ने कहा, "चरण भैया! इन्द्रा ठीक तो कह रही है। देखो, मैं समझाता हूँ। सुग्रीव और बाली भाई-भाई थे। बाली राजा था और सुग्रीव उसका छोटा भाई था। बाली बहुत बलशाली था। बाली ने भाई का राज्य छीन लिया और उसकी पत्नी पर अधिकार जमा अपनी पत्नी बना लिया। राम सीता की खोज में घूमता हुआ वहाँ जा पहुँचा। उसे जब पता चला तो उसने बाली को मार डाला और सुग्रीव का राज्य और पत्नी उसे वापस दिलवा दी।"

"इन्द्रा कह रही है कि बलपूर्वक प्राप्त अधिकार को हटाना गैर-कानूनी नहीं। यह सरल-सी बात कानूनी पंडित चरणसिंह को समझ नहीं आई क्या?"

"पत्नी की बात और राज्य की बात में अन्तर है।"

"नहीं भैया, दोनों वस्तु 'भोग' हैं। उसके भोग का अधिकार धर्म से एक का है। दूसरा बल से उस पर अधिकार जमा स्वयं भोग कर रहा है। तो बलात्कार करने वाले को हटाना धर्म ही तो माना जाएगा।

"अब इस उदाहरण में भोग पत्नी हो सकती है और देश भी हो सकता है। भोक्ता बाली के स्थान पर अंग्रेज़ है। इन्द्रा भाभी ने बहुत सुन्दर उदाहरण दिया है और हम राम का कार्य करना चाहते हैं।"

"इस तरह नहीं, यह बात हम मुक्तानन्दजी की बैठक में विचार करेंगे। यहाँ इन औरतों के सामने बात नहीं कर सकते।"

सरस्वती ने कह दिया, "भैया! पत्रिका का शुल्क क्या रखा है?"

"वार्षिक शुल्क है तीन रुपये।"

"तो मेरा नाम इसके ग्राहकों में लिख लो।" इतना कह सरस्वती जेब से रुपये निकाल देने लगी, तो मधु ने कह दिया, "सरस्वती बहन इसे निःशुल्क प्राप्त करेंगी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि सरस्वती का भाई उसका यह शुल्क अपनी जेब से दे रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो भैया! कहीं लिख लो। बहनें, भाइयों के कलरव में, विस्मरण हो जाया करती हैं।''

:: 9 ::

मुक्तानन्द तो मधु को देखते ही बरस पड़ा, ''तुम न केवल बाप-दादाओं की सम्पत्ति को स्वाहा करने का कार्य कर रहे हो वरन् स्वयं भी फाँसी के तख्ते पर झूलने की योजना बना रहे हो।''

मधु मुस्कराता हुआ सामने बैठा रहा। उसे चुप देख मुक्तानन्द ने अपना कहना जारी रखा, ''प्रात: तो मैंने तुम्हारे चिट्ठे को किसी दवाईखाने का इश्तहार समझ रद्दी की टोकरी में फेंक दिया था, परन्तु दोपहर चरणसिंह ने जब बताया तो घर आकर टोकरी में से निकाल मुन्शी से पढ़वाया है। मुंशी पढ़ते-पढ़ते बोल उठा, पंडितजी! पढ़ने से रोंगटे खड़े हो गए हैं। परन्तु मैं तो क्रोध से पागल हो रहा था।''

आखिर मधु ने मुख खोला। उसने कह दिया, ''पंडितजी! मैं आपके मनोद्गारों को समझ रहा हूँ, परन्तु मेरे भी तो कुछ मनोद्गार हैं। यदि दोनों में अन्तर है, तो यह न विस्मय का विषय है, न ही क्रोध का। यह विचार-विमर्श का विषय हो सकता है।''

''तुम क्या समझे हो मेरे मनोद्गारों के विषय में?''

''आप अंग्रेज़ी सरकार की भक्त प्रजा हैं। आपको उसके यहाँ रहने में स्वहित दिखाई देता है। इसके विपरीत मैं अंग्रेज़ी सरकार को 'युज़र्पर' (अनधिकारयुक्त) सरकार मानता हूँ और उसको हटा देने में देश का और अपने-आप का कल्याण मानता हूँ।''

''यह हो नहीं सकेगा।''

''क्यों?''

''क्योंकि इस देश में बहुसंख्या हिन्दुओं की है। उनमें प्राय: मूढ़मति हैं। मूर्त्तिपूजक, देवी-देवताओं के आगे बकरे चढ़ाने वाले और महास्वार्थी हैं। इस जाति पर बनिए राज्य करते हैं। खान-पान, विवाहादि, जाति-पाँति के झगड़े इनमें इतने हैं कि प्रलय-काल तक यह जाति स्वतंत्र नहीं हो सकेगी।''

''हिन्दुओं और देश का कल्याण इसी में है कि ये सब-के-सब मुसलमान हो जाएँ या ईसाई बन जाएँ। तब देश स्वयं स्वतंत्र हो जाएगा।''

''आप क्या होंगे?''

''मैं तो हिन्दू नहीं हूँ। मुझको ईसाई इत्यादि होने की ज़रूरत नहीं।''

तो भापा! एक बात करो। इन मूढ़ हिन्दुओं का कल्याण करने के लिए यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मस्जिद खोल दो और हिन्दुओं को पकड़-पकड़कर मुसलमान बनाना आरम्भ कर दो।''

''मुझे तो इस बात की आवश्यकता नहीं। मैं तो अपने को स्वतंत्र और राज्य करने वालों में समझता हूँ। यह बात तुम करो। तुमको अंग्रेज़ी राज्य की सुख-सुविधा अखरती है। मुझे तो यह बुरी लग नहीं रही।''

मधु ने अब उत्तर देना व्यर्थ समझ चुप रहना ही ठीक समझा।

मुक्तानन्द ने फिर कहा, ''मैं समझा था कि चरणसिंह ने एक मुसलमान की लड़की से शादी की है तो यह शीघ्र ही चराग़ दीन बन जाएगा। मगर तुम्हारी सोहबत में यह चरण का चरण ही रहा है, बल्कि इसकी बीवी करीमन से इन्द्रा हो गई है और उसके बच्चे भी हनुमान और अंगद होने लगे हैं।''

मधु चरणसिंह पर भी वाक्बाण छूटते देख हँस पड़ा। मुक्तानन्द ने अपनी बात समाप्त करते हुए कह दिया, ''अपनी माँ को लिख दो कि मैं चाहता हूँ कि वह तुमको धन देना बन्द कर दे, नहीं तो वह भी मुसीबत में फँस जाएगी।''

''जी। लिख दूँगा। परन्तु माँ ने आज से तीन मास पूर्व दस हज़ार रुपया दिया था। उसके बाद मैंने माँ से एक पैसा नहीं लिया और न ही लेने का विचार रखता हूँ।''

''तो यह अखबार नहीं चलेगा।''

''यह तो अभी कह नहीं सकता। हमारी योजना है कि माँ से कुछ लिये बिना इसे चलाएँ। साथ ही मैं तो वह दस हज़ार भी वापस करने की योजना रखता हूँ।''

''तो तुम नहीं मानोगे ?''

''आपने क्या मानने के लिए कहा है ?''

''मैंने तुम्हारे लिए राजधानी में एक नौकरी ढूँढी है। तुम यह काम छोड़ वहाँ चले जाओ।''

''तो नियुक्ति-पत्र आने दीजिए, फिर मैं चला जाऊँगा।''

''तुम कल आना। एक प्रार्थना-पत्र तैयार कर रखूँगा। तुम उस पर दस्तखत कर देना। नौकरी मिल जाएगी।''

''मैं प्रार्थना तो करूँगा नहीं। पंडित भुवनचन्द्र ने कहा है कि मैं ब्राह्मण हूँ और एक ब्राह्मण किसी के सामने हाथ नहीं पसारता। जो कुछ अनायास मिले उससे ही वह निर्वाह करता है।''

''उस मूर्ख की बात पर चल रहे हो ? तो यह अखबार भी उसी की राय से चलाने लगे हो ?''

''जी नहीं। वे तो तीन वर्ष से हरिद्वार में रहते हैं और मुझे उनके दर्शन किए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना ही काल व्यतीत हो चुका है।''

''तो यह किस गधे की राय से काम कर रहे हो?''

''एक हैं। मैं उनको गधा नहीं मानता। वे हैं पूना के बाल गंगाधर जी तिलक।''

''ओह! तो तुम दोनों फाँसी पर लटकोगे?''

''इससे तो हम मुक्त हो जाएँगे।''

''वह क्या होता है?''

''स्वर्ग को प्राप्त होंगे।''

मुक्तानन्द देख रहा था कि मधु डराने-धमकाने से मान नहीं रहा। तब उसने बात बदलकर पूछ लिया, ''तुम्हारे घर कोई बाल-बच्चा क्यों नहीं हुआ?''

''वह मैंने मुकद्दमे के दौरान ठीक नहीं समझा था। अब होगा।''

''कब होगा?''

''मैं आशा करता हूँ कि छः महीने तक पत्नी माँ बन सकेगी।''

''तो उस शिशु पर तो दया करो। देखो, मधु! तुम्हारे जैसे योग्य व्यक्ति को अपनी योग्यता, पढ़ाई, लिखाई और बुद्धि इस प्रकार व्यर्थ गँवाते हुए देख मन को दुःख होता है। किसी गोखले, कृष्ण गोपाल गोखले का नाम सुना है?''

''जी, सुना है।''

''वह एक स्कूल मास्टर था। वह भी गणित-शास्त्र का ज्ञाता है। अभी-अभी सरकार ने उसे एक सचिव के पद पर नियुक्त किया है। जानते हो क्यों?''

''जी नहीं।''

''वह इसलिए कि वह अंग्रेज़ी में बहुत सुन्दर भाषण दे सकता है। वह तिलक के खिलाफ है और सरकार का भक्त है।''

''यह तो ठीक नहीं हुआ।''

''किसलिए?''

''स्कूल में पढ़ाने का काम ब्राह्मण का है। इसे छोड़ तो वह शूद्र का कार्य कर रहा है।''

''तो सरकारी नौकरी करना शूद्र का कार्य है?''

''जी। विशेष रूप से जब किसी नौकरी के लिए अपने भाई-बन्धुओं का विरोध करना पड़े।''

''मैं समझता हूँ कि तुमसे बात कर मैं पानी मथ रहा हूँ। इससे लाभ नहीं होगा।''

''पर भापा! मुझे तो लाभ हो रहा है।''

''क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तनिक विश्लेषण कर बताऊँगा।''

बात समाप्त हुई। मुक्तानन्द ने कह दिया ''देखो, तुम मेरे यहाँ मत आया करो। मैं तुमसे स्वयं मिलकर पता करूँगा कि तुमको मेरी बातों से क्या लाभ हुआ है।''

मधु और चरणसिंह नमस्कार कर वहाँ से चले आए। दोनों मन में भिन्न-भिन्न प्रकार से विचार कर रहे थे। दोनों अपने विचारों में इतने लीन थे कि परस्पर बात नहीं कर रहे थे।

चरणसिंह गाड़ी से अपने घर पर उतर गया और उसने मधु को अपनी गाड़ी में ही छापेखाने को भेज दिया।

मधु मन में विचार कर रहा था कि मुक्तानन्द इस काम से भयभीत किसलिए है। साथ ही वह यह नहीं समझ रहा था कि वह उसको अपने मार्ग से विचलित करने में क्यों रुचि रखता है।

उसकी अन्तिम बात कि मधु उसको मिलने उसकी कोठी पर न आए और वह स्वयं उससे मिलने का प्रबन्ध करेगा, मधु को दो बातों की सूचक प्रतीत हुई थी। एक तो यह कि वह मधु से मेल-जोल भय का कारण मानता था और दूसरा यह कि मधु को भी भय से बचाने में वह विशेष रुचि रखता था।

इन दोनों दिशाओं पर विचार करता हुआ वह अपने घर पहुँचा। वहाँ नीलकण्ठ मोरे उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। नीलकण्ठ ने बताया, ''गाँव से माताजी का पत्र लेकर एक आदमी आया है और वे चाहती हैं कि तुरन्त गाँव पहुँचा जाए।''

इसने मधु के मन से मुक्तानन्द की बात निकाल दी और वह प्रातःकाल की गाड़ी से गाँव जाने का विचार बना, तुरन्त सो जाने का प्रबन्ध करने लगा। जल्दी-जल्दी खाना खा वह टाइमपीस में चार बजे का 'अलार्म' लगा सो गया। गाड़ी पाँच बजे छूटती थी।

:: 10 ::

माँ और पुत्र में भेंट हुई तो उसने मधु को उसके पत्र निकालने पर आशीर्वाद और बधाई दी और कहा, ''यहाँ रेशम का घरवाला श्रीचन्द्र आया था और कहता था कि मधु पकड़कर फाँसी चढ़ा दिया जाएगा। इस कारण मैं तुमको सतर्क करना चाहती हूँ कि सावधानी से कार्य करो। मैं श्रीचन्द्र की बुद्धि पर विश्वास नहीं रखती। इस पर भी तुम समझदार हो और मैं तुम्हारी बुद्धि पर अधिक विश्वास रखती हूँ।''

मधु ने माँ और पत्नी को बैठाकर पूछ लिया, ''मुझे तो अपने लेख में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भय की बात प्रतीत नहीं हुई। इस पर भी तुम लोग बताओ कि कहीं श्रीचन्द्र की बात ठीक हो गई तो क्या करोगे?''

''मुझे दु:ख तो होगा। परन्तु मैं तुमको अपने कार्य से मना नहीं कर सकती। मैं वे सब बातें अनुभव कर रही हूँ जो तुमने अंग्रेज़ी राज्य के परिणाम में बताई हैं, परन्तु पंडित शशिमोहनजी का लेख भी विचारणीय है। उनका कथन कि यदि भारत के हिन्दू मूढ़मति न होते तो न इस्लामी राज्य स्थापित होता न ईसाई राज्य। दोषी हिन्दू हैं। हिन्दुओं को अपना सुधार करना चाहिए।''

''माँ! दोनों बातें साथ-साथ चलनी चाहिए। देखो, कुछ दिन हुए मेरे पंजाबी मित्र हरिदत्त का एक पत्र आया था। उन्होंने एक पुस्तक भी भेजी है। पुस्तक है 'सत्यार्थ प्रकाश'। उसमें हिन्दुओं में दोष और उनके सुधार की बात लिखी है। पर माँ! उसमें लेखक ने यह भी लिखा है कि जब तक स्वराज्य नहीं हो जाता, तब तक सुधार होना सम्भव नहीं।

''हरिदत्त का कहना है कि हिन्दुओं में स्वराज्य के पहले सुधार का यत्न किया गया तो हिन्दू ईसाई अथवा मुसलमान हो जाएँगे। कारण यह कि सुधारों का श्रेय अंग्रेज़ी शिक्षा और ईसाइयों का प्रचार लेता चला जाएगा। आर्य समाज मूर्ति-पूजा का खण्डन करता है। मूर्ति-पूजा का खंडन ईसाई भी करते हैं। अत: एक प्रकार से ईसाई आर्य समाज के कार्य का फल ले रहे हैं।

''इस कारण, हरिदत्त का कहना है कि धर्म के सत्य स्वरूप का विवेचन और विदेशी राज्य का उन्मूलन साथ-साथ ही होना चाहिए।''

चन्द्रावती ने कह दिया, ''मैं इतनी बुद्धि नहीं रखती। इस पर भी कार्य-सिद्धि लक्ष्य होना चाहिए। उपाय ध्येय नहीं बन सकते। उपायों का चयन उनकी उपयोगिता और स्थिरता पर निर्भर होना चाहिए।''

''माँ! ऐसा ही होगा।''

जब मधु और मीना एकान्त में मिले तो मधु ने पूछ लिया, ''क्या तुम्हारे मन में भय लग रहा है, मीना?''

''जी नहीं। मैं समझती हूँ कि पिताजी का चिन्तन कर यह बताना ठीक है कि मैं वृद्धावस्था तक आपकी संगत और सेवा में रहूँगी। और मुझको पिताजी के कथन के सत्य होने पर विश्वास है।''

''यदि कहीं डोमों की आकांक्षाएँ पूर्ण हुईं तो क्या करोगी?''

''देखिए जी! आपने करने को एक काम तो सौंप दिया है। मुझे आगामी बीस वर्ष का काम तो मिल गया है। आप मेरी चिन्ता छोड़िए। जो उचित जान पड़े, करिए। ब्राह्मण कर्त्तव्य-पालन में न तो भय का अनुभव किया करते हैं न ही कभी किसी प्रलोभन में फँसा करते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार आश्वस्त हो मधु एक रात गाँव में रहकर नगर में लौट आया और फिर निश्चिन्त होकर काम में लग गया।

'व्यवस्था' पत्रिका चलने लगी। दूसरे अंक में मधु ने अपनी स्थिति और भी स्पष्ट कर दी। उसने लिखा, "हम राज्य बदलना चाहते हैं, परन्तु उसी तरह जैसे अंग्रेज़ों के अपने देश में पार्लियामेंट ने राज्य राजा के हाथ से लेकर अपने हाथ में लिया था।"

इस लेख को पढ़कर मुक्तानन्द को सन्तोष हुआ। इस पर भी एक लेख नीलकण्ठ का भी निकला था। उसका विषय था, 'हम किसलिए जनता का राज्य चाहते हैं?' इसमें लेखक ने कारण बताया था कि अंग्रेज़ी अधिकारी हमारे धर्म, रीति-रिवाज और मान्यताओं को न जानते हुए भूल-पर-भूल करते रहते हैं। यही कारण है कि हम भारत में प्रजातन्त्रात्मक राज्य चाहते हैं।"

यह अंक एक प्रकार से, पहले अंक के प्रभाव को हल्का करने के लिए था और यह प्रकट करने के लिए था कि आन्दोलन के वैधानिक उपाय प्रयोग किए जाएँगे। इसके साथ ही तिलकजी के 'केसरी' पत्र में छपा एक लेख हिन्दी में अनुवाद कर भी छापा जाने लगा।

पंजाब के चौधरी हरिदत्त के भी लेख छपते रहते थे। काम चलते हुए छः मास हो चुके थे कि पूना में एक धमाका हो गया। इस धमाके की धमक ब्रिटिश साम्राज्य के कोने-कोने तक पहुँची।

'व्यवस्था' में इस धमाके का विवरण छपा। समाचार था—"प्रथम धमाका।" ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिल गईं।

"दो वर्ष से पूना में प्लेग की बीमारी का प्रकोप हो रहा था। बीच-बीच में कम हो जाता था, परन्तु प्रतिकूल ऋतु आने पर प्रकोप पुनः बढ़ जाता था।"

"प्लेग एक भयंकर रोग है। यह छूत से फैलता है। जब किसी घर में यह फूटता है तो घर के सब प्राणियों की हत्या किए बिना घर को नहीं छोड़ता।

"सरकार इस बीमारी की रोक-थाम का उपाय करती रही है। कुछ काल पूर्व पूना में इस रोग की रोक-थाम के लिए एक कमेटी बनाई गई थी। उस कमेटी के अध्यक्ष ज़िला के कलक्टर मिस्टर राण्ड थे। मिस्टर राण्ड के कहने पर कुछ गोरे सैनिक कमेटी की सहायता के लिए बुलाए गए हैं और कमेटी ने घरों की सफाई करने के लिए इन सैनिकों से काम लेना आरम्भ कर दिया है।

"कमेटी का काम यह था कि यह घरों की तलाशी लेती थी जिससे कोई बीमार घर में छिपाकर न रखा जा सके। बीमार को तुरन्त हस्पताल में भेज दिया जाता था। कभी किसी घर में बीमार अथवा मरा चूहा पाया जाता तो घर को शुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए घर का सब सामान निकालकर फूँक दिया जाता और घर में दवाई छिड़ककर घर को बन्द कर दिया जाता। इसका परिणाम यह होने लगा है कि जहाँ नगर के लोगों के कष्टों में वृद्धि हुई है, वहाँ साधारण लोगों का लाखों रुपयों का सामान फूँक दिया गया है।

''इस प्रकार के समाचार भी आने लगे थे कि ये सैनिक परिवारों की मूल्यवान वस्तुओं को उठाकर ले जाते थे। भले परिवारों की स्त्रियों का अपमान अथवा शील भंग भी किया जाने लगा था।

''इन समाचारों से पूना में तनाव का एक वातावरण बन रहा था। जिस मुहल्ले में ये सफाई करने वाले सैनिक पहुँच जाते थे, वहाँ भगदड़ मच जाती थी। लोग घरों को ताले लगा भागने लग जाते थे। इस पर इन सैनिकों को ताले तोड़, जबरदस्ती मकानों में घुस जाने की भी स्वीकृति मिल गई। इससे अँधेरगर्दी की सीमा नहीं रही।

''ये सैनिक संभ्रान्त परिवारों के गुह्यतम स्थानों, रसोईघरों और पूजा के स्थानों में भी जाते हैं और वहाँ बीमारी होने के किन्चिन्मात्र सन्देह पर वहाँ का सब सामान, भूषण, वस्तु, खाट और पूजा की मूर्तियाँ इत्यादि निकाल फेंक देते हैं, लूट लेते हैं अथवा फूँक देते हैं। घर के प्राणियों को पहने कपड़े तक उतारने पर विवश किया जाने लगा था।

''इस दुहरी तबाही, बीमारी से और इन सैनिकों के क्रूरता के व्यवहार से लोग 'त्राहिमाम्!' 'त्राहिमाम्!!' करने लगे थे। इस स्थिति में किसी युवक ने क्रोध में आकर पूना के कलक्टर मिस्टर राण्ड और सैनिक जत्थे के नायक लैफ्टिनैन्ट अयरेस्ट को 27 जून 1918 की आधी रात के समय गोली से मार डाला है।

''हत्या करने वाले दो युवक कहे जाते हैं। वे पकड़े नहीं गए। सरकार ने उनका पता देने वाले के लिए बीस सहस्त्र रुपये का पुरस्कार देना घोषित किया है।

''इस समाचार ने ब्रिटिश साम्राज्य में आतंक व्यापक कर दिया है। पूर्ण साम्राज्य के मुख्य-मुख्य समाचारपत्रों ने यह समाचार छापा है और इस पर टीका-टिप्पणी की है। कुछ उदार विचार के समाचारपत्रों ने इस घटना को हिन्दुस्तान में ब्रिटिश राज्य के अन्त का आरम्भ माना है।

''इससे पूर्व खुले विद्रोह और स्वतन्त्रता के लिए युद्ध तो होते रहे हैं, परन्तु यह आतंकवादियों का जन्म हिन्दुस्तान में एक नवीन बात है।''

'व्यवस्था' में कुछ एक हिन्दुस्तानी समाचारपत्रों के भावों का भी विश्लेषण किया गया था। प्राय: हिन्दुस्तानी समाचारपत्र इस हत्याकाण्ड को हिन्दुस्तानी संस्कृति और सभ्यता के विपरीत समझते थे। इन पत्रों का कहना था कि ऋषि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षियों और मुनियों की भूमि पर इस प्रकार के हत्यारे देश की सर्वश्रेष्ठ मान्यताओं को कलंकित करने वाले माने हैं। यहाँ तो सब प्राणी परब्रह्म परमात्मा का स्वरूप माने जाते हैं। इस प्रकार की मान्यता रखने वाली जाति में कोई किसी की हत्या करने वाला भी पैदा हो सकता है, यह कलयुग का ही प्रताप है।

हिन्दुस्तान में एंग्लो-इण्डियन समाचारपत्र तो यह कूक लगाने लगे थे कि इन आतंकवादियों को कुचल डालना चाहिए। पूना के लोगों को ऐसा सबक सिखाना चाहिए कि वे सदियों तक स्मरण रखें।

'व्यवस्था' के सम्पादक ने भी इस समाचार पर अग्रलेख लिखा। इस अग्रलेख में मधु ने लिखा—

''हत्यारा कोई भी क्यों न हो, वह कोई स्वार्थ-सिद्धि के लिए हत्या करने वाला नहीं हो सकता। कोई इस प्रकार की बात अभी तक पता नहीं चली कि हत्यारों का मिस्टर राण्ड और लैफ्टिनैन्ट अयरेस्ट से किसी प्रकार का निजी द्वेष था।

''ये हत्याएँ ठीक अथवा गलत, किसी सार्वजनिक दोष को प्रकट करती हैं। हत्यारे पकड़े जाएँगे। कोई भी जानकार व्यक्ति इतने बड़े इनाम के लोभ में फँसकर इनको पकड़वा सकता है। इन पर मुकद्दमा होगा और वे उचितदण्ड पाएँगे। परन्तु यह समस्या का सुझाव नहीं होगा। समस्या का सुझाव तो यह है कि पूना क्षेत्र से उन सैनिकों को तुरन्त हटा दिया जाए जो वहाँ के लोगों के रीति-रिवाज एवं भावनाओं को समझते नहीं। पूर्ण सहायता कार्य के लिए हिन्दुस्तानी सिविलियन लगा देने चाहिएँ। इस कार्यवाही से भी अधिक आवश्यक यह है कि देश में उच्च-से-उच्च पद से लेकर छोटे-से-छोटा कार्य करने वाला कर्मचारी हिन्दुस्तानी होना चाहिए। यदि ऐसा न किया गया तो यह चिन्गारी, जो पूना में सुलगी है, पूर्ण देश में आग लगाने के योग्य हो जाएगी।

''भारत की वर्तमान स्थिति अस्वाभाविक है। किन्हीं ऐतिहासिक कारणों से एक विशाल देश पर सहस्रों मील दूर के रहने वाले, देश के धर्म, संस्कृति और परम्पराओं से अनभिज्ञ लोग शासक बन गए हैं। जो कुछ 1857 में तथा उसके उपरान्त हुआ है और जो कुछ अब पूना में हुआ है, वह इस अस्वाभाविक परिस्थिति का परिणाम ही है। ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कठोर, क्रूर कानून के चलाने से कार्य नहीं चलेगा, वरंच इस अस्वाभाविक स्थिति को सुधारना पड़ेगा।''

यह लेख एंग्लो-इण्डियन समुदाय तथा उनके समाचार-पत्र वालों को तो पसन्द आ ही नहीं सकता था। वे लोग विदेशी राज्य से लाभ उठाने वाले थे। इसके साथ ही देश में पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानियों के एक वर्ग को भी यह लेख अरुचिकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वे भी समझते थे कि देश में वर्तमान राज्य बदलने से उनके निहित स्वार्थ को हानि पहुँचेगी। इनमें प्रायः कहे जाने वाले नरम दल के लोग थे।

मुक्तानन्द भी अब राजनीति में आगे आकर भाग लेने लगा था। वह भी समझता था कि उसका धन-वैभव, मान-मर्यादा सब-कुछ अंग्रेज़ी राज्य के कारण ही है। अतः वह और उसके विचार के लोग यह समझते थे कि राण्ड और अयरेस्ट की हत्या उनके हितों की हत्या करने वाली सिद्ध होगी।

'बार कौंसिल' में राण्ड की हत्या पर प्रस्ताव रखा गया तो मुक्तानन्द ने दोनों हत्याओं पर शोक प्रकट किया, बहुतों के परिवारों से सहानुभूति प्रकट की और हत्यारों की निन्दा की। उसने इसके साथ ही देश में अंग्रेज़ी राज्य की बरकतों पर तथा देश में व्यापक शान्ति-व्यवस्था पर अपने मनोद्गार प्रकट किए।

चरणसिंह ने भी अपने विचार प्रकट किए। उसने मुक्तानन्द के वक्तव्य के प्रथम भाग से तो सहमति प्रकट की। उसने भी हत्याओं को अनुचित और कानून के खिलाफ कहा, परन्तु वह यह कहने पर तैयार नहीं हुआ कि अंग्रेज़ी सरकार को किसी प्रकार से भी हिन्दुस्तान में रखना ठीक है। उसने बल देकर यह कहा कि इस प्रकार की हत्याओं को रोकने का उपाय देश में देशवासियों का शासन होना चाहिए। उसने अपने कथन के अन्त में यह कह दिया, "किसी भी विचार से देखें तो किसी भी देश में विदेशियों का राज्य कल्याण का सूचक नहीं हो सकता। ऐसी हत्याओं की बीमारी को रोकने और देश को शान्ति से प्रगति करने का अवसर देने का उपाय ही यह है कि यहाँ पर देशवासियों का राज्य हो।"

मुक्तानन्द से चरणसिंह की अधिक प्रशंसा हुई।

:: 11 ::

सब उपस्थित वकीलों ने चरणसिंह के ओजस्वी और युक्तियुक्त कथन पर उसे बधाई दी और भूरि-भूरि प्रशंसा की।

पंडित शशिमोहन ने तो चरणसिंह की पीठ ठोकी और कहा, "बहुत अच्छा कहा है।"

मुक्तानन्द समीप खड़ा था। उसने धीरे से कह दिया, "कलक्टर कौंसिल की मीटिंग का चेयरमैन है। उसने चरणसिंह के भाषण को पसन्द नहीं किया।"

"मैंने उनके पसन्द करने के निए बात नहीं कही। मैंने तो वही कहा है जिसमें मैं ईमानदारी से विश्वास रखता हूँ।"

इस पर मुक्तानन्द ने चरणसिंह की बाँह में बाँह डाल एक ओर ले जाकर कह दिया, "मालूम होता है कि मधु के पत्र को पढ़ते रहते हो?"

"मैं क्या पढ़ता हूँ और क्या नहीं पढ़ता, यह मेरे कथन से सिद्ध नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
परन्तु आपके कथन से तो सिद्ध हो गया है कि आप उसके पत्र को पढ़ते रहते हैं।''

''हाँ। वह हमारा विपक्षी है और उसका विरोध करने के लिए उसकी बातों को पढ़ना पड़ता है। मैं उसके पत्र को मुन्शी से 'अलफ से ये' तक सुनता हूँ।''

''वह आपका विरोधी तो है नहीं। हाँ, ब्रिटिश सरकार का विरोधी अवश्य है।''

''पर हम भी तो सरकार के अंग ही हैं। वकील भी तो अदालत की सहायता करने वाला होता है। हम न्याय करने में अदालत की सहायता करते हैं।''

''मैं समझता हूँ कि मैंने जो कुछ आज कहा है वह सरकार के न्याय करने में सहायता करना ही है।''

''मगर कलक्टर साहब तो इसको ऐसा नहीं समझते। तुम जब बोल रहे थे मैं कलक्टर के मुख के बदलते रंग और उसके माथे पर की त्यौरी देख रहा था।''

''मैंने कानून का उल्लघंन नहीं किया।''

''यह देखना तो न्यायाधीश का काम है। तुम तो मुलज़िम बन गए हो।''

''सत्य?''

''हाँ! तुमको सावधान रहना चाहिए। मधु को तो तिलक का अनुयायी माना जाता है और उसका पत्ता तिलक के साथ ही कटने वाला है।''

'व्यवस्था' के अगले सप्ताह के अंक में 'राण्ड साहब की हत्या' शीर्षक लेख निकला। यह लेख पूना के 'केसरी' समाचार-पत्र का अनुवाद ही था। इस लेख में राण्ड इत्यादि की हत्या से पूर्व पूणे की स्थिति का विशद् वर्णन था। साथ ही अयरेस्ट के अधीन सैनिकों का अनियमित, क्रूरतामय और विद्वेष से भरे व्यवहार का वृत्तान्त था।

लेख के अन्त में लिखा था, ''बीमारी में प्रबन्ध तो एक बहाना था। वास्तविक बात थी पूना के क्षेत्र में जन-जन में विदेशी राज्य के प्रति विरोध की भावना। इसको कुचलने के लिए ही इन अधिकारियों ने जनता में आतंक फैलाने का यत्न किया था और शोक का विषय है कि ये अधिकारी स्वयं ही उस प्रतिकार की भावना में मर-मिट गए, जिसको उन्होंने स्वयं उत्पन्न किया था।''

इस वक्तव्य ने तो कलक्टर को मधु के विपरीत कोई कार्यवाही करने के लिए तैयार कर दिया। कलक्टर अभी विचार ही कर रहा था कि कथित हत्यारों में से एक दामोदर हरि चाफेकर के पकड़े जाने का समाचार छप गया। 'व्यवस्था' में इस कथित हत्यारे का जीवन-चरित्र छप गया। इस जीवन-चरित्र के छपने से तो पाठकों की सहानुभूति हत्यारे के साथ होने लगी थी। जहाँ कुछ भी बुद्धि रखने वाले पाठक मधु के निर्भीक कथन और युक्तियों से उसके प्रशंसक हो रहे थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ मुक्तानन्द और उसके विचार के लोग मधु की निन्दा कर रहे थे।

अब सरकारी गवाह के द्वारा हत्या का वृत्तान्त अदालत में सुनाया गया तो यह रहस्य भी खुला कि अयरेस्ट का हत्यारा दामोदर हरि का छोटा भाई था। यह रहस्य भी खुला कि इन हत्यारों की सूचना देने वाले दामोदर चाफेकर के तीसरे भाई के मित्र का बड़ा भाई एक शंकर द्रविड़ है। दामोदर हरि का सबसे छोटा भाई वासुदेव और उसका मित्र शंकर द्रविड़ का छोटा भाई भी उसी समिति के सदस्य थे। इससे शंकर द्रविड़ को पता चल गया कि किस-किसने कैसे हत्या की है और वह पुरस्कार के लोभ में सब बक गया।

दामोदर हरि पकड़ा गया तो उसका दूसरा भाई बाल कृष्ण चाफेकर हैदराबाद में भाग गया था। कुछ मास उपरान्त वह भी पकड़ा गया और दोनों भाइयों पर हत्या का मुकद्दमा चलने लगा।

सबसे छोटा भाई वासुदेव चाफेकर, जो शंकर द्रविड़ के भाई का मित्र था, अपने दोनों भाइयों को फँसा देख सरकारी गवाह बनने वाले द्रविड़ का काम तमाम करने के लिए उद्यत हो गया। द्रविड़ को पुरस्कार का धन मिल चुका था और वह उस धन का उपभोग कर रहा था। एक दिन वासुदेव अपने एक मित्र रानाडे के साथ द्रविड़ के घर जा पहुँचा और भीतर सन्देश भेज दिया कि पुलिस के अधिकारी मिस्टर-ब्रर्डन पुलिस चौकी में बुला रहे हैं। द्रविड़ तुरन्त तैयार हो अपने छोटे भाई के साथ पुलिस चौकी को जाने के लिए घर से बाहर निकला। निकलते ही वासुदेव और रानाडे ने उसको गोलियों का शिकार बना दिया। यह घटना सरे-बाज़ार हुई। शंकर और उसका छोटा भाई दोनों ही मार डाले गए। पीछे ये दोनों वीर वासुदेव और रानाडे भी पकड़े गए और फाँसी पर लटका दिए गए।

इस समय तक सम्वत् 1956 विक्रमी आ गया था और बाल गंगाधर तिलक इन सरकारी अफसरों की हत्याओं से सम्बन्धित जान पकड़ लिये गए और उन पर मुकद्दमा चलने लगा था।

इधर कलक्टर मधु की पत्रिका को बन्द कराना चाहता था और सरकारी वकील कह रहे थे कि लेखों पर मुकद्दमा सफल नहीं होगा। जब यह विचार-विमर्श हो रहा था, मुक्तानन्द किसी अपने काम से कलक्टर से मिलने गया हुआ था। कलक्टर ने सूचनार्थ पूछ लिया, ''आप 'व्यवस्था' के सम्पादक मधुमोहन को जानते हैं?''

मुक्तानन्द डर गया और अपना उससे कुछ अधिक सम्बन्ध प्रकट न करने के लिए बोला, ''हाँ, उसके विषय में सुना है।''

''वह बगावत फैलाने का यत्न कर रहा है।''

''सुना तो यही है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु हमारे यहाँ के वकील कह रहे हैं कि उस पर मुकद्दमा सफल नहीं हो सकेगा।"

"मुकद्दमा चलाने की क्या आवश्यकता है?"

"तो कैसे उसका मुख बन्द किया जा सकता है?"

"दो उपाय हैं। एक तो रेगुलेशन तीन 1818 के अधीन पकड़कर बिना मुकद्दमे के कैद किया जा सकता है। दूसरे उसको लोभ में फँसा पत्रिका निकालने से रोका जा सकता है।"

कलक्टर विचार-मग्न हो गया। कुछ समय तक विचारकर बोला, "रेगुलेशन के अधीन पकड़ने के लिए गवर्नर से स्वीकृति लेनी पड़ेगी और उसके लिए 'केस' बनाना पड़ेगा। सरकारी वकील में यह योग्यता नहीं कि वह कुछ ऐसा अभियोग तैयार कर सके।"

"मुझे इस काम के लिए नियुक्त किया जाए तो मैं 'केस' बना सकता हूँ और गवर्नर की स्वीकृति मिल जाएगी।"

"परन्तु यदि दूसरा उपाय सिद्ध हो सके तो अधिक ठीक होगा।"

"उसके लिए भी यत्न किया जा सकता है। उसकी माँ मेरी 'क्लाएंट' रही है और मैं उसको डरा-धमकाकर तैयार कर सकता हूँ।"

"तो दोनों बातों के लिए यत्न करिए। बताइए, इनके लिए कितनी फ़ीस चाहिए?"

"जो भी सरकार देगी वह मंजूर कर लूँगा।"

"तब ठीक है, आप प्रयत्न करिए।"

चाफेकर परिवार का इतिहास और उनके फाँसी चढ़ाए जाने का वृत्तान्त छपा तो 'व्यवस्था' के उस सप्ताह के पत्र की इतनी माँग थी कि उसका दूसरा संस्करण छापने का निश्चय करना पड़ा। नीलकण्ठ देख रहा था कि इस प्रकार समाचारपत्र की बढ़ी हुई माँग के कारण हो रहे घाटे को पूरा करना अति कठिन हो रहा है। इस घाटे की समस्या पर विचार हो रहा था कि छापेखाने का चपरासी ऊपर की मंज़िल पर आया और बोला, "बाबू साहब! माताजी आई हैं।"

मधु और नीलकण्ठ छापेखाने की ऊपर की मंज़िल पर एक कमरे में रहते थे। चपरासी की बात सुन मधु समझ नहीं सका कि माँ नगर में बिना सूचना के किसलिए आई है और फिर उसको घर पर बुलाने के स्थान छापाखाना में क्यों आ गई है?

वह सब काम छोड़ तुरन्त उठा और नीचे उतर आया। घर की घोड़ागाड़ी छापेखाने के बाहर खड़ी थी। वह लपक कर वहाँ पहुँचा तो वह देखकर चकित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह गया कि माँ के साथ मीना भी बैठी है। उसके आते ही माँ ने पूछा, ''किसी काम में हो, मधु ?''

''नहीं माँ! कोई ऐसा काम नहीं जो रोका नहीं जा सकता।''

''तो गाड़ी में आ जाओ। हमें कहीं जाना है।''

मधु लपककर गाड़ी में माँ तथा पत्नी के सामने जा बैठा। वहाँ बैठ उसने पूछा, ''कहाँ जाना है, माँ ?''

''मुक्तानन्द के यहाँ। शेष वहाँ चलकर बताऊँगी। गाड़ी में बात नहीं हो सकती।''

इस पर मधु चुप कर गया। गाड़ी चली तो मधु ने पत्नी से पूछा, ''सुनाओ, ठीक हो ?''

''जी नहीं। परन्तु यहाँ नहीं बता सकती।''

''मुन्ना कहाँ है ?''

''उसे दाई के पास मकान पर छोड़ आई हूँ।''

मधु का लड़का इस समय आठ मास का हो चुका था। उसका नाम रखा गया था हरि मोहन। मधु ने अब और प्रश्न पूछना उचित नहीं समझा। वह चुपचाप बैठा रहा और माँ तथा पत्नी ने भी किसी प्रकार की बात नहीं की। इस पर भी वह वास्तविक बात जानने के लिए अधीर हो रहा था। माँ का एकाएक नगर में आना, मुक्तानन्द का इसके साथ सम्बन्ध होना और फिर मीना का यह कहना कि सब कुशल नहीं है, उसको चिन्तित करने के लिए पर्याप्त था। इस पर भी वह समझता था माँ ने गाड़ी में बात न करने के लिए कहा है तो अकारण नहीं कहा होगा। इस कारण मुक्तानन्द की कोठी पर पहुँचने तक उसने मौन रहना ही उचित समझा।

मुक्तानन्द अपनी बैठक में अकेला बैठा था। इनके वहाँ पहुँचने पर चपरासी ने बता दिया, ''पंडितजी बैठकघर में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।''

ये वहाँ पहुँचे तो मुक्तानन्द ने इनको बैठने का संकेत कर कह दिया, ''तो मधु को बताया है रानी साहिबा!''

''नहीं।'' उत्तर मधु ने दिया, ''माँ बिना कुछ बताए कान से पकड़कर यहाँ ले आई हैं।

''देखो मधु!'' मुक्तानन्द ने मतलब की बात करते हुए कहा, ''तुम्हारे समाचारपत्र के लेखों ने यहाँ के कलक्टर की नींद हराम कर रखी है। उसे दिन-रात अपने चारों ओर हत्यारे खड़े दिखाई देने लगे हैं।''

''मुझे उसने कहा है कि तुमको सचेत कर दूँ। सन्देश यह है कि तुम यह अखबार बन्द कर दो और सरकारी नौकरी स्वीकार कर लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अन्यथा ज़मींदारी जब्त, छापाखाना जब्त और तुम होगे रेगुलेशन 1818 के अधीन जीवन-भर के लिए बन्दी।

"मेरी कलक्टर साहब से मेल-मुलाकात है। मैं सब प्रबन्ध करा सकता हूँ, परन्तु पहले बात माननी पड़ेगी।"

मधु ने एक ही क्षण विचार किया और फिर माँ को सम्बोधन कर कहा, "माँ! तुम क्या चाहती हो?"

चन्द्रावती ने कहा, "देखो मधु! कानून तो मैं जानती नहीं। इतना जानती हूँ कि ज़मींदारी जब्त होने से तुम्हारे बच्चे के अधिकार का हनन होगा।"

"और मीना! तुम क्या कहती हो?"

"आप मेरी और मुन्ने की बात छोड़िए। मैं तो परमात्मा पर विश्वास रखती हूँ। जिसने पैदा किया है, वह पालन भी करेगा। आप अपनी बात विचार करिए। आप इस अग्नि-परीक्षा में अपने को डालना चाहते हैं अथवा नहीं?"

"यदि कहीं ज़मींदारी जब्त हो गई तो कहाँ रहोगी? मैं तो यहाँ हूँगा नहीं।"

"आप मेरी चिन्ता न करिए। मैं जीवित रहूँगी। आपके बच्चे को जीवित रखने का भरसक प्रयत्न करूँगी।"

"माँ! बच्चे की बात छोड़, तुम बताओ कि यदि पण्डितजी की भविष्यवाणी सत्य हुई तो क्या करोगी और कहाँ रहोगी?"

"मधु! जब तुम्हारी बहू परमात्मा पर विश्वास रखती है तो मैं भी उसके विश्वास की नौका पर चढ़ पार लग जाऊँगी।"

"तब ठीक है। पंडितजी, देखिए।" मधु ने अब मुक्तानन्द की ओर देखकर कहा, "मैं न तो सरकारी नौकरी स्वीकार करूँगा और न ही यह पत्रिका बन्द करूँगा। अपनी इच्छा से यह कुछ भी नहीं होगा। इसके परिणाम सहन करूँगा।"

मुक्तानन्द भौंचक्क तीनों का मुख देखता रह गया। तीनों सामने बैठे मुक्तानन्द के कहने की प्रतीक्षा करते रहे।

आखिर मुक्तानन्द ने कहा, "आगे तुम लोगों की इच्छा है। जो चाहो करो। मुझे अभी कलक्टर से मिलने जाना है। आज गवर्नर भी इस नगर में आया हुआ है, तो कुछ बात बन नहीं सकी, इसका मुझे बहुत शोक है।"

मधु उठ खड़ा हुआ। चन्द्रावती कुछ अनिश्चित मन थी, जब मधु और मीना बैठकघर से बाहर चले आए तो मुक्तानन्द ने चन्द्रावती को कह दिया, "मेरी राय है कि मुझे दोपहर के बाद मिलना। मैं यदि आपके लिए कुछ कर सका तो बताऊँगा।"

मधु अपनी माता और पत्नी के साथ घर पहुँचा तो उसने देखा कि घर के चारों ओर खुफिया पुलिस के लोग खड़े हैं। मधु ने गाड़ी से उतरते ही माँ को कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया, ''माँ! ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अब पकड़ा ही जाने वाला हूँ। ये लोग जो अन्यमनस्क भाव में मकान के बाहर खड़े दिखाई देते हैं, खुफिया पुलिस के हैं। कदाचित् सरकार मुक्तानन्द द्वारा भेजे संदेश की प्रतीक्षा कर रही है। अभिप्राय यह है कि मुक्तानन्द के कलक्टर को बताते ही कि मैं मान नहीं रहा, मुझे पकड़ने का आदेश जारी हो जाएगा और उसके दस मिनट के भीतर मैं पकड़ लिया जाऊँगा।''

माँ भी यह सब-कुछ देख रही थी, मीना जो अभी तक साहस और परमात्मा पर विश्वास की बात कह रही थी, अब सम्भावित घटना को इतना समीप देख तरल नेत्र पति के मुख पर देखने लगी। माँ ने उसके नेत्रों को देखा तो कह दिया, ''मीना! भीतर चलो।''

तीनों मकान में गए तो मधु ने मीना की पीठ पर हाथ रखते हुए पूछ लिया, ''तो ईश्वर से मुक्तानन्द पर विश्वास अधिक हो रहा है क्या?''

''नहीं जी।'' मीना ने आँखें पोंछते हुए कहा, ''मैं तो यह विचार कर रही हूँ कि सीता की भाँति मैं भी आपके साथ चल सकती तो कैसा रहता?''

''यह हो नहीं सकता। कारण यह है कि मैं इस यात्रा पर स्वेच्छा से नहीं जा रहा। सीता के कोई बच्चा नहीं था। सबसे बड़ी बात यह है कि मैं राम नहीं जो तुमको किसी रावण के पंजे से छुड़ा सकूँगा। मेरा और तुम्हारा तो आश्रय परमात्मा ही है।''

मधु ने पत्नी की पीठ पर हाथ रख उसे साहस बँधाते हुए कहा, ''मैं तो समझता हूँ कि यह अवस्था चिरकाल तक नहीं रहेगी। अच्छा फिर मिलेंगे। अब मैं तनिक छापाखाना की सुध लेना चाहता हूँ।''

इतना कह उसने माँ के चरण स्पर्श किए और बैठक से बाहर निकल वहाँ खड़ी घोड़ागाड़ी पर सवार हो छापाखाना की ओर चल पड़ा।

वहाँ भी सफेदपोश पुलिस के लोग भारी संख्या में खड़े थे। मधु ने कोचवान को गाड़ी वापस मकान पर ले जाने के लिए कहा और स्वयं भीतर जा नीलकण्ठ और एकत्रित हुए अन्य कर्मचारियों को कहा, ''मैं समझता हूँ कि शीघ्र ही सब-कुछ जब्त होने वाला है। इस कारण तुम सब जहाँ जिसके सींग समाएँ जा सकते हो।''

नीलकण्ठ मोरे ने भी पुलिस के लोगों को छापेखाने का घेरा डाले देखा था और सब समझ रहा था। उसने सब नकदी, जो कुछ वहाँ थी, अपनी जेब में रख ली और मधु को कहा, ''बैंक में हिसाब देखकर चैक दे दीजिए। मैं अभी जो रुपया है, लेकर कर्मचारियों को इनका वेतन तथा और जो जिसका देना बनता है, देने का यत्न करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु कार्यालय में गया और बैंक में बकाया रकम देख, उसने उसका चैक काट दिया। नीलकण्ठ ने सब कर्मचारियों को यह कह दिया कि यहाँ रहो जब तक कि रह सकते हो, यदि मैं यहाँ न आ सका तो 'जुबिली गार्डन' में मलिका के बुत के नीचे एकत्रित हो जाना। जितना कुछ हो सकेगा दे दूँगा।''

इतना कह नीलकण्ठ निकल गया और सीधा बैंक में पहुँचा। मधु कार्यालय में सन्तोष से बैठा पकड़े जाने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। नीलकण्ठ के जाने के दस मिनट के भीतर ही पुलिस अधिकारी आए और मधुमोहन को पकड़कर ले गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167943
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा परिच्छेद

सम्वत् 1961 आ गया था। देश में भारी परिवर्तन हुए थे। इन परिवर्तनों में तीन कारण कार्य कर रहे थे। एक तो तत्कालीन काँग्रेस में गरम दल वालों की शक्ति बढ़ रही थी। इनकेनेता श्री बाल गंगाधर तिलक थे। बाल गंगाधर तिलक का प्रभाव बढ़ने के कारण काँग्रेस में सत्ताधीश दल के पाँव तले से मिट्टी खिसकती देख नरम दल वाले अंग्रेज़ी सरकार की अधिकाधिक खुशामद करने लगे थे। वे अपने अस्तित्व का रक्षक सरकार को ही मान रहे थे। सरकार का अपना हित था गरम दल वालों को दबाकर रखने में।

गरम दल के जन्मदाता थे श्री बाल गंगाधर तिलक। ये क्रान्तिकारी नहीं थे। क्रान्ति का अभिप्राय था खुला विद्रोह और उसमें युद्ध की बात थी। तिलक आतंकवादी भी नहीं थे। ये स्वयं किसी पर बम अथवा पिस्तौल से आक्रमण करने वालों में नहीं थे। इस पर भी ये क्रान्तिकारियों और आतंकवादियों के वकील थे, अर्थात् उनकी जनता के सम्मुख सफाई उपस्थित करने वाले। तिलक आदि नेतागण, देश की बदलती परिस्थिति में दूसरा कारण थे। सरकार इनको क्रान्तिकारियों और आतंकवादियों से भी अधिक भय का कारण मानती थी। ब्रिटिश सरकार समझती थी कि भले ही ये क्रान्ति का बिगुल बजाने वाले न हों अथवा भले ही ये आतंक उत्पन्न करने में सहयोग न देते हों, तो भी ये लोग इन दोनों वर्गों के जन्मदाता हैं। ये मूल हैं क्रान्ति और बम-पिस्तौल चलाने वालों के। अत: नरम दल वाले और सरकार दोनों तिलक आदि के घोर विरोधी थे।

सरकार और नरम दल के लोग, दोनों कहते थे कि ये लोग जो क्रान्तिकारियों और आतंकवादियों के कार्यों में कारण बताकर उनको निर्दोष अथवा माननीय बताते हैं, देश का घोर अकल्याण कर रहे हैं। यदि भारत का कोई हितैषी है तो सरकार और ये नरम दल वाले हैं।

श्री कृष्ण गोपाल गोखले सरकार और नरम दल दोनों के पूज्य थे। कारण स्पष्ट था कि भारतवासियों में ये ही तिलक आदि से लोहा लेने की सामर्थ्य रखने वाले समझे जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की स्थिति बदलने में एक तीसरा कारण था। वह था हिन्द का वाइसराय लार्ड कर्ज़न। उसकी नीति थी कि भारत में विद्रोही तत्व हिन्दू है, अत: हिन्दू को पतित करना, आर्थिक दृष्टि से हीन करना और ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से निम्न कोटि का सिद्ध करना, विद्रोहियों को अपमानित करना ही उनको प्रभावहीन बनाना है। कर्ज़न की नीति यह रही कि हिन्दू धनी-मानी लोगों को निर्धन करने का उपाय किया जाए, हिन्दुओं के धर्म-स्थानों की सरकार द्वारा अवहेलना की जाए, और उनके इतिहास को नगण्य प्रकट किया जाए। उसकी यह नीति चल जाती यदि वे बंगाल के ज़मींदारों को न छूते। उन्होंने बंगाल के ज़मींदारों को निर्धन बनाने के लिए ही बंगाल का विभाजन कर दिया। बस फिर क्या था, बंगाल उबल पड़ा।

स्वराज्य, स्वदेशी और स्वधर्म का आन्दोलन आरम्भ हुआ और फिर यह समस्त भारतवर्ष में फैल गया। बंगाल में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष और मोतीलाल घोष इस आन्दोलन के नेता बन गए।

इन नेताओं द्वारा सरकार की नीति के विरोध से युगान्तर दल और अन्य नाम से कई क्रान्तिकारी, जो कि वास्तव में आतंकवादी दल थे, उत्पन्न हो गए। बंगाल में विपिनचन्द्र पाल और महाराष्ट्र में तिलक आदि में समानता थी और ये दोनों नेतागण मिलकर काँग्रेस पर अधिकार जमाने का यत्न करने लगे।

पूर्ण देश में हलचल थी, परन्तु मुक्तानन्द के घर में वही मांस-मछली, सुन्दरी और सुरा का प्रयोग चलता था। ये सब जशन सरकार की छत्रछाया के कारण थे। अत: मुक्तानन्द सरकार का पक्षधर था। सरकार का विरोधी उसका विरोधी था।

चरणसिंह अब एक विख्यात वकील था और वह यत्न से सरकार और जनता में समदृष्टि रखने का यत्न करता रहता था। परन्तु मुक्तानन्द तो गवर्नर, कमिश्नर और कलक्टरों से मेल-मुलाकात और अपनी सुरा और सुन्दरी में उनको भागीदार बनाता रहता था। प्रान्त बड़े-बड़े ज़मींदारों से भरा पड़ा था और ये लोग मुक्तानन्द को सरकारी अधिकारियों से मेल-मुलाकात रखते देख अपने मुकद्दमों में इसे ही नियुक्त करना चाहते थे। इस कारण मुक्तानन्द की कीमत बढ़ गई थी और उसकी ख्याति फैल रही थी।

चरणसिंह जनसाधारण का वकील था। काम अधिक था, परन्तु आय कम थी। मधुमोहन के पकड़े जाने में मुक्तानन्द ने जो भाग लिया था, वह चरणसिंह को विदित हुआ तो वह मुक्तानन्द से दूर रहने लगा था।

एक बात चरणसिंह को और पता लगी थी। वह यह कि मुक्तानन्द ने चन्द्रावती की ज़मींदारी जब्त होते-होते बचा ली थी और रानी साहिबा की यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा कर वह मधु की पत्नी का भोग करने की लालसा बना बैठा था। चरणसिंह यह नहीं जान सका था कि वह अपने इस कुकृत्य में सफल हुआ था अथवा नहीं, परन्तु यह वह जानता था कि मीना अपनी सास को छोड़ अपने पिता भुवनचन्द्र के पास हरिद्वार में चली गई थी।

सम्वत् 1961 में एक दिन ज़मींदारी के एक मुकद्दमे में चरणसिंह और मुक्तानन्द में टाकरा हो गया। दोनों एक-दूसरे के सामने उपस्थित हुए थे। हाईकोर्ट में मुकद्दमा जा पहुँचा था। वकीलों की बहस होनी थी। मुक्तानन्द मुकद्दमा प्रथम न्यायालय में और सैशन कोर्ट में जीतकर आया था। हाईकोर्ट में चरणसिंह सामने आया तो मुक्तानन्द ने समझा कि केवल रोबदाब में ही यह मुकद्दमा जीत लिया जाएगा।

चरणसिंह ने उन हवालों को लेकर ही, जो मुक्तानन्द ने उपस्थित किए थे, अपनी बहस जारी की और मुकद्दमा जीत लिया। नीचे के न्यायालयों के निर्णय गलत सिद्ध हो गए। हाईकोर्ट ने निर्णय दिया तो मुक्तानन्द का मुख पीला पड़ गया। उसने देखा कि यह उसका अपना लड़का और उसी से परवरिश किया, उसको बहस में ऐसा पछाड़ गया है जैसे कोई अनुभवी व्यक्ति एक बालक को पछाड़ देता है।

हाईकोर्ट के 'चीफ जस्टिस' ने यों तो उसी समय बता दिया कि अदालतों के निर्णय से वह सहमत नहीं, परन्तु यह कह दिया कि फैसला लिखकर पीछे देगा। अभी तक तो यह है कि सिरोही के राजा अमुक सम्पत्ति के अधिकारी नहीं हैं।

जब कोर्ट रूम से बाहर निकले तो वह औरत, जिसके पक्ष की विजय हुई थी, हाथ जोड़, आँखों में प्रसन्नता के आँसू भर चरणसिंह के सामने खड़ी हो बोली, "वकील साहब! यह चमत्कार जो आपने किया, उसके लिए मैं केवल कृतज्ञता ही प्रकट कर सकती हूँ। मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं रहा।"

चरणसिंह ने कुछ विचारकर कहा, "पर माताजी! मैंने आपसे कुछ माँगा है?"

मुक्तानन्द उनकी ओर पीठ किए दोनों का वार्त्तालाप सुन रहा था। वह घूमा और बोला, "चरण कितनी फ़ीस ली है इस मुकद्दमे में?"

"भापा! अभी तक कुछ नहीं। अब ये माताजी कह रही हैं कि ये कुछ नहीं दे सकतीं। मैंने कहा है कि मुझे फ़ीस की ज़रूरत नहीं।"

"नहीं वकील साहब!" उस स्त्री ने कह दिया, "मेरा यह मतलब नहीं। मैं तो यह कह रही हूँ कि इस चमत्कार का मैं इतना दाम समझती हूँ कि दे नहीं सकती। मेरे पास उतना नहीं है। फ़ीस तो आपको सायंकाल मिल जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माई! सायंकाल नहीं, कुछ और देर में देने आना।" मुक्तानन्द ने कह दिया।

वह औरत इसका एक अनुचित अर्थ समझ माथे पर त्यौरी चढ़ा पूछने लगी, "क्या मतलब है?"

"मतलब यह कि मैं चरणसिंह को अपने साथ चाय पर लिये जा रहा हूँ और वह रात दस बजे से पहले अवकाश नहीं पा सकेगा।"

"पर मैं आपके साथ चाय लेने नहीं जा रहा।" चरणसिंह ने नाराज़ हो कह दिया। वह भी समझ रहा था कि जिस औरत को वह माँजी कह रहा है मुक्तानन्द उसको इतनी भद्दी भाषा में सम्बोधन कर रहा है। यद्यपि मुक्तानन्द ने सफाई दे उस स्त्री के मन में शान्ति कर दी थी, परन्तु चरणसिंह इसे क्षमा योग्य नहीं मानता था। उसने बिना एक भी शब्द और कहे पीठ मोड़ ली और चलने लगा तो मुक्तानन्द ने डाँट के भाव में कहा, "चरण! ठहरो। तुम मेरी बात समझे नहीं।"

चरणसिंह खड़ा हो गया और वहीं से पूछने लगा, "बताइए।"

"मुझे तुमसे काम है।"

"तो कहिए।"

"चलो सामने 'कार्लटन' में चलें। वहाँ बात करूँगा।"

चरणसिंह ने विचार किया और फिर बोला, "तो चलिए।"

ये लोग पैदल ही हाईकोर्ट से निकल सामने रेस्तरां में चल पड़े।

"हाँ। बताइये भापा!" चरणसिंह ने बैठते हुए कहा, "आपने उस भली औरत का अपमान कर दिया है। यह मुझको पसन्द नहीं।"

"यही तुमको बताने के लिए यहाँ लाया हूँ। तुम स्त्रियों के चरित्र के विषय में कुछ नहीं जानते।"

"भापा! मेरा वैसी औरतों से सम्बन्ध नहीं रहा जैसी औरतों से आपका रहा है। इस कारण उनके स्वभाव को मैं नहीं जानता।"

"यही तो कह रहा हूँ। प्रायः सभी स्त्रियाँ उसी प्रकार की होती हैं। भला तुम अपनी माँ को कैसी औरत समझते हो?"

तारा का देहान्त हो चुका था। इस पर भी चरणसिंह मुक्तानन्द के अपनी माँ से सम्बन्ध को जानता था। उसने कह दिया, "भापा! मैं सब जानता हूँ। माँ ने मरने से पूर्व अपनी भूल का विस्तार से वर्णन किया था। उससे औरत के दुश्चरित्र होने का तो पता नहीं चला। हाँ, एक पुरुष के अविश्वस्त और झूठे होने का परिचय मिला है।"

बैरा चाय ले आया तो मुक्तानन्द ने कह दिया, "आज की चाय का दाम तुम दोगे। तुम मुकद्दमा जीते हो और मैं हारा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। आप पीजिए। मैं दाम दे दूँगा। बस अथवा कुछ और भी?"

"मैं जानना चाहता हूँ मधु का पत्नी से तुम्हारी मेल-मुलाकात है अथवा नहीं?"

चरणसिंह सतर्क हो गया। उसने कह दिया, "उस देवी को मैं पूज्या मानता हूँ। वह हरिद्वार में हैं और अपने पिता के साथ रहती हैं।"

"तो तुम कुछ नहीं जानते। वह आज इस नगर में है।"

"सत्य! तो मैं उनसे मिलने जाऊँगा। वह निश्चय ही पंडित शशिमोहनजी के मकान पर होंगी।"

"नहीं। वह अपने पिता के पास उनके मकान में ही हैं। वह उनके साथ ही यहाँ आई हैं।"

"मुझे इसकी सूचना नहीं। पता करूँगा।"

"मैंने समझा था कि तुम जानते हो और बता सकोगे कि वे लोग यहाँ किसलिए आए हैं?"

"भापा! एक बात पूछूँ, सच बताएँगे?"

"पूछो। तुममें और माणिक में मैं अन्तर नहीं मानता। यदि यह कहूँ कि मैं तुमको उससे अधिक मानता हूँ तो ग़लत नहीं होगा। वह तो बुद्धू है और तुम मुझको युक्ति और प्रमाण में पराजित कर आ रहे हो। पूछो। ठीक-ठीक बताऊँगा।"

"आपकी मुझमें रुचि का कारण तो मैं जान गया हूँ। आपकी मधु में रुचि का क्या कारण है?"

मुक्तानन्द ने कुछ देर तक विचारकर कहा, "यह कुछ वैसा नहीं, जैसा तुममें रुचि रखने का है। उसमें रुचि भी वैसी नहीं जैसी तुममें है। यदि मेरा अपने मनोभावों का विश्लेषण ठीक है तो मेरी उसमें रुचि नहीं वरन उससे ईर्ष्या है।

"वह अभी विद्यार्थी था और मैं वकालत में ख्याति प्राप्त कर रहा था, जब उसने युक्ति में मुझको पछाड़ा था। तब से ही मैं उसे अपना प्रतिस्पर्धी मानता हूँ और मेरी उसमें रुचि की दिशा उसको पराजित कर धूल चटाने की है।

"अब एक अन्य रुचि का विषय बन गया है, परन्तु वह अभी नहीं बताऊँगा। मेरा विचार है कि मधु का श्वसुर यहाँ गवर्नर से अर्जी करने आया है कि उसके दामाद को छोड़ दिया जाय। मेरा अनुमान है कि शशिमोहन उसकी सहायता कर रहा है। आजकल वह गवर्नर और वाइसराय से मेल-जोल पैदा करने में लगा हुआ है।"

"तो भापा! शशिमोहनजी से भी आपकी प्रतिस्पर्धा है क्या?"

"बहुत जबरदस्त। वह पूजा-पाठ का कीड़ा मुझे सांसारिक क्षेत्र में भी पछाड़ने का यत्न कर रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! यह मुझे ज्ञात नहीं था। मुझे तो यह विदित है कि वह दिन में छः-सात घंटे पूजा में व्यस्त रहता है। यही कारण है कि वह वकालत का काम छोड़ता चला जाता है। उसको अपने पूजा-पाठ से गवर्नरों की लल्लो-चप्पो करने के लिए अवकाश नहीं है।"

"इस पर भी पिछले मास वह वाइसराय से मिलने गया था और इस बार गवर्नर उससे तीन बार मिल चुका है।"

"परन्तु भापा! वह स्वयं उनके पास जाता है या वे पंडितजी को बुलाते हैं?"

"यह मैं कैसे जान सकता हूँ।"

"तो मेरी बात मानिए। पण्डित शशिमोहन को ये पदाधिकारी बुलाते हैं। वे स्वयं किसी से मिलने नहीं जाते।"

"अच्छा। तुम पता करो कि भुवनचन्द्र और उसकी लड़की यहाँ किस काम से आए हैं और यदि वे कहें तो मैं उनकी सहायता कर सकता हूँ।"

"बस? अथवा कुछ और काम भी है?"

"बस। कब तक समाचार दोगे?"

"यत्न करूँगा कि कल सायंकाल तक आपसे मिल सकूँगा।"

:: 2 ::

चरणसिंह मुक्तानन्द के पिछले इतिहास को जानकर समझ रहा था कि यह मीना को अपनी भोग-सामग्री बनाने का पुनः यत्न करना चाहता है। वह इसमें उसकी सहायता करने की इच्छा नहीं रखता था। इसके विपरीत वह मीना देवी से मिले, उसे मुक्तानन्द से सचेत और सतर्क रहने के लिए कहना चाहता था। उसे यह बात तो मुक्तानन्द से ही पता चली थी कि शशिमोहन सरकारी क्षेत्रों में पसन्द किया जाने लगा है। वह एक बात जानता था कि पंडित भुवनचन्द्र की सम्मति से पिछले चार वर्ष से शशिमोहन किसी प्रकार के अनुष्ठान में संलग्न है और वे इसी अनुष्ठान में सर्वथा निर्धनों का-सा जीवन व्यतीत कर निर्वाह कर रहे हैं। इस निर्धन ब्राह्मण की भला वाइसराय और गवर्नर को क्या आवश्यकता पड़ सकती है?

वह इन्हीं बातों पर विचार करता हुआ कचहरी से लौट आया। वहाँ उसकी घोड़ागाड़ी खड़ी थी। उसके समीप उसका मुंशी नबी बख्श खड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। चरणसिंह आया तो उसने बताया कि उसकी मुवक्किल कल प्रातःकाल आएगी और कहती थी कि आपकी फ़ीस वगैरह सब-कुछ कल मिल जाएगी।

"कुछ मुक्तानन्द के विषय में भी कहती थी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी। कहती थी कि वह नहीं जानती थी कि आपकी मुक्तानन्द से इतनी घनिष्ठता है कि वह आपको आधे नाम से सम्बोधन कर सकता है।"

चरणसिंह ने कुछ नहीं कहा। इस पर भी वह अपने को लज्जित अनुभव करने लगा। वह चुपचाप गाड़ी में बैठा तो मुंशी आगे कोचवान के पास बैठ गया और गाड़ी चल पड़ी। चरणसिंह विचार कर रहा था कि वह मीना के विषय में इन्द्रा को बताएगा तो वह उसे मिलने चली जाएगी।

परन्तु मीना और उसकी माँ सगुणी पहले ही वहाँ आई हुई थीं। उनको देख चरणसिंह ने मीना से कहा, "भाभी! कब आई हैं? आपने बताया ही नहीं कि आ रही हैं?"

मीना ने हाथ जोड़ नमस्ते कही तो चरणसिंह के प्रश्न का उत्तर सगुणी ने दे दिया, "समय ही नहीं था। कल प्रात:काल पंडितजी ने बताया कि हमें आज सायं से पूर्व यहाँ पहुँच जाना चाहिए। गाड़ी पकड़ने में आधा घण्टा था। हमने तार लिखने में समय व्यर्थ न गँवाकर स्टेशन को भाग गाड़ी पकड़ना उचित समझा। सो आज प्रात:काल यहाँ आ पहुँची हैं।"

"और आज सायंकाल यहाँ क्या है?"

"पण्डितजी को कल देवी ने बताया प्रतीत होता है कि मधुमोहन आज राजधानी से आ रहा है। पंडितजी ने यह उचित समझा है कि आपको सूचित कर दिया जाए। वे स्वयं तो शशिमोहनजी से मिलने गए हैं और हमको यहाँ भेज दिया है।"

इस सूचना से चरणसिंह भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। उसने अपने मन का संशय निवारण करने के लिए पूछ लिया, "माताजी! तो यह पक्की सूचना है कि मधु आ रहा है।"

"देखो, बेटा! मीना के पिता ने यह अपनी जानकारी बताई है। इस पर मैं क्या कह सकती हूँ।"

चरणसिंह ने जेब से घड़ी निकाल समय देखा और कह दिया, "तो आप यहाँ से ही सीधी स्टेशन को चलेंगी अथवा पंडितजी को साथ लेकर पहुँचेंगी?"

"पंडितजी का कहना था कि हम आपकी घोड़ागाड़ी में स्टेशन पर पहुँचें और वे पंडित शशिमोहन को लेकर वहीं पहुँचेंगे।"

"तो अभी गाड़ी के समय में एक घण्टा है। चाय ले लें, तब चलेंगे।"

"मैं भी चल रही हूँ।" इन्द्रा ने कह दिया।

"और?"

"बच्चे भी चलेंगे।"

"तो एक गाड़ी और मँगवानी पड़ेगी।" चरणसिंह ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं। हम एक इक्का कर लेंगे।''

''यह भी ठीक है।''

चाय पी जाने लगी तो चरणसिंह ने पूछ लिया, ''मुक्तानन्द को आपके नगर में आने का समाचार कैसे मिल गया है?''

''उसका कोई मित्र देहरादून से हमारी गाड़ी में ही आ रहा था। कोई बड़ा अफसर मालूम होता था। वह उसके स्वागत के लिए स्टेशन पर गया हुआ था। उसने भी हमको थर्ड क्लास के एक डिब्बे में से निकलते देख लिया होगा।''

चरणसिंह समझ गया। गवर्नर उस दिन प्रातःकाल देहरादून से आया था। इस पर चरणसिंह ने कह दिया, ''वह अच्छा आदमी नहीं है। उससे आपको मेल-जोल नहीं रखना चाहिए।''

''पर बेटा! हम कल से ही विस्मय कर रहे हैं कि यदि देवी के इस सन्देश को पढ़ने में भूल नहीं हुई तो उसके छुड़ाने में मुक्तानन्द का हाथ हो सकता है। हमारा सन्देह है कि उसने ही उसे पकड़वाया था और अब छुड़ाने में भी वही योग्य हो सकता है।''

''नहीं माताजी! मैं ऐसा नहीं समझता। उसको मधु दादा के छूटने का ज्ञान नहीं। यदि होता तो वह आपके यहाँ आने का कारण जान गया होता। वह आपके इस नगर में होने पर विस्मय कर रहा था।''

''तो यही कहा जा सकता है कि भगवान् की कृपा से ही वह छूट रहा है।''

चरणसिंह अभी भी विश्वास नहीं कर रहा था और उसने कह दिया, ''अच्छी बात। मधु से मिलने के उपरान्त ही विचार करेंगे।''

गाड़ी के समय से पहले ही चरणसिंह इत्यादि रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए। वहाँ शशिमोहन और भुवनचन्द्र पहले ही पहुँचे हुए थे।

गाड़ी आई तो मधु को भी अपने सम्बन्धियों और चरणसिंह इत्यादि को प्लेटफार्म पर खड़े देख विस्मय हुआ। वह तो डिब्बे से बे-सरो-सामान निकला था। उसकी जेब में उस स्टेशन के टिकट के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। डिब्बे से निकल वह फाटक की ओर चला तो अपने सामने सबको खड़ा देख, वह अपनी आँखों पर अविश्वास कर खड़ा रह गया। फिर तुरन्त अपना कर्तव्य स्मरण कर उसने झुककर पंडित शशिमोहन, भुवनचन्द्र और सगुणी देवी के चरण-स्पर्श किए। पीछे तरल नेत्रों वाली मीना को हाथ जोड़ नमस्ते की। वह चरणसिंह से गले मिला और भाभी इन्द्रा को नमस्कार करने लगा। तदुपरान्त उसने बच्चों को प्यार दिया। बच्चे यह जानते थे कि हरिमोहन के पिता आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त उनमें से कोई उसे पहचानता नहीं था। हरिमोहन तो विस्मय में अपने पिता का मुख देख रहा था। हरिमोहन अब पाँच वर्ष का हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माताजी! आपको कैसे पता चला कि मैं आ रहा हूँ?" मधु ने पूछ लिया।

उत्तर भुवनचन्द्र ने दिया, "तुमने तार जो भेजा था।"

"तार! कब? किसको?"

"देखो, मधु!" सब प्लेटफार्म से बाहर निकल आए थे। घोड़ागाड़ी की ओर जाते हुए भुवनचन्द्र ने कहना जारी रखा, "तुमने दुर्गा भवानी को सूचना दी थी कि तुम इस गाड़ी से यहाँ आ रहे हो। उसने मुझे बताया तो मैं मीना इत्यादि को लेकर यहाँ आ पहुँचा। यहाँ पहुँचकर हमने तुम्हारी माताजी को तार भेज दिया है। सगुणी तो कहती थी कि मेरी सूचना संदिग्ध है। अतः तुम्हारी माताजी को तार कल भेजेंगे, परन्तु मुझे भगवती की सूचनाओं पर विश्वास रहता है। इस कारण मैंने तार दे दिया है। आशा करनी चाहिए कि वे कल प्रातःकाल यहाँ पहुँच जाएँगी।"

इस पर मधु ने बता दिया, "मुझे माण्डले के दुर्ग में बंद किया गया था। चार वर्ष तक निरन्तर एक समान दिनचर्या रही थी। एक सप्ताह हुआ कि यह दिनचर्या भंग हुई। दुर्ग का वार्डन आया और बोला, आपको पाँच मिनट में चलने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

"मैंने पूछा, कहाँ चलना है? उसने बताया नहीं।

"मैंने अपने कपड़े बदले और तैयार हो गया। पाँच मिनट में दुर्ग का कमांडिंग अधिकारी आया और मुझको साथ ले किले के बाहर आ गया। वहाँ मुझे एक बन्द गाड़ी में दो सिपाहियों के साथ बैठा दिया गया। वहाँ से मैं उन सिपाहियों के साथ रेलवे स्टेशन तक, रेल से रंगून तक, फिर जहाज में भारत की राजधानी तक कल प्रातःकाल पहुँचा। बन्दरगाह से मुझे सीधा रेलवे स्टेशन पर पहुँचा दिया गया और मुझको यहाँ का थर्ड क्लास का टिकट देकर गाड़ी में बैठा दिया गया। गाड़ी में बिठाकर वे पुलिस के सिपाही मुझे स्वतंत्र छोड़ चल दिए। उनके जाने के उपरान्त ही मैं समझा कि मैं छोड़ दिया गया हूँ। पूर्व इसके कि मैं कुछ भी विचार करता, गाड़ी चल पड़ी थी और मैं यह समझ कि स्टेशन से चरण भैया के घर तक पैदल पहुँच सकूँगा, गाड़ी से उतरा था।"

"तो हमें और तुमको भी दुर्गा भवानी का धन्यवाद करना चाहिए।"

सब लोग गाड़ियों में बैठ गए। शशिमोहन भी किसी सेठ की गाड़ी माँगकर उसमें आया था। पुरुष एक गाड़ी में और स्त्रियाँ तथा बच्चे दूसरी गाड़ी में बैठ चरणसिंह के घर जा पहुँचे।

हरिहरसिंह अब अकेला रहता था। तारा का देहान्त हो चुका था। सरस्वती का घरवाला विलायत से लौटा तो 'ऐग्ज़ेक्टिव इन्जीनियर' बन गया था। वह सरस्वती को अपनी कोठी में ले गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिहर भोजन चरणसिंह के यहाँ करता था, परन्तु अपनी वकालत पृथक् करता था। वह कुछ अधिक चलती नहीं थी। सायं चाय पीने के लिए हरिहर आया तो चरणसिंह के खानसामा से पता चला कि सब लोग स्टेशन पर गए हैं। वह घर में बैठा विस्मय कर रहा था कि किसका स्वागत करने वे गए हैं?

जब उसने मधु को गाड़ी से उतरते देखा तो चकित रह गया। उसने मधु को छूट आने की मुबारकबाद दी और उसके विषय में सब बातें जानने के लिए पूछने लगा।

जो कुछ वहाँ बात हुई, सब हरिहरसिंह जान गया। उसे एक बात का पता नहीं चला था। यह बात शशिमोहन ने भुवनचन्द्र इत्यादि को घोड़ागाड़ी में बैठे-बैठे बताई थी। शशिमोहन ने कहा था, ''दो मास हुए, मेरे स्टेट्समैन में शिक्षा-सम्बन्धी कुछ लेखों को पढ़कर वाइसराय ने मुझे राजधानी में बुलाया था। वहाँ तीन दिन तक मेरी उनसे बातचीत होती रही। मैं स्वतन्त्र विश्वविद्यालयों के स्थापित किए जाने के पक्ष में हूँ। मेरी युक्तियों को सुनकर वाइसराय बहुत प्रभावित हुए थे। इस पर अन्तिम भेंट के समाप्त होने पर उन्होंने पूछ लिया, पंडितजी! मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?''

''उस समय मुझे मधुमोहन की याद आ गई। मैंने कह दिया, मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। भारत का एक उच्चतम प्रतिभाशाली युवक सन्देह में माण्डले के दुर्ग में कैद है। उसे छोड़ सकते है तो छोड़ दीजिए।''

वे मेरी माँग सुन स्तब्ध रह गए। उनका विचार था कि मैं सरकार में कोई पदवी माँगूँगा। कुछ विचार कर वे बोले, हम आपको 'ऐग्जेक्टिव कौंसिलर' नियुक्त करने का विचार कर रहे हैं।

''मैंने बता दिया, मुझे आजकल अवकाश नहीं है। मैं एक अनुष्ठान कर रहा हूँ। अभी पाँच वर्ष उसको और लगेंगे।

''उन्होंने पूछ लिया—वह क्या होता है?

''मैंने समझाया तो वे चुपचाप मेरा मुख देखते रह गए और फिर मधु का नाम इत्यादि लिखकर मुझे विदा कर दिया। मैं समझता हूँ कि मेरी उस माँग का यह परिणाम है।''

सब समझ रहे थे कि मधु के छूटने में यही कारण है। सगुणी और मीना कृतज्ञता-भरी दृष्टि से पंडितजी की ओर देखने लगीं तो पंडितजी ने कह दिया, ''यह सब भगवती की कृपा का फल ही समझना चाहिए। वाइसराय के पूछने पर मधु का नाम कैसे मेरे मुख से निकल गया, मैं स्वयं भी नहीं जानता।''

यह बात हरिहर को विदित नहीं हुई। चरणसिंह के घर खाने के समय बातों में इस पर भी चर्चा नहीं हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात को भुवनचन्द्र इत्यादि अपने मकान पर चले गए थे और शशिमोहन अपने घर पर।

अगले दिन हरिहरसिंह मुक्तानन्द की बैठक में गया तो उसने मुक्तानन्द को मधु के छूट जाने की खबर सुना दी। मुक्तानन्द ने उसी समय अपने मन में कल्पना कर ली कि अवश्य मीना की ओर से पेटीशन कराई गई होगी और शशिमोहन वह पेटीशन लेकर राजधानी में वाइसराय से मिलने गया होगा। वह विचार करता था कि इसका श्रेय उसे लेना चाहिए। अत: उस दिन सायंकाल वह अपनी घोड़ागाड़ी में चन्द्रावती के मकान पर जा पहुँचा।

चन्द्रावती आई हुई थी। उसके साथ रेशम भी आ गई थी। आज-कल वह सरमा में रहती थी और शेष ज़मींदारी पर भी अधिकार प्राप्त करने के लिए चन्द्रावती से घुल-मिल रही थी। जब चन्द्रावती को भुवनचन्द्र का तार मिला तो वह बहुत प्रसन्न हुई। उस समय तो कोई गाड़ी नगर को जाती नहीं थी। अत: वह प्रात:काल की गाड़ी से नगर जाने का कार्यक्रम बना बैठी। रेशम ने सुना तो वह भी चलने के लिए तैयार हो गई।

यह तो नगर पहुँच ही उसे पता चला कि मधु के आने की सूचना कैसे मिली और ये सब लोग नगर में पहुँचे और मधु को स्टेशन लेने गए थे।

चन्द्रावती बहुत प्रसन्न थी। प्रत्यक्ष में तो रेशम भी प्रसन्न थी। पंडित भुवनचंद्र ने बताया था कि मधु को मुक्तानन्द से बचकर रहना चाहिए। वह उसका घोर शत्रु है।

इस दिन सायंकाल मुक्तानन्द आया तो मधु बाहर बैठक में आ गया और दोनों में भेंट हो गई। मधु ने प्रत्यक्ष में ऐसा व्यवहार रखा कि मुक्तानन्द को विश्वास हो गया कि उसको उसकी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार का ज्ञान नहीं है।

अत: प्रथम प्रसन्नता का प्रदर्शन कर मुक्तानन्द ने कह दिया, ''तुम्हारे विषय में जाँच-पड़ताल हुई तो गवर्नर ने मुझे बुलाया था। मैंने बहुत प्रबल सिफारिश की थी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि मेरी सिफारिश का ठीक ही परिणाम हुआ है।''

मधु को मुक्तानन्द की बात पर विश्वास नहीं आया। इस पर भी वह विचार करने लगा था कि कदाचित् पंडित शशिमोहन की अर्जी पर वाइसराय ने यहाँ के गवर्नर से पूछा हो और उसने मुक्तानन्द से पूछ लिया हो। अत: उसको बताए बिना कि वह मुक्तानन्द की बात पर विश्वास नहीं कर रहा, चुप रहा। इससे उत्साहित हो मुक्तानन्द ने आगे कहा, ''गवर्नर ने मुझे तुम्हारी फाइल दिखाई थी और उसमें मीना के हस्ताक्षरों से पेटीशन भी लगी थी।''

इस बात से तो मधुमोहन को निश्चय हो गया कि मुक्तानन्द झूठ बोल रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह यह जान चुका था कि उसके घरवालों में से किसी ने भी पेटीशन नहीं की थी। इस पर भी मधु ने मुक्तानन्द को झूठा कहकर झगड़ा करने से बचने के लिए कह दिया, "पंडितजी, मैं आपका अति कृतज्ञ हूँ। मैं तो समझ रहा था कि मेरी कब्र वहीं बनेगी। परन्तु आप लोगों के स्नेह से ही मुझे फिर दुर्ग के बाहर आ खुली हवा में साँस लेने का अवसर मिला है।"

"अच्छा। तुम कल सायंकाल चाय मेरे घर पर लेना। अपनी माताजी और पत्नी को भी साथ ही लाना।"

"पर पंडितजी! अभी तो मैं रात की गाड़ी से ही गाँव जा रहा हूँ। कुछ दिन उपरांत नगर में लौटूँगा तो आपसे मिलूँगा।"

"हाँ। कुछ काम-धन्धे के विषय में विचार करोगे तो मैं तुम्हारी बहुत दूर तक सहायता कर सकता हूँ।"

"आखिर इस विषय पर भी तो विचार करना ही होगा। गाँव में कुछ आराम कर नगर में आकर इस विषय पर भी विचार करूँगा।"

इस प्रकार भेंट समाप्त हुई। मुक्तानन्द ने जान-बूझकर उसकी माँ तथा पत्नी के विषय में नहीं पूछा। मधु ने भी उनको वार्तालाप का विषय नहीं बनाया।

परन्तु मुक्तानन्द के चले जाने पर उसके झूठ बोलने और फिर निमंत्रण देने पर विचार किया जाने लगा। शशिमोहन ने स्पष्ट कह दिया, "मधु को कुछ वर्षों के लिए विदेश चला जाना चाहिए। यदि यह इंग्लैंड में जा बैरिस्टर बन सके तो अधिक अच्छा होगा।"

चन्द्रावती ने कह दया, "मैं खर्चे का प्रबन्ध कर दूँगी।"

मीना का कहना था, "क्या मैं साथ नहीं जा सकती?"

"माँ यदि खर्चा दें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।" मधु का कहना था।

अनुमान लगाया गया कि यदि पति-पत्नी दोनों विदेश जाएँ तो दो वर्ष में कम-से-कम दस सहस्र रुपया व्यय हो जाएगा।

चन्द्रावती का कहना था, "इतना तो हो सकता है।"

अतः पासपोर्ट के लिए अर्जी कर दी गई और मधु तथा चन्द्रावती इत्यादि सरमा में जा पहुँचे। भुवनचन्द्र नगर में ही अपने दारागंज वाले मकान में रह गया।

:: 3 ::

मुक्तानन्द का लड़का माणिकलाल अभी तक घर पर ट्यूटरों से ही पढ़ाई करता रहा था। उसके ट्यूटर प्रायः अंग्रेज़ औरतें और मर्द ही रखे जाते रहे थे। कुछ काल के लिए मधु को भी ट्यूटर नियुक्त किया गया था, परन्तु न तो मधु अपने शिष्य से सन्तुष्ट था और न ही शिष्य मधुमोहन को पसन्द करता था। गणित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए तो माणिक का मस्तिष्क बना ही नहीं था। जब भी उसे गणित का अभ्यास करने के लिए कहा जाता और उसे किसी भी प्रकार का प्रश्न हल करने के लिए दिया जाता तो उसे नींद आने लगती थी।

इसके अतिरिक्त जब मधुमोहन उसे भारतीय आचार-व्यवहार की कोई बात बताने लगता था, तो वह मधु से झगड़ पड़ता था। इस कारण प्रथम अवसर मिलते ही उसने माणिक से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था।

माणिक को विदित था कि उसका ट्यूटर मधुमोहन सरकार से विद्रोह करने के आरोप में जन्म-भर के लिए पकड़ लिया गया है। अतः जब उसे पता चला कि वह छूटकर आ गया है तो उसने अपने पिता से कहा, ''मैं उससे मिलना चाहता हूँ।''

''किसलिए?''

''मैं जानना चाहता हूँ कि उसका कैद में जीवन कैसा रहा?''

''क्या लाभ होगा इससे?''

माणिक इस लाभ-हानि की बात समझ नहीं सका, न ही कह सका, इस कारण वह चुप रहा। उसे चुप देख मुक्तानन्द ने कह दिया, ''देखो माणिक! तुमको विलायत पढ़ने के लिए जाना है। इसलिए तुमको इस प्रकार के विद्रोहियों से बचकर रहना चाहिए। यदि यहाँ की खुफिया पुलिस को पता चल गया कि तुम्हारा इन क्रान्तिकारियों से सम्बन्ध है तो तुम्हारे लिए विलायत जाना और फिर वहाँ रहना कठिन हो जाएगा।''

इस पर माणिक ने बात बदलकर पूछ लिया, ''पापा! मेरे साथ कौन जाएगा?''

''तुम वहाँ स्कूल के होस्टल में रहोगे और घर का कोई आदमी वहाँ जा नहीं सकेगा।''

मुक्तानन्द समझा था कि माणिक अपनी माँ के विषय में पूछ रहा है। परन्तु माणिक का प्रश्न था उसकी एक सहेली लड़की के लिए। उसने पूछ लिया, ''ऐमिली फर्थ मेरे साथ स्कूल में पढ़ने नहीं जा सकती?''

''उसे अपने बाप से पूछना चाहिए। उसका बाप उसके खर्चे के लिए रुपया दे नहीं सकेगा।''

''तो पापा! तुम दे देना।''

''मैं क्यों दे दूँ?''

''मैं उससे 'लव' करता हूँ।''

'' 'लव' क्या होता है?'' बाप ने सतर्क हो पूछ लिया।

पुत्र उत्तर दे नहीं सका। एक दिन माणिकलाल ने माँ से भी ऐमिली फर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को साथ भेजने के लिए कहा था और माँ ने कहा था कि पिता से ऐसी बात न कहे। वे नाराज़ होंगे और खूब पीटेंगे।

माणिक को स्मरण था, एक बार उसने पिता का कलम उठा अपनी जेब में रख लिया था। उसे वह कलम बहुत पसन्द आया था। जब पिताजी को पता चला था तो उन्होंने उसे बहुत बुरी तरह से पीटा था। तब की पिटाई माणिक को आज भी स्मरण थी।

इस पर भी मन की इच्छाओं पर नियन्त्रण न रख सकने के कारण वह अब पिता से कह बैठा। अब पिता के सतर्क हो प्रश्न पूछने पर कि लव क्या होता है, वह भौंचक्का मुँह देखने लगा। पिता ने कह दिया, ''माणिक, तुम्हें पिटे बहुत देर हो गई है और तुम भूल गए मालूम होते हो। इसी कारण बेवकूफी की ये बातें करने लगे हो।''

''देखो, तुम अभी छोटी उमर के हो और तुम जानते नहीं कि लव मूर्खों का मनोद्गार है। लड़के और लड़कियाँ इकट्ठे रहते हैं और इनमें सम्बन्ध बनते और बिगड़ते रहते हैं, जैसे तुम्हारे ट्यूटर रखे और निकाले जाते रहे हैं।''

''पापा!'' माणिक ने पूछ लिया, ''कौन नौकर रखा है? लड़का अथवा लड़की?''

माणिक के इस प्रश्न पर मुक्तानन्द मुस्कराया। उसने अपनी व्याख्या बता दी, लड़के-लड़की में सम्बन्ध तो दोनों को रस देता है, परन्तु एक-दूसरे के अधीन रहता है। जिसके पास धन और बल है वह मालिक होता है और जिसके पास धन एवं बल नहीं वह अधीन रहता है। 'लव' कुछ वस्तु नहीं।''

''और लोग विवाह क्यों करते हैं?''

''जिनके पास न धन है, न बल है, उन्होंने विवाह की प्रथा चला रखी है। मेरा मतलब है औरतों ने। वे चाहती हैं कि लड़कों को अपने साथ बाँधकर रख लें।''

''पर पापा, मेरे ट्यूटर मिस्टर अप्पर तो इससे उलटी बात कहते थे।''

''वह 'थियोसोफिस्ट' है। 'थियोसोफिस्ट' मूर्खों की मण्डली है। वे लोक-परलोक, जन्म-मरण, पाप-पुण्य, कर्म-विकर्म की बातें करते हैं और उन्होंने इनमें से एक भी बात कभी देखी नहीं। इसी कारण तो मैंने उसको निकाल दिया था।''

''ऐनि बिसैन्ट तो कुछ दूसरी बात कहती हैं।''

''सब मूर्ख ऐसा ही कहा करते हैं। तुम अपनी बात पर विचार करो। स्त्रियाँ, राजा की प्रजा और नौकर, ये सब धन और शक्ति से अधीन रखे जाते हैं। इस कारण तुम शक्ति संचय करो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मेरा शरीर तो दुर्बल है। सिल्बिया जैसी लड़की मेरा हाथ पकड़ लेती है तो मैं छुड़ा नहीं सकता और तब वह जो चाहे मुझसे करती है।"

पिता हँस पड़ा। उसने कह दिया, "'डम्बल' चलाया करो। ताकत आ जाएगी।"

इंग्लैंड के एक स्कूल में माणिक को प्रवेश मिला तो माता-पिता पुत्र को लेकर इंग्लैंड चल पड़े। माणिक के एक बहन थी। नाम था सरोजिनी। परन्तु माणिक को वह एक असुन्दर जन्तु नजर आई थी। वह इस समय तीन वर्ष की थी।

नगर से बम्बई, बम्बई से समुद्री जहाज द्वारा अदन, स्वेज से भूमध्य सागर और फिर मारसेल्ज़। वहाँ से रेल द्वारा कैले और फिर समुद्री जहाज से लन्दन। इस प्रकार लन्दन पहुँच माणिक को रईसों के एक स्कूल में भरती कर दिया गया।

दो दिन तक मुक्तानन्द माणिक के साथ स्कूल के गैस्ट रूम में रहा और फिर वह अपनी पत्नी और लड़की सरोजिनी को साथ ले लन्दन और यूरोप-भ्रमण करता हुआ हिन्दुस्तान लौट आया।

माणिक के लिए यह एक नवीन संसार था। उसकी श्रेणी के प्रायः सब लड़के उससे बलशाली थे। प्रायः सब अपने देश का इतिहास और देश की राजनीति को समझते थे। वे जब भी पुस्तकालय अथवा कॉमन रूम में बैठते तो परस्पर बातें करते रहते थे। माणिकलाल उनका मुख देखा करता था। विद्यार्थियों में वार्तालाप के प्रायः तीन विषय होते थे—लड़कियाँ, स्पोर्ट्स, स और राजनीति। माणिक पहले दो विषयों में लगभग शून्य ज्ञान रखता था। वह डिब्बे के 'प्रिज़र्व्ड फूड' (मुरब्बे का सेब) की भाँति संसार से अनभिज्ञ था। लड़कियों के विषय में उसका ज्ञान सिल्बिया और ऐमिली फर्थ तक सीमित था। जब सिल्बिया उसकी ट्यूटर थी तो वह आठ-नौ वर्ष की आयु का था। उस समय वह यौन विज्ञान के विषय में सर्वथा अनभिज्ञ था। सिल्बिया उसकी बाँहों को पकड़ उसका मुख चूमा करती थी और उससे आलिंगन किया करती थी। यह माणिक को पसन्द नहीं था। वह सिल्बिया से घृणा करता था। परन्तु जब ऐमिली फर्थ से उसका परिचय हुआ तो वह तेरह वर्ष का था और ऐमिली पाँच वर्ष की थी। वह माणिक को पसन्द तो करती थी, परन्तु माणिक उसका मुख चूमने के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार से उसके प्रति अपने मनोद्गार प्रकट करने में असमर्थ था।

उसका लड़कियों के विषय में पूर्ण ज्ञान अंग्रेज़ी उपन्यासों में स्त्री और कुमारी पात्रों के चरित्र-चित्रण से ही था। इस प्रकार यूरोपियन विद्यार्थियों से इस विषय में कम ज्ञान रखता हुआ वह उस स्कूल में भर्ती हुआ था।

स्पोर्ट्स में भी घर में बन्द रहने वाले एक लड़के की भाँति वह सर्वथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोग्य था। स्कूल के नियमों से उसे किसी-न-किसी खेल-कूद में भाग लेना होता था। इस कारण उसने अपना नाम क्रिकेट खेलने में लिखा दिया और उसके सब साथी उसको हँसी में 'मिस्टर विकट आउट' के नाम से सम्बोधन किया करते थे। यह निश्चय था कि प्रथम गेंद में ही वह आउट हो जाएगा। फील्ड करने में भी लड़के उसे मिस्टर पोस्ट (खम्भा) कहकर स्मरण करते थे।

राजनीति में माणिक अपने साथियों की अपेक्षा कुछ अधिक जानकारी अवश्य रखता था। घर में बन्द रहने के कारण उसे समाचारपत्र पढ़ने का अधिक अवसर मिलता रहता था। वह हिन्दुस्तान में वाइसराय, प्रान्त के गवर्नर, ज़िला के कलक्टर का नाम जानता था। उसका पिता उन लोगों से परिचय रखता था और अंग्रेज़ी सरकार का अनन्य भक्त था। अत: वह उन सब लोगों के नाम जानता था जिनसे उसके पिता की मेल-मुलाकात थी। मिस्टर गोखले, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता इत्यादि नाम उस को नोंक-ज़बान थे। इस स्कूल में प्राय: बड़े-बड़े ज़मींदारों के लड़के पढ़ते थे। उनके पिता 'लाड्र्स' की उपाधि से विभूषित होते थे। कुछ सैनिक अफसरों के भी लड़के थे। एक-दो हिन्दुस्तानी लड़के भी थे, परन्तु वे देशी रियासतों के राजा-महाराजाओं के लड़के थे। वे प्राय: महा अभिमानी और माणिक को एक वकील का लड़का तथा अछूत समझ उससे सम्पर्क रखने में संकोच करते थे।

इस प्रकार घर में कैद हुआ माणिक इंग्लैंड के एक स्कूल में भर्ती तो हो गया, परन्तु यहाँ उसकी बन्दी की-सी अवस्था किसी प्रकार कम नहीं हुई। पहले वह कोठी की दीवारों में बन्द था, अब वह अपने स्कूल के साथियों और अध्यापकों की रुचि से विषयों में तथा स्वभाव और व्यवहार में भिन्नता के कारण मानसिक खा से बन्दी था। वह उस फलते-फूलते स्कूल में सहस्रों विद्यार्थियों के जमघट में भी अपने को अकेला जंगल में भटकता हुआ पाता था।

:: 4 ::

लार्ड सैलिस्बरी के एक लड़के ने एक हिन्दुस्तानी लड़के को बेयारो-मददगार देखा तो उसके बुद्धूपन से लाभ उठाने के लिए उसने उससे मेल-जोल आरम्भ कर दिया। यह लड़का माणिक से पाँच इन्च ऊँचा था और उसकी अपेक्षा दुगुना शक्तिशाली था। स्कूल में पढ़ने वाली प्राय: सब लड़कियाँ उसे स्कूल का 'हीरो' मानती थीं। वह अपनी मान-प्रतिष्ठा के लिए किसी से भी भिड़ जाने को सदा तत्पर रहता था। स्कूल के गुण्डे लड़कों का वह नेता था और भले लड़कों के लिए वह भय की साक्षात् मूर्ति था। माणिक ने भी इस लड़के को देखा और उसने उससे पृथक् रहने का ही निश्चय किया। मास्टर सैलिस्बरी में माणिक को एक ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षण दिखाई दिया था। वह यह कि स्कूल की प्रायः सब लड़कियाँ उससे मेल-जोल और उस पर विश्वास रखती थीं। वह भी उनके पक्ष में सदा लड़ने-झगड़ने के लिए तैयार रहता था।

माणिक को स्कूल में भरती हुए एक महीने से ऊपर हो चुका था और अभी तक किसी भी लड़के से उसकी विशेष बोल-चाल नहीं थी। एक दिन वह खेल के ग्राउण्ड से अपने कमरे को जा रहा था कि सैलिस्बरी उसके साथ-साथ चलता हुआ होस्टल की ओर आने लगा। माणिक मन में डर गया और सामने को ध्यान किए हुए चलता रहा। सैलिस्बरी को इस तटस्थता की आशा ही थी। इस कारण समीप चलते हुए उसने सबोधन कर कहा, "माई हैण्डसम फ्रैंड! तुम इतने दुःखी क्यों रहते हो?"

माणिक ने अब बात करना उचित समझा। उसने कह दिया, "नहीं मित्र! मैं न तो दुःखी हूँ और न ही सुन्दर। एक साधारण लड़का हूँ जो अपरिचित समाज में फँस गया है।"

"परन्तु यह तुम्हारा काम है कि अपने को सुपरिचित बनाओ। प्रायः सब तुमको मूर्ख मानते हैं।"

"नहीं। मैं मूर्ख भी नहीं हूँ। मैं सब-कुछ समझता हूँ। हाँ, मैं कभी क्रिकेट खेला नहीं। इसे भद्दे ढंग से खेलने के कारण मुझे मूर्ख माना जाता है। परन्तु मैं इसे मूर्खता का लक्षण नहीं मानता।"

"इस पर भी मिस्टर, यह भद्दापन तो है ही। ज़रा चुस्ती से खेलो तो भला यह दोष क्यों रहेगा? देखो, मैं एक बात बताता हूँ। स्कूल की कुछ लड़कियाँ तुमको बहुत ही 'हैंडसम' समझती हैं, परन्तु तुम किसी से मिलते ही नहीं, किसी से बात ही नहीं करते।"

"हमारे हिन्दुस्तान में लड़के-लड़कियाँ परस्पर सम्पर्क बनाने में संकोच अनुभव करते हैं।"

"यह सब नॉनसैंस' है। मिस्टर राघव को जानते हो न? उसकी तीन लड़कियों से मित्रता है और तीनों ही समय पाकर उसकी पत्नी बनने का विचार कर रही हैं।

"तुम ज़रा बाहर निकलो तो तुमको भी पता चले कि तुम्हारे लिए खूबसूरत लड़कियों को कितनी चाह है।"

"कैसे निकलूँ?"

"कल रविवार है। हम बहुत-से लड़के-लड़कियाँ लन्दन देखने चलेंगे। तुम क्यों नहीं चलते?"

"कैसे चलूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने वार्डन से छुट्टी ले लो। कह दो कि सैलिस्बरी के साथ लन्दन देखने जा रहे हो। छुट्टी मिल जाएगी। तब तुम हमारे साथ दिन-भर वहाँ घूमोगे। हम नौ लोग हैं। यदि तुम भी सम्मिलित हो जाओ तो हम दस हो जाएँगे, पाँच लड़के और पाँच लड़कियाँ।"

"मैं वार्डन से अभी मिल लेता हूँ। यदि छुट्टी मिली तो मैं इस अवसर से लाभ उठाऊँगा।"

"हाँ, छुट्टी मिल जाएगी।"

रात के खाने के उपरान्त माणिक अपने वार्डन के पास जा पहुँचा और उसने जबानी प्रार्थना कर दी।

"कौन-कौन जा रहा है?" मिस्टर वुड का प्रश्न था।

"मैं सबको तो नहीं जानता। सैलिस्बरी जा रहा है।"

"मिस्टर माणिक! गुण्डों के इस सरदार से सावधान रहना।"

"जी।"

"तुम जा सकते हो। रात दस बजे से पहले होस्टल में हाजिर होना चाहिए।"

माणिक गया और अपने जाने पर पश्चात्ताप करता हुआ लौटा। वह अपनी जेब में पाँच पौण्ड नकद लेकर चला था। उसका विचार था कि दो-तीन पौण्ड के भीतर व्यय होगा। परन्तु लन्दन में पहुँच वे जब किसी रेस्तरां में 'ब्रेकफास्ट' लेने पहुँचे तो सैलिस्बरी ने कह दिया, "मैं ग्रुप लीडर के रूप में काम करूँगा। सबने एक-एक पौण्ड मेरे पास जमा करा रखा है। तुम भी करा दो।"

माणिक ने पौण्ड देने के लिए जेब में हाथ डाला तो वह अपनी जेब कटी देखकर चकित रह गया। माणिक ने परेशानी अनुभव करते और जेब दिखाते हुए कहा, "मेरे पास तो अब लौटने के लिए भी कुछ नहीं रहा।"

सैलिस्बरी ने बहुत शोक प्रकट किया और कहा, "देखो किसी को मत बताना। वे तुमको और भी अधिक मूर्ख मानने लगेंगे। मैं तुम्हारा खर्चा चलाऊँगा। जितना खर्चा बनेगा, कल मुझे दे देना।"

माणिक ने इस प्रबन्ध को गनीमत समझा और सैलिस्बरी का धन्यवाद कर दिया।

'ब्रेकफास्ट' के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि प्रत्येक लड़का अपनी साथिन के साथ स्वतन्त्रता से घूमेगा। सब लंच के समय 'सैवाय' में एकत्रित हो जाएँगे।

लड़कों की अपनी निर्वाचित साथिन थीं। एक 'फोर्थ स्टैंडर्ड' की लड़की बिना साथी के थी। वह माणिक के पास आ खड़ी हुई और बोली, "मैं अकेली रह गई हूँ। चलिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिक ने लड़की को दृष्टि भरकर देखा। वह बहुत ही साधारण रूप-रेखा की नौ-दस वर्ष की आयु की लड़की थी। माणिक ने उसे पसन्द नहीं किया, परन्तु सैलिस्बरी ने कुछ शिलिंग लड़की के हाथ में देते हुए कहा, ''लिल्ली, मिस्टर लाल की जेब कतरी गई है। इस कारण इससे कुछ नहीं मिलेगा। तुम सब खर्चा करना और होस्टल में लौटकर सब हिसाब कर लेंगे।''

''मेरे पास अपनी रकम है। मैं इससे कल हिसाब कर लूँगी।'' लिल्ली ने माणिक की ओर सहानुभूतिपूर्वक देखते हुए कहा, ''मिस्टर लाल! बहुत खेद है कि जेब कतरी गई है। परन्तु मेरे पास काफी रकम है। हम खुले हाथ खर्च कर सकते हैं।''

माणिक को स्मरण हो आया कि उसके पिता ने कहा था कि धन और बल से लड़की का मालिक बना जा सकता है। वह अनुभव कर रहा था कि उसकी जेब कतरी जाने से उसका इस लड़की का मालिक बनना कठिन है। उसे अफसोस तो हुआ, परन्तु अगले ही क्षण वह यह समझ कि यह ऐसी लड़की नहीं है, जिसकी मिलकियत प्राप्त करने का यत्न भी करना चाहिए। इतना विचारकर उसने मन में सन्तोष किया और चुप कर रहा।

इस विशाल नगर से वह सर्वथा अपरिचित था। लिल्ली भी बच्ची ही थी और बहुत स्थानों को जानती नहीं थी। वह रहने वाली 'लिवर-पूल' की थी। एक कारखानेदार की सबसे छोटी लड़की थी। इस पर भी अपनी माँ के साथ एक-दो बार लन्दन आ घूम चुकी थी और कुछ दर्शनीय स्थानों के विषय में जानती थी। अत: उन्होंने एक घोड़ागाड़ी भाड़े पर की और चार-पाँच स्थानों को देखने चल पड़े। अभी बारह ही बजे थे कि सब स्थान, जिनके विषय में लिल्ली जानती थी, देखे जा चुके थे। अन्त में वे 'हाईड पार्क' में जा बैठे। एक पेड़ के साए तले वे घास पर ही बैठ गए और बातें करने लगे। लड़की जानना चाहती थी कि हिन्दुस्तान में माणिक के पिता का क्या रुतबा है? उसकी कितनी सम्पत्ति है? कोई ज़मींदारी है अथवा कोई कल-कारखाना है?

माणिक ने अपने पिता की आर्थिक स्थिति में झाँकने का कभी यत्न नहीं किया था और वह अपने पिता की आय के विषय से सर्वथा अनभिज्ञ था। एक बात माणिक ने कही, ''मेरे पापा पर्याप्त धन स्कूल के कार्यालय में जमा करा गए हैं। उन्होंने मुझे भी जाते समय एक सौ पौण्ड दिया था। मेरी मम्मी ने मुझे जाते समय एक पर्स पिता से छिपाकर दिया है और कहा है कि यदि कभी रुपये की कमी पड़े तो मैं उन्हें लिखूँ। वे और भेज देंगी।''

''मम्मी के पर्स में क्या था?''

''मुझे अभी उसमें झाँकने की आवश्यकता नहीं पड़ी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसी कारण तो सब लड़कियाँ तुमको बुद्धू समझती हैं। हम सब आशा करती हैं कि लड़के हमें कुछ भेंट-स्वरूप दें। जो लड़के अधिक भेंट देते हैं, उनसे हम 'फैमीलियर' (घनिष्ठ) हो जाती हैं।"

"परन्तु मेरा तो किसी लड़की से परिचय नहीं है।"

"एक से तो आज हो गया है।"

"परन्तु आज तो मेरी जेब कतरी गई है। मैं तुमको कुछ भी भेंट में नहीं दे सकता।"

"तुम एक बात करो। मुझसे कुछ ऋण ले लो, और फिर उससे मेरे लिए भेंट खरीद मुझे दे दो। कल होस्टल में चलकर मेरा ऋण चुका देना।"

"तुम कितना ऋण दे सकती हो?"

"देखो। दस शिलिंग तो सैलिस्बरी ने दिए हैं। वे तो गाड़ी-भाड़े में व्यय हो जाएँगे। शेष मेरे पास बहुत है। तुम अपनी सामर्थ्य देखकर बताओ कि कितने के 'प्रैजेन्ट' मुझे दे सकते हो। उतना कुछ मैं तुमको ऋण के रूप में दे दूँगी।"

"पाँच पौण्ड ऋण दे सकोगी?"

"हाँ। क्यों नहीं?"

"तो दे दो।"

स्टिलवैल ने अपनी स्कर्ट की जेब में से पाँच पौण्ड का एक नोट निकालकर दे दिया। माणिक ने धन्यवाद कर कहा, "चलो शॉपिंग के लिए चलें।"

"अभी नहीं। लंच के उपरान्त।"

"उसमें अभी तो डेढ़ घण्टा है। तो अब क्या करें?"

"तुम मुझसे 'लव' कर सकते हो?"

"वह कैसे किया जाता है?"

लिल्ली हँस पड़ी और बोली, "तो तुम नहीं जानते?"

"बात यह है कि हिन्दुस्तान में लड़के-लड़कियाँ अकेले में कभी मिलते ही नहीं। मैं नहीं जानता, किसी लड़की से कैसे लव किया जाता है।"

"ऐसा दूसरी लड़कियों से न कहना। वे तुम्हारी हँसी उड़ाएँगी।"

"वह तो मैं पीछे देख लूँगा। पहले यह बताओ कि एक लड़का किसी लड़की से कैसे लव करे?"

"वाह! अच्छा देखो। मैं तुमको बताती हूँ कि एक दिन सैलिस्बरी ने कैसे लव किया था।"

सैलिस्बरी ने लिल्ली को एक अनभिज्ञ बच्ची समझ उसकी कमर में हाथ डाल उसका केवल मुख चूमा था। यही नाटक उसने माणिक से कर दिया। माणिक ने भी वैसा ही दुहराकर उसे बता दिया कि वह इतना सीख गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो बस, यही है जिसे लव कहते हैं।"

माणिक इससे बहुत-कुछ अधिक जानता था, परन्तु वह अपनी जानकारी बताना नहीं चाहता था। वह इसमें लाभ भी नहीं समझता था और उसने यही प्रकट किया कि वह इतने मात्र से सन्तुष्ट है।

एक विषय था जिस पर माणिक बात कर सकता था। उसने उसी विषय पर बताना आरम्भ कर दिया। माणिक ने अपने पिता की बड़े-बड़े सरकारी अधिकारियों से मित्रता का वर्णन किया और यह बताया, "आजकल हिन्दुस्तान में कुछ लोग भारत सरकार के विरुद्ध हो रहे हैं, परन्तु मेरे पिता तो उनके खिलाफ रहते हैं।

"मेरे एक ट्यूटर थे। वे बगावत के आरोप में पकड़े गए और पाँच वर्ष के लगभग एक किले में बन्द रहे। मेरे 'होम' आने से पूर्व ही वह छूटकर आए थे।"

लिल्ली को 'होम' का अर्थ समझ नहीं आया। उसने पूछ लिया, "आपका 'होम' कहाँ है?"

"यहाँ इंग्लैण्ड में।"

"तो तुम्हारे माता-पिता अंग्रेज़ हैं?"

"नहीं। हम हिन्दू ब्राह्मण हैं।"

लिल्ली इसका अर्थ नहीं समझ सकी। इस पर भी उसने कह दिया, "यह इंग्लैण्ड तो हमारा 'होम' है। हम इसे किसी दूसरे का 'होम' बनने नहीं देंगे।"

"मगर हम भी तो 'ब्रिटिश एम्पायर' में रहते हैं।"

"यह ठीक है, परन्तु तुम्हारा 'होम' इण्डिया है, इंग्लैण्ड नहीं।"

"मगर मेरे मास्टर ने 'स्काट' की कविता 'होम स्वीट होम' पढ़ाते हुए बताया था कि 'होम' का अभिप्राय 'इंग्लैंड' अथवा 'ग्रेट ब्रिटेन' है।"

"मास्टर ने ठीक कहा था कि 'स्काट' का 'होम-लैड' 'ग्रेट ब्रिटेन' है।"

माणिक भौंचक्का हो लिल्ली का मुख देखने लगा। वह इस गोरखधन्धे को समझ नहीं सका। उसने बात बदल दी।

:: 5 ::

ये अन्य लड़कों से पहले ही 'सैवाय' में पहुँच गए। सैलिस्बरी ने लंच के लिए दस सीटें रिज़र्व की हुई थीं। जब वे होटल के 'रिसेप्शन हाल' में पहुँचे तो बैरा उन्हें अपने साथियों को ढूँढते देख उनके समीप आ पूछने लगा, "आप सैलिस्बरी ग्रुप में से हैं?"

"हाँ," लिल्ली ने उत्तर दिया।"

"तो आपके लिए सीटें उस कोने में हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये उधर को जा ही रहे थे कि माणिक की दृष्टि मधु और उसके साथ एक स्त्री पर जा पड़ी। वह स्त्री साड़ी पहने थी। मधु और मीना वहाँ भोजन के लिए आए हुए थे।

माणिक की इच्छा हुई कि मधु से मिले, परन्तु वह लिल्ली जैसी असुन्दर लड़की के साथ मधु के सामने बैठी सुन्दर औरत के सामने नहीं जाना चाहता था। अत: उसने लिल्ली को उनके 'ग्रुप' के लिए 'रिज़र्व' सीटों पर बैठाकर कहा, ''तुम बैठो। मैं अपने नगर के एक परिचित से बात करके आता हूँ।''

लिल्ली के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह मधु की ओर चला गया। मधु मीना के साथ विलायत आया हुआ था। उसे लन्दन पहुँचे बीस दिन के लगभग हो चुके थे। चन्द्रावती ने उसे कानून पढ़ने के विचार से भेजा था, परन्तु उसे कानून के कॉलिज में प्रवेश मिला नहीं और वह लन्दन म्यूज़ियम के पुस्तकालय में जा पहुँचा। वहाँ अतुल ज्ञान का भण्डार भरा देख वह किसी कालिज अथवा विश्वविद्यालय की परीक्षा पास करने का विचार छोड़ ज्ञान-वृद्धि में लग गया। इण्डिया हाउस की सिफारिश से उसे 'म्यूजियम' के पुस्तकालय में पढ़ने की स्वीकृति मिल गई। वहाँ उसने एक टेबल और चेयर भाड़े पर ले ली और संस्कृत साहित्य और भारतीय संस्कृति पर अध्ययन आरम्भ कर दिया। म्यूजियम रविवार को बन्द रहता था और वह दिन वह अपनी पत्नी मीना की संगत में व्यतीत करता था तथा उसे लेकर घर से बाहर भोजन तथा दर्शनीय स्थानों को देखने का कार्यक्रम बनाता था।

पति-पत्नी दोनों लन्दन में दो कमरे का एक सैट लेकर रह रहे थे। रविवार के अतिरिक्त उनका कार्यक्रम प्राय: यह होता था कि प्रात: का अल्पाहार मीना घर पर ही बनाती थी। मध्याह्न का भोजन लेने वह म्यूज़ियम के समीप एक होटल में चली जाती। मधु भी वहाँ आ जाता और दोनों भोजन करते थे। भोजनोपरान्त मीना बाज़ार से सामान इत्यादि लेने जाती थी। मधु पुस्तकालय में चला जाया करता था। छ:-सात घण्टे नित्य स्वाध्याय कर वह घर लौटता तो दोनों इकट्ठे सायं की चाय लेते। तदुपरान्त प्राय: पार्क में टहलने चले जाते थे। कभी सायं को कोई नाटक इत्यादि देख लेते। रात का खाना मीना प्राय: अपने कमरे में ही बना लेती। कभी-कभी उस समय भी वे होटल में चले जाते थे।

रात को दस बजे वे सो जाते। इस दिन रविवार होने से वे 'सैवाय' में लंच लेने का विचार कर वहाँ आ गए। अभी खाने के समय में कुछ देर थी। इस कारण दोनों पति-पत्नी एक मेज़ पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। माणिक ने हॉल में आते ही मधु को देख लिया, परन्तु मधु मीना को किसी विषय पर कुछ बता रहा था और उसका ध्यान आ रहे लोगों की ओर नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिक मधु के सामने आ खड़ा हुआ। मधु उसे पहले तो पहचान ही नहीं सका। जब उसने पहचाना तो लपककर वह उठा और उससे हाथ मिलाकर उसने उसे अपने समीप एक अन्य कुर्सी पर बैठाकर पूछा, "माणिक! यहाँ क्या कर रहे हो?"

"मैं यहाँ पढ़ने आया हुआ हूँ। यहाँ से कुछ अन्तर पर एक स्कूल है, उसमें पढ़ता हूँ। आज रविवार है। स्कूल की तो छुट्टी है और मैं अपने कुछ साथियों के साथ यहाँ लन्दन की सैर करने आया हुआ हूँ।"

"ठीक है। कहाँ हैं तुम्हारे साथी?"

"हम सब अपनी-अपनी रुचि अनुसार घूमने के लिए पृथक्-पृथक् हो गए थे और अब सब लंच लेने यहाँ इकट्ठे हो रहे हैं।"

"मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ। अतः लन्दन म्यूजियम के पुस्तकालय में अध्ययन के लिए यहाँ ठहरा हुआ हूँ।"

"आप कभी हमारे स्कूल में आइए।"

"यत्न करूँगा।"

"इनका परिचय?" माणिक ने मीना की ओर देखकर पूछ लिया।

"तो तुम इन्हें नहीं जानते? ये मीना देवी मेरी धर्म-पत्नी हैं।"

माणिक ने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी। साड़ी पहने स्त्री से वह हाथ मिलाने का साहस नहीं कर सका।

मीना माणिक का नाम सुनते ही समझ गई थी कि वह मुक्तानन्द का लड़का है। मधु ने उसके विषय में उसे बता रखा था। अतः मीना ने मुस्कराते हुए हाथ जोड़ दिए।

माणिक मीना के मुस्कराने की शोभा का मुकाबला लिल्ली से करने लगा। लिल्ली सर्वथा भद्दी दिखाई देती थी। उसे मीना बहुत ही सुन्दर स्त्री प्रतीत हुई थी।

मधु ने पूछ लिया, "तो हिन्दुस्तान से अकेले आए थे?"

"जी नहीं। पापा और मम्मी छोड़ने आए थे। यहाँ से वे यूरोप-भ्रमण के लिए चले गए हैं। उनका रोम से एक पत्र आया था और उन्होंने लिखा है कि 'ब्रिंडसी' से वे जहाज में सवार हो हिन्दुस्तान चले जाएँगे।"

इसके उपरान्त इधर-उधर की बातें होने लगीं। एकाएक माणिक को अपनी जेब खाली होने का स्मरण हो आया। उसने कह दिया, "मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ।"

"हाँ, कहो।"

"आज सुबह आते हुए मेरी जेब कट गई है और मेरा पर्स चोरी हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या था उसमें ?"

"पाँच पौंड और कुछ रेजगारी थी।"

"तो अब यहाँ किस प्रकार विचर रहे हो ?"

"अपने साथियों से कुछ ऋण लिया है।"

"तो तुमको कुछ और चाहिए ?"

यही तो माणिक चाहता था। उसने कह दिया, "यदि आप कुछ इस समय दे सकें तो मैं आपका अति कृतज्ञ रहूँगा। होस्टल में मेरे पास काफी है। मैं कल आपको जाते ही भेज दूँगा।"

मधु ने अपना पर्स निकाला और उसमें से पाँच पौंड का एक नोट माणिक को देते हुए कहा, "हमें यहाँ भेजने की आवश्यकता नहीं। मैं किसी दिन तुम्हारा स्कूल देखने आऊँगा, तब होंगे तो दे देना।"

माणिक ने कृतज्ञता प्रकट की। तदनन्तर हिन्दुस्तान की बातें होती रहीं और जब खाना परोसा जाने लगा तो माणिक उठकर अपने लड़कों के ग्रुप में चला गया। सैलिस्बरी को लिल्ली ने बताया था कि मिस्टर लाल अपने देश के एक मित्र से मिलने गया है। उसने उसकी ओर संकेत कर दिया। सैलिस्बरी ने मीना को देखा और चकित रह गया। वह भी मान गया कि मीना एक अति सुन्दर स्त्री है।

माणिक को 'सैवाय' होटल में किसी सुन्दर हिन्दुस्तानी पुरुष और स्त्री से घुल-घुलकर बातें करते देख सैलिस्बरी की माणिक में रुचि बढ़ गई। जब माणिक आया तो उसे लिल्ली के साथ बैठाकर स्वयं उसके दूसरी ओर बैठ वह उससे हिन्दुस्तानी मित्र के विषय में पूछने लगा।

माणिक ने बता दिया, "पापा का एक मित्र है और साथ में उसकी पत्नी है। वह यहाँ अन्वेषण-कार्य के लिए आए हुए हैं और लन्दन म्यूजियम में काम कर रहे हैं।"

इस सूचना ने माणिक का मान सैलिस्बरी के मन में बढ़ा दिया। माणिक ने मधु से ऋण में लिए पौंडों के विषय में नहीं बताया। उसको डर था कि फिर कहीं उसकी चोरी न हो जाय। अब उसके पास जेब में दस पौंड थे, यद्यपि ये सब उधार लिये हुए थे।

खाना समाप्त हुआ और वहाँ से सब 'हाईड पार्क' में चले गए। कुछ देर तक वहाँ ये खेल-कूद करने के उपरान्त पुनः वे अपने साथियों के साथ घूमने निकल गए। माणिक लिल्ली की बाँह को अपनी बाँह में लेकर दुकानों के केन्द्र की ओर चल पड़ा। माल (मॉल) के बाज़ार में पहुँच माणिक ने लिल्ली की मनपसन्द कई वस्तुएँ खरीद दीं। इनमें एक कलम भी था। जहाँ तक उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण था कि पापा का वैसा ही कलम उठा अपनी जेब में रख लेने के लिए वह बहुत बुरी तरह पीटा गया था। यह नौ-दस वर्ष पहले की बात थी और अब वह वैसा ही कलम अपनी लड़की मित्र को भेंट में दे रहा था।

इस प्रकार घूमते हुए वे रात के आठ बजे 'ब्लैक पूल' के रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए। वहाँ दूसरे साथी पहले ही पहुँचे हुए ये। रात के खाने का प्रबन्ध सैलिस्बरी ने स्टेशन के रेस्तरां में किया हुआ था। सबने खाना खाया और नौ बजे की गाड़ी में सवार हो पन्द्रह मिनट में स्कूल के समीप वाले स्टेशन पर जा पहुँचे।

माणिक बहुत थक गया था। जाते ही बिस्तर पर लेटा तो उसे उस दिन का भ्रमण सर्वथा असन्तोषजनक प्रतीत हुआ। वह लिल्ली के अतिरिक्त अन्य किसी विद्यार्थी से अपना परिचय बढ़ा नहीं सका था। सब अपने-अपने साथियों में मस्त थे। किसी को दूसरे की चिन्ता नहीं थी। लिल्ली उसके साथ थी और बच्चों की-सी बातें करती थी, परन्तु वह उसकी सूरत शक्ल में बिल्कुल रस नहीं ले रहा था।

वह मन में विचार कर रहा था कि लन्दन जाने के स्थान यदि वह होस्टल में ही रहता और कोई अच्छा-सा उपन्यास पढ़ लेता तो अधिक प्रसन्नता प्राप्त करता। इन्हीं विचारों में वह सो गया। उसका एक 'रूम मेट' था। वे एक कमरे में रहते हुए भी परस्पर बहुत कम बातचीत करते थे। इस साथी का नाम विलियम था।

विलियम इनके साथ लन्दन नहीं गया था और माणिक के आने से पहिले वह बिस्तर में घुस चुका था। माणिक भी सोने के लिए बिस्तर में चला गया और उक्त विचारों से असन्तोष अनुभव करता हुआ सो गया।

प्रातः वह उठा तो विलियम अभी जागा नहीं था। माणिक उठकर अपने 'बैड' पर बैठा ही था तो उसे सामने अपनी मेज़ पर अपना पर्स दिखाई दिया। यह वही पर्स था जो जेब काटकर निकाल लिया गया था। वह उसे वहाँ देख चकित रह गया। वह जानता था कि रात वह पर्स उसकी मेज़ पर नहीं था। उसने लपककर मेज़ पर से पर्स उठाया और उसको खोलकर देखा। वह खाली था। अभिप्राय यह कि उसकी जेब कतरने वाला कॉलिज में से ही कोई था। सम्भव है होस्टल के उसी कक्ष का रहने वाला ही हो जिसमें वह रहता था। परन्तु वहाँ से भ्रमण करने वालों में से कोई नहीं था।

इस पर उसको विचार आया कि हो सकता है उसकी जेब होस्टल में ही काट ली गई हो। उसने जाने के समय एक-एक पौंड के पाँच नोट पर्स में रखे थे और फिर पर्स जेब में रख लिया था। उसने जेब अल्पाहार लेते समय रैस्तरां में ही देखी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उसे सन्देह हुआ कि जरूर उसकी जेब उसके साथी लड़के ने ही काटी है और नकदी निकालकर पर्स यहाँ रख दिया है।

जब विलियम जागा तो उसने उससे पूछ लिया, "विलियम! यह पर्स रात यहाँ नहीं था। अब कहाँ से आ गया?"

"मैं क्या जानूँ? मैं तो तुम्हारे आने से पहले ही सो गया था और तुम्हारे जागने से पीछे सोकर उठा हूँ।"

मधु ने अपने कोट की कटी जेब दिखाकर पर्स के गुम होने की बात बता दी। इस पर विलियम ने पूछ लिया, "तो तुमको मुझ पर सन्देह है?"

"है तो, परन्तु...।" वह आगे कुछ कह नहीं सका। विलियम ने एक घूँसा उसके मुख पर जमा दिया। मुक्के से माणिक के दाँत हिल गए और उनसे रक्त बहने लगा। माणिक अपने कमरे के साथी से दुर्बल था, इस कारण वह भीतर-ही-भीतर पीड़ा और अपमान सह गया।

विलियम ने उसे कह दिया, "यू कर्सड ब्लैकी। (लानती काले मनुष्य) यदि तुम अपनी बात को सत्य मानते हो तो आओ 'बॉक्सिंग' कर लें।"

माणिक यह समझ नहीं सका कि मुक्केबाजी करने से उसके चोर होने अथवा न होने का निर्णय कैसे हो जाएगा?

वह यदि विलियम से लड़ा नहीं तो केवल इसलिए कि वह उससे दुर्बल था। यदि 'बॉक्सिंग' होने लगी तो वह और भी पीटा जा सकता था, इस कारण वह चुप कर गया।

विलियम उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देखता हुआ शौचादि के लिए गया। माणिक तो पहले ही स्नान कर चुका था।

प्रातः के अल्पाहार के समय सैलिस्बरी आया और उसको हिसाब बता रुपये ले गया। उसने वे पाँच पौंड भी माँग लिये जो लिल्ली ने उसे ऋण के रूप में दिए थे।

माणिक ने पर्स की बात बताई तो उसने कह दिया, "जरूर विलियम ने तुम्हारी जेब कतरी है। मगर उसे मनाने के लिए तो उससे 'ड्यूएल' लड़नी पड़ेगी।"

"कैसे? पिस्तौलों से?"

"नहीं। मुक्कों से।"

"वह तो मैं लड़ चुका हूँ।"

"परन्तु तुमने उसको एक भी घूँसा नहीं लगाया।"

"मैं तो समझ नहीं सका कि वह क्या कह रहा था और क्यों कह रहा था। मैंने उसको यह कहानी बताई तो उसने कहा कि क्या मैं उस पर संदेह करता हूँ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं कहने जा रहा था कि सन्देह है तो, परन्तु उस जैसे भले आदमी पर सन्देह करना ठीक मालूम नहीं होता। पर उसने तो मेरी बात सुनने से पहले ही कह दिया कि मैं कायर और ब्लैकी हूँ। मैं दोनों में से एक भी नहीं। मेरे चेहरे के रंग का मुकाबला इस देश के किसी भी लड़के के रंग से किया जा सकता है।''

सैलिस्बरी मुस्कराया और बोला, ''तो तुमने उससे 'ड्यूएल' मंजूर कर ली है?''

''हाँ, और मैं हार चुका हूँ।''

''तो तुम्हारी जेब नहीं कतरी गई और तुम सत्य ही ब्लैकी हो।''

''इससे यह सिद्ध नहीं होता। मैं वार्डन से शिकायत करने वाला हूँ।''

''देखो लाल! तुम यहाँ के रीति-रिवाज नहीं जानते। इस समय मुसीबत में फँसे हुए हो। मैं तुमको बताता हूँ। यहाँ हम अपनी शिकायतें अधिकारियों के पास नहीं करने जाते। जो जाता है वह स्कूल में मूर्ख और कायर समझा जाता है। मास्टर और वार्डन भी उसे इज्जत से नहीं देखते। साथ ही वार्डन तुम्हारी शिकायत सुन तो लेगा पर कुछ कर नहीं सकेगा।''

''तो मुझे क्या करना चाहिए?''

''तुमको अपना कोई मित्र बनाना चाहिए जो लड़ना-मरना जानता हो। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। यहाँ की लड़कियाँ इसलिए किसी-न-किसी ऐसे लड़के से मित्रता बनाए रखती हैं जो अपमान और बलात्कार से उनकी रक्षा कर सके।''

''बहुत विचित्र है।''

''यह हमारी कौम की विशेषता है जिससे हम दुनिया पर हुकूमत करते हैं।''

माणिक कुछ देर तक विचारकर बोला, ''तो आप बताइए कि किसको अपना मित्र बनाऊँ?''

''मैं भी यह काम कर सकता हूँ, परन्तु एक शर्त है।''

''क्या?''

''मेरे साप्ताहिक 'आउटिंग' (भ्रमण) का खर्चा तुमको देना पड़ेगा।''

''उसमें क्या-क्या खर्चा सम्मिलित होगा?''

''लंच, डिनर, चाय इत्यादि।''

माणिक को यह प्रबन्ध सुखकारक समझ आया। वह मान गया। इस पर भी उसका पिछले दिन का भ्रमण रुचिकर नहीं हुआ था, इस कारण उसने पूछ लिया, ''और मैं कभी साथ न जा सकूँ तो?''

''खर्चा तब भी देना होगा।''

माणिक ने स्वीकार कर लिया और 'ड्यूएल' के विषय में मौन रहने का निश्चय कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 6 ::

इस पर भी उसका पीटा जाना गुप्त नहीं रह सका। वह स्कूल में अपनी श्रेणी में बैठा तो सबने देखा कि उसका मुख सूजा हुआ है और गाल पर एक नीला-सा निशान बना है। सहपाठियों में से तो किसी ने पूछा नहीं। यह निश्चय ही था कि उसने किसी से 'ड्यूएल' की है और यह निशान उसी का परिणाम है।

उसी दिन हैडमास्टर मिस्टर क्रिप्स ने उसे अपने कमरे में बुलाकर पूछ लिया, "यह तुम्हारे मुख पर क्या हुआ है?"

"सर! वन साइडिड "ड्यूएल।" (एकतरफा लड़ाई)

"ड्यूएल और एकतरफा? यह कैसे?"

इस पर माणिक ने बता दिया, "मैं शिकायत नहीं कर रहा। मुझे बताया गया है कि इस स्कूल का रिवाज है कि लड़के शिकायत नहीं करते। परन्तु यदि आप पूछते हैं तो मैं आपको पूर्ण घटना बता सकता हूँ।"

"मैं जानना चाहूँगा।"

इस पर माणिक ने पूर्ण वृत्तान्त, रविवार को होस्टल से चलने से लेकर और फिर सोमवार प्रातः के अल्पाहार तक का बता दिया।

"और तुम क्या 'प्रोपोज़' करते हो?"

"मैंने सैलिस्बरी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। मैंने अपने को उसके संरक्षण में रख दिया है।"

हैडमास्टर गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। माणिक मास्टर साहब के कहने की प्रतीक्षा करता रहा। आखिर हैडमास्टर ने कहा, "मिस्टर लाल, ठीक है। यह प्रबन्ध ठीक है और इसमें भी कोई कठिनाई उत्पन्न हुई तो बताना।"

बात समाप्त हो गई। लगभग दो पौंड प्रति सप्ताह का खर्चा माणिक को सैलिस्बरी पर करना पड़ा। माणिक को ठीक बात समझ आई कि सैलिस्बरी उसका मित्र नहीं, वह उसका संरक्षक है और जैसे स्कूल उससे प्रतिमास फीस लेता है, वैसे ही वह भी उससे अपने संरक्षण का मूल्य प्राप्त कर रहा है। विलियम और दूसरे लड़के भी लाल से बात नहीं करते थे। माणिक यह समझ नहीं रहा था कि वे उससे घृणा करते हैं अथवा सैलिस्बरी से डरते हैं। इस पर भी माणिक का जीवन शान्ति से बीतने लगा। वह कभी-कभी सैलिस्बरी के ग्रुप के साथ घूमने जाता था।

कुछ अन्य लड़के अलग से घूमने जाते थे। उसने उनके साथ एक बार 'स्ट्रैटस्फोर्ड आन एवोन' पर जाने की इच्छा प्रकट की, परन्तु उन्होंने उसे साथ ले जाने से इनकार कर दिया।

"क्यों?" माणिक का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो लड़का सैलिस्बरी के संरक्षण में है वह हमारा साथी नहीं हो सकता।"

मजेदार बात यह थी कि उस समय स्कूल में हिन्दुस्तान की देसी रियासतों के महाराजाओं के दो लड़के भी पढ़ते थे। वे तो माणिक से बोलते तक नहीं थे। वे कहीं उसे सामने से आता देखते तो अपना रास्ता ही बदल लेते थे।

इस व्यवहार ने माणिक को विचार करने पर विवश कर दिया और वह इंग्लैंड के सौन्दर्य, वहाँ की स्त्रियों की मधुर दृष्टि और वाक् से आकर्षित होता हुआ भी उनकी जाति के साथ भारतीय राजा-महाराजा व जमींदारों से घृणा करने लगा।

पहले लन्दन-भ्रमण के उपरान्त वह दो-तीन बार लन्दन गया था, परन्तु उसे मधु और मीना के दर्शन नहीं हुए। वह उस मकान पर भी गया, जहाँ मधु ने अपना निवास स्थान बताया था। परन्तु वे वहाँ भी नहीं मिले।

इस पर भी भेंट हुई। एक दिन, यह मधु के इंग्लैंड में आने के तीन वर्ष बाद की बात है—उसको कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दुस्तानी संस्कृति पर व्याख्यान देने के लिए बुलाया गया। विश्वविद्यालय की 'हिस्टोरीकल सोसायटी' आमन्त्रित करने वाली थी। मधु ने लन्दन में रहते हुए समाचारपत्रों और मासिक पत्रिकाओं में इस विषय पर कई लेख लिखे थे और उनसे प्रभावित हो सोसायटी ने उसे यूनिवर्सिटी में तीन व्याख्यान देने के लिए बुलाया था।

मधु मीना के साथ आया और वहाँ वह 'हिस्टरी फैकल्टी' के 'डीन' के घर पर मेहमान बनकर ठहरा। पहले ही दिन जब वह व्याख्यान देने हॉल में पहुँचा तो उसे माणिक पिछली बेंचों पर बैठा दिखाई दिया।

व्याख्यान हुआ। विषय था 'वैदिक संस्कृति।' इस विषय पर कुछ कहने से पूर्व उसने संस्कृति और सभ्यता में भेद के विषय में बताया। उसने यह कहा कि सभ्यता उन वस्तुओं और व्यवहार से सम्बन्ध रखती है, जिनका सम्बन्ध शरीर से है। व्यवहार चाहे वह व्यक्तिगत हो और चाहे समष्टिगत, जब यह शारीरिक आवश्यकताओं के साथ सम्बन्ध रखता है अर्थात् वह व्यवहार जो मनुष्य शरीर की माँग के लिए अपनाता है, वह सभ्यता कही जाती है। इसे 'सिविलाईज़ेशन' कहते हैं। यह क्रूर हो सकती है और नम्र भी हो सकती है, परन्तु जब तक इसका सम्बन्ध शरीर की माँगों के साथ होता है, यह सभ्यता के अन्तर्गत ही है।

परन्तु वह व्यवहार, जिसका सम्बन्ध आत्मा एवं मानसिक तुष्टि से होता है, संस्कृति से सम्बन्ध रखता है।

इसके उपरान्त मधु ने कुछ उदाहरण दिए। उसने बताया, मनुष्य की इच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादिष्ट भोजन की रहती है और इसके लिए वह अनेकानेक उपायों का आविष्कार करता है जिनसे वह भोजन को स्वादिष्ट बनाता रहता है। इन स्वादिष्ट भोजनों का निर्माण सभ्यता में उन्नति कही जाती है।

परन्तु भोजन का प्रभाव मन और आत्मा पर भी होता है। अत: सादा, सस्ता, पौष्टिक और मानसिक विकार उत्पन्न न करे, ऐसे भोजन का प्रबन्ध करना 'कलचर' के साथ सम्बन्ध रखता है।

'सभ्यता में उन्नति संस्कृति में भी उन्नति होगी ?' कहना कठिन है। वैदिक शिक्षा में दोनों को साथ-साथ चलाने का यत्न किया हुआ है।

उदाहरण के रूप में स्त्री से सम्बन्ध शरीर की माँग है, परन्तु उससे विवाह कर उसे गृहस्थ चलाने, परिवार की परम्परा स्थित रखने और पारिवारिक सुकृतों के करने में सहायक बनाना संस्कृति का काम है।

संस्कृति भी उन्नति अथवा अवनति की ओर ले जाने वाली हो सकती है। किसी जाति की संस्कृति यह भी हो सकती है कि विजातियों को, भले-बुरे का विचार छोड़कर, विनष्ट किया जाए, जिससे अपनी संस्कृति उन्नति कर सके। यह है तो सांस्कृतिक कार्य, परन्तु यह दुष्परिणाम उत्पन्न करने वाला है।

वैदिक संस्कृति व्यक्ति और जाति को उन्नत करने वाली थी। विवाह में एक-पत्नी का वचन और यह सम्बन्ध सन्तानोत्पत्ति करने, यज्ञमय जीवन व्यतीत करने और पूर्वजों के ज्ञान-विज्ञान और सुकृतों को जारी रखने के लिए है।

सरल, सस्ता और स्वच्छ जीवन चलाना इसलिए नहीं कि दूसरे जीवन के लिए योग्यता का अभाव है, वरन इसलिए कि सरल जीवन आत्मोन्नति और मन पर अच्छे एवं स्थायी संस्कार डालने के लिए है। वे एक श्रेष्ठ संस्कृति के लक्षण हैं।

अन्त में मधु ने यह बताया कि मैंने यह नहीं कहा कि अच्छी बातें अन्य संस्कृतियों में हैं ही नहीं। मैं तो आज वैदिक संस्कृति पर ही व्याख्यान दे रहा हूँ, इस कारण इसकी श्रेष्ठता के विषय में बताते हुए मैंने किसी दूसरी सभ्यता की निंदा नहीं की।

व्याख्यान सुनने वाले मधु के बोलने की शैली और युक्ति पर मन्त्र-मुग्ध बैठे रहे। व्याख्यान के उपरान्त एक घण्टा-भर प्रश्नोत्तर चलते रहे।

इसी प्रकार वैदिक संस्कृति में ह्रास के विषय पर दूसरा व्याख्यान था। इसमें उसने बताया कि ह्रास तो तब होने लगता है जब जाति की मान्यताओं में लचक विलुप्त होकर कठोरता आ जाए। यह कठोरता महाभारत युद्ध के पहले से ही आरम्भ हो गई थी। इस लचक का अभाव ही उस युद्ध में कारण हुआ था और युद्ध ने इस स्वभाव में परिवर्तन न कर इसमें वृद्धि ही की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर ह्रास आरम्भ हुआ। इस ह्रास को रोकने के लिए बौद्ध और जैन मतों की स्थापना हुई। परन्तु वे इस ह्रास को रोक नहीं सके। इसके विपरीत ये मत भी संस्कृति और सभ्यता में अन्तर न समझ सभ्यता को ही दिशा दे सके, संस्कृति को छू नहीं सके।

बौद्धों के उपरान्त वैदिक मत की स्थापना हिन्दू धर्म का नाम लेकर की गई, परन्तु हो नहीं सकी। बौद्ध और जैन मत की छाप हिन्दुस्तानी समाज से मिट नहीं सकी और पूर्ण संस्कृति सभ्यता का रूप हो गई, अर्थात् कर्मकाण्ड में बदल गई।

यज्ञोपवीत दाहिने हाथ के नीचे पहनना धर्म हो गया, परन्तु यज्ञोपवीत के पहनने पर लिये गए व्रत का पालन गौण हो गया, यह ह्रास है।

इस ह्रास में विदेशी राज्यों का प्रभाव मधु के तीसरे व्याख्यान का विषय था।

:: 7 ::

तीनों दिन माणिक आता रहा, परन्तु वह यह समझ कि पिछली बैचों पर होने के कारण वह देखा नहीं जा रहा, वह मधु से मिला नहीं। तीसरे दिन मधु ने स्वयं उसे बुला लिया।

माणिक ने समझा कि वह उससे अपने पाँच पौण्ड दिए ऋण को माँग रहा है, वह समीप आ कहने लगा, ''मैं आज 'डीन' साहब के निवासस्थान पर आपकी वस्तु दे जाऊँगा।''

''कौन-सी वस्तु?''

माणिक प्रोफेसरों तथा अपने सहपाठियों के सामने कहना नहीं चाहता था कि उसने उससे पाँच पौंड का ऋण लिया हुआ है। इस कारण उसने कह दिया, ''मैं वहाँ आकर ही बताऊँगा।''

''ठीक है। तुम तीन दिन से आते रहे हो, परन्तु व्याख्यान समाप्त होते ही भाग जाते हो। आज मैंने ही तुमको बुलाना उचित समझा है।''

माणिक कुछ उत्तर नहीं दे सका। वह चुपचाप खड़ा रहा। मधु ने उसे अपने साथ ही 'डीन' साहब के मकान पर ले जाना उचित समझा। 'डीन' साहब की गाड़ी में उसने माणिक को भी बैठा लिया।

वहाँ माणिक से एक घण्टा-भर बातें होती रहीं और मधु का विचार था कि वह वहाँ पर अपना समय व्यर्थ गँवा रहा है। वह श्रेणी में पढ़ाई करता था, परन्तु घर पर वह उस पढ़ाई के अतिरिक्त कुछ भी अध्ययन नहीं करता था। माणिक का कहना था कि इस सबके लिए समय नहीं मिलता।

''प्रातः किस समय जाग जाते हो?''

''आठ बजे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और सोते किस समय हो?"

"रात के बारह-एक बजे।"

"इतनी रात तक क्या करते रहते हो?"

"मित्रों और साथियों से बातें।"

"किन विषयों पर?"

"एक हो तो बताऊँ।"

मधु को यह व्यवहार पसन्द नहीं आया, परन्तु यह विचारकर कि उसका क्या अधिकार है कि वह उसको डाँटे, वह चुप कर रहा।

जब माणिक जाने लगा तो उसने पाँच पौंड का एक नोट देना चाहा। मधु ने कह दिया, "वह तो तुम्हारे पापा ने भेज दिया है।"

"तो आपने उनसे माँगे थे?"

"नहीं। उन्होंने स्वयं ही भेज दिए हैं। मैं समझा कि तुमने उनको लिखा होगा।"

"मैंने तो नहीं लिखा।"

"तुम्हारे किसी मित्र ने लिख दिया होगा।"

माणिक को सन्देह हो गया कि सैलिस्बरी ने लिखा होगा। परन्तु वह 'ऑक्सफोर्ड' विश्वविद्यालय में भरती हुआ था। इस कारण इस बात की जाँच नहीं हो सकी। इस पर उसने विचार कर लिया कि मधु को रकम मिल गई है, अतः उसने 'नोट' पुनः जेब में रख लिया।

इसके भी तीन वर्ष उपरान्त माणिक एक दिन पुनः लन्दन की सड़कों पर अकेला घूमता मिला। मधु ने उसे पैदल चलते देखा तो उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। माणिक ने उसे पहचाना तो पूछ लिया, "आप अभी भी यहाँ हैं?"

"हाँ। मगर अब यहाँ से जी ऊब गया है और मैं अमेरिका के मार्ग से वापस हिन्दुस्तान जा रहा हूँ।"

"और वह औरत कहाँ है?"

"कौन औरत?" मधु ने न समझने का बहाना करते हुए पूछ लिया।

"मेरा मतलब है आपकी पत्नी। मैं नाम भूल गया हूँ।"

"वह आज कुछ बीमार है। घर पर है।"

"तो मैं आपके घर पर आपको मिल सकता हूँ क्या?"

"क्या काम है?"

"उनसे मिलूँगा।"

मधु को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि माणिक मद्य पिए हुए है, इसी कारण अंट-शंट बात कर रहा है। इस पर भी उसने मुस्कराते हुए कहा, "तब तो उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछे बिना मैं तुमको वहाँ नहीं बुला सकता। कदाचित् वह तुमसे मिलना पसन्द नहीं करेगी।''

''क्यों ?''

''इसलिए कि तुम शराब पीने लगे हो। उसे शराबी लोग पसन्द नहीं हैं।''

''तो मैं उस दिन बिना पिए आऊँगा।''

''तुम लन्दन में क्या कर रहे हो ?''

''मैं स्नातक की डिग्री प्राप्त कर अब बैरिस्टर बनने का यत्न कर रहा हूँ।''

''तो ठीक है। हिन्दुस्तान में चलकर मिलेंगे। मैं अपने मन की एक बात बता देना चाहता हूँ कि तुमने अपने जीवन के छः वर्ष व्यर्थ गवाएँ हैं और अपने पिता के तीस-चालीस हज़ार रुपये नाली में बहा दिए हैं।''

''तो आपको इससे क्या ?''

''कुछ नहीं। केवल तुम्हारे यहाँ आकर कुछ भी न सीखकर लौटने पर शोक हो रहा है।''

''परन्तु मैं तो आपका कुछ भी नहीं हूँ।''

''ठीक है। 'गुडबाई'।'' मधु ने कहा और उसका मार्ग छोड़ अपने मार्ग पर चल दिया।

रात को मधु ने मीना को माणिक के विषय में बताया तो उसने कह दिया, ''आपकी इस लड़के में रुचि देख मुझे विस्मय हो रहा है।''

''इसमें विस्मय करने की भला क्या बात है ? मैंने लंदन म्यूजियम में सैकड़ों वे पुस्तकें भी पढ़ी हैं जिनको मैं अशुद्ध, मिथ्या और मानवों के लिए अहितकर मानता हूँ, परन्तु उनको पढ़ा है और उनसे भी कुछ-न-कुछ सीखा है।

देखो, मीना! वेद में यह आया है—

अन्ध तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँ-रताः ॥ 9 ॥
अन्यदेवाहुर्विद्ययान्यदाहुरविद्यया।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥10 ॥
विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते ॥ 11 ॥

''इसका अभिप्राय यह है कि जो अविद्या की उपासना करते हैं, वे घोर अन्धकार में पड़ जाते हैं और वे जो केवल विद्या में ही रमते हैं, वे भी उसी अन्धकार में जाते हैं।

''विद्या का फल पृथक् है और अविद्या का पृथक्। बुद्धिमान लोग इन दोनों के विषय में जानें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''विद्या और अविद्या दोनों को हम साथ-साथ जानें। अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से हम अमृत को प्राप्त करते हैं।

''अभिप्राय यह है कि सत्य और अमृत दोनों का ज्ञान ही मनुष्य को इस भवसागर से पार कर सकता है। अमृत को जानकर उसका त्याग करने के लिए और सत्य को जानकर उसको ग्रहण करने के लिए।

''देखो मीना, तुम्हें मैं इस मूढ़मति की एक कथा बताता हूँ। एक दिन तुम्हारे पिताजी संगम-तट पर बैठे भगवद्भजन कर रहे थे कि एकाएक उनको दूर प्रभाती तारा कुछ फूल रहा प्रतीत हुआ। तदनन्तर वह फटा और उसमें से प्रकाश की एक रेखा निकली। वह इस पृथ्वी की ओर आती दिखाई दी। वह रेखा आकर नदियों के जल में समा गई। कुछ ही कालोपरान्त वह रेखा एक तेज-विहीन काला-सा बिन्दु बन नदी के जल से निकली और नगर की ओर चल दी। वह बिन्दु मुक्तानन्द के मकान में विलुप्त हो गया। उसके नौ मास उपरान्त माणिक का जन्म हुआ था।

''तब से ही मैं इस बालक के इतिहास में रुचि लेने लगा हूँ। पंडितजी का विचार था कि यह एक पुण्यात्मा थी जो अपने सब पुण्य-कार्यों के क्षीण होने से पूर्व, प्रकृति के भोग की लालसा में इस भूमण्डल पर आकर उत्तीर्ण हुई है।

''ऐसा विचार है कि यह अन्धकार में प्रवेश पा गया है और उस अन्धकार को अपने चारों ओर फैलाने में योग्य होगा। इसमें बुद्धि का अंश बहुत कम है। इसका मन बहुत प्रबल है। मन पर अविद्या के कारण सब प्रकार के दूषित संस्कार एकत्रित हो रहे हैं। वे न केवल इसका अपना सर्वनाश करेंगे, वरन उन सबका भी नाश कर देंगें जो इसके सम्पर्क में आएँगे।

''मैं इस आत्मा की यात्रा का अध्ययन कर रहा हूँ। ऐसे ही जैसे मैक्समूलर, ग्रिफिथ इत्यादि मूढ़ विद्वानों की कृतियों का अध्ययन करता रहता हूँ।''

इस वक्तव्य से मीना के मन में भी माणिक के विषय में जानने की उत्सुकता उत्पन्न हो गई।

उन दिनों मधु अपना लेखन-कार्य करता थक गया था और वह पुनः कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होना चाहता था। लन्दन में रहते हुए उसने इस दिशा में कुछ प्रयत्न किया था। वह समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में लेख छापने के लिए भेजता रहता था। उनसे उसे कुछ पारिश्रमिक भी मिल जाता था, परन्तु उसे ऐसा समझ आया कि यह सब वहाँ पर कचालू के पत्ते पर पानी की बूँद के समान है। साथ ही उसको अपना कार्य-क्षेत्र अपने देश में दिखाई दिया।

लन्दन में उसका सम्पर्क एक हिन्दुस्तानी विद्वान श्यामजी कृष्ण वर्मा से भी हुआ था। श्यामजी कृष्ण वहाँ एक पत्र 'इण्डियन सोशलोजिस्ट' निकाल रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु ने उनके पत्र में भी कुछ लेख छपने को दिए थे। उनमें से कुछ ही छप सके थे। इस पर भी 'हैम्पस्टैड' में श्रीयुत वर्मा के 'इण्डिया हाउस' के रहने वालों से मधु का सम्पर्क बन गया। उनमें एक युवक बैरिस्टर विनायक दामोदर सावरकर से भी भेंट हुई। ये लोग भारत में जा नहीं सकते थे। उन्होंने वहाँ कई प्रकार के आतंकवादी आन्दोलन चलाए थे और भारत सरकार उनको पकड़ने के लिए उत्सुक थी।

मधुमोहन लन्दन छोड़ देने से पहले इन लोगों से मिला। इस आन्दोलन के प्राय: सब-के-सब सदस्य वहाँ उपस्थित थे और भारत में क्या काम किया जा सकता है, इस पर विचार-विनिमय हुआ।

परन्तु ये लोग काम करने की विधि पर सहमत नहीं थे।

सावरकर इत्यादि तो साहित्य-निर्माण में विश्वास रखते थे, परन्तु एक मैडम कामा थी, जो एक पारसी समुदाय की स्त्री थी। वह मार-काट में विश्वास रखती थी। मधु ने अपने विषय में बता दिया, ''मैं तो जन-जन में मातृ-भक्ति की ज्योति जगाने में विश्वास रखता हूँ। ज्योति जगाने का अभिप्राय यह है कि भारत माँ के मान-प्रतिष्ठा और हित के सम्मुख अन्य सब भावनाओं को गौण मानना।

''मेरी मान्यता यह है कि भारतीयों में चरित्र और बुद्धियुक्त व्यवहार का स्वभाव डाल दिया जाए। संस्कार मनुष्य की बुद्धि को सहायता के बिना कार्य पर लगा देते हैं, परन्तु उन संस्कारों के निर्माण में भी तो बुद्धि की आवश्यकता है।

''बुद्धि से जब भारत में जन-मानस यह मान लेगा कि भारत एक श्रेष्ठ आचार-विचार और ज्ञान-विज्ञान रखने वाला देश है, तो फिर उसकी आस्था भारत माँ को स्वतन्त्र करने में बढ़ जाएगी और यदि बिना भारत की प्राचीनता और श्रेष्ठता का विचार मन पर अंकित किए हमने केवल स्वतन्त्रता-आन्दोलन आरम्भ किया तो भारत राजनीतिक रूप से स्वतन्त्र हो जाने पर भी मानसिक रूप से विदेशियों के अधीन बना रहेगा।''

इस विश्लेषण पर सब उपस्थित लोग सहमत नहीं थे। सावरकर ने दोनों विचारों का समन्वय कर दिया और कहा, ''यह ठीक है कि भारतीयों का प्राचीन गौरव और वैभव जनता के मन में उत्पन्न होना चाहिए, परन्तु राजनीतिक दासता से मुक्ति पाना भी तो जन-मानस और प्राचीन गौरव और उत्कृष्टता का अनुयायी बनाना ही होगा। अत: दोनों काम साथ-साथ चलने चाहिएँ। दोनों एक-दूसरे के पूरक रहेंगे तो ठीक है।''

मधुमोहन देख रहा था कि ये क्रान्तिकारी स्वतन्त्रता का भिन्न-भिन्न चित्र मन में रखते हैं। इनमें एक मुसलमान बर्कतुल्ला था। वह तो मधुमोहन की बातों पर नाक चढ़ा रहा था। मैडम कामा इस वाद-विवाद को व्यर्थ समझती थी। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहती थी, यदि सबके ईसाई बन जाने पर भी भारत को स्वतन्त्रता मिल सकती है तो ले लेनी चाहिए।

मधु ने अपने विचारों को और विस्तार से समझाते हुए कहा, ''यह ठीक है कि स्वतन्त्रता मुख्य है, परन्तु शरीर को स्वतन्त्र कर लेने पर भी यदि मन और बुद्धि पर विदेशियों की घटिया जीवन-मीमांसा की महिमा बनी रही तो स्वतन्त्रता का सुख-भोग नहीं हो सकेगा और पुनः हम दासता की शृंखलाओं में बँध जाएँगे।

''जहाँ तक बम-पिस्तौल द्वारा आतंक फैलाने में प्रयोग का प्रश्न था, मधु इसका विरोधी नहीं था, परन्तु वह समझता था कि ये कार्य कभी भी स्वतन्त्रता प्राप्त कर उसका भोग जन-जन को नहीं करा सकेंगे।

''ये कार्य विद्युत के प्रकाश की भाँति क्षणिक प्रभाव उत्पन्न करने वाले हैं। इस प्रकाश में चेतना-प्राप्त व्यक्ति यदि स्थायी रूप से प्रकाश का प्रबन्ध नहीं करेंगे तो न स्वराज्य प्राप्त होगा और न ही इसके प्राप्त होने पर सुख-सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

''इन आतंकमय कार्यों के साथ जन जागृति का कार्य भी करना आवश्यक है और मैं इसी के निमित्त भारत जा रहा हूँ।''

:: 8 ::

मधु और मीना दो प्राणी भारत से आए थे और लौटे थे तीन। उनके एक लड़का इंग्लैण्ड में हुआ था और अब वह दो वर्ष का हो चुका था। इस लड़के का नाम उन्होंने गौरांगमोहन रखा था। मधु का पहला पुत्र हरिमोहन, अभी एक वर्ष का ही था कि मधु पकड़ा गया था। जब ये भारत छोड़कर आए थे तो हरिमोहन छः वर्ष की आयु का था। मधु कैद के बाद केवल दो मास ही हरिमोहन के साथ रहा था और वह पिता को भलीभाँति जान भी नहीं सका था कि उसे बड़ी माँ के पास छोड़ माता-पिता दोनों विलायत चले आए थे। इस समय हरिमोहन तेरह वर्ष का हो चुका था।

हरिमोहन माता-पिता को पत्र लिखा करता था। पहले बड़ी माँ के बताने पर और पीछे स्वेच्छा से। अब वह स्कूल की सातवीं श्रेणी में पढ़ता था और बहुत अच्छी हिन्दी और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी लिखने लगा था।

उसका अन्तिम पत्र आया था और उसने लिखा था, ''माताजी! यदि आप और पिताजी यहाँ नहीं आ सकते, तो मैं तो वहाँ पहुँच सकता हूँ। हम कल नगर में गए थे और वहाँ गुरुजी से भेंट हुई थी। वे कहते थे कि उनका अनुष्ठान समाप्त हो गया है और वे अब कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होंगे। वे नगर के एक कॉलेज को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय का रूप देना चाहते हैं, उनका विचार है कि इसके लिए दो करोड़ रुपया एकत्रित कर सकेंगे और फिर शीघ्र ही विश्वविद्यालय स्थापित हो सकेगा। सरकार से वे सहायता लेने की इच्छा रखते हैं, परन्तु सरकार सहायता तभी देगी जब इतना धन पहले एकत्रित हो जाएगा। वे कहते हैं कि पिताजी के लिए अब कार्य-क्षेत्र खुल गया है और उनको वापस आ जाना चाहिए।

''और मैं कहता हूँ कि मैं अपने भाई गौरांग को देखने के लिए लालायित हो रहा हूँ। बड़ी माँ कहती हैं कि मैं भी तो गोरा हूँ; परन्तु आपने उसका नाम गौरांग रखा है। इससे उसे देखने की अभिलाषा और भी उग्र हो गई है।''

इस पत्र ने मधु के मन में भारत लौटने के विचार को अन्तिम रूप दे दिया और उसने जाने का कार्यक्रम बना लिया।

मधु ने 'केबल' कर दिया—''भारत लौट रहा हूँ। शीघ्र ही पहुँचने की तिथि लिखूँगा।''

इसके उपरान्त सब प्रबन्ध होने लगे। वे तीनों प्राणी अमेरिका, जापान और इण्डोनेशिया होते हुए भारत आ गए। चन्द्रावती, हरिमोहन, सगुणी और भुवनचन्द्र राजधानी में बन्दरगाह पर स्वागत के लिए पहुँचे हुए थे।

सामान उतरवाते हुए और चुंगी से पास करवाने में एक घण्टा से ऊपर लग गया। इस सब समय वे वहाँ बैठे टी-स्टाल पर चाय लेते रहे।

सबसे प्रथम समाचार जो मधुमोहन को घर का मिला, वह रेशम का अपने पति श्रीचन्द्र से झगड़े का था। राजधानी के एक होटल में ठहरे हुए चन्द्रावती बता रही थी, ''श्रीचन्द्र ने रेशम को पीट-पीटकर घर से निकाल दिया है और उसके बच्चे रघुवीर को अपने पास रख लिया है। रघुवीर का संरक्षक बन वह उस ज़मींदारी का प्रबन्ध कर रहा है, जो हमने उसे दी थी। रेशम हमारे घर में रहती है और उसको उसमें से एक पैसा भी नहीं देता।

''वकीलों से पूछा है और वे कहते हैं कि रघुवीर का वह स्वाभाविक संरक्षक है। रघुवीर अभी बीस वर्ष की आयु का है और एक वर्ष में संज्ञान माना जाएगा। परन्तु यह समाचार मिला है कि उसे शराब और वेश्यागमन के दुर्व्यसनों में डालकर उसकी आयु समाप्त की जा रही है। श्रीचन्द्र ने दूसरा विवाह कर लिया है। इस विवाह से उसके एक लड़का हुआ है। रेशम अपनी सब मुसीबतों का कारण तुमको मानती है।''

इस समाचार के साथ दूसरा समाचार पंडित भुवनचन्द्र ने दिया। पंडितजी ने बताया, ''पंडित शशिमोहनजी ने एक बहुत बड़ा विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजना बना ली है और इस समय उसके लिए धन एकत्रित करने गए हुए हैं। वे राजस्थान में भ्रमण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनुभव और तपस्या के बल पर वे अपने कार्य में सफल होने की आशा करते हैं।"

"और तुम बताओ हरि! तुम क्या कहना चाहते हो?" मधु ने हरिमोहन से पूछा।

"भापा! मैं तो देख रहा हूँ कि जिसको आपने गौरांग नाम दिया है, वह गौरांग है भी अथवा नहीं?"

"तो क्या दिखाई दिया है?"

"रंग मुझसे किंचित् मात्र ही उज्ज्वल है, परन्तु कुछ बुद्धू प्रतीत होता है।"

"क्यों गौरांग!" मधु ने तीन वर्ष के बच्चे को सम्बोधन कर पूछ लिया, "तुम बुद्धू हो?"

"भापा! बुद्धू क्या होता है?"

"जिसे खाने को मिठाई और पीने को 'फ्रूट ज्यूस' मिले।"

"वह तो मैं हूँ।"

सब हँसने लगे। गौरांग हँसने का अर्थ न समझ सबका मुख देखने लगा। अब उसने पूछ लिया, "और यह कौन है जो मुझको बुद्धू कहता है?"

"तुम्हारा बड़ा भाई है। जैसे वहाँ नीला का भाई जोन था।"

"ओह! तो मेरा भी भाई है। मगर यह तो जोन से बहुत बड़ा है।"

"हाँ! अब यह तुमको सैर कराने ले जाया करेगा और तुमको खेल-तमाशे दिखाया करेगा।"

"क्यों? माँ क्यों नहीं ले जाएगी?"

"इसलिए कि तुम बुद्धू हो।"

"तो मेरा नाम बुद्धू क्यों नहीं? गौरांग क्यों है?"

"इसलिए कि तुम गोरे लोगों में उत्पन्न हुए थे और अब बुद्धू हो गए हो। वह इस कारण कि तुम बुद्धूओं में आ गए हो।"

इस पर गौरांग बहुत प्रसन्न दिखाई देने लगा। सब फिर हँसने लगे।

अपने नगर में पहुँच मधु ज़मींदारी के मकान में एक सप्ताह तक रहा। यहाँ उसको पता चला कि नीलकण्ठ मोरे भी वहीं रहता है। 'व्यवस्था' का छापाखाना जब्त हो गया था, परन्तु मोरे ने दावा कर दिया कि यह छापाखाना मधुमोहन की सम्पत्ति नहीं है। यह उसकी निजी सम्पत्ति है, इस कारण यह जब्त नहीं हो सकता। चार वर्ष के झगड़े के उपरान्त छापाखाना छूट गया, परन्तु उसमें से बहुत-सी वस्तुएँ चोरी हो गई थीं और उनका दाम वसूल करने में तीन वर्ष और लग गए। जब यह सब-कुछ वापस मिला तो मोरे ने वह सब-कुछ चन्द्रावती को लौटा देने का प्रस्ताव रख दिया। चन्द्रावती जानती थी कि छापाखाना के दाम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधिक तो उसको सरकार से छुड़ाने में व्यय हो चुका है और मोरे का सात वर्ष का परिश्रम पृथक् है। इस कारण उसने छापाखाना मोरे से वापस नहीं लिया।

नीलकण्ठ वही छापाखाना 'व्यवस्था' के नाम से अभी भी चलाता था। 'व्यवस्था' समाचारपत्र तो बन्द हो गया था और मोरे जो कुछ पैदा करता था अपना निर्वाह कर शेष को छापाखाने को विस्तार देने में लगा रहा था।

पिछले तीन वर्ष से छापाखाना उत्तरोत्तर उन्नति कर रहा था। छापाखाना स्टीम इंजन से चलाया जाने लगा था और इसमें पुस्तकें छापने और जॉब का काम होता था। छपाई की तीन मशीनें लग चुकी थीं और मोरे की योजना छापाखाने को और अधिक विस्तार देने की थी।

मधु मोरे से मिला। मोरे ने बताया, "जब आप मांडले से लौटे थे, मैं राजधानी में ही था। इस कारण आपको मिल नहीं सका। मैं अपने छापाखाना को छुड़ाने के मुकद्दमे में लीन था।"

चरणसिंह अब नगर में दूसरे दर्जे का वकील हो गया था। मुक्तानन्द अभी भी चोटी पर था। प्राय: सब बड़े-बड़े मुकद्दमों में एक ओर मुक्तानन्द और दूसरी ओर चरणसिंह होता था। चरणसिंह ने भी अपनी एक कोठी बनवा ली थी। हरिहरसिंह की प्रैक्टिस शून्य के बराबर थी और वह अपने पुराने मकान में ही रहता था।

इंग्लैंड से शिक्षा प्राप्त कर आए सरस्वती के पति ने सरस्वती को घर से निकाल दिया था। उसने एक एंग्लो-इण्डियन लड़की से विवाह कर लिया था। सरस्वती का लड़का अपने पिता के पास था। सरस्वती अपने पिता हरिहरसिंह के साथ रहती थी। पिता और बहन के खर्चे का बहुत-सा भाग चरणसिंह ही देता था।

मधु चरणसिंह को मिलने गया तो सरस्वती भी वहाँ आई हुई थी। जब सरस्वती की पूर्ण कथा मधु ने सुनी तो उसने पूछ लिया, "सरस्वती बहन! तुमको तुम्हारा पति क्या खर्च देता है?"

"वह स्वेच्छा से देते नहीं और मैंने माँगा नहीं। भैया ने पूछा था कि क्या दावा किया जाए? तो मैंने इन्कार कर दिया है।"

"क्यों?"

"कंगलों से माँगने में मुझे अपनी हेठी प्रतीत हुई थी। मैं इस प्रकार का दावा करने में अपना अपमान मानती हूँ। ईश्वर की कृपा है कि भैया मुझको बिना माँगे ही दे देता है।"

मधु जानता था कि सरस्वती भावुक लड़की है। उसे स्मरण था कि जब उससे विवाह की बातचीत चली थी तो कैसे वह इस भावना के आश्रय कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे भाई मानती है, विवाह अस्वीकार कर बैठी थी। अतः उसने सरस्वती की भावना की प्रशंसा की और कहने लगा, "मैं समझता हूँ कि तुम्हारा व्यवहार ठीक ही है। यदि किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताना। चरणसिंह के अतिरिक्त भी तुम्हारा एक भाई है।"

"हाँ दादा! जानती हूँ। आवश्यकता होगी तो मीना भाभी से कह दूँगी।"

"सुनाओ चरण?" मधु ने अब ध्यान मित्र की ओर कर पूछ लिया, " 'संसार' कैसे चल रहा है।"

"'संसार' की तीन टाँगें टूट चुकी हैं। चौथी भी दुर्बल पड़ती जा रही है। एक दिन धम्म से 'संसार' धराशायी हो जाएगा।"

"चौथी टाँग कब तक टूटने वाली है?"

"दादा! नजूम लगाना तो कठिन है। इस पर भी देश और जाति लड़खड़ा रही है। नेतागीरी मुक्तानन्द जैसे लोगों के हाथ में है और जो कुछ वह है तुम जानते ही हो।

"इस समय मुक्तानन्दजी भी जाति के एक नेता बन गए हैं। इन्होंने बाल गंगाधर तिलक पर जब मुकद्दमा चल रहा था तो 'बार कौंसिल' में उसके विपरीत प्रस्ताव पास करा दिया और यह प्रकट किया कि अंग्रेज़ी सरकार हिन्दुस्तान की माई-बाप है।

"अपने प्रान्त की राजनीतिक कांफ्रेंस हुई थी। मुक्तानन्दजी प्रधान थे और अध्यक्षीय भाषण में इन्होंने बंगाल के क्रान्तिकारियों को गालियाँ दी हैं।

"क्रान्तिकारी बेचारे पहले ही सरकारी दमन-चक्र के शिकार हो रहे हैं। उनको 'मिसगाइडिड हिन्दू रिलिजस-फूल्ज़' का नाम दिया गया है। सरकार को तिलक और सावरकर को पकड़कर कैद कर लेने पर बधाई दी गई है।

"मैं उस कांफ्रेंस में उपस्थित था। मैंने प्रधान के भाषण के विपरीत बोला था। मुझे जूता मारा गया और भाषण देने नहीं दिया गया।

"ये कहे जाने वाले नरम दल के लोग कहे जाने वाले गरम दल वालों के पकड़े जाने पर बगलें बजा रहे हैं और सरकार के भारत में बने रहने का प्रस्ताव पास करा रहे हैं।

"अपने घर की भी सुन लो। करण इस समय चौदह वर्ष का है और एक विशेष मनोवृत्ति बना बैठा है। वह कहता है कि वह विलायत में जाकर पढ़ेगा। उसको हिन्दुस्तानी अध्यापकों की पढ़ाई पसन्द नहीं।"

"अरे! वह पढ़ाई के विषय में क्या जानता है?"

"कहीं उसके एक मास्टर ने इंग्लैंड के स्कूलों का वृत्तान्त बताया तो वह पढ़ाई छोड़ बैठा। मैं उसके वहाँ प्रवेश पाने के लिए पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चरण! उसे यहाँ किसी ईसाई स्कूल से 'सीनियर कैम्ब्रिज' की परीक्षा पास करने को कहो। तब उसे वहाँ प्रवेश मिल जाएगा।"

"दादा! उसे तुम समझाओ। मैं तो एक बात कर रहा हूँ। अपने विचार से ईमानदारी से यत्न कर रहा हूँ कि उसे वहाँ कहीं प्रवेश मिल जाए। यदि नहीं मिला और यहाँ वह पढ़ा नहीं, तो उसको इन्द्रा के पिता के अधीन मुन्शीगीरी सीखने के लिए लगा दूँगा।"

:: 9 ::

परन्तु सबसे विकट समस्या थी रेशम और उसके लड़के की। रेशम को स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि रघुवीर उस जीवन में, जिसमें वह डाल दिया गया है, चार-पाँच वर्ष से अधिक जी नहीं सकता।

मधु ने पूछ लिया, "उसके इस प्रकार के जीवन के लिए धन कौन देता है।"

"उसका पिता देता है। आपकी एक-तिहाई ज़मींदारी से बीस सहस्र के लगभग नकद आय होती है और उसमें से ही उसके लिए व्यय किया जा रहा है। सरमा में अब नित्य राग-रंग और मद्य का सेवन होता है। रघुवीर ने अपने साथी भी ढूँढ लिये हैं और वे उसकी सब प्रकार के अनाचार में सहायता कर रहे हैं।"

मधु ने सबसे प्रथम इसी समस्या को सुलझाने का विचार किया।

नगर में एक सप्ताह ठहरने के उपरान्त वह गाँव गया और पहले ही दिन उसने रघुवीर को बुलाने का यत्न किया। ज़मींदारी के जमादार को भेज उसे बुलाया तो जमादार ने आकर बताया, "बाबू साहब! वह ग्यारह बजे सोकर उठा था और जब मैंने उसके सम्मुख उपस्थित होकर आपका सन्देश दिया तो वह बोला, मैं क्यों मधु मामा से मिलने जाऊँ?

"बाबू साहब! मैंने उनको कहा कि वे आपके मामा हैं और उन्होंने यह ज़मींदारी आपको भानजा होने के नाते दी है। इसी के आश्रय आप यह सब सुख भोग रहे हैं।"

"इस पर वे गुस्से में आकर बोले, उन्होंने जो कुछ दिया है, क्यों दिया है, मैं सब जानता हूँ। इस कारण उनसे कह दो कि मुझसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं।"

मधु विचार कर रहा था कि यह विष बीज वासना के उन्माद में रोपा गया था और इसको विनष्ट न किया गया तो यह पूर्ण वातावरण को विषाक्त कर देगा। इसे शीघ्रातिशीघ्र निःशेष कर देना चाहिए। दूषित बीज को जला डालने के अतिरिक्त कोई उपाय हो नहीं हो सकता।

वह यह सोच रहा था कि इस भयंकर विचार का कोई समर्थन करेगा अथवा नहीं? उसका मन कहता था कि इसमें बाधक उसकी माँ और बहन रेशम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होंगी। वह अपने मन में भी छिपा हुआ एक चोर पाता था। वह जानता था कि रघुवीर उसका पुत्र है। परन्तु यह बुद्धिविहीन व्यक्ति, भूल का परिणाम गाँव के समाज में विष घोल रहा है।

इस पर भी उसने दो काम करने का विचार किया। एक तो वह उसे स्वयं समझाना चाहता था। दूसरे, वह माँ तथा बहन को उसे समझाने का आग्रह करना चाहता था। वैसे वह समझ रहा था कि ये सब उपाय किसी प्रकार का शुभ परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकेंगे।

गाँव में उसके साथ पंडित भुवनचन्द्र और सगुणी भी आए थे। वे अपनी लड़की के साथ कुछ काल तक रहना चाहते थे। साथ ही पंडितजी मधुमोहन को उसके भावी जीवन के विषय में बताना चाहते थे। उनको मकान के एक कक्ष में ठहरा दिया गया था। पंडितजी ने उस कक्ष में अपने पूजा-पाठ तथा भोजन का प्रबन्ध कर लिया था।

दो दिन के विचार के उपरान्त मधु ने रघुवीर के विषय में कुछ निर्णय कर लिया। सबसे पहले वह पंडितजी से ही राय करने उनके निवास-कक्ष में जा पहुँचा।

पंडितजी भोजनोपरांत कुछ विश्राम कर रहे थे कि मधु पहुँचा। मधु के वहाँ आते ही पंडितजी ने सगुणी को कहा, ''तुम ज़रा दूसरे कमरे में चली जाओ, मधु पृथक् में बात करने आया है।''

सगुणी उठकर चली गई। उसके जाते ही मधु ने पूछ लिया ''तो पंडितजी! आप जब यह जानते हैं कि मैं आपसे पृथक् में बात करने आया हूँ। आप यह भी जान गए होंगे कि मैं किस विषय पर बात करने आया हूँ?''

पंडित भुवनचन्द्र मुस्कराते हुए बोले, ''तुमको कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। मैं रेशम और उसके लड़के के विषय में सब जानता हूँ। मुझे यह भी स्मरण है कि मैंने ही तुमको उससे बचने का संकेत किया था। संगम घाट से आते हुए उस बात को, जो आज से इक्कीस वर्ष पूर्व हुई थी, मैं भूल नहीं सकता।

''मैं आज तुम्हारे भविष्य के विषय में विचार करने लगा तो मैंने देखा कि तुम्हारा भानजा रघुवीर तुम्हारे मार्ग में बाधा बन रहा है। इस पर मैं उसके विषय में विचार करने लगा। मुझे उसका अन्त स्वयं हो रहा दिखाई देता है।

''देखो, मधु! इस समय वह इस षड्यन्त्र में संलग्न है कि तुमसे इस बात का बदला ले कि तुम उसके बाप क्यों बने हो?''

पंडितजी ने कुछ ठहर और विचार कर कहा, ''वह इस बात को अभी से अपने साथियों और मित्रों में विख्यात कर रहा है कि तुम अपनी बहन रेशम से अनुचित सम्बन्ध रखते हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आपसे राय करने आया हूँ कि इसका क्या किया जाए? वह हमारे परिवार का अंग है। माँ ने और मैंने अपने बराबर का ज़मींदार बनाने के लिए उसे अपने बराबर सम्पत्ति दे दी है। सम्पत्ति तो वह बेच सकता नहीं। हाँ, उसकी आय से वासनालिप्त हो अपनी हत्या कर लेगा। परन्तु उससे पहले वह क्या अनर्थ कर जाएगा, मैं अनुमान ही लगा सकता हूँ।"

"देखो, मधु! वह मरेगा। किसी अन्य के हाथ से मरेगा। इसकी हत्या करने वाला हाथ उठा हुआ है। वह यदि उस पर अभी तक पड़ा नहीं तो तुम्हारे तथा तुम्हारी माताजी के भय के कारण ही है।

"यदि उस हाथ का किंचित्मात्र भी यह पता लग जाए कि तुम लोग उसके जीने-मरने में रुचि नहीं रखते तो वह उसका काम पूर्ण कर देगा।"

"मुझे क्या करना चाहिए?"

"तुम्हारी माँ और बहन मिथ्या मोहवश तुमको अपने मन की बात करने नहीं देंगी। मैं समझता हूँ कि वे भूल कर रही हैं।"

"मैं उससे मिलकर एक बार उसे समझाना चाहता हूँ।"

"जा सकते हो, परन्तु जैसे कृष्ण का दुर्योधन को समझाने का प्रयास विफल गया था, वैसे ही तुम्हारा प्रयास भी विफल जाएगा। तुमको वहाँ अपनी रक्षा का प्रबन्ध करके जाना चाहिए। तुम कृष्ण की भाँति योगी तो हो नहीं। इस कारण तुमको अपने ढंग से प्रबन्ध करना होगा।"

मधु पंडितजी की इस बात पर विचार करने लगा कि वह कौन सा हाथ है जो उसकी हत्या के लिए तैयार है, परन्तु उससे और माताजी से डरता हुआ वह रुका हुआ है। जब उसे समझ नहीं आया तो वह अपने विषय में पूछने लगा।

"तुम्हारे भविष्य के जीवन में बहुत-कुछ है, जो अस्पष्ट है। तुम इस बार अण्डेमन में भी भेजे जा सकते हो और तुम एक विख्यात नेता भी बन सकते हो। यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम देशोन्नति का कौन-सा मार्ग अपनाते हो?

"मेरा विचार है कि तुमको कुछ वर्ष अभी और साधना करनी चाहिए, वैसी ही जैसी तुम इंग्लैंड में करते रहे हो। तुमको अपना मार्ग स्वेच्छा से ग्रहण करना चाहिए। अपनी बुद्धि का प्रयोग कर शुष्क समाघोषों के पीछे लगने में तुम्हारा कल्याण नहीं।"

मधु स्वयं भी देख रहा था कि वह अभी अपने जीवन-कार्य का निश्चय नहीं कर सका था। गाँव आने से पहले उसकी मोरे से बातचीत हुई थी और उसने मधु को देश की परिस्थिति से अवगत करा दिया था। उसने बताया था कि लन्दन के 'इंडियाहाउस' की प्रेरणा से देश में एक सौ से ऊपर क्रांतिकारी दल स्थापित हो गए थे। ये प्राय: महाराष्ट्र, बंगाल और पंजाब में थे, कुछ एक बिहार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संयुक्त प्रान्त में भी बने थे, परन्तु प्रायः सब दलों में भय अथवा प्रलोभन से सरकारी मुखबर बन गए और श्री तिलक जी पर मुकद्दमे के उपरान्त एक-एक कर सब दलों के मुख्य कार्यकर्त्ता पकड़कर अण्डेमन अथवा यहाँ की जेलों में डाल दिए गए हैं। इस समय आतंकवादी प्रायः निःशेष हो चुके हैं। नरम दल वाले जनता से डरते हुए तो कह देते हैं कि वे भी स्वराज्य-प्राप्ति को अपना ध्येय मानते हैं, परन्तु सरकारी क्षेत्रों में स्वराज्य-प्राप्ति की नीति का विरोध कर अपनी वफादारी प्रकट कर आते हैं।

"मुक्तानन्द जब अपने प्रान्त की राजनीतिक कांफ्रेंस के अध्यक्ष पद से भाषण देने चला तो पहले गवर्नर की कोठी में पहुँचा। ऐसा सुना गया है कि वह वहाँ से लौटकर बंगाल के क्रांतिकारियों को फिर गद्दार घोषित कर आया है। इसने अपने अध्यक्षीय-भाषण में तिलक आदि को देश में अव्यवस्था फैलाने वाला कहा था।

"इस समय क्रांतिकारी दब गए हैं, सैकड़ों की संख्या में युवक जेलों में अपनी जवानियाँ घोल रहे हैं और सरकार के भक्त आनन्द भोग रहे हैं। 'मिन्टो मारले' सुधारों से मुसलमानों को तो राजनीतिक आन्दोलन से पृथक् कर दिया गया है और काँग्रेस के नरम दल वालों की पीठ ठोंकी जा रही है। जनता विमूढ़ों की भाँति अपने हित-अहित को न समझती हुई कि किंकर्तव्यविमूढ़ मुख देख रही है।"

नीलकंठ द्वारा वस्तुस्थिति के इस विश्लेषण से मधु को अभी तक कोई स्थिर मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था।

गाँव में आकर उसने सबसे पहले रघुवीर के विषय में ही विचार करना ठीक समझा।

:: 10 ::

रघुवीर की अवस्था यह थी कि जब वह अभी माँ के पेट में ही था कि उसके विषय में उसके पिता श्रीचन्द्र को सन्देह हो गया था, परन्तु बात स्पष्ट तो रघुवीर के जन्म पर हुई। रेशम के विवाह के सात महीने उपरांत ही उसका जन्म हुआ था। श्रीचन्द्र के माता-पिता और श्रीचन्द्र स्वयं भी इससे आगबबूला हो गए, परन्तु मोहिनी ने श्रीचन्द्र के पिता को लालच दे कर समझा दिया और कह दिया कि वह रेशम द्वारा उनको चन्द्रावती की पूर्ण ज़मींदारी का अधिकारी बना देगी। उसने अपनी योजना भी बता दी थी।

प्रतीक्षा इस बात की होती रही कि चन्द्रावती के विवाह की साक्षी समाप्त हो जाए अथवा मोल ले ली जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको पाँच वर्ष लग गए। विवाह कराने वाले पुरोहित को खरीद लिया गया था। चन्द्रावती के माता-पिता का देहान्त हो गया और एक अन्य साक्षी था, उसको मरवा डाला गया। जब इस प्रकार की तैयारी हो गई तो मुकद्दमा कर दिया गया, परन्तु मुकद्दमे में श्रीचन्द्र और रेशम की पराजय हुई। रेशम से झगड़ा तो उसी समय होने वाला था, पर चन्द्रावती और मधुमोहन के दानपत्र से एक-तिहाई ज़मींदारी मिली देख बात शान्त हो गई।

इसके कुछ ही पीछे मधु पकड़ा गया और प्रत्यक्ष रूप में जीवनभर के लिए बन्दी बना लिया गया। इस समय श्रीचन्द्र के मन में यह लोभ समाया कि यदि मधु का लड़का हरिमोहन मार डाला जाए तो वह और उसकी पत्नी पूर्ण ज़मींदारी के अधिकारी बन जाएँगे। इस कार्य में मुक्तानन्द ने ही प्रेरणा दी थी। जब मुक्तानन्द जब मीना से अनुचित सम्बन्ध बनाने में असफल रहा और मीना अपने माता-पिता के पास हरिद्वार चली गई, तो मुक्तानन्द तटस्थ हो गया।

मुक्तानन्द की आशा के विपरीत मधु छूट गया और पूर्व इसके कि श्रीचन्द्र किसी प्रकार का षड्यन्त्र चला सके, मधु मीना को लेकर इंग्लैंड चला गया।

अब श्रीचन्द्र के मस्तिष्क में एक अन्य बीज जड़ पकड़ने लगा। वह विचार करने लगा था कि रेशम के लड़के को समाप्त कर ज़मींदारी का मालिक स्वयं बनना चाहिए। अतः उसके मस्तिष्क में यह योजना बन गई कि लड़के को विषय-वासना में इतना रत किया जाए कि वह अकाल मृत्यु का ग्रास हो जाए।

इस समय तक मोहिनी का देहान्त हो चुका था और रघुवीर पन्द्रह वर्ष की आयु का हो चुका था। अतः श्रीचन्द्र उसे साथ लेकर नगर की वेश्याओं के कोठों पर जाने लगा। परिणाम यह हुआ कि रघुवीर वासनारत हो गया। एक वेश्या की लड़की महबूब जान से उसकी दोस्ती हुई तो उसे गाँव में लाकर रख दिया गया। गाँव में बिना लाइसेंस के मद्य तैयार करने की भट्टी लगवा दी और मुफ्त की घटिया शराब का रघुवीर को स्वभाव डाल दिया गया।

इस प्रकार का जीवन चलते हुए तीन वर्ष से ऊपर हो चुके थे। इससे रघुवीर का मस्तिष्क सुन्न होने लगा था और सामयिक सुख-भोग में लिप्त हो वह इंच-इंच कर अपने जीवन को क्षीण करने लगा था।

रघुवीर ने गाँव की छोटी जाति की कई लड़कियों को खराब करना शुरू कर दिया। फिर एक दिन वह पड़ोस के गाँव की एक ब्राह्मण लड़की को उठा लाया। उसे एक सप्ताह-भर अपने घर में रखकर, एक रात ब्राह्मण के द्वार पर मद्य से अचेत छोड़ आया। ब्राह्मण ने अपने घर की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए न तो लड़की के घर से लापता होने की खबर किसी को दी और न ही उसके घर के द्वार पर पड़े मिल जाने की बात फैलने दी। परन्तु उसने एक बात का निश्चय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था कि श्रीचन्द्र और उसके लड़के रघुवीर दोनों को समाप्त कर देना चाहिए।

श्रीचन्द्र ने रेशम के चले जाने के उपरान्त एक नया विवाह कर लिया था और उस औरत से उसके घर एक लड़का हो चुका था।

ब्राह्मण उनका काम तमाम कर चुका होता यदि उसे यह पता न चल गया होता कि मधु विलायत से लौट आया है और वह नगर में बड़े लोगों से सम्बन्ध रखता है, और उसे फाँसी दिलवा सकता है। साथ ही वे चंद्रावती की प्रजा थे।

ब्राह्मण शेषराम और उसके तीन लड़के योजना बना चुके थे, परन्तु मधु के गाँव में आ जाने से विचार कर रहे थे कि रघुवीर के प्रति उसके व्यवहार को जानकर ही आगे चलना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यह बात भी थी कि रघुवीर के साथी पुनः लड़की का अपहरण करने की योजना बनाने लगे थे। शेषराम ने अपने दो सम्बन्धियों को रघुवीर का साथी बना रखा था और वे ही उसे रघुवीर की बैठक में होने वाली बातों की सूचना देते रहते थे।

ऐसी स्थिति में एक दिन एकाएक मधु रघुवीर की बैठक में जा खड़ा हुआ। मधु खाली हाथ था। मधु के भेजे हुए कुछ लोग रघुवीर की बैठक के बाहर पहले ही पहुँचे हुए थे और मधु के वहाँ पहुँचते ही मकान के प्रांगण में आ एकत्रित हुए थे।

रघुवीर मद्य सेवन से धुत्त हुआ दो औरतों के बीच बैठा था और सामने नगर की एक नर्त्तकी नृत्य कर रही थी। मधु बैठक में पहुँचा तो रघुवीर ने इस आनन्द में विघ्न डालने वाले की ओर देख पूछ लिया, "कौन हो तुम ?"

"तो पहचाना नहीं ?" मधु ने उत्तर देने के स्थान प्रश्न कर दिया।

इस पर रघुवीर आँखें फाड़-फाड़कर आगन्तुक की ओर देखने लगा।

"तुम मामा मधु प्रतीत होते हो ?"

"खैर, कुछ तो होश है।"

"यहाँ क्यों आए हो ?"

"तुमको साथ ले चलने के लिए।"

"किसलिए ?"

"एक काम है। मैं विलायत से इतना धन कमाकर लाया हूँ कि तुमको उसका आधा भाग बाँटकर देना चाहता हूँ।"

"किसलिए ?"

"मेरा तुमसे स्नेह है।"

"ओह। हाँ। याद आ गया। तो सुन लो। जिस कारण तुम्हारा मुझसे स्नेह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी कारण मुझे तुमसे घृणा है। तुमने मेरी माँ को खराब किया था।''

मधु जानता था कि वह इस प्रकार की बातें करेगा और वह इसको सुनने के लिए तैयार होकर आया था। इस कारण उसने इस बात का उत्तर दिए बिना कह दिया, ''तुम घृणा करते हो तो तुम मेरा बुरा चिन्तन कर सकते हो, मगर मैं तो स्नेह के कारण तुम्हारा हित ही चिन्तन करूँगा।''

इस समय रघुवीर के एक साथी ने कह दिया, ''बाबू साहब! बैठिए न! खड़े-खड़े बात करने में मजा नहीं आएगा।''

मधु ने उसकी बात का जवाब दिए बिना रघुवीर से कहा, ''तुम चलो मेरे साथ। तुम्हारे लिए एक बहुत ही सुखकारक और रुचिकर वस्तु विलायत से लाया है।''

''तो उस वस्तु को यहीं क्यों नहीं ले आए हो?''

''यहाँ इस संगत में वह आ नहीं सकती।''

''तो कोई औरत है?''

''उससे भी बढ़िया।''

''वह क्या होती है?''

''चलकर देख लो।''

''अच्छा। हम एक दिन आएँगे और अपने मामा द्वारा लाई गई सौगात की परीक्षा करेंगे। अब तुम जाओ। हमारे आनन्द में विघ्न न बनो।''

''पर मैं तो तुमको लेने आया हूँ।''

''ओ बहोरी!'' रघुवीर ने अपने एक नौकर को आवाज़ दी। एक हट्टा-कट्टा जवान बैठक में आया तो रघुवीर ने कहा, ''इस जानवर को धकेलकर बैठक से बाहर कर दो।''

बहोरी ने मधु को धकेला नहीं। उसने हाथ जोड़ मधु से कहा, ''बाबू साहब! आप यहाँ क्यों आए हैं? यह स्थान आपके योग्य नहीं है।''

मधु ने बहोरी की बात की ओर ध्यान न देते हुए कहा, ''रघुवीर! तुम जो कुछ कर रहे हो यह ठीक नहीं। तुमको पश्चात्ताप होगा। इस पर भी अभी समय है कि मान जाओ।''

''बहोरी! क्या मुख देख रहे हो? निकाल दो इसको बाहर।''

इस समय श्रीचन्द्र आ गया। श्रीचन्द्र ने मधु के आने की बात सुन ली थी और वह समझ रहा था कि कहीं रघुवीर मधु के साथ उसके घर चला गया तो उसकी पूर्ण योजना विफल हो जाएगी। इस कारण वह देखने आया था कि रघुवीर मधु के प्रभाव में आता है अथवा नहीं। उसके साथ उसकी नई पत्नी का भाई भी था। वह श्रीचन्द्र के मकान के एक दूसरे कक्ष में ही रहता था। उसे भागते हुए आते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख मधु की ओर के आए आदमी, जो प्रांगण में खड़े मधु को भीतर जाते देख चुके थे, समझ गए कि झंगड़ा होने वाला है। अत: वे भी लपककर बैठक में घुस आए। ये सब लाठियाँ लिये हुए थे। उनके वहाँ बैठक में पहुँच जाने पर तबले-सारंगी बजाने वाले, नाचने वाली और शराब पिलाने वाली औरतें सब उठकर बैठक से भागीं। सब समझ रहे थे कि लाठी चलेगी। रघुवीर की बैठक के बाहर खड़े कुछ लोग भी भीतर आ गए।

मधु ने अभी भी हाथ खड़ा कर सबको शान्त करते हुए कहा, ''क्यों श्रीचन्द्रजी! आप यहाँ क्या करने आए हैं?''

''बाबू साहब! मैं तो यहाँ रहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम यहाँ किसलिए आए हो?''

''अपने भानजे को सन्मार्ग दिखाने आया हूँ।''

''वह मैं दिखा रहा हूँ। आपका भानजा है या क्या है, इसको छोड़ो। इस समय वह मेरे घर पर है।''

मधु देख रहा था कि जिस मतलब के लिए वह आया था, वह तो यहाँ पूरा हो नहीं सकेगा। उसके आने का उद्देश्य यह था कि रघुवीर को अपने यहाँ ले चले और फिर उसको समझाए। परन्तु वह देख रहा था कि मद्य के अत्यधिक सेवन से तो वह बात समझने की योग्यता भी खो चुका है। इस पर श्रीचन्द्र उसको इस अवस्था से निकलने में बाधक हो रहा है।

मधु ने कहा, ''जीजाजी! भूल हुई है। मैं जा रहा हूँ। इस पर भी आपको उसे ठीक मार्ग पर लाने का यत्न करना चाहिए।''

इतना कह मधु बैठक से बाहर निकलने लगा तो रघुवीर ज़ोर से हँसा और बोल उठा, ''भाग गया, भाग गया।''

मधु विचार कर रहा था कि यह बुद्धिविहीन जीव भूमि पर भार बन रहा है। इसके बोझ से पृथिवी को कैसे मुक्त कराया जाए, वह निश्चय नहीं कर सका था।

श्रीचन्द्र यह समझा था कि उसके आने से रघुवीर का अपहरण होता-होता बच गया है। इससे वह भी प्रसन्न हो मधु के पीछे-पीछे बाहर आया तो प्रांगण में दस-बारह लठैतों से मधु को बात करते देख वह भी कुछ डरा। परन्तु मधु को चुपचाप मकान से बाहर निकलते देख वह मन में संतोष अनुभव करने लगा।

मधु श्रीचन्द्र के मकान से बाहर निकला और अपने मकान की ओर चला तो एक व्यक्ति, जो उस गाँव का प्रतीत नहीं होता था, मधु के साथ चलता हुआ बोला, ''मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहता हूँ।''

''कहो! क्या कहना चाहते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जरा इन लोगों से दूर हो जाइए तो बात कर सकता हूँ।"

मधु को पंडित भुवनचन्द्र की बात स्मरण हो आई। वह उसकी बात सुनने की आशा से अपने साथियों को ठहरने के लिए कह उस आदमी के साथ दस पग आगे निकल गया और फिर खड़ा हो पूछने लगा, "हाँ, अब बताओ।"

"कुछ नहीं। केवल इतना कि रघुवीर ने मेरे घर वालों को बहुत कष्ट पहुँचाया है। मैं इसे पाठ पढ़ाना चाहता हूँ। उससे पूर्व मैं चाहता हूँ कि आप बताएँ कि आप हमारे झगड़े में तटस्थ रहेंगे अथवा नहीं।"

"परन्तु तुम्हारा क्या झगड़ा है?"

"इसने मेरी पुत्री समान एक लड़की के साथ बलात्कार किया है।"

"और तुम कौन हो?"

"यह तो बताऊँगा नहीं। हम अपना और लड़की का नाम विख्यात करना नहीं चाहते। मैं भगवान् को साक्षी मानकर कहता हूँ कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सर्वथा सत्य है। मैं तो आपसे यह पूछना चाहता हूँ कि आप हमारे झगड़े में तटस्थ रहेंगे अथवा नहीं?"

"यदि आपका कथन सत्य है तो मुझे तुम्हारी सहायता करनी चाहिए। परन्तु जब तुम कुछ भी बताना नहीं चाहते तो तटस्थ रहूँगा।"

"भगवान् आपका भला करे।" सामने खड़े व्यक्ति ने मधु को कह दिया, "मैं आपसे फिर मिलूँगा।"

इतना कह वह हाथ जोड़ प्रणाम कर चल पड़ा। मधु उसको जाते देखता रह गया।

मधु ने अपने साथ वाले लोगों से पूछा, "यह कौन आदमी है?"

उसे कोई नहीं जानता था। एक ने इतना बताया कि भीतर जो नाचने वाली बैठी थी, यह उसके तबले वाले के साथ बैठा था।

"तो कोई नगर का रहने वाला प्रतीत होता है?"

इसका किसी ने उत्तर नहीं दिया। वास्तव में कोई इस आदमी को जानता ही नहीं था।

मधु मन से खिन्न वापस लौट आया। उसने पंडित भुवनचन्द्र को सब बात बताई तो पंडितजी ने कहा, "मैं यही आशा करता था। दुर्जन कभी समझते नहीं।"

"इतना मूढ़ मति तो मैंने कभी देखा नहीं।"

"यह मुक्तानन्द के लड़के के समान ही किसी पुण्य-लोक से कुछ संचित पुण्य कर्मों को लेकर आया प्रतीत होता है, परन्तु इसके पुण्य कर्म क्षीण हो चुके हैं और अब यह अपने वर्तमान दुष्ट कर्मों का फल भोगने के किनारे पर पहुँच गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने तो यत्न किया था कि उसको एक नया जीवन देकर उसे कुछ अच्छे कर्म करने का अवसर मिल जाए, जिससे अगले जन्म में वह किसी निकृष्ट योनि में न पड़े। परन्तु भाग्य बहुत प्रबल है, मधु! तुम असफल रहे हो।"

मधु ने बताया नहीं कि वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिला है जो अपने साथ रघुवीर के किसी दुर्व्यवहार का बदला लेने की बात कह गया था।

आधी रात के समय गाँव में बहुत शोर मचा तो मधु और उसके घरवाले सब मकान की खिड़की में आ देखने लगे। उनके चौकीदार ने बताया, "गाँव में दक्षिण का ओर आग लग गई है।"

"किसके घर को आग लगी है।"

"अभी पता नहीं चला।" मधु इत्यादि अपने मकान की सबसे ऊपर की मंज़िल पर चढ़कर देखने लगे। मधु को कुछ ऐसा समझ आया कि श्रीचन्द्र के मकान को आग लगी है।

:: 11 ::

आग की लपटें रातभर उठती रहीं। चौकीदार ने सूचना दी, "आग बाबू श्रीचन्द्र के मकान को लगी है। लोग बुझाने में लगे हुए हैं, परन्तु वह बुझ नहीं रही।"

"किसी जान की हानि तो नहीं हुई?"

"बाबू साहब! कुछ लोग तो बचे हैं, परन्तु पता नहीं चला कि कौन-कौन बचा है।"

अगले दिन चन्द्रावती और रेशम पूर्ण समाचार जानने के लिए उत्सुक थीं और जब घर में चौका-बासन तथा झाड़ू-फूँक करने वाली नौकरानियाँ आईं तो पता चला कि श्रीचन्द्र अपने पूर्ण परिवार-सहित आग में जल गया है।"

रेशम ने पूछा "फिर भी कौन-कौन?"

"बबुआइन, सुना है उसका छोटा बच्चा भी नहीं बचा। अब पुलिस बैठी हुई है और जाँच हो रही है।"

मधु तो पूर्ण बात समझ गया था। रेशम ने कहा, "भैया! सब खेल खत्म हो गया है।"

"नहीं बहन! खेल तो अब आरम्भ हुआ है।"

रेशम इस बात का अर्थ नहीं समझी। मधु ने कहा, "किसी कारण से पारिवारिक जीवन में एक विकार उत्पन्न हो गया था। बिजली गिरने से विकार दग्ध हो गया है। अब पुनः स्वस्थ जीवन व्यतीत करने का अवसर उपस्थित हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेशम को विदित था कि मधु पिछले दिन रघुवीर से मिलने गया था और वहाँ झगड़ा हुआ था। इसी कारण वह समझ रही थी कि मधु उसके श्वसुर के परिवार के विनष्ट होने पर प्रसन्न है। अतः उसने आँखों में आँसू भरकर पूछ लिया, "भैया! आप समझते हैं कि यह अच्छा हुआ है?"

"देखो रेशम! अच्छा और बुरा तो अपने-अपने विचार की बात है। एक बात किसी को अच्छी लगती है, किसी दूसरे को वही बात बुरी लगती है। इस कारण घटनाओं के अच्छे-बुरे होने के विषय में विचार न कर उनमें अपने व्यवहार के विषय में विचार किया जाना चाहिए।

"कल मैं रघुवीर को अपने यहाँ लाने के विचार से गया था। इस पर वह मद्य के नशे में धुत्त अंट-शंट बोलने लगा। उसके बाप ने भी आकर मुझे घर से निकल जाने का आदेश दे दिया।

"यह बात अच्छी थी अथवा बुरी थी, इस पर विचार करने से कुछ लाभ नहीं था। मैंने यह निश्चय किया था कि मैं ऐसे व्यक्तियों से किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखूँगा और उनके कामों में तटस्थ रहूँगा। मुझे अपना यह व्यवहार ठीक जान पड़ा था और अब भी मैं यही व्यवहार ठीक समझता हूँ।"

"परन्तु अब क्या होगा?"

"मैं अल्पाहार कर वहाँ फिर जा रहा हूँ और देखूँगा कि अब वहाँ की स्थिति क्या है। एक बात समझ आ रही है कि वह दान-पत्र, जो हमने रघुवीर के नाम लिखा था, उसके तथा उसकी सन्तान के हित में था। अब स्थिति दूसरी है। उसकी कोई सन्तान नहीं है और माताजी दान दिया धन वापस नहीं लेंगी। अतः बात विचारणीय हो गई है।"

रेशम अपने मन की अवस्था का विश्लेषण नहीं कर सकी। वह अपने पति और पुत्र से अति दुःखी थी। इस पर भी वह अनुभव कर रही थी कि उसको इस घटना से भी दुःख हुआ है। वह ऐसा अनुभव करने लगी थी कि किसी प्रकार का अभाव उत्पन्न हो गया है।

जहाँ तक पति के सुख की बात थी, वह तो उसको अपने विवाहित जीवन के प्रथम कुछ मास के अतिरिक्त कभी प्राप्त नहीं हुआ था। जब श्रीचन्द्र को यह पता चला था कि उसके गर्भ में किसी दूसरे का बच्चा है तो वह उससे पृथक् रहने लगा था। पीछे मोहिनी ने बच्चे के बीजारोपण करने वाले का नाम बताया और साथ ही लड़की तथा उसके लड़के के लिए ज़मींदारी उत्तराधिकार में प्राप्त करने की योजना बताई, तो श्रीचन्द्र इसे एक व्यापार मान चुप कर रहा।

श्रीचन्द्र का विचार था कि जब रघुवीर का देहान्त हो जाएगा तब वह रेशम से सुलह कर उसे घर ले आएगा और उसके द्वारा ज़मींदारी पर अधिकार बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा। परन्तु समाप्ति तो पूर्ण परिवार की हो गई थी।

मधु श्रीचन्द्र की पूर्ण रूप से जली हवेली के सामने पहुँचा तो पुलिस की जाँच चल रही थी। जले हुए मकान में कुछ ऐसी वस्तुएँ मिली थीं जिनसे यह अनुमान लगाया जा रहा था कि मकान में राल इत्यादि ऐसे पदार्थ रखे हुए थे जो आग को फैलाने में सहायक हुए थे। यह देखा गया कि शीघ्र आग पकड़ने वाले पदार्थ रघुवीर और श्रीचन्द्र के सोने के कमरों के आस-पास अधिक थे। यही कारण समझा जा रहा था कि आग यत्न करने पर भी बुझ नहीं सकी और फिर घर का कोई भी प्राणी बच नहीं सका।

पुलिस ने मधु के भी बयान लिये और गाँव के लोगों के भी। यह सिद्ध था कि मधु अथवा उसकी ज़मींदारी का कोई भी व्यक्ति रात आग लगने के समय दिखाई नहीं दिया।

मधु ने पुलिस को बता दिया कि वह आग के विषय में इतना ही जानता है कि आधी रात के उपरान्त उसने अपनी हवेली की छत पर से आग लगी देखी और यह बात तो उसे प्रातःकाल ही पता चली कि पूर्ण परिवार जल गया है।

गाँव वालों और नगर से आई नर्तकी के बयानों से पता चला कि वे रात बारह बजे तक नृत्य इत्यादि करते रहे थे। तदुपरांत वे हवेली से बाहर एक मकान में, जहाँ वे ठहरे हुए थे, चले गए। वे अभी सोए ही थे कि हवेली को आग लग गई। वे अपने मकान की खिड़की में से देख रहे थे कि रघुवीर और श्रीचन्द्र के रहने वाले कमरों को पहले आग लगी थी। शेष हवेली में तो आग पीछे फैली थी।

पुलिस ने तो यह रिपोर्ट लिखी कि हवेली में उस दिन नौकर-चाकरों ने भी शराब पी थी, इस कारण यही प्रतीत होता है कि आग किसी घर के आदमी की गलती से ही लग गई है। हवेली में मिट्टी के तेल के लैम्प जल रहे थे। उनसे आग फैलने में आसानी हो गई।

इतना लिखकर यह जाँच बन्द कर दी गई। मधु ने अपनी ज़मींदारी के कर्मचारी भेज रघुवीर की ज़मींदारी पर अधिकार जमा लिया और वहाँ का प्रबन्ध भी चन्द्रावती करने लगी।

घटना के छः मास उपरांत मधु को वही व्यक्ति नगर में दिखाई दिया जो उसे रघुवीर से अन्तिम भेंट के उपरांत मिला था।

मधु ने उसका मार्ग रोक प्रणाम कर पूछ लिया, "आप मुझे पहचानते है?"

उस आदमी ने चौंककर मधु को देखा, पहचाना और मुस्कराकर बोला, "आप मधु बाबू हैं। कहिए, स्वास्थ्य कैसा है?"

"मैं तो ठीक हूँ। मैं आपसे मिलना चाहता था, परन्तु आपका तो पता ही नहीं चला।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा काम गाँव में समाप्त हुआ तो मैं चला आया था।"

"मैं आपके उस दिन के वार्तालाप का अर्थ समझने का यत्न करता रहा हूँ, परन्तु कुछ समझ नहीं आया।"

"उसमें समझने के लिए कुछ भी तो नहीं था। आइए, ज़रा किसी स्थान पर आराम से बैठकर समझा देता हूँ। यहाँ सड़क पर खड़े-खड़े तो बात हो नहीं सकेगी।"

मधु को भी समझ आया कि उस रात की आग लगने का रहस्य पता चलने वाला है। अतः मधु ने उसे अपने घर ले जाना उचित समझा। वह आजकल ज़मींदारी के मकान में परिवार-सहित रहता था। गाँव में चन्द्रावती और रेशम प्रबन्ध कर रही थी। आग की घटना के उपरांत कई दिन तक रेशम रोती रही और मधु इत्यादि को गालियाँ देती रही थी। उसको अपने जीवन के बरबाद होने में कारण मधु और चन्द्रावती ही समझ आए थे। मधु ने उसे समझाने का प्रयत्न किया था। उसका कहना था, "देखो, रेशम बहन! जो कुछ तब हो रहा था वह ठीक ही था। यह कैसे कह सकती हो कि जो कुछ अब हुआ वह गलत ही हुआ है। यह भी तो निश्चय से नहीं कहा जा सकता कि आगे जो होगा वह ठीक नहीं होगा।

"मद्य के उन्माद में शराबी सब संसार को मूर्ख मानने लगता है। इससे यह कैसे कहा जा सकता है कि सब संसार मूर्ख हो गया है। साथ ही यह भी तो नहीं कहा जा सकता कि मद्यादि ग्रस्त व्यक्ति गलत ही कह रहा है। मेरा मतलब है कि प्रत्येक बात का मूल्यांकन वातावरण और परिस्थितियों से ही लगाया जा सकता है। परिणाम भी तो किसी वस्तु के मूल्यांकन में पूर्ण रूप से सहायक नहीं हो सकते। यह देखा जाता है कि एक ही कार्य पृथक्-पृथक् परिस्थितियों में पृथक्-पृथक् परिणाम उत्पन्न कर देता है।"

रेशम इतनी लम्बी बात को सुन नहीं रही थी। वह अपने दुःख की कथा को स्मरण कर रो रही थी। मधु अपनी बात कह उसकी प्रतिक्रिया देखने के लिए रेशम का मुख देखने लगा था।

मीना और उसका लड़का हरि तथा गौरांग भी बुआ को रोष में देख सामने आ खड़े हुए थे। मधु ने उनको भगा देना उचित नहीं समझा। वह समझता था कि उनकी उपस्थिति में वार्तालाप पर नियन्त्रण रखने में सहायता मिलेगी।

रेशम ने तो मधु की बात सुनी ही नहीं थी। उसने मधु को चुप कर जाते देख कहा, "मेरे मस्तिष्क में आपके तथा माताजी के विरुद्ध बवण्डर उठ रहा है और मुझे कुछ भी न तो सुनाई देता है, न ही सुना हुआ समझ आ रहा है।

"भैया, आप मुझे बताइए कि मैं क्या करूँ?"

"तुम विवाह कर सकती हो। मैं सहायता कर दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो तुमसे विवाह करना चाहती हूँ।"

"यह असम्भव है।"

"तो मैं एक दूसरा श्रीचन्द्र नहीं चाहती।"

"उस अवस्था में ज़मींदारी का भोग करो।"

"यह गौरांग मुझे दे दो।"

"ले लो। परन्तु अब यह तुम्हारे पास नहीं है क्या?"

"नहीं। यह मीना का है।"

"किसी के गर्भ से पैदा होने पर किसी का हो जाता है क्या?"

"सब जग मानता है।"

"पर रघुवीर तो तुम्हारा हो नहीं सका था।"

"वह दूषित बीज की उपज है।"

"यह भी तो उसी बीज की उपज है।"

रोने से दु:खी मस्तिष्क में स्पष्टता आती है। यही रेशम के मस्तिष्क में हुआ, परन्तु जब बात होने लगी और रघुवीर का उल्लेख आया तो पुनः उसका मस्तिष्क गंदला होने लगा। वह फिर कुछ न समझती हुई टुकुर-टुकुर उसका मुख देखने लगी।

इस पर मधु ने कहा, "रेशम! ऐसा करो। गौरांग को तुम अपना ही लड़का मान लो। मैं रघुवीर की ज़मींदारी इसके नाम लिख दूँगा। परन्तु एक बात करो। ज़रा परमात्मा का भजन किया करो जिससे तुम्हारी बुद्धि निर्मल हो और सत्य को सत्य तथा झूठ को झूठ समझने लगे।

"उस दिन बादाम खाने बैठा था तो मुख में कड़वा बादाम आ गया और सारा मुख कड़वा हो गया था। तब उसके लिए किससे झगड़ा करता। उठा, कड़वे बादाम को थूक दिया। कुल्ला कर मुख धो डाला और फिर मीठे बादाम ढूँढकर खाने लगा। तब मुख मीठा हो गया।

"तुम्हारा भी हो जाएगा। पहला कड़वा थूक तो दिया गया है, परन्तु तुमने कुल्ला कर अभी मुख धोया नहीं। इससे मीठा बादाम खाया हुआ भी कड़वा लगने लगेगा।"

"मुख कैसे साफ करूँ?"

"इसके लिए ही तो परमात्मा का भजन करने के लिए कह रहा हूँ। जो तब हुआ था, उस समय ठीक समझकर ही किया गया था। जो आज हुआ है उसे आज की परिस्थिति में देखो। जो भविष्य में होने वाला है उसके अनुकूल होने के लिए परमात्मा से प्रार्थना करो।"

"और आप क्या करोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रेशम बहन को सुखी करने का यत्न करूँगा।"

इसका अन्तर्मन पर कुछ प्रभाव हुआ परन्तु प्रत्यक्ष में रेशम असन्तुष्ट उठकर चली गई।

:: 12 ::

मधु नगर के मकान पर उस आदमी को, जिस पर आग लगाने का उसका सन्देह था, बैठाकर पूछने लगा, "हाँ अब बताइए कि आपने जो उस दिन कहा था, क्या अभिप्राय था उसका?"

"एक बात तो मैंने आपको बताई थी कि रघुवीर ने मेरे एक सम्बन्धी की लड़की का अपहरण कर उससे बलात्कार किया था। उस दिन और अधिक बात बताने का समय नहीं था। वह आज बताता हूँ।

"आपकी ज़मींदारी में ही एक गाँव पंडितपुरा है। वहाँ एक पंडित शेषराम रहते हैं। उसकी चौदह-वर्षीय लड़की सूर्योदय से पूर्व खेतों में शौचादि के लिए गई हुई थी कि वह लौटी नहीं। सात दिन तक वह लापता रही। शेषराम को सन्देह था कि वह रघुवीर के घर जा पहुँची है। वह बेचारा सरलचित्त ब्राह्मण न तो पता कर सका कि वह वहाँ है अथवा नहीं, न ही वह अपनी लड़की की बात घर से बाहर किसी को कह सका।

"सातवें दिन उसी समय, जिस समय वह लापता हुई थी, घर के द्वार पर पड़ी पाई गई। उस समय वह मद्य में अचेत थी। लड़की की माँ शौचादि के लिए घर से निकली कि अँधेरे में किसी वस्तु से पाँव अटकने पर लड़की को अचेत पड़ी देख वह अपने पति को बुला लाई और लड़की को उठवा कर भीतर ले गई।

"लड़की को जब चेतना हुई तो उसने अपनी दुर्दशा की पूर्ण कथा सुना दी। शेषराम तो अपनी लड़की से इस व्यवहार की बात सुन अत्यन्त दुःखी हो किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा खाट पर पड़ गया।

"मैं शेषराम का साला हूँ। यहाँ एक वकील की मुन्शीगीरी करता हूँ। जब अपने जीजाजी की अवस्था का समाचार मिला तो वहाँ जा पहुँचा। सब बात सुनी तो अत्यन्त दुःख अनुभव हुआ। मैंने रघुवीर का काम समाप्त कर देने का निश्चय कर लिया, परन्तु यह सुन कि वह आपका भानजा है, आपकी सहानुभूति की टोह लेने की बात आवश्यक हो गई। यह विदित था कि बाबू चरणसिंह आपके परम मित्र हैं और मुक्तानन्दजी भी आपसे मेल-मुलाकात रखते हैं। इस कारण आपसे झगड़ा करने से डरता था।

"उस दिन अकस्मात् आपसे रघुवीर का झगड़ा सुन विचार आया कि आपसे सहानुभूति की आशा करनी चाहिए। मैंने आपसे आश्वासन पा तुरन्त कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का विचार कर लिया। मैं उस दिन नर्तकी की मंडली के साथ वहाँ पहुँचा था। नर्तकी से मेरी मित्रता है और मैं उसका नाच देखने ही उसके साथ गया था।

"परन्तु आपसे आश्वासन पा मैं सीधा पंडितपुरा पहुँचा और वहाँ से आग लगाने का सामान ले वापस लौट आया। तब तक वहाँ पुन: रंग जम चुका था और सब लोग खाने-पीने में लगे हुए थे। मैंने अपना अवसर देखा और आग में भड़क उठने वाला सामान श्रीचन्द्र और रघुवीर के सोने के कमरों के बाहर रख दिया।

"जब सब लोग मदमस्त हो सो गए तो आग लगा मैं चला आया।

"मेरी योजना आशा से अधिक सफल हुई। मैं तो केवल श्रीचन्द्र और रघुवीर को समाप्त करने का विचार रखता था, परन्तु भगवान् ने तो वहाँ सात प्राणियों को भस्म कर दिया। श्रीचन्द्र था, उसकी नवविवाहिता पत्नी और उससे पैदा हुआ शिशु था। उस नवविवाहिता का भाई भी वहाँ आया हुआ था। वही रघुवीर को खराब करने की योजना चला रहा था। वह भी जल मरा। रघुवीर और उसकी दो रखैलें भी उस दिन वहीं थीं। दोनों जल गईं।

"इस सफलता में आपका तटस्थ रहना और गाँव वालों से तबलची समझा जाना बहुत सहायक हुए। जब आपके पुलिस के सम्मुख बयान हो रहे थे, तब मैं नाच-गाने वालों के साथ अपने नगर को लौट रहा था।

"अब शेषराम की लड़की का विवाह हो गया है। वह सुखी प्रतीत होती है। शेषराम भी प्रसन्न है।"

मधु विचार कर रहा था कि परमात्मा अपने न्याय-चक्र चलाने में किन-किन साधनों का प्रयोग करता है। उसने कहा, "मेरे विस्मय करने के लिए एक ही बात थी कि मेरे तटस्थ रहने में आपने कौन-सी विशेषता समझी थी?"

"आपके पूर्व जीवन के विषय में मैं जानता हूँ। आप क्रान्तिकारी रहे हैं। अत: आप कहीं विरोध करने पर तुल जाते तो हमें अवश्य धर दबाते। एक योग्य, बुद्धिशील व्यक्ति का विरोध एक मूर्ख की हत्या करने से अधिक भय की बात है।"

"क्या नाम है आपका?" मधु ने पूछ लिया।

"रामेश्वरदयाल। पंडित राधाकृष्ण एडवोकेट का पिछले दस वर्ष से मुन्शी हूँ। मैंने आपके लेख 'व्यवस्था' में पढ़े थे, तब से आपकी विद्वत्ता को मानता हूँ और किसी विद्वान से टाकरा लेना नहीं चाहता था।

"यदि आप उस दिन आश्वासन नहीं देते तो पहले आपसे स्वीकार करा लेता कि रघुवीर जैसे पापात्मा का इस संसार में कुछ भी प्रयोग नहीं है। परन्तु कुछ तो श्रीचन्द्र और रघुवीर का आपसे कटु व्यवहार और फिर आपकी बात के तुरन्त समझ जाने से मुझे आपको समझाने और मनाने की आवश्यकता नहीं रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचवाँ परिच्छेद

नीलकण्ठ और मोरे के सहयोग से मधुमोहन ने नगर में एक प्रकाशन-संस्था और एक पुस्तक-केन्द्र चलाना आरम्भ कर दिया। भिन्न-भिन्न देशों के राष्ट्रीय आन्दोलनों और भारत के इतिहास, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान पर साहित्य-निर्माण-कार्य भी आरम्भ कर दिया। 'व्यवस्था' मुद्रणालय को काफी विस्तार दिया गया था। मधु ने स्वयं भी लेखनी उठाई और देश के प्रसिद्ध लेखकों के लिखे ग्रन्थ भी छपवाने आरम्भ कर दिए।

इसके साथ एक बहुत बढ़िया पुस्तक-विक्रय-केन्द्र खोल दिया। इसमें दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें विक्रय के लिए एकत्रित कर दीं। इस कार्य को चलते-हुए अभी तीन वर्ष ही हुए थे कि मधु ने नगर और देश के विद्वान समुदाय का ध्यान आकर्षित करना आरम्भ कर दिया था।

नीलकण्ठ मोरे व्यावसायिक बुद्धि रखता था और मधु हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य का विस्तृत ज्ञान। जब बम्बई, कलकत्ता, लाहौर, दिल्ली और मद्रास से पुस्तकों की माँग आने लगी और इस केन्द्र से प्राय: सबकी माँगों की पूर्ति होने लगी, तो ख्याति फैलने लगी और इसकी गूँज मुक्तानन्द तक भी पहुँची।

एक दिन मुक्तानन्द के एक मित्र ने मद्रास से किसी पुस्तक के विषय में 'व्यवस्था' पुस्तक-केन्द्र से पता कर लिखने के लिए पत्र भेजा तो मुक्तानन्द 'व्यवस्था' के नाम पर विचार करने लगा कि यह नाम कहाँ सुना है। उसे स्मरण नहीं आ रहा था। उसने घण्टी बजाई। चपरासी भीतर आया तो कहा, ''माणिक को बुलाओ।''

चपरासी गया और माणिक को बुला लाया। जब वह बैठा तो मुक्तानन्द ने कहा, ''मिस्टर आयंगर ने लिखा है कि यहाँ कोई 'व्यवस्था बुक सैण्टर' है। उसके यहाँ प्राय: सब प्रकार की पुस्तकें मिलती हैं। वहाँ से वुडरो विल्सन की 'हिस्टरी ऑफ़ वर्ल्ड कल्चर्स' मिले तो भिजवा दें।''

''जी।'' माणिक ने बात समझकर कह दिया।

''यह बुक सैन्टर कहाँ है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप नहीं जानते? यह मधुमोहन ने खोला है।"

"ओह! तो अब किताबें बेचने लगा है। बहुत ही शोचनीय अन्त है एक अति उज्ज्वल कालिज-जीवन का।"

"पर पापा! यह अन्त है क्या?"

"तो क्या अन्त होगा? खोमचा लगाना?"

"यह तो वह पहले लगा चुका है। उसने एक दिन बताया था कि 'व्यवस्था' साप्ताहिक पत्र की पहली प्रति वह एक-एक आना में चौक में खड़ा होकर बेचता रहा था।"

"सत्य?"

"हाँ पापा! वह कहता था कि एक न्यूज पेपर 'हॉकर' से आरम्भ कर अब वह एक लेखक, पुस्तक-प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता हो गया है।"

"तो वह किताबें भी लिखता है?"

"जी। उसने अपनी लिखी एक पुस्तक मुझे भेंट में दी है।"

"कौन-सी?"

"पुस्तक अंग्रेज़ी में है और नाम है 'द सोल ऑफ़ हिन्दुस्तान'।"

"क्या लिखा है उसमें?"

"मैंने पढ़ा नहीं। पाँच सौ पृष्ठ की पुस्तक है और मुझे 'सोल' (आत्मा) में विश्वास नहीं।"

मुक्तानन्द मुस्कराया और पूछने लगा, "और किस बात में विश्वास है तुमको?"

"इस 'बॉडी' (शरीर) में।"

"तुम्हारी 'बॉडी' में बोलता कौन है?"

"मेरा गला।"

मुक्तानन्द हँस पड़ा और बोला, 'वही सोल' है। हिन्दुस्तान के 'सोल' का अभिप्राय ही यह है कि जो यहाँ बोलता है।"

"और पापा! हिन्दुस्तान में कौन बोलता है?"

"आजकल गोपाल कृष्ण गोखले बोलता है। वही यहाँ की आत्मा है।"

"मधु ने तो गोखले को एक बहुत ही साधारण स्तर का मनुष्य बताया है।"

"मेरा विचार है तुमको वह पुस्तक पढ़नी चाहिए।"

"मैं 'गैरिबाल्डी' पढ़ रहा हूँ।"

"ओह! किसकी लिखी है वह?"

"जी० एम० ट्रैविलीन। यह पुस्तक मैंने स्कूल के दिनों में पढ़ी थी और अब फिर पढ़ रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मधु की किताब मुझको दिखाना।"

मुक्तानन्द ने 'द सोल ऑफ़ हिन्दुस्तान' पढ़ी और वह मधु की अंग्रेज़ी भाषा से अति प्रभावित हुआ। परन्तु उसमें लिखे भावों को वह पसन्द नहीं कर सका।

उक्त वार्त्तालाप के कई दिन उपरान्त मुक्तानन्द माणिक को साथ लेकर 'व्यवस्था बुक सैन्टर' पर जा पहुँचा।

एक बहुत बड़ी दुकान थी। उस दुकान के कई कमरे थे। उनमें पुस्तकें भरी पड़ी थीं। अलमारियों पर देशों और विषयों के नाम लिखे थे। उन अलमारियों में उन विषयों पर लिखी पुस्तकें रखी थीं।

मधु दुकान पर ही था और वह एक अंग्रेज़ औरत को पुस्तकें दिखा रहा था। उस औरत ने पूछा, "तो इसमें प्राचीन हिन्दुस्तान के विषय में लिखा है?"

"यस मैडम! संक्षेप में आदि-सृष्टि से आज तक इसमें सांस्कृतिक परिवर्तनों का इतिहास है।"

"पिछली बार आपने मुझे मैक्सिको पर एक किताब दी थी। मैंने वह पढ़ी है और मुझे उससे बहुत-सी नई बातों का पता चला है। मैं आपकी आभारी हूँ। मैं आशा करती हूँ कि इस बार भी आपके इस सुझाव से मुझे लाभ होगा।"

"मैं भी ऐसी ही आशा करता हूँ।"

मधु ने पुस्तक अपने असिस्टैन्ट को बाँधने तथा कीमत वसूल करने के लिए दे दी।

उस औरत से निपटकर मधु मुक्तानन्द के पास आ गया। मुक्तानन्द एक अलमारी में रखी पुस्तकों के नाम पढ़ रहा था। इस अलमारी पर लिखा था— 'इंग्लैंड ऐंड इंग्लिश सिविलाईजेशन।'

"मुक्तानन्द ने एक पुस्तक उठाकर कहा, 'मधु! तुम तो 'बर्नार्डशा' को इंग्लैण्ड की सभ्यता का प्रतीक मानते हो?"

"केवल एक अंश का। मेरा मतलब है अंग्रेज़ समाज के एक भाग का। अभी यह लेखक विख्यात होने लगा है। पहले इसकी ख्याति फैलेगी। यदि यह ख्याति सौ वर्ष तक चली तो इसके लेख अधिकांश अंग्रेज़ी समाज की सभ्यता तथा संस्कृति का निर्माण करने वाले होंगे।"

"और यदि तब तक कोई और विचारक उत्पन्न हो गया तो?"

"तब इसकी ख्याति नहीं रहेगी और इसकी छाप अंग्रेज़ी समाज पर मद्धिम पड़ जाएगी।"

"पर तुमने यह क्या धंधा कर लिया है? तुम अपना जीवन व्यर्थ गँवा रहे हो।"

"परन्तु यदि यह काम न किया होता तो आप यहाँ आते नहीं। कम-से-कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना लाभ तो इस कार्य से हुआ ही है।''

''यह लाभ तो तुम घर पर आकर फोकट में उठा सकते थे।''

''जी नहीं। वहाँ मेरे आने और यहाँ आपके आने में अन्तर है। यहाँ मैं आपकी सेवा कर सकता हूँ। वहाँ मैं आपकी सेवा की प्रार्थना करने जाता।''

मुक्तानन्द मुस्कराया और जेब से पत्र निकाल दिखाते हुए बोला, ''यह मेरे एक मित्र ने लिखा है। क्या यहाँ यह पुस्तक मिल सकेगी?''

मधु ने पुस्तक का नाम पढ़ा और कहा, ''यह पुस्तक आई है। इसकी समालोचना 'हिन्दू' मद्रास में निकली थी।''

''तो इसको एक प्रति इस पत्र लिखने वाले को भेज दो।''

''वी०पी० अथवा साधारण ड़ाक से?''

''साधारण डाक से। कीमत मैं यहाँ दिए जाता हूँ।''

मधु ने पुस्तक निकाल मुक्तानन्द को दिखाई। मुक्तानन्द ने पुस्तक की बाहर से टीप-टाप देखी और पसन्द कर मधु को वापस देते हुए कहा, ''इस पर सब खर्चा क्या बैठेगा? बिल बनाकर मुझे दे दो।''

मधु ने क्लर्क को बिल बनाने के लिए कहा और अपनी लिखी पुस्तक लाकर बोला, ''इसे आप पढ़िए।''

''मैंने पढ़ी है। तुमने माणिक को भेंट में दी थी न?''

''जी। तो कैसी लगी है?''

''रब्बिश।''(रद्दी के समान)।

मधु की हँसी निकल गई। हँसकर वह बोला, ''अच्छा इसको छोड़िए। आप यह पढ़िए। 'द वर्ल्ड दु कम'। एच०जी० वेल्स की लिखी है।''

''मुझे नावल पढ़ने का शौक नहीं।''

''तो कानून के विषय में दूसरे कमरे में हैं।''

''कानून की पुस्तकें भी बेचते हो?''

''जी।''

''इस दुकान में रुपया तुम्हारी माँ ने लगाया है?''

''जी नहीं। नीलकण्ठ मोरे मेरे एक मित्र हैं। यह रुपया उनका है।''

''और तुम्हारा इसमें क्या है?''

''परिश्रम और योजना।''

''तो तुम पत्तीदार हो?''

''जी नहीं। मैं उसका नौकर हूँ।''

''बहुत शर्म की बात है। एक रानी साहिबा के लड़के होकर पैसे वाले की नौकरी करते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर भापा! कहीं सरकार फिर मेरी सम्पत्ति जब्त कर ले तो मेरा वेतन ही तो जब्त करेगी।"

"तुम्हारी पत्नी कहाँ है ?"

"आजकल तो यहीं नगर में ही है।"

वे बात करते हुए दूसरे कमरे में चले गए। माणिक उपन्यासों में रुचि रखता था और वह भी चटक-भटक के। ऐसे उपन्यास प्राय: यौन-सम्बन्धी, आकर्षण उत्पन्न करने वाले होते हैं।

पिछली बार जब माणिक दुकान पर आया था तो 'ऑस्कर वाइल्ड' और 'वाल्टर पीटर' की पुस्तकें खरीदकर ले गया था। उस समय मधु ने उसे 'द सोल ऑफ हिन्दुस्तान' अपनी लिखी पुस्तक दी थी।

कानून की पुस्तकों की अलमारी के सामने उपन्यासों और यौन-सम्बन्धी पुस्तकों की अलमारियाँ थीं। अत: जब मुक्तानन्द कानून की पुस्तकें देखने लगा तो माणिक नॉवल देखने लगा।

:: 2 ::

मुक्तानन्द पुस्तकें देखता एकाएक माणिक की ओर देखकर पूछने लगा, "माणिक! कौन-सी पुस्तक ढूँढ रहे हो ?"

मधु ने मुस्कराते हुए कहा, "वह तो आपसे पूछ रहा है कि इसका विवाह कब करेंगे आप ?"

"यह अभी कमाना तो सीखा नहीं। विवाह करके क्या करेगा ?"

"परन्तु भापा! विवाह का सम्बन्ध आयु से या कमाई से है ? यदि कमाई से होता तो गरीब लोगों में तो विवाह की इच्छा ही न होती।"

"पर मधु! बीवी के खाने-पीने और सुख-भोग के लिए तो कुछ पैदा करना ही होगा।"

"तो आपके पास इस मतलब के लिए धन चुक गया है क्या ? मैं तो यह जानता था कि आपके यहाँ शनिवार रात के खाने पर हज़ारों रुपये व्यय हो जाते हैं। उस रात के खाने का मेज़ पर बची भोजन-सामग्री ही इतनी होती है कि माणिक की एक क्या कई बीवियों के खाने से भी नहीं चुकेगी।"

मुक्तानन्द जानता था कि मधु सतर्क उत्तर देने वाला व्यक्ति है। साथ ही वह यह विचार कर रहा था कि वह कितनी ही अनियमित ढंग से पैदा अपनी सन्तानों को खाने-पीने को दे रहा है। वह मधु की बात से समझ गया कि माणिक का विवाह होना चाहिए और जैसे घर में माणिक खाता-पहनता है, वैसे ही उसकी बहू भी खाती-पीती रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु एक वकील का स्वभाव रखने के कारण निरुत्तर होता हुआ भी वह युक्ति करने लगा, "मगर माणिक संयुक्त परिवार में विश्वास नहीं रखता।"

"मेरा इस विषय पर माणिक से लम्बा वार्तालाप हुआ है। वह अपने को समाजवादी कहता है। परन्तु एक धनी बाप का बेटा तो साधारण लोगों को धोखा देने के लिए ही समाजवादी बन सकता है।

"देखो भापा! एक अयोग्य निर्धन तो अपनी अयोग्यता को छिपाने के लिए समाजवादी बनता है। एक योग्य परन्तु किस्मत का मारा अपने भाग्य को राज्य-बल से सुधारने के लिए समाजवाद का आश्रय लेता है। एक घनी चतुर व्यक्ति अपनी लाखों की कमाई करता हुआ अपनी कमाई को छिपाने के लिए समाजवाद की ओट लेने लगता है। कुछ ईमानदार मूढ़मति इस ओढ़नी को न्याययुक्त सिद्ध करने के लिए समाजवाद के नेता बन जाते हैं। इनमें से ही एक श्रेणी माणिक की भी है। वास्तव में समाजवाद धोखाधड़ी का दूसरा नाम है जिसके पाछे बैठकर भाँति-भाँति के व्यक्ति अपना शिकार खेलते हैं।"

मुक्तानन्द मुस्कराया और माणिक को आवाज़ देकर पूछने लगा, "सुन रहे हो माणिक! मधु क्या कह रहा है?"

"क्या कह रहा है?" माणिक हाथ में एक पुस्तक पकड़े हुए अपने पिता के समीप आ पूछने लगा।

"यह कह रहा है कि तुम्हारा विवाह हो जाना चाहिए।"

"मगर इसका मेरे विवाह से क्या सम्बन्ध है?"

"सिर्फ इतना!" मधु ने हँसते हुए कहा, "कि मेरी दुकान का एक ग्राहक और बढ़ जाएगा।"

"हाँ। यदि वह पढ़ी-लिखी होगी तब न?" माणिक ने कह दिया।

"तो तुम समझते हो कि तुम्हारे पापा तुमको किसी अनपढ़ लड़की से विवाह देंगे?"

"मैं अपना विवाह स्वयं तभी करूँगा जब मेरी आमदनी पाँच हज़ार रुपया मासिक हो जाएगी।"

"तो माणिकजी क्या यह किताब आय बढ़ाने के लिए पढ़ रहे हैं?"

मुक्तानन्द ने पुस्तक को माणिक के हाथ से लेकर उसका नाम पढ़ा। पुस्तक का नाम था 'क्रिनेशिज्म'।

"यह क्या होता है?" मुक्तानन्द ने पूछ लिया।

माणिक चुप रहा, परन्तु जब मुक्तानन्द ने मधुमोहन की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो उसने कहा, 'क्रिनेशिया' अफ्रीका का एक देश है। प्राचीन काल में यहाँ एक जाति रहती थी जिसे ईसाई पादरियों ने क्रिनेशियन कहा है। इनमें यौन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रियाएँ सबके प्रत्यक्ष करने में लज्जा नहीं समझी जाती थी। मैं समझता हूँ कुछ उसी के ही विषय में लिखा है।''

मुक्तानन्द मधु के कथन को सुन कुछ क्षण के लिए गम्भीर विचार में निमग्न रहा और फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछ लिया, ''तो क्या यह रस्म अभी भी वहाँ प्रचलित है?''

''वैसे तो यह पूर्ण भूमण्डल के देशों में अब भी प्रचलित है, परन्तु यह पशुओं में है। मनुष्य समाज में कहीं है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। कदाचित् इस अफ्रीकन देश में रहने वाले मनुष्यों ने यह प्रथा कुत्ते-बिल्लियों से सीखी होगी।''

''और साहबजादे! तुम इसको पढ़कर क्या लुत्फ उठाते हो?''

''नहीं पापा! ऐसी कोई बात इस पुस्तक में नहीं है।''

''तो तुमने यह किताब पहले पढ़ी है?''

इस पर तो माणिक निरुत्तर हो गया। मधु ने मुस्कराते हुए कहा, ''मेरा तो विचार है कि इस मानसिक विकृति का इलाज माणिक का विवाह करना है।''

''शट अप! मधु!''

मधु और भी ज़ोर से हँसने लगा। मुक्तानन्द यह सुन गम्भीर हो गया। उसने वार्तालाप बन्द कर दिया और पूछ लिया, ''माणिक! यह किताब लेनी है?''

''नहीं। मैं यहाँ से किताब खरीदना नहीं चाहता।''

''तो चलो।''

मुक्तानन्द और माणिक दुकान से निकल अपनी घोड़ागाड़ी की ओर जा रहे थे कि एकाएक मुक्तानन्द वापस आ गया और मधु से, जो उनको जाते देख रहा था, कहने लगा, ''यह लो पता, जहाँ किताब भेजनी है और बिल मुझे दे दो।''

मधु ने अपने मुन्शी की ओर देखा तो वह बिल ले आया। पुस्तक का मूल्य था बीस रुपये और डाक-खर्च था दो रुपये दस आने।

मुक्तानन्द ने दाम दिए और गाड़ी की ओर जा रहा था कि भुवनचन्द्र दुकान के बाहर मिल गया। वह खड़ा हो गाड़ी में बैठे माणिक को देख रहा था। मुक्तानन्द ने पंडितजी की ओर देखकर पूछ लिया, ''क्या देख रहे हैं पंडितजी?''

''इस बालक को।''

''क्या है इस बालक में?''

''कुछ है। जब जिज्ञासा से पूछने आओगे तो बता दूँगा।''

मुक्तानन्द पंडितजी के कथन का अर्थ समझने का प्रयत्न कर रहा था कि मधु पंडितजी को मुक्तानन्द से बातें करता देख दुकान से निकल आया और पंडितजी के समीप पहुँच चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़ नमस्ते कहने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तानन्द मधु को पंडितजी के चरण-स्पर्श करते देख पूछने लगा, "मधु, यह कौन हैं?"

मधु को संदेह हो गया कि कहीं मुक्तानन्द इत्यादि पंडितजी का अपमान न कर दें। इस कारण उसने मुक्तानन्द के कथन की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "आइए पंडितजी!"

मुक्तानन्द ने मधु को उसकी बात का उत्तर दिए बिना दुकान की ओर जाते देखा तो वह भी उसके पीछे हो लिया। मधु को कुछ ऐसा समझ आया कि मुक्तानन्द किसी प्रकार का झगड़ा करने आया है। इस पर भी उसने पंडितजी को दुकान के भीतर ले जाकर बैठाना आवश्यक समझा। इस कारण उसने मुक्तानन्द के पीछे-पीछे आने की ओर ध्यान नहीं दिया।

मधु ने पंडित भुवनचन्द्र को एक कोने में लगी अपनी मेज़ के समीप कुर्सी पर बैठाया और फिर वह घूमकर अपने पीछे आने वाले मुक्तानन्द की ओर देखकर पूछने लगा, "हाँ, भापा! मैं और क्या सेवा कर सकता हूँ?"

मुक्तानंद कुछ कहे बिना पंडितजी के सामने रखी एक कुर्सी पर बैठ गया। मधु अभी भी मुक्तानंद की ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देख रहा था। परन्तु पूर्व इसके कि मुक्तानन्द कुछ कहे माणिकलाल गाड़ी से उतर दुकान में घुसता दिखाई दिया। वह लम्बे-लम्बे पग उठाते हुए उधर ही आ पहुँचा जहाँ पंडित भुवनचन्द्र और मुक्तानन्द बैठे थे और मधु समीप खड़ा था।

माणिक ने आते ही कहा, "पापा! मझे देर हो रही है।"

"किस बात की जल्दी है तुमको? घर पर बीवी तो प्रतीक्षा कर नहीं रही।"

"तो आपने इसका विवाह नहीं किया?" पंडित भुवनचन्द्र ने पूछ लिया।

"नहीं। आप इसे कब से जानते हैं?"

"जब यह अपनी माँ के पेट में भी नहीं था। मेरा अभिप्राय है इस लोक में आने से पूर्व।"

"ओह! तो मधु के पागलखाने के आप भी एक जीव हैं?"

मधु मुस्कराता हुआ चुप खड़ा रहा। पंडित भुवनचन्द्र ने बिना माथे पर बल लाए और मुस्कराते हुए कहा, "मधु! मैं अभी-अभी हरिद्वार से आया हूँ। मीना की माँ को अपने घर छोड़ यह कहने आया हूँ कि रात तुम मीना और बच्चों के साथ हमारे यहाँ भोजन पर आना।" मधु के एक लड़की और हो चुकी थी।

"साढ़े आठ बजे पहुँच जाऊँगा।" मधु ने कहा।

माणिक बेचैन हो रहा था। मुक्तानन्द का तो बाहर गाड़ी के समीप खड़े भुवनचन्द्र को देख यह विचार बना था कि यह मधु का श्वसुर हो सकता है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह बात चरणसिंह से सुन चुका था कि मधु का श्वसुर भुवनचन्द्र एक अद्‌भुत प्रतिभाशाली ज्योतिषी है। उसने मुक्तानन्द को बताया था कि मधु के छूटकर आने के समय बिना सूचना के वह हरिद्वार से चलकर नगर के स्टेशन पर पहुँच गया था।

मुक्तानन्द के संदेह की, मधु ने पंडितजी के चरण-स्पर्श कर पुष्टि की थी और अब तो बात स्पष्ट हो गई थी। जब भुवनचन्द्र ने मीना और उसकी माँ की बात कही थी तो वह सब बात समझ गया था।

पंडितजी की यह बात सुन कि वे माणिक को अपनी माँ के पेट में आने के पहले से जानते हैं, वह एक कटु व्यंग्य कर उठ पड़ा, परन्तु उसके संदेह के विश्वास में परिणत हो जाने पर वह पुनः बैठ गया। पिता को उठ पुनः बैठते देख माणिक ने कहा, "पापा! मैं जा रहा हूँ। गाड़ी बाहर खड़ी है। आप उसमें अवकाश पाने पर चले आइएगा।"

"ठीक है। तुम चलो।"

माणिक बिना एक भी शब्द और कहे दुकान से निकल पैदल ही अपने मकान की ओर चल पड़ा।

माणिक के चले जाने पर मुक्तानन्द निश्चिन्त हो पंडितजी से कहने लगा, "मैंने आपकी ख्याति सुनी है। बाहर गाड़ी के समीप तो मुझे संदेह ही था कि आप मीनादेवी के पिता हैं, परन्तु आपकी बात सुनकर तो अब स्पष्ट ही हो गया है कि आप कौन हैं। अच्छा, मैं यह जानने में दिलचस्पी रखता हूँ कि आपने इस लड़के में क्या देखा है?"

पंडितजी गम्भीर हो आँखें मूँद कुछ क्षण तक बैठे रहे। इस समय दुकान में कुछ ग्राहक आ गए थे। वे बंगाली थे। मधु मुक्तानन्द को शान्त देख पंडितजी के पास बैठा छोड़ अपने ग्राहकों से बातचीत करने चला गया।

भुवनचंद्र ने एकाएक आँखें खोलीं और कह दिया, "भारत देश का ख्याति प्राप्त नेता। यह इसके माथे पर लिखा है, परन्तु कुछ नेता शुभ परिणाम उत्पन्न करने वाले होते हैं और कुछ होते हैं, जो आने वाली सदियों तक जन-जन की बद्‌दुआ के पात्र बन जाते हैं।"

"और यह आपने बिना पत्रा देखे ही जान लिया है?"

"यह सब इसके मस्तक पर लिखा है।"

"और आपने इसको किस लोक में पहले देखा था?"

"स्वर्गलोक से पृथ्वी पर गिरते मैंने इसे देखा है।"

"जैसे मधु को मांडले के दुर्ग से आते देखा था?"

"जी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे विश्वास नहीं आता। यह लड़का तो महामूर्ख, अभिमानी, हठी और स्वार्थरत है। इसे नेता कौन मानेगा?"

"ये सब दुर्गुण इसकी अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति में सहायक होंगे।"

"मुझे संदेह है। ये दुर्गुण तो मनुष्य की उन्नति में बाधक होते हैं।"

"वहाँ, जहाँ बुद्धिशील लोग रहते हों। इस देश में कई सदियों से बुद्धि की अवहेलना और बुद्धिशीलों की निन्दा हो रही है। यहाँ का जनमानस संस्कारों को ही एकमात्र जीवन का आधार मानता है। साथ ही जहाँ संस्कार निर्माण करते समय भी विचार की आवश्यकता नहीं मानी जाती, वहाँ यह विचारहीन व्यक्ति महान् नेता बनेगा।

"देश में बुद्धि का अभाव होने से बुद्धिशीलों से अधिक भावुक व्यक्तियों की जय-जयकार होगी और ये महानुभाव अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कर सकेंगे।"

"आपकी यह भविष्यवाणी मिथ्या सिद्ध हो, मैं यही अभिलाषा कर सकता हूँ।"

"परन्तु श्रीमान! एक ऐसा समय आने वाला है जब आप भी इससे पराजित होंगे। यद्यपि आपकी बुद्धि के विषय में बहुत अच्छी सम्मति नहीं रखी जा सकती, परन्तु आपके कानून-सम्बन्धी ज्ञान के विषय में तो यह कहा ही जा सकता है कि आप इससे कहीं अधिक योग्य हैं, परन्तु अँधेर नगरी में तो टके सेर भाजी और टके सेर खाजा होने वाला है और राजा गवर-गण्ड होगा।"

मुक्तानन्द को इस पर विश्वास नहीं आया। उसने पंडितजी की हँसी उड़ाते हुए कह दिया, "और पंडितजी, आपका इस अँधेर नगरी में क्या स्थान होगा?"

"मैं तो योद्धा रहूँगा नहीं, परन्तु मुझे समझ आ रहा है कि मधु का स्थान अभी एक बार और बन्दीगृह में होगा।"

इससे मुक्तानन्द पुनः गम्भीर हो गया और मधु की ओर देखकर बोला, "मधु के व्यवहार से कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।"

मधु इस समय उन बंगाली महाशयों को कुछ पुस्तकों के विषय में समझा रहा था।

एकाएक मुक्तानन्द उठा और हाथ जोड़ पंडितजी से बोला, "कभी मेरे गरीबखाने में दर्शन दीजिए। बहुत कृपा होगी।"

"यत्न करूँगा।" भुवनचन्द्र ने कह दिया।

मुक्तानन्द उठा और दुकान से चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 3 ::

"तुम वहाँ से भागकर चले क्यों आए थे?" मुक्तानन्द घर पहुँच माणिकलाल से पूछने लगा। माणिक अपने 'स्टडी रूम' में बैठा 'आस्कर वाइल्ड' का एक उपन्यास पढ़ रहा था। वह उपन्यास से मुख उठा पिता के मुख पर देखता हुआ कुर्सी पर बैठा ही रह गया। मुक्तानन्द उसके समीप कुर्सी पर बैठ गया।

जब माणिकलाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया तो पिता ने कह दिया, "तुम संसार में केवल उन लोगों से सम्पर्क रखना चाहते हो जो केवल तुम्हारे विचारों जैसा ही सोचते हैं। भिन्न विचार रखने वालों से तुम बात भी करना नहीं चाहते। जानते हो, इसका क्या परिणाम होता है?"

"क्या परिणाम होता है?"

"ऐसे व्यक्ति की वाकफियत और ज्ञान सीमित ही रह जाता है। यही कारण है कि तुम पिछले दो वर्ष में एक भी मुकद्दमा जीत नहीं सके। तुम विरोधियों के कथन और युक्ति को सुनते ही नहीं। यही कारण है कि तुम उत्तर नहीं दे सकते।"

"मुझसे यह बकवास नहीं होती।"

"तो तुम कैसे वकालत कर सकोगे?"

"मैं वकालत नहीं करूँगा।"

"तो क्या करोगे?"

"मैं अब शिकार खेलने जाया करूँगा।"

"वाह रे बहादुर! बन्दूक का लाइसैन्स अपने नाम पर ले लो। और देखना, कहीं कोई रीछ-बन्दर बन्दूक छीनकर ही न भाग जाए।"

"कैसे भाग जाएगा? मैं उनसे तेज भाग सकता हूँ।"

"मैं तुम्हारा विवाह कर देना चाहता हूँ, जिससे तुम भाग न सको।"

"तो कर दीजिए। लड़की ज़रा सुन्दर होनी चाहिए।"

"लड़की तो तुम्हारी माँ ने देखी है। मैं अभी तक यह विचार कर रहा था कि तुम जब कुछ कमाने लगोगे तो तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध कर दूँगा, परन्तु मधु की बात मेरे मन लगी है।"

"क्या मन लगी है?"

"यही कि विवाह का सम्बन्ध कमाई के साथ नहीं प्रत्युत आयु के साथ है और तुम अब पचीस वर्ष के हो रहे हो।"

"आयु के विचार से तो मैं विवाह के योग्य आज से दस वर्ष पहले हो गया था।"

"परन्तु उस समय तो तुम्हारी शिक्षा समाप्त नहीं हुई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो अभी भी समाप्त नहीं हुई।"

"हाँ, मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारी अवस्था में कभी भी समाप्त नहीं होगी। कारण यह है कि तुमने अभी शिक्षा आरम्भ की ही नहीं। यह 'आस्कर वाइल्ड' और 'वाल्टर पीटर' से शिक्षित नहीं हो रहे, वरन अशिक्षित हो रहे हो।"

"परन्तु पापा! ये लेखक तो वही कुछ कहते हैं जो आप नित्य करते हैं।"

इससे मुक्तानन्द झेंप गया और बात बदलकर बोला, "कुछ पढ़ो अथवा न पढ़ो, विवाह तो होगा ही। मैं तुम्हारी माँ को कहने जा रहा हूँ कि लड़की वालों को पत्र लिख दें कि विवाह की तिथि का निश्चय कर बताएँ।"

"पापा! आप मधु से सदा झगड़ा करते हैं, फिर भी उसकी बात मानते हैं।"

"हाँ। मगर इस बात को तुम अभी बीस वर्ष बाद समझने लगोगे। वह एक योग्य बुद्धिमान युवक है, परन्तु उसके संस्कार मिथ्या हैं। इसी से उसका और मेरा झगड़ा रहता है।"

"कहता तो वह भी यही था। इतनी बात है कि वह आपके संस्कारों को मिथ्या मानता है। उसने एक दिन कहा था कि वह पढ़ने से प्राप्त ज्ञान को संस्कार ही मानता है और बुद्धि को इस ज्ञान से भिन्न वस्तु मानता है। यह बुद्धि ठीक संस्कार संचय करने में सहायता करती है और फिर संचित संस्कारों का विश्लेषण कर कार्य का निश्चय करती है।"

"पर ज्ञान बिना पढ़े भी प्राप्त होता है क्या?"

"वह कहता था कि, होता है। उसका कहना है कि समाधि से भी ज्ञान प्राप्त होता है। वह ज्ञान स्वाध्याय के अतिरिक्त होता है।"

"और तुम क्या समझते हो?"

"मैं तो उसको मूर्ख मानता हूँ। वह परमात्मा को मानता है। वह आत्मा को मानता है। वह पूर्व जन्म और भविष्य के जन्म को मानता है। ये सब बातें साइन्स से पता की गई हैं और ये सब कहीं नहीं मिलीं।"

"तुम तो बहुत-कुछ पढ़ गए हो। भला एक बात बताओ परमात्मा को ढूँढने के लिए कौन-सा अभियान चलाया गया था और किस देश के राज्य ने चलाया था?"

माणिक मुख देखता रह गया। कुछ देर विचार कर उसने एकाएक कह दिया, "पर पापा! आप भी तो आत्मा-परमात्मा इत्यादि को नहीं मानते।"

"पर मैं अपनी बात को सिद्ध करने के लिए कोई झूठी बात तो नहीं कहता फिरता। मैं यह कहता हूँ कि मुझको परमात्मा दिखाई नहीं देता, इसलिए मैं उसको मानने की आवश्यकता नहीं समझता। जैसे किसी राज्य में राजा कभी दिखाई न दे तो वहाँ राजा के मानने की आवश्यकता नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो इंग्लैंड में भी है। वहाँ राजा कहीं दिखाई नहीं देता।"

मुक्तानंद हँस पड़ा। हँसकर बोला, 'तुम यह 'आस्कर वाइल्ड' के स्थान इतिहास के ग्रंथ पढ़ा करो।"

"मैं समझता हूँ कि गए ज़माने की बातें पढ़ने से मनुष्य की उन्नति रुक जाती है। मैं तो आगे की बात पढ़ने का यत्न करता रहता हूँ। आगे के जमाने की बात तो साइन्स करती है। हवाई जहाज, मोटरकार और स्टीम इन्जिन बन गए हैं। समय आ रहा है कि हम एक दिन में दुनिया का चक्कर काट सकेंगे।"

"शाबाश बेटा माणिक! मैं तुम्हारी महत्वाकांक्षाओं को सुन बहुत खुश हूँ। परन्तु देखो, एक बात करो। हमारे घर में तुम ही एक लड़के हो, इसलिए जल्दी विवाह कर एक लड़का पैदा कर दो और फिर हवाई जहाज में उड़ना।"

"लड़का तो पद्मा पैदा कर देगी।"

"पर वह तो मेरी लड़की है। लड़की के लड़के को अपना उत्तराधिकारी बनाऊँगा क्या?"

"उत्तराधिकारी बनाने की क्या आवश्यकता है? और फिर आवश्यकता हुई भी तो सड़क पर से किसी भी लड़के को पकड़कर बना दीजिएगा।"

मुक्तानन्द विचार करने लगा कि मधु के श्वसुर की बात ठीक ही है। यह लड़का अस्वाभाविक प्रकृति लेकर पैदा हुआ है। साथ ही हिन्दुस्तान के हिन्दू भी बहुधा अस्वाभाविक आचार-विचार रखते हैं। यह उन जाहिलों का नेता बन गया तो विस्मय करने की बात नहीं।

माणिक अपने पिता से इतने लम्बे वार्त्तालाप से सन्तोष अनुभव नहीं कर रहा था। सबसे विकट बात उस वार्त्तालाप में लड़का पैदा करने की प्रतीत हो रही थी। वह समझ नहीं सका था कि आज उसके पिता को यह लड़के की अभिलाषा और सम्पत्ति का उत्तराधिकारी प्राप्त करने की इच्छा क्यों पैदा हो गई? उसके मन से अपने पिता का वह उज्ज्वल चित्र मिट रहा था जो बचपन से उसके मन पर बना हुआ था। वह अपने पिता को प्रगतिशील, बुद्धिमान और हिन्दू रीति-रिवाज से मुक्त मानता था। उत्तराधिकार की बात ने उसके मन पर बने पिता के उज्ज्वल चित्र को धूमिल कर दिया था।

अपने मन के असन्तोष से प्रभावित अपने पिता को विचार-मग्न वहीं अपने 'स्टडी रूम' में बैठा छोड़ वह उठा और कोठी के बाहर निकल गया। मुक्तानन्द उसे इस प्रकार जाते देखता रह गया।

माणिक कोठी से निकला तो सड़क पर दक्षिण को चल पड़ा। लगभग एक फर्लांग चलने पर वह एक अन्य कोठी में जा पहुँचा। कोठी के बरामदे में बटन दबाने से भीतर घण्टी बजी और फिर एक एंग्लो-इण्डियन लड़की ने द्वार खोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर बरामदे में खड़े माणिकलाल को देखा तो प्रसन्नवदन आगे बढ़ हाथ मिलाकर बोली, "बहुत दिन के बाद इधर आने की याद आई है। माँ आपके विषय में पूछती रहती है।"

माणिकलाल उस लड़की के साथ कोठी के ड्राइंगरूम' में जाते हुए बोला, "और तुम मेरे विषय में नहीं पूछती ?"

"किससे पूछूँ! माँ से बात करने में संकोच होता है। जब तक आप कोई निश्चित बात नहीं बताते तब तक मैं क्या कह सकती हूँ।"

"मैं वही निश्चित बात करने आज आया हूँ। इतने दिन तक अनिश्चित मन था। अब निश्चय हो गया तो कहने चला आया हूँ।"

इस समय दोनों 'ड्राइंगरूम' में जा बैठे थे। सायंकाल हो रहा था और कमरे में अँधेरा बढ़ रहा था। लड़की माणिक को बैठा, लैम्प जलाने के लिए लैम्प स्टैण्ड की ओर जाने लगी तो माणिक ने कह दिया, "लैम्प जलाने की क्या आवश्यकता है ?"

इतना कह उसने लड़की की बाँह पकड़ अपने पास सोफे पर बैठा लिया। लड़की अँधेरे में बात करने पर प्रसन्न थी। वह समझ रही थी कि वह निश्चय ही विवाह के पक्ष में ही होगा। इस कारण वह माणिक से सटकर बैठ गई। माणिक ने भी उसकी कमर में हाथ डाल उसे अपने साथ लगाते हुए कहा, "ईड्डा डीयर! मैं 'रिच्युअल्ज़' (रीति-रिवाज) में विश्वास नहीं रखता। मैं इस मूर्ख दुनिया की बातों को छोड़ इससे बाहर होकर विचरना चाहता हूँ।"

"यह तो मेरे भी मन की बात है।" लड़की ने बिल्कुल उसके साथ सटकर कहा, "परन्तु एक बात है। उसके विषय में भी तो सोचना पड़ेगा।"

"क्या बात है ?"

"वह यह कि मानव-मन अभी इतना विकास-युक्त नहीं है कि इस स्वाभाविक बात को समझ सके।"

"मगर हमने इस मूर्ख मानव-समाज से क्या करना है ?"

"आपकी राजनीतिक 'ऐम्बिशन्ज़' (महत्वाकांक्षाओं) को मैं सुन चुकी हूँ। आप अपने देश के एक महान् नेता बनना चाहते हैं, और इस देश में तो यूरोप से अधिक रूढ़िवादी रहते हैं।"

राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की बात सुन माणिक गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। उसे चुप देख ईड्डा ने कह दिया "एक देश का नेता बनते हुए आप देश में प्रचलित प्रथा की अवहेलना नहीं कर सकते। जिनका नेता बनना है, उनके विश्वासों को आप आघात नहीं पहुँचा सकते।"

"मैं तो यही करने जा रहा हूँ। मैं जनता पर राज्य करना चाहता हूँ। जनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दासता स्वीकार नहीं करूँगा।''

''मगर आप इस विषय में क्या करेंगे?'' लड़की ने अपनी कोख पर हाथ रखकर कहा।

''इसमें क्या है?''

''मैं क्या जानूँ। कुछ है। दो महीने हुए, जब आप पिछली बार आए थे, मैंने अपना सन्देह बताया था और आपने कहा था कि सन्देह और निश्चय में एक बहुत लम्बा अन्तर है। सो अब सन्देह नहीं निश्चय हो गया है। आपका कोई बच्चा इसमें बन रहा है।''

इस सूचना से मणिक कुछ देर तक विचार-मग्न रहा और फिर बोला, ''यह नहीं हो सकता।''

''क्या नहीं हो सकता?''

''यह असम्भव प्रतीत होता है कि यह मेरा बच्चा हो। पहले इसे होने दो, फिर देखेंगे कि क्या किया जा सकता है?''

''यह होगा। लड़का अथवा लड़की की ही बात जाननी शेष है।''

''पर यह मेरा होगा क्या?''

''इसमें तो सन्देह हो ही नहीं सकता।''

''यही तो सन्देह की बात है। इसलिए कहता हूँ कि इसे होने तो दो।''

ईड्डा मुख देखती रह गई, फिर कुछ उत्तेजित होकर बोली, ''मैं तो सदा आपकी निष्ठावान रही हूँ।''

''देखो इंड्डा! 'शेक्सपीयर' जैसे योग्य व्यक्ति ने यह लिखा है कि 'फ्रेयल्टी दाई नेम इज़ वोमैन।' (औरत दुर्बलता का दूसरा नाम है) इसलिए मैं तो उसके कथन पर विश्वास करता हूँ।''

ज्यों-ज्यों माणिक यह कह रहा था ईड्डा का शरीर ढीला पड़ता जाता था और माणिक ने भी अपना हाथ उसकी कमर से निकाल उसे दूर हट जाने की सुविधा दे दी थी। ईड्डा तो निराशा के भाव में शिथिल हो रही थी। माणिक ने उसे अब शिथिल होते देखा तो समझा कि वह उससे पीछे हट रही है। इससे उसने विचार किया कि ईड्डा उसके मनोभावों को समझ स्वीकार कर रही है। इससे उत्साहित हो उसने कहा, ''देखो ईड्डा हमको समझदारी की बात करनी चाहिए। हम मूर्ख संसार का अंग नहीं हैं। हमारा सम्बन्ध बना रहेगा, भले ही बाज़ारी कुत्ते भौंका करें। हमने अपना जीवन अपने सुख-आराम के लिए चलाना है, न कि लोगों को सन्तोष देने के लिए।''

''मैं तो समझ नहीं सकी कि यह कैसे होगा।'' आखिर ईड्डा ने अपने मन का संशय वर्णन कर दिया। उसने कहा, ''देखिए मिस्टर लाल! यह बच्चा होगा। माँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को और फिर अपने सब सम्बन्धियों को पता चलेगा। वे इस बच्चे को देखकर मेरे विषय में और जब मैं इसके बाप का नाम बताऊँगी तो उसके विषय में बहुत ही हीन विचार बना लेंगे। वे सब हमसे घृणा करने लगेंगे और हमारा समाज से बहिष्कार होगा। फिर क्या होगा?''

''कुछ भी नहीं होगा। मैं और तुम कन्धे से कन्धा लगाकर इस मूर्ख समाज की अवहेलना करेंगे और.....।'' वह फिर आनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा के विषय में कहने वाला था कि उसको ध्यान आने लगा कि इंग्लैण्ड जैसे पढ़े-लिखे देश में भी 'ड्यूक ऑफ़ विण्डसर' को जनता के मत की अवहेलना में राजगद्दी तक छोड़नी पड़ी थी।

उसे स्मरण आ रहा था कि वह ईड्डा के सामने कितनी शेखचिल्लियों की-सी बातें करता रहा है। परन्तु जनता, ईड्डा के साथ विवाह से अथवा विवाह के बिना सन्तान पैदा करने पर नाराज़ हो जाएगी।

उसने एक बात कह ईड्डा के पास से भाग जाने में ही हित समझा। उसने कह दिया, ''इस बच्चे ने एक नई परिस्थिति पैदा कर दी है। मैं अब इस दृष्टि से विचार कर ही यहाँ आऊँगा।'' यह कह वह उठ खड़ा हुआ।

''कब आएँगे?'' ईड्डा ने भी उठते हुए पूछा।

''बहुत जल्दी।'' माणिक कोठी के बाहर चला आया।

:: 4 ::

माणिकलाल के चले जाने पर ईड्डा धम्म से सोफा पर बैठ गई। ईड्डा की माँ मिसेज मैन्क्रीक ड्राइंगरूम के पर्दे के पीछे खड़ी अपनी लड़की और माणिक में हो रही वार्त्तालाप सुन रही थी। वह माणिक के चले जाने के उपरान्त पर्दे से बाहर चली आई और ईड्डा के पास बैठकर बोली, ''यह तो बहुत ही बेईमान आदमी मालूम होता है।''

''मम्मी! यह और इसका बाप बहुत धनी हैं।''

''पर इनका धन बिना विवाह के मिल सकेगा क्या?''

ईड्डा चुप रह गई। वह इस बात का उत्तर नहीं जानती थी। वह अब 'लाल' के विषय में उतने विश्वास से नहीं कह सकती थी जितना वह दो महीने पहले कहा करती थी। इन दो महीनों में स्थिति बहुत बदल चुकी थी। दो मास पूर्व उसने लाल को बताया था कि उसे सन्देह हो रहा है कि वह 'कंसीव' कर गई है। तब से वह उससे मिलने आज ही आया था। इन दो महीनों में ईड्डा लगभग निराश हो रही थी। आज उसके आने पर वह प्रसन्न हुई थी, परन्तु जब विवाह के निश्चय की बात आई तो माणिक ने लगभग विवाह से इनकार ही कर दिया था। इस पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह उससे सम्बन्ध तोड़ने की बात नहीं कह रहा था।

अब उसकी माँ का यह प्रश्न कि क्या उसके पिता की सम्पत्ति बिना विवाह के प्राप्त हो सकेगी उसे परेशान करने वाला सिद्ध हुआ था। मुक्तानन्द का 'बैंक बैलैन्स' कितना था यह तो वह जानती नहीं थी। हाँ, इतना उसको विदित था कि मिस्टर लाल के पिता की कोठी और उसमें लगा फरनीचर लाखों रुपये की कीमत का है। उसे यह भी विदित था कि मुक्तानन्द के यहाँ शनिवार रात का भोजन ऐसा होता था जैसा किसी गवर्नर के यहाँ भी सम्भव नहीं था।

इससे प्रलोभन बहुत प्रबल था, यद्यपि उसकी प्राप्ति में सन्देह उत्पन्न हो गया था। वह अभी माँ के प्रश्न का समाधान मन में विचार ही कर रही थी कि माँ उसके पास बैठ गई और लड़की को समझाने लगी, "देखो, ईड्डा! तुम अभी उसे नहीं बताना कि तुम्हारे गर्भ का सन्देह मिट गया है। अभी यह भ्रम बना रहने दो। दूसरे उससे मिलने अब तुमको जाना चाहिए। वह अब डर के मारे नहीं आएगा।"

"क्या डर है उसको?"

"देखा नहीं कि वह जहाँ दिन में दो-दो बार आया करता था अब दो महीने के उपरान्त आया है और तुमसे ऐसे भागा है मानो तुमको किसी प्रकार की छूत की बीमारी है।"

ईड्डा को भी माणिक का एकाएक उठकर चला जाना अखरा था। अब माँ का आशय समझ वह कहने लगी, "मम्मी! कभी-कभी तो मैं सोचा करती हूँ कि इसका विचार छोड़ ही दूँ।"

"यह तुम देख लो। फोकट में ही यह तुम्हारी संगत का इतने समय तक फल भोगता रहा है। कुछ तो उसका प्रतिकार लेना ही चाहिए।"

ईड्डा अब इस दिशा में विचार करने लगी कि विवाह तो सम्भव नहीं। इस पर भी यदि पिछली संगत का प्रतिकार लिया जाए और भविष्य में संगत का मूल्य माँगा जाए तो कैसा रहे? एक बात वह जानती थी कि मूल्य माँगना और मूल्य पाने में अन्तर है। वह अपने को एक 'कमोडिटी' बनाकर उसकी दुकान लगाना नहीं चाहती थी, परन्तु वह स्वेच्छा से कैसे उसको प्रतिकार देने लगेगा? यह वह विचार नहीं कर सकी।

दिन-पर-दिन व्यतीत हो रहे थे और ईड्डा अपने व्यवहार का निश्चय नहीं कर सकी। दूसरे-तीसरे दिन माँ उससे पूछती थी कि वह मिस्टर लाल से मिलने गई है अथवा नहीं? आखिर वह एक दिन उससे मिलने जाने के लिए तैयार हो गई। उसने भलीभाँति शृंगार किया, अपनी सबसे बढ़िया पोशाक पहनी और माणिक के पिता की कोठी पर जा पहुँची।

कोठी के बाहर बहुत-सी गाड़ियाँ खड़ी थीं। एक मोटरगाड़ी भी थी। उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों मोटरगाड़ी हिन्दुस्तान में एक नवीन वस्तु थी। इस नगर में यह पहली बार ही देखी गई थी। इस कारण कोठी के बाहर बहुत से लोग उस गाड़ी को खड़े देख रहे थे। उनमें माणिक भी खड़ा था। गाड़ी को चलाने वाला माणिक के समीप खड़ा समझा रहा था कि गाड़ी कैसे चलती है। सब लोग ड्राइवर के वक्तव्य को आश्चर्य चकित हो सुन रहे थे।

माणिक ने ईड्डा को आते देख लिया। वह उसके आने की आशा नहीं करता था। विशेष रूप से उस दिन जब कोठी में देश के बड़े-बड़े लोग आए हुए थे। इस कारण उसने उसे देखकर भी मुख दूसरी ओर कर लिया। ईड्डा चुपचाप माणिक के पीछे जा खड़ी हुई।

एक अन्य बंगाली व्यक्ति माणिक के पास खड़ा था। वह भी बहुत ध्यान से ड्राइवर के कथन को सुन रहा था। जब ड्राइवर अपनी बात कह चुका तो उस बंगाली महाशय ने पूछ लिया, "इसका दाम कितना है?"

"यह मुझे मालूम नहीं, परन्तु बम्बई में 'ब्रिटिश मोटर कम्पनी' इसके 'एजेन्ट' हैं। उनसे पता किया जा सकता है।"

इस पर माणिक ने उस बंगाली से पूछ लिया, "तो क्या आप लेने का विचार कर रहे हैं?"

"कर तो रहा हूँ, परन्तु दाम यदि बहुत अधिक हुआ तो बात विचारणीय होगी।"

"यह मिस्टर गोखले की गाड़ी है। उनसे पता करें।"

"भीतर मीटिंग समाप्त हुई है अथवा नहीं?"

"आप भी तो कमेटी में हैं। आपको पता होना चाहिए।"

"मैं कमेटी का सदस्य नहीं हूँ। मुझे उन्होंने सहयोग के लिए बुलाया था। मैं अपनी सम्मति और उसमें कारण बता चुका हूँ, अब निर्णय तो कमेटी ही करेगी।"

"आपने क्या राय दी है?" माणिक उस बंगाली महाशय को ले कोठी के भीतर चल पड़ा। उसने ध्यान ही नहीं किया कि ईड्डा उसके पीछे-पीछे चली आ रही है।

बंगाली महाशय बता रहा था, "मैं सरकार का किसी की मजहबी बातों में हस्तक्षेप पसन्द नहीं करता। विवाह और तलाक हमारे देश में मजहबी बातें मानी जाती हैं। यूरोप और हिन्दुस्तान में यही अन्तर है।"

माणिक को यह युक्ति ठीक प्रतीत नहीं हुई थी। वह समझता था कि यूरोपीय जातियाँ श्रेष्ठ हैं और उनमें तलाक देना राज्य नियमाधीन है। श्रेष्ठ जातियों की बातें स्वीकार होनी चाहिए, अन्यथा हिन्दुस्तानी पिछड़े ही रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू 'डाइवोर्स' एक्ट के लाने के लिए ऑल इण्डिया बार कौंसिल की एक उपसमिति की बैठक हो रही थी।

ये लोग ड्राइंगरूम में जा पहुँचे। वहाँ पंडित शशिमोहन और मधु खड़े बातें कर रहे थे। पंडित शशिमोहन ने दो करोड़ रुपया अपने शिक्षण-संस्थान के लिए एकत्रित कर लिया था और वह उस संस्थान को विश्वविद्यालय का पद दिलाने के लिए सरकार से स्वीकृति लेने का यत्न कर रहे थे। इससे पंडितजी की ख्याति सरकारी समुदाय में बहुत बढ़ गई थी। यों भी पंडितजी हिन्दू समुदाय के नेता माने जाने लगे थे। अत: वर्तमान कमेटी में देश की बार कौंसिल ने उनको भी रख लिया था।

पंडित शशिमोहन ने माणिक के साथ आ रहे बंगाली महाशय को सम्बोधन कर कहा, ''मिस्टर बैनर्जी! आपकी सम्मति नहीं मानी गई।''

''अर्थात् आपकी बात भी नहीं मानी गई।'' बैनर्जी ने हँसते हुए कहा।

''मैं तो ऐसे कानून के विरुद्ध हूँ, परन्तु पंडित मुक्तानन्दजी ने जब यह कहा कि कमेटी की सिफारिश सर्वसम्मत होनी चाहिए। इस पर मैंने अपना विरोध वापस ले लिया है।''

बैनर्जी हँस पड़ा और बोला, ''पण्डितजी यह निश्चय हिन्दू समाज में एक चिनगारी बन जाएगा और पूर्ण समाज में आग लगा देगा।''

''मैं तो अपने को सदा भगवान् के आश्रय रखे हुए हैं। यह सम्मति कि इस समय एकमत होने की आवश्यकता है, भगवान् की ओर से ही प्रतीत हुई है।''

''तो ये मुक्तानन्द भगवान् का स्वरूप हैं?''

इस पर माणिक ने पूछ लिया, ''पण्डितजी! बैठक समाप्त हो गई है?''

''हाँ। रिपोर्ट टाइप हो रही है और इसके उपरान्त हस्ताक्षर होने हैं।''

''तो आइए जल-पान कर लीजिए।''

''तुम तो जानते ही हो कि मैं घर से बाहर कुछ खाता-पीता नहीं।''

''जी। मैं जानता हूँ। आपके लिए 'ड्राई नट्स' हैं। वे तो आप ले ही सकते हैं। आइए मधुजी! आपको तो हम अछूतों के घर का जल पीने में आपत्ति नहीं।''

''मगर मैं इस कमेटी का न तो सदस्य हूँ और न ही आमन्त्रित। पण्डितजी को मिलने चला आया था। ये छ: मास के उपरान्त इस नगर में आए थे और सायंकाल ही जा रहे हैं।''

''मेरा निमंत्रण कमेटी के सदस्यों के नाते नहीं।''

पंडित शशिमोहन को रिपोर्ट टाइप होने तक उस पर हस्ताक्षर करने के लिए ठहरना ही था। पंडितजी जानते थे कि कमेटी के अन्य सदस्य बगल के कमरे में खाना-पीना कर रहे हैं, अत: वे भी वहाँ को चल पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु बाहर ही रह जाना चाहता था, परन्तु माणिक ने उसकी बाँह में बाँह डाली और उसको अपने साथ खाने के कमरे में ले गया।

ईड्डा उस कमरे में बहुत लोगों को बैठ खाते-पीते देख माणिक के पीछे-पीछे वहाँ नहीं गई। वह बाहर गोल कमरे में ही खड़ी रह गई। वहाँ और भी कई लोग खड़े थे। अत: किसी को सन्देह नहीं हुआ। सब यह समझते थे कि वह भी किसी को मिलने आई है।

ईड्डा समझ रही थी कि 'लाल' ने उसे देखा है, परन्तु मेहमानों की आवभगत में होने से वह उसकी ओर ध्यान नहीं दे सका। इस कारण वह इस विचार से कि उससे फिर मिलने का समय निश्चय कर लौट जाएगी, वह गोल कमरे में खड़ी थी।

इस समय मुक्तानन्द दो शीट कागज़ टाइप किए हुए हाथ में लिये एक कमरे से निकला और उस कमरे में, जहाँ लोग खाना-पीना कर रहे थे, जाते-जाते ईड्डा को देख उसकी ओर घूम गया।

ईड्डा पुत्र के स्थान पिता को आए देख पहले तो घबराई, परन्तु तुरन्त ही मुस्कराकर प्रश्नभरी दृष्टि से मुक्तानन्द की ओर देखने लगी। मुक्तानन्द ने पूछा, "माणिक से मिलने आई हो?"

"जी।"

"क्या देखा है तुमने उस मूर्ख लड़के में? अच्छा! तुम उस कमरे में ठहरो। आध घण्टे में ये सब लोग जाने वाले हैं।"

ईड्डा ने इसको गनीमत समझा और वह उस कमरे में चली गई जिसकी ओर मुक्तानन्द ने संकेत किया था।

मुक्तानन्द खाने के कमरे में चला गया और वहाँ कमेटी की सिफारिशों पर हस्ताक्षर होने लगे।

हस्ताक्षर होने, खाने-पीने और सबके विदा होने में एक घण्टा-भर लग गया। माणिक का विचार था कि ईड्डा बाहर ड्राइंग रूम में खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी। इस कारण वह मधु की बाँह में बाँह डाले ही खाने के कमरे से निकला। पंडित शशिमोहन अपने एक भक्त सेठ की घोड़ागाड़ी में आए थे। मधु उनके साथ ही उनके निवासस्थान तक जाना चाहता था। माणिक उनकी घोड़ागाड़ी में बैठा पुन: मोटरगाड़ी को देखने चल पड़ा। गोपालकृष्ण गोखले भी विशेष निमन्त्रण पर कमेटी के कार्य में सहयोग देने आए थे। वे माणिक को जानते थे और उसे लालसा-भरी दृष्टि से मोटर की ओर निहारते देख पूछने लगे, "माणिक!

"क्या देख रहे हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं देख रहा हूँ कि इस पर चढ़ना कष्टप्रद होता होगा।''

''तो इसकी सवारी करके देखो। आओ, मैं 'गवर्नमैंट हाउस' जा रहा हूँ। वहाँ से तुमको इस उड़न खटोले में वापस भेज दूँगा।''

माणिक यही तो चाहता था। वह अभी भी विचार कर रहा था कि कहीं ईड्डा उसके कमरे में न बैठी हो।

:: 5 ::

गोखले साहब गाड़ी में बैठे तो माणिक भी उनके समीप बैठ गया। गोखले पूछने लगे, ''क्या कर रहे हो आजकल?''

''डैडी के साथ प्रैक्टिस करता हूँ।''

''तुमको तो सरकारी सर्विस में जाना चाहिए।''

''मैं सरकारी नौकरी में कोई आकर्षण नहीं देखता।''

''पर यह वकालत भी तो एक महा गंदा काम है।''

''यह इस कारण कि कानून गंदे बने हैं।''

''पर कानून तो सामाजिक विकास के साथ विकास पाते हैं। यदि समाज में विकास गन्दगी की ओर हुआ है तो कानून भी गंदे बने हैं।''

''समाज तो मूढ़ों का टोला है।'' माणिक ने जोश में आकर कहा, ''यह तो पढ़े-लिखे विद्वानों का काम है कि इन मूढ़ों को लाठी से हाँकते हुए ले जाएँ।''

''माणिक! यह काम 'डिक्टेटरों' का है, विद्वानों का नहीं। विद्वान लोग जनता को लाठी से नहीं वरन प्यार और प्रेरणा से अपने साथ ले जाते हैं। और डिक्टेटरों का परिणाम सदा 'सैंट हैलिना' जैसे द्वीप में होता है अथवा 'चार्ल्स द फर्स्ट' की भाँति होता है।''

माणिक मौन हो गया। गोखले महोदय अपने कथन का प्रभाव इस युवक पर देखने लगा। वह उसका मुख देखने लगा। एकाएक माणिक के मन में एक विचार आया। वह बोला, ''मैं तो हिन्दुस्तान का वाइसराय बनना चाहता हूँ, गवर्नमैंट की नौकरी करना नहीं चाहता।''

''परन्तु वह भी तो एक सरकारी नौकर है। साथ ही वाइसराय बनने के लिए किसी अंग्रेज़ लार्ड के घर में जन्म लेना पड़ेगा।''

''मैं क्रान्तिकारियों का नेता बन सकता हूँ।''

गोखले हँस पड़ा। हँसकर बोला, ''माणिक! फाँसी लटकने के समय बहुत कष्ट होता है और फिर उनको रहने के लिए पिता जैसी कोठी नहीं बल्कि जेलखाने के 'सौलिटरी सैल' में रहना सीखना होता है। मैं अण्डेमन का बन्दीगृह देखने गया था। बन्दीगृह तो वर्णनातीत है। मैंने वैसा भयानक स्थान कहीं अन्यत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा ही नहीं और फिर वहाँ का दरोगा 'बैरी' तो साक्षात् शैतान की मूर्ति है।''

माणिक के मस्तक पर पसीने की बूँदें दिखाई देने लगीं। इस समय वे गवर्नमैंट हाउस में पहुँच गए थे। गोखले साहब गाड़ी से उतर माणिक से बोले, ''आओ। ज़रा बैठो। मैं देख लूँ कि गाड़ी कितनी देर के लिए खाली है। तब तुम्हें इसमें भेज दूँगा।''

माणिक साथ-साथ चलता हुआ विचार कर रहा था कि जेलर 'बैरी' की क्रूर आँखों और मुखाकृति के सामने कैसा अनुभव होता होगा। चलते-चलते उसके पूर्ण शरीर में कंपकंपी हुई। गोखले अनुभव कर रहा था कि उसने अपने मित्र के इकलौते पुत्र को जीवन-भर का पाठ पढ़ा दिया है। यह मूर्ख युवक समझ गया है कि क्रान्तिकारी कहाँ और कैसे मरते हैं।

गवर्नमैण्ट हाउस के बगल के कमरे में ये दोनों जा पहुँचे। वहाँ एक सोफे पर माणिक को बैठाकर गोखले ने कहा, ''देखो माणिक! मैं तुम्हारे पापा को यह कह रहा हूँ कि तुम्हारा विवाह शीघ्र कर दिया जाए, जिससे तुम क्रान्तिकारियों के चंगुल से बच सको।''

''तो विवाहित युवक क्रान्तिकारी नहीं हो सकते क्या?''

''हो जाते हैं, जब उनकी पत्नियाँ आयु में उनसे बड़ी हों और वे पतियों से पृथक् हो जाएँ।''

माणिक मुस्कराया और बोला। ''मेरा विवाह हो रहा है।''

''कब?''

''इसी मास के अन्तिम रविवार को।''

''ओह! तब तो ठीक है। देखो, पत्नी से लड़ना नहीं और उसे सदा अपने साथ रखना। फिर वह तुम्हारे गरम दिमाग को ठण्डा करती रहेगी।''

इतना कह उसने उठ टेलीफोन पर किसी से मराठी में बात की। बात समाप्त कर टेलीफोन बन्द कर उसने माणिक को कह दिया, ''अब तुम जा सकते हो। मैं तुमको विवाह की बधाई अभी दिए देता हूँ। मैं कल ही अफ्रीका के दौरे पर जा रहा हूँ और तुम्हारे विवाह पर बधाई नहीं दे सकूँगा।''

माणिक पिता की कोठी पर पहुँचा तो ईड्डा उसके पिता के स्टडी रूम में से निकलती दिखाई दी। वह आशा कर रहा था कि वह अवश्य उसकी ओर आएगी और उससे 'प्राईवेट' में बात करने का आग्रह करेगी। उससे बचने के लिए वह मुख मोड़कर दूसरी तरफ चल पड़ा। पहले वह पिताजी को मोटर की सवारी का अनुभव बताने जा रहा था। वह यह समझ रहा था कि ईड्डा उसके पीछे-पीछे आ रही है। वह अपनी माँ के कमरे में पहुँच उससे बचना चाहता था। कोठी के अन्तःपुर के द्वार पर पहुँच उसने घूमकर देखना चाहा कि ईड्डा उधर आ रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा नहीं। परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि ईड्डा लम्बे-लम्बे पग उठाती हुई कोठी से बाहर निकल रही है। वह इसका अर्थ न समझता हुआ उसे जाते देखता रह गया।

जब वह कोठी से निकल गई तो माणिक माँ के कमरे में जाना व्यर्थ समझ लौट पड़ा और पिता के कमरे में जा पहुँचा। पंडित मुक्तानन्द प्रसन्नवदन, सन्तुष्ट मन और आँखें मूँदे हुए अपनी कुर्सी पर बैठा हुआ था। माणिक ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा, "पापा।"

मुक्तानन्द ने आँखें खोलीं और पूछ लिया, "कहाँ गए थे तुम ?"

"मैं उस एंग्लो इण्डियन छोकरी से बचना चाहता था। वह मेरे पीछे विवाह का प्रस्ताव लिये घूम रही है।"

"सत्य ? पर मैंने यह नहीं पूछा कि तुम क्यों चले गए थे ? मैंने पूछा है कि तुम कहाँ चले गए थे ?"

"पापा ! हमको भी एक मोटरगाड़ी लेनी चाहिए।"

"अच्छी बात है। तुम्हारे विवाह के उपरान्त तुमको ले दूँगा, जिससे तुम अपनी पत्नी को हिन्दुस्तान की सैर करा सकोगे। परन्तु तुम मिस्टर गोखले को तंग कर रहे थे क्या ?"

"तंग नहीं कर रहा था, उनके उपदेश सुन रहा था।"

"क्या कह रहे थे वे ?"

"वे कह रहे थे कि क्रान्तिकारियों का अन्त अण्डेमन जेल में होता है। वे वहाँ का भयंकर चित्र खींच रहे थे।"

"हाँ। वे वहाँ गए थे।"

"पर पापा ! तिलक तो छूट गए हैं ?"

"उसकी कैद की अवधि समाप्त हो गई है।"

"तो और दण्ड क्यों नहीं दे दिया गया ?"

"और कैसे दे देते ! जितना अधिक-से-अधिक दण्ड दिया जा सकता था ? दिया गया था।"

"मैं वाइसराय होता तो तिलक को फाँसी पर लटकवा देता।"

"किस कानून से ?"

"कानून तो बनाए जाते हैं।"

"माणिक, तुम अभी पाँच वर्ष के बच्चे मालूम होते हो और कानून पढ़कर भी नहीं समझे कि कानून कैसे बनाए जाते हैं। मैं कभी विचार करता हूँ कि तुम विलायत में सात वर्ष रहकर भाड़ ही झोंकते रहे हो।"

माणिक चुप कर गया। कुछ देर बैठ माणिक उठ खड़ा हुआ, परन्तु पिता ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, ''देखो, मुझे तिलक से इतना भय नहीं, जितना मधु से है। तुम आज फिर उससे घुल-घुलकर बातें करने लगे थे।''

''मैं तो पंडित शशिमोहनजी से बातें कर रहा था। वह उनसे मिलने आया हुआ था। इससे उससे भी बातचीत होने लगी थी।''

''कुछ भी हो। वह शीघ्र ही जेल भेजा जाने वाला है।''

''किसलिए?''

''उसने एक पुस्तक लिखी है, 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया'।''

''क्या लिखा है उसमें?''

''मैंने पढ़ी नहीं। परन्तु मिस्टर गोखले कह रहे थे कि 'होम-मैम्बर' ने पुस्तक की जाँच की है और उसके आधार पर ही उसे पकड़ा जा रहा है।''

''यह ठीक ही होगा।''

''हाँ। असल बात यह है कि महाराष्ट्र में तिलक ने जन-मानस में आग लगा दी थी। वही बात मधु यहाँ अपने प्रान्त में करना चाहता है। यहाँ की सरकार बम्बई की सरकार से अधिक चतुर सिद्ध होगी।''

''परन्तु मिस्टर गोखले तो भारत सरकार के गृह मैम्बर की बात कह रहे हैं न?''

''हाँ, प्रान्तीय सरकार ने पुस्तक अपनी सिफारिश के साथ वहाँ भेजी है।''

''क्या सिफारिश की है प्रान्तीय सरकार ने?''

''यही कि मधुमोहन ने इस पुस्तक में लिखा है कि भारत सरकार ने कानून से स्थापित सरकार को उलट दिया था।''

''इस अपराध में कितना दण्ड हो सकता है?''

''छः वर्ष का दण्ड तो हो ही सकता है।''

''मधु को कहाँ भेजा जाएगा?''

''यह सरकार ने अभी निश्चय नहीं किया। वह अण्डेमन भी भेजा जा सकता है।''

माणिक को अण्डेमन जेल की याद ने पुनः कंपकपी उत्पन्न कर दी। मुक्तानन्द ने देखा तो पूछ लिया, ''क्या बात है? तुम काँप क्यों उठे हो?''

''वहाँ का वर्णन एक समाचारपत्र में पढ़ा था। उसे याद कर काँप उठता हूँ। पापा! क्या हम उसे बचा नहीं सकते?''

''तुम उसे बचाने की बात किसलिए कह रहे हो?''

''वह एक अति बुद्धिमान हिन्दुस्तानी है।''

''परन्तु सावरकर तो उससे भी अधिक योग्य व्यक्ति है। जब वह अण्डेमान भेजा जा सकता है तो ये क्यों नहीं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु उसने तो हत्याएँ कराई हैं।"

"यह तो मुकद्दमे में सिद्ध हो नहीं सका।"

"इस पर भी उसे साठ वर्ष की कैद का दण्ड दिया गया है।"

"यह तो उसे फाँसी का दण्ड न देने के स्थान उसे घुल-घुलकर मर जाने का दण्ड दिया गया है। वह इतनी लम्बी कैद में बच तो सकता ही नहीं।"

माणिक को पुनः कंपकंपी हुई तो मुक्तानन्द ने पूछ लिया, "काँपने क्यों लगे हो?"

"मरने से डर लगता है।"

"अच्छा ऐसा करो। आज मधु की दुकान पर जाना और उसकी 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' पुस्तक खरीद लाना।"

:: 6 ::

चन्द्रावती का गाँव से पत्र आया था, "रेशम फिर तंग कर रही है। वह अकारण गौरांग को पीटती है। मुझसे बात-बात पर झगड़ती है और ज़मींदारी के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप करती रहती है।

"तुम मीना को यहाँ भेज दो तो मुझे कुछ सहायता मिल सकेगी। मैं अब बूढ़ी हो रही हूँ।"

मधु ने माताजी का पत्र मीना को दिखाया तो वह मौन बैठी रह गई। मधु ने पूछा, "क्या विचार है?"

"मन तो वहाँ जाने को नहीं करता। साथ ही मैं समझती हूँ कि रेशम बहन की समस्या का यह सुझाव नहीं।"

"तो क्या सुझाव हैं?"

"मैं समझती हूँ कि उसे यहाँ नगर में बुलाकर समाज के सम्पर्क में लाना चाहिए और यदि उसने किसी से विवाह कर लिया तो उसका शेष जीवन सुख से व्यतीत हो जाएगा।"

"तो तुम समझती हो कि चालीस वर्ष की आयु में भी वह पति की लालसा रखती है?"

"यह आयु की समस्या नहीं। यह मनःस्थिति की बात है। उसके मन की चंचलता को शान्त करने के लिए कोई मन पर प्रभाव उत्पन्न करने वाली योजना होनी चाहिए। वह वहाँ गाँव में उपलब्ध नहीं।"

"तो एक बात करो।"

"क्या?"

"तुम गाँव चली जाओ और उससे घनिष्ठता उत्पन्न कर उसे नगर में ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ। मैं उसे कहूँगा तो वह इसके गलत अर्थ लगाने लगेगी। मैं अब तुम्हारी बात को ठीक मानता हूँ। वह अभी बच्ची ही थी, तभी लड़कों से चिपटी रहती थी। मेरे साथ भी उसका मेल-जोल उसकी इस प्रवृत्ति का ही परिणाम था।''

''हाँ। भगवान् ने गीता में कहा भी है कि रजोगुण प्रधान व्यक्ति धर्म-अधर्म का विचार किए बिना कर्मरत रहता है। यदि उसे धर्मयुक्त कार्य करने को न मिले तो वह अधर्मयुक्त कार्य करने लगता है। अनर्थ तो और भी अधिक होता है जब रजोगुण प्रधान व्यक्ति मोटी बुद्धि रखने वाला हो।''

मधु भी यह समझता था। इस कारण उसने कह दिया, ''यह ठीक ही है कि उसे किसी ऐसे कार्य पर लगा दिया जाए जो धर्मयुक्त हो और उस कार्य से उसको अवकाश ही न मिले। परन्तु मैं समझता हूँ कि उसको पुन: गृहस्थ जीवन में डालना शुभ नहीं होगा।''

''स्त्री के लिए गृहस्थ जीवन से अधिक रोचक कार्य और नहीं हो सकता। यदि उसे कोई ऐसा पति मिल जाए जो उसको गृहस्थ की चक्की चलाने में लगा सके तो वह सुख अनुभव करेगी।''

''नहीं मीना! संसार में और काम भी हैं जो मनुष्य को अपने में लीन रख सकते हैं। अच्छा, तुम उसको किसी प्रकार यहाँ खींच लाओ और काम मैं ढूँढ दूँगा। तनिक उसकी मनोवृत्ति का अध्ययन करना पड़ेगा।''

मीना रेशम को नगर में ले आना अति कठिन मानती थी। इस पर भी माताजी की कठिनाई का अनुमान लगा वह इस कार्य को करने के लिए चल पड़ी। सबसे बड़ी बात गौरांग का पीटा जाना था। वह उस बेचारे को एक मोटी बुद्धि की स्त्री से बचाना चाहती थी।

रेशम को नगर लाने में कठिनाई नहीं हुई। मीना ने यह कहा, ''रेशम बहन! गौरांग अब छ: वर्ष का हो चुका है। हम इसे पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाना चाहते हैं। यह बात यहाँ गाँव में नहीं हो सकती। इसे नगर में ले जाकर पढ़ाना होगा।''

''पर मेरा इससे इतना स्नेह हो गया है कि मैं इसको अपने से दूर नहीं कर सकती। यह रात को भी मेरे साथ ही सोता है।''

''तो ऐसा करो कि तुम भी नगर में चलकर रहो। तुमको भी ज़रा नगर के जीवन का रस लेना चाहिए।''

''पर माताजी को यहाँ अकेले ज़मींदारी का कार्य करने में कठिनाई होगी। वे वृद्ध हो रही हैं और अब काम करती हुई थक जाती हैं।''

''इसका प्रबन्ध तो हरि के पिता करेंगे। यहाँ कोई योग्य मैनेजर भेजा जा सकता है।''

''माताजी यह मानेंगी नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो बहन! ज़रा मिन्नत से और गौरांग का नाम लेकर उन्हें कहेंगी तो वे मान जाएँगी।"

रेशम को यह योजना पसन्द आई। अतः दोनों नन्द-भाभी चन्द्रावती के पास जा पहुँचीं। चन्द्रावती तो रेशम के व्यवहार से ऊब चुकी थी। अतः जब उसके सम्मुख रेशम ने यह प्रस्ताव रखा कि गौरांग की शिक्षा नगर में होगी, और वह उसे दूसरा रघुवीर बनने नहीं देगी तो चन्द्रावती ने सुख की साँस ली। वह समझी कि कम-से-कम वह बेचारा लड़का तो इस पागल औरत के पंजे से बच जाएगा। परन्तु जब रेशम ने यह कहा, "माँजी! मैं भी इसके साथ ही नगर में जाकर रहूँगी।" तो चन्द्रावती का सिर चकराने लगा। उसे कुछ ऐसा समझ आया कि यह पुनः मधु से अपना अविवाहित सम्बन्ध स्थापित करने जा रही है।

चन्द्रावती ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह मन में इस बात के परिणाम का चिन्तन करने लगी। रेशम ने समझा कि चन्द्रावती इन्कार करने वाली है और वह उसकी योजना में बाधा डालने वाली है। उसने मिन्नत के भाव से कह दिया, "माँजी! गौरांग पढ़-लिखकर लायक बने, यह मेरी अभिलाषा है, परन्तु मेरा उससे इतना स्नेह हो गया है कि मैं उसको छोड़ नहीं सकती। अतः मैं नगर में जाना चाहती हूँ।"

"पर रेशम!" चन्द्रावती ने कह दिया, "यदि तुमने गौरांग को वहाँ पर भी पीटा तो उसका पिता तुमको पीट देगा।"

"वह वहाँ जाकर वह खराबी नहीं करेगा जो यहाँ करता है। फिर किसलिए पीटा जाएगा? साथ ही वहाँ भैया मधु हैं। वे इसको समझाते रहेंगे और तब पीटने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।"

"देख लो। मैं तो तुमको सुखी देखना चाहती हूँ।"

इस प्रकार बात बन गई और नगर जाने की तैयारी होने लगी। चन्द्रावती ने मीना को एक ओर ले जाकर कह दिया, "मैं इस औरत का मधु के साथ रहना उसके लिए ठीक नहीं मानती। तुम घाटे में रह जाओगी।"

"माताजी! आप चिन्ता न करें। आपको तो अपने पुत्र पर मुझसे अधिक विश्वास होना चाहिए।"

"देख लो।"

"आपका आशीर्वाद होना चाहिए। शेष सब ठीक होगा।"

पन्द्रह दिन गाँव में रहकर मीना लौट आई। वह अपने साथ रेशम बहन और गौरांग को भी ले आई। गौरांग की एक बहन भी अब थी। उसका नाम कादम्बिनी रखा गया या। हरिमोहन को संस्कृत कालिज, बनारस में पढ़ने के लिए भरती करा दिया गया था। गौरांग को नगर के एक स्कूल में भेजना आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया गया। परन्तु समस्या रेशम की थी और मधु ने उसको किसी काम पर नियुक्त करना था। वह उससे यह पूछना चाहता था कि वह क्या काम कर सकती है। अतः एक दिन उसने पूछ लिया, "रेशम बहन! गाँव में तो तुम ज़मींदारी का काम देखती थीं, अतः यहाँ भी तुमको कुछ करना चाहिए, अन्यथा मन नहीं लगेगा।"

"मैं भी यह अनुभव कर रही हूँ। मैं अब गाँव में तो जाऊँगी नहीं। परन्तु यहाँ खाने-पीने और सो रहने के अतिरिक्त कुछ काम नहीं।"

"काम तो है। देखो, मीना दिन-भर काम करती रहती है।"

"पर वह तो पढ़ी-लिखी है। संस्कृत जानती है। अतः संस्कृत की किताबें पढ़ती रहती है। वह कुछ लिखती भी रहती है। वह क्या लिखती रहती है, मैं तो समझ नहीं सकती।"

"बात तो ठीक है। वह पढ़ी-लिखी होने से अपने लिए काम ढूँढ लेती है। पर रेशम, तुम भी तो कुछ पढ़ी हो।"

"केवल हिन्दी। उसका भी अब अभ्यास नहीं रहा।"

"अभ्यास तो करने से हो जाता है। यदि तुम हिन्दी लिखने का थोड़ा अभ्यास कर लो तो काम तो बताया जा सकता है।"

"क्या काम बताएँगे?"

"मैंने एक काम सोचा है। परन्तु तुम पहले थोड़ा लिखने का अभ्यास करो तो बता दूँगा।"

रेशम ने मीना से बात की तो मीना ने उसे प्रोत्साहित किया और वह सुन्दर सुलेख लिखने का अभ्यास करने लगी।

रेशम को नगर में आए छः महीने हो गए थे। उसे देवनागरी लिखने का अभ्यास करते हुए भी चार महीने से ऊपर हो चुके थे। एक दिन मधु ने उसे रामचरितमानस के दोहों, छन्दों, कवित्तों इत्यादि की वर्णनानुक्रमणिका बनाने का काम दे दिया। उसे कार्य समझाने में कुछ दिन लगे। भगवद्गीता के श्लोकों की वर्णनानुक्रमणिका दिखाकर रामचरितमानस के छन्दों को अनुक्रमणिका में बाँधने का प्रयास आरम्भ हो गया। मीना इसमें उसकी सहायता करने लगी।

काम अति रोचक था और धीरे-धीरे चलने लगा।

एक दिन इसी कार्य के सम्बन्ध में मीना और रेशम दुकान पर आई हुई थीं। मधु उनके काम को देख रहा था और उसमें भूलों को दिखा रहा था।

इस समय माणिक दुकान पर आया। वह अपने पिता के कहने पर 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' की एक प्रति खरीदने आया था। वह सीधा वहाँ पर ही आ गया जहाँ मधु इन दोनों के काम को देख रहा था। अनुक्रमणिका अभी बननी आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हुई थी। एक 'लेजर' की भाँति का रजिस्टर बनवा दिया गया था। उसमें वर्णों के खाते खोल दिए गए थे और खातों में उप-खाते बनाए गए थे। प्रत्येक छन्द का पहला पद उन खातों में यथा-स्थान दर्ज किया जा रहा था।

माणिक आया तो मधु ने उठकर उससे हाथ मिलाया और पूछ लिया, ''कहो, माणिक! कैसे आना हुआ है आज?''

''एक तो पापा का काम है और दूसरे आपसे मिले बहुत दिन हो गए थे। उस दिन कोठी पर पंडित शशिमोहनजी के साथ आपसे साक्षात् तो हुआ था, परन्तु बातचीत नहीं हो सकी थी।''

इतना कहते-कहते वह वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गया। बैठते हुए उसकी दृष्टि सामने बैठी दोनों औरतों पर पड़ी। वह मीना को पहचान गया और बोला, ''भाभी! नमस्ते। देखिए, मैंने आपको कई वर्ष के उपरान्त देखा है। तब भी पहचान लिया है।''

मीना ने कहा, ''हाँ। लन्दन में 'सैवाय' होटल के 'रिसैप्शन हाल' में आपके दर्शन हुए थे।''

''और आपका क्या परिचय है?'' माणिक ने रेशम की ओर देखकर पूछ लिया।

''यह बहन रेशम है।''

माणिक ने रेशम को भी नमस्कार कर दिया।

मधु उसे वहाँ अधिक देर तक बैठने देना नहीं चाहता था। रेशम के काम का निरीक्षण अभी समाप्त नहीं हुआ था। इस कारण उसने उनको वहीं बैठे रहने दिया और उठकर माणिक से पूछने लगा, ''तो पहले भापा का काम बता दो।''

''एक पुस्तक चाहिए।''

''कौन-सी पुस्तक चाहिए?''

माणिक अपने स्थान से उठना नहीं चाहता था, परन्तु मधु उठ पड़ा था। माणिक ने बैठे-बैठे ही कह दिया, '' 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' की एक प्रति चाहिए।''

मधु माणिक को वहाँ डटकर बैठे देख उसे शीघ्र विदा करने के लिए पुस्तक निकालने चला गया। जिस अलमारी में पुस्तक पड़ी थी, उसके सम्मुख एक अन्य सज्जन खड़े थे। मधु ने उनसे पूछ लिया, ''आप क्या ढूँढ रहे हैं? क्या मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूँ?''

''यदि चाहें तो कर सकते हैं। मैं किसी ऐसी पुस्तक की खोज में हूँ, जिससे मुझे नास्तिकवाद के पक्ष में सब युक्तियों का ज्ञान हो जाए।''

''तो आप इधर आइए। मैं आपको बताता हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु उस आदमी को दुकान के दूसरे कोने में ले गया। वहाँ मध्ययुगीन यूरोपियन दार्शनिकों की कृतियाँ पड़ी थीं। मधु ने उस व्यक्ति को वहाँ खड़ा करके पूछ लिया, "आप यदि व्याख्या से जानना चाहते हैं तो भिन्न-भिन्न दाशनिकों की कई पुस्तकें लेनी पड़ेंगी और यदि संक्षेप में पूर्ण विषय को समझना चाहते हैं तो 'यूरोपियन फ़िलॉसफ़र्स ऑफ द माडर्न एज' ले लीजिए। इससे आपका मतलब हल हो जाएगा।"

मधु ने प्रस्तावित पुस्तक की एक प्रति अलमारी से निकालकर ग्राहक के हाथ में दे दी। वह पुस्तक को देखने लगा तो मधु ने उसे समीप रख कुर्सी पर बैठ निरीक्षण करने का निमंत्रण दे दिया और स्वयं वह माणिक के लिए अपनी पुस्तक की एक प्रति निकालकर ले आया। माणिक और रेशम गम्भीर हो वार्त्तालाप कर रहे थे।

:: 7 ::

मधु आया तो माणिक रेशम को यह कहते हुए उठ खड़ा हुआ, "मैं आपसे फिर मिलूँगा। आपमें मेरी रुचि उत्पन्न हो रही है।"

मधु के हाथ से किताब ले उसे खोल, उसके दो-चार पृष्ठ इधर-उधर देखकर किताब मधु को देते हुए माणिक ने कहा, "इसे बँधवा दीजिए। दाम क्या होगा ?"

मधु ने चपरासी को संकेत से बुलाया और कह दिया, "किताब को बँधवाकर इसका बिल ले आओ।"

माणिक अब मधु को एक ओर ले जाकर पूछने लगा, "आजकल आप क्रियाशील राजनीति में रुचि लेते हैं अथवा नहीं ?"

"ले तो रहा हूँ।"

"वही पुराने दल में चले गए हैं ?"

"कौन-से पुराने दल में ?"

"सुना है कि आप चितपावन 'रेवोल्यूशनरी ग्रुप' में थे ?"

"यह रेवोल्यूशनरी दल कहाँ है ?"

"तो आप नहीं जानते ?"

"नहीं।"

"यही कि यह ग्रुप बम्बई के प्रार्थना समाज के बन्द होने पर बना था और इसका असली नाम था हिन्दू संरक्षिणी समाज। आप इसके सदस्य तो थे। अब यह ग्रुप नहीं है। मैं जानने की इच्छा रखता हूँ कि इसके स्थान पर अब कौन-से ग्रुप में काम कर रहे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए माणिकजी! मैं किसी वैसे ग्रुप को जानता नहीं था। आज भी मैं किसी दल में नहीं हूँ। मैं एक वर्ग में हूँ और उसमें काम कर रहा हूँ।"

"वह कौन-सा वर्ग है?"

"बुद्धिशील लेखकों का। यह किसी भी वर्ग की सीमाओं में बँधना नहीं चाहता। दूसरे शब्दों में यह वर्गहीन वर्ग है। यह बिना परिधि का घेरा है।"

माणिक इस बात का अर्थ समझ नहीं सका। वे बातें करते-करते उस अलमारी के समीप जा पहुँचे, जिसके समीप कुर्सी पर बैठा ग्राहक दार्शनिकों की पुस्तकें देख रहा था। माणिक ने मुस्कराते हुए कहा, "भला परिधि के बिना भी कोई घेरा हो सकता है?"

कुर्सी पर बैठा आदमी बोल उठा, "हाँ, ऐसा एक घेरा है।"

"कहाँ है?" माणिक ने उस व्यक्ति की ओर देखकर पूछ लिया।

उस व्यक्ति ने तीन पुस्तकें मधु को दिखाते हुए कहा, "इनको बँधवा दीजिए।" मधु ने चपरासी को पुस्तकें दीं। उस व्यक्ति ने माणिक को कहा, "जब तक परिधि-रहित घेरे की धारणा मन में नहीं बैठ सकती, तब तक परिधि वाले घेरे की समझ आ ही नहीं सकती। जब तक असीम का ज्ञान न हो, सीमित का विचार उत्पन्न हो ही नहीं सकता।"

माणिक इस कथन का सिर-पैर भी समझ नहीं सका। वह उस व्यक्ति का मुख देखता रह गया। वह व्यक्ति माणिक के मुख को देख समझ रहा था कि वह कुछ भी नहीं समझा। उसने उसे समझाने के लिए कहा, "निर्बुद्धि मनुष्य की बुद्धि-विहीनता का ठीक-ठीक अनुमान नहीं लग सकता, जब तक सर्वज्ञ का भान न हो। इस जगत् की असीमता का ज्ञान न हो तो मनुष्य की तुच्छता का ज्ञान नहीं हो सकता। असीम का विचार छोड़कर जो तुच्छ, हीन, लघु बातों को ही देखते रहते हैं, वे धीरे-धीरे अभिमानी होते जाते हैं। अभिमान विनाश का सूचक है।"

"यह सब दार्शनिकों की बक-बक है। कोई सही दिमाग आदमी इसे मान नहीं सकता।"

"और सही क्या होता है?" उस व्यक्ति ने पूछ लिया।

"जो सही है।"

वह दूसरा व्यक्ति हँस पड़ा। हँसते हुए वह बोला, "अभिप्राय यह कि जो आप कहते हैं, वही सही है। यही अभिमान की सूचक बात है। देखिए, किसी वस्तु का मान जानने की पश्चिमी विधि यह है कि यह देखा जाए कि वह वस्तु किसी लघुतम वस्तु से कितनी बड़ी है। इससे तो वस्तु के मान का ठीक ज्ञान नहीं हो सकता। अपने को छोटों से नापना तो वास्तव में छोटे को नापना है, अर्थात् वह इकाई वस्तु से कितनी गुनी है, यह वस्तु का और इकाई का मिथ्या ज्ञान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होना यह चाहिए कि जो असीम है उससे हमारी वस्तु कितनी छोटी है, यह देखा जाय। यही वस्तु का सत्य अनुमान होगा, इसके ज्ञान से मनुष्य में उस असीम तक पहुँचने का यत्न होता है।"

माणिक को उस व्यक्ति का कथन अनर्गल ही प्रतीत हुआ। वह एकाएक वहाँ से घूम उधर चल पड़ा जिधर मीना और रेशम बैठी थीं। वह दार्शनिक वार्तालाप को इस प्रकार एकदम बन्द होते देख हँस पड़ा। मधु उसके पास आकर पूछने लगा, "आप यहाँ पहली बार आए हैं?"

"इस दुकान में न? हाँ। मैं हाईकोर्ट में 'ऐडीशनल जज' नियुक्त हुआ हूँ।"

"आपका शुभ नाम मैं जान सकता हूँ क्या?"

"सी०वी० आयंगर।"

"ओह! परन्तु आप पोशाक अंग्रेज़ी पहने हैं, भाषा हिन्दी बोलते हैं और विचार सार्वभौमिक रखते हैं।"

वह व्यक्ति हँस पड़ा और बोला, "यह सब इस कारण है कि मैं भी बिना परिधि का एक घेरा हूँ।"

इस पर तो मधु भी हँसने लगा था। वे 'काउन्टर' के पास आ गए थे। वहाँ 'क्लर्क' बैठा दाम प्राप्त कर रहा था। मिस्टर आयंगर ने कहा, "लघुता, मूर्खता और अनभिज्ञता का लक्षण है सीमा। ज्ञान असीमा की ओर ले जाता है।"

माणिक भी काउन्टर पर पुस्तक का दाम जमा कराने आया हुआ था। वह इस व्यक्ति को, मूर्खता और अज्ञानता के लक्षण बताते सुन माथे पर त्योरी चढ़ा उसके मुख पर देखने लगा। मधु ने माणिक की ओर ध्यान नहीं दिया और 'जस्टिस' आयंगर से बातें करता हुआ दुकान के बाहर तक चला गया। मिस्टर आयंगर ताँगे में आया था और जब ये उस ताँगे तक पहुँचे तो आयंगर ने कह दिया, "मुझे कल किसी ने इस दुकान का परिचय दिया था और आपके विषय में भी बताया था। मुझे बहुत प्रसन्नता होगी, यदि आप मुझे घर पर मिलने आएँ। मैं सायंकाल पाँच बजे से सात बजे तक सदा रिक्त होता हूँ।"

"मैं इस सौभाग्य को प्राप्त करने का यत्न करूँगा।"

मधु आयंगर को विदा कर दुकान में लौटा तो माणिक चरणसिंह से बातें कर रहा था। चरणसिंह इन्द्रा के साथ आया था। इन्द्रा तो मीना और रेशम के पास जा बैठी थी और चरणसिंह माणिक के पास खड़ा मुस्करा रहा था।

मधु आया तो माणिक ने पूछ लिया, "यह कौन 'ईडियट' था?" चरणसिंह नहीं जानता था कि क्या बातचीत हुई थी उसके आने से पहले। अतः उसने माणिक से पूछ लिया, "कौन 'ईडियट'?"

"यह जो बन्दर की-सी सूरत वाला ताँगे में गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर तो चरणसिंह खिलखिलाकर हँस पड़ा। फिर एकाएक गंभीर होकर बोला, ''माणिक! वह है 'जस्टिस' सी०वी० आयंगर।''

''अरे! यह बातें तो थर्ड रेट वकीलों की-सी करते हैं।''

मधु ने आयंगर की सफाई देते हुए कह दिया, ''वह बेचारा जानता नहीं था कि वह एक फर्स्ट रेट बैरिस्टर से बातें कर रहा है। जानता होता तो कुछ अक्ल की बात ही करता।''

इस पर चरणसिंह ने कह दिया, ''कल इसने एक मुकद्दमे में मेरी बहस सुनी थी और पीछे यह मुझे कोर्ट रूम के बाहर मिला और पूछने लगा कि यहाँ कोई ऐसा बुक स्टाल है, जहाँ सामान्य साहित्य के उत्तम ग्रन्थ मिल सकें। मैंने आपकी दुकान का पता बता दिया। कुछ आपके विषय में भी बात हुई थी।

''अब मैं आया तो उसकी आँख बचाकर दुकान में चला आया था। मैं नहीं चाहता था कि मेरी सिफारिश में कोई निजी लगाव का कारण मान लिया जाए।''

माणिक एक बड़े सरकारी अफसर की बहकी-बहकी बातें सुन विस्मय करता हुआ बिना नमस्ते, गुड नाईट इत्यादि कहे दुकान से निकल गया।

चरणसिंह ने पूछ लिया, ''मधु! क्या हुआ था जो यह 'ईडियट' उस विद्वान को 'ईडियट' कहने लगा था।''

मधु ने संक्षेप में बात बताई तो वह भी हँस पड़ा। चरणसिंह इन्द्रा की ओर जाते हुए मधु से बोला, ''मिस्टर आयंगर पूछ रहे थे कि मधुमोहन इस नगर में कौन है?

''मैंने तुम्हारा परिचय दिया तो कुछ तुम्हरी योग्यता और इतिहास भी बताया। यह कहने लगे कि मैं तुमको लेकर उसके यहाँ कभी पहुँचूँ।''

''इसे मेरा नाम किसने बताया होगा?''

''दादा! कुछ बीच-ही-बीच सरकारी क्षेत्रों में तुम्हारे विपरीत खिचड़ी पक रही है। उस दिन मुक्तानन्द भी कुछ कर रहा या। मुझे देखते ही चुप कर गया था।''

''हो सकता है हवा में कुछ हो।'' मधु ने इन्द्रा इत्यादि के समीप पहुँच चरणसिंह को कुर्सी पर बैठाते हुए स्वयं बैठकर कह दिया, ''हवा में कुछ है। मेरी पुस्तक 'ब्रिटिश रूल इन इण्डिया' की बिक्री बढ़ गई है। राजधानी में तो कई प्रतियाँ गई हैं।''

''मैं समझता हूँ कि दादा को इस आयंगर से मिलना चाहिए।''

''मैं कल ही मिलने जाऊँगा। वह स्वयं भी कह गया है कि मुझसे मिलकर उसे बहुत प्रसन्नता होगी। उसने मिलने को समय भी मुझे बताया है।''

''तब तो यह 'अर्जेन्ट' समझो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जाऊँगा।"

रात मीना ने बताया, "आपका शिष्य माणिक आपकी बहन पर डोरे डालने लगा है।"

"क्या किया है उसने?"

"वह उसे अपने विवाह की दावत पर निमंत्रण दे गया है। रेशम बहन ने कहा कि मीना भाभी को निमंत्रण आएगा तो मैं आऊँगी। इस पर माणिक साहब बोले कि इनको निमन्त्रण तो पिताजी ही भेजेंगे। पिताजी का इनसे विशेष लगाव है। आपको पिताजी जानते नहीं। इस कारण में आपको निमंत्रण दिए देता हूँ। नियमित निमंत्रण-पत्र समय से पूर्व मिल जाएगा।"

"बहुत दुष्ट है।" मधु ने कहा, "मैं समझता हूँ कि तुमको रेशम को सतर्क कर देना चाहिए। शेष भगवान् भरोसे ही है।"

निमन्त्रण आया। मधु और मीना को मुक्तानन्द के हस्ताक्षरों से और रेशम को माणिक के हस्ताक्षरों से। मधु ने बताया, मैं तो जा रहा हूँ। अपने-अपने विषय में तुम विचार कर लो।"

मीना के उत्तर की प्रतिक्षा किए बिना रेशम ने कह दिया, "मैं भी भाई साहब के साथ चलूँगी।"

मीना ने कहा, "जब रेशम बहन चलेगी तो मैं भी चलूँगी।"

यद्यपि मीना ने रेशम को समझाया था कि माणिक एक मूर्ख और आवारा लड़का है, परन्तु रेशम विचार करती थी कि देखने में तो सुन्दर है। वह उससे विवाह करने तो जा नहीं रही जो उसके पूर्व आचार या व्यवहार की जाँच-पड़ताल करे।

:: 8 ::

माणिक का विवाह तो चुपचाप और निकटतम सम्बन्धियों की उपस्थिति में हुआ, परन्तु विवाह के बादं नगर में लौटकर मुक्तानन्द ने एक बहुत बड़ी चाय-पार्टी अपनी कोठी में दी। दावत में एक सहस्र के लगभग लोग आमंत्रित थे। नगर-भर के प्रसिद्ध लोग, सरकारी उच्चाधिकारी और मुक्तानन्द के ग्राहक ज़मींदारों को निमन्त्रण था। आमन्त्रित में से कई लोग नहीं आ सके थे और उन्होंने लिखित बधाई और आशीर्वाद के संदेश भेज दिए थे। इस पर भी दावत में भीड़-भाड़ थी।

चन्द्रावती गाँव से इसी दावत पर उपस्थित होने के लिए आई हुई थी। मीना और रेशम तो नगर में ही थीं। वे भी आमन्त्रित थीं। चरणसिंह और इन्द्रा भी उपस्थित थे। अफसर लोगों में सी० वी० आयंगर भी था और ज़िले के कलक्टर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमिश्नर और बीसियों अन्य कर्मचारी उपस्थित थे। नगर के सेठ-साहूकार भी थे। मधु तथा नीलकण्ठ मोरे भी आए हुए थे।

मीना और रेशम, चन्द्रावती के साथ एक ही मेज़ पर बैठे थे। मधु भी उनके पास बैठा हुआ था। चरणसिंह इन्द्रा के साथ वहाँ आ पहुँचा।

चरणसिंह ने मधु को कहा, ''जस्टिस आयंगर याद कर रहे हैं।''

''तो वे भी आए हुए हैं?''

''हाँ। अपनी श्रीमती के साथ उपस्थित हैं।''

''तो हमको भी अपनी श्रीमतियों को साथ ले चलना चाहिए।''

''इसीलिए तो आया हूँ। चलो।।''

मधु ने मीना को संकेत कर उठा लिया और मीना, इन्द्रा तथा मधु और चरणसिंह मिस्टर आयंगर के पास जा पहुँचे।

हाईकोर्ट के कुछ अन्य जज भी आए हुए थे, परन्तु वे अब अफसरों के गोल में जा बैठे थे। मिस्टर आयंगर मुक्तानन्द से बातें कर रहा था। उसने जब मधु और चरणसिंह को आए देखा तो मधु का परिचय कराने के लिए मुक्तानन्द से बोला, ''आप इनको जानते हैं क्या?''

मुक्तानन्द हँस पड़ा और मधु से हाथ मिलाकर पूछने लगा, ''तुम मिस्टर आयंगर से कैसे परिचित हो?''

मधु मुस्करा दिया। उसने मुक्तानन्द की बात का उत्तर नहीं दिया। उसने मिस्टर आयंगर से हाथ मिलाया और फिर मीना का परिचय करा दिया। आयंगर ने भी अपनी पत्नी का परिचय कराया। इन्द्रा तो पहले ही सबसे परिचित थी।

यद्यपि मुक्तानन्द अभ्यागतों के स्वागत में लगा था, इस पर भी उसने आयंगर साहब को एक मेज़ पर बैठाया और मधु इत्यादि भी उस मेज़ पर बैठ गए। आयंगर मधु के साथ बैठा था।

जब मुक्तानन्द अन्य मेहमानों के स्वागत के लिए उठकर गया तो आयंगर ने मधु को कहा, ''मैं जानता था कि मुक्तानन्द तुमको जानता है। परन्तु अपनी अनभिज्ञता प्रकट करने के लिए ही मैंने पूछा था क्या वह आपको जानता है?''

''यह आपको किसने बताया था कि मुक्तानन्दजी मुझको जानते हैं?''

''मैंने तुमको बताया था कि हिन्दुस्तान की सरकार ने तुम्हारी पुस्तक पर मुझसे राय माँगी थी और पूछा था कि उसके आधार पर तुमको 'प्रोसिक्यूट' किया जाना चाहिए अथवा रैग्यूलेशन 1818 में पकड़ना चाहिए। मैंने तुमसे उस पुस्तक में से कई प्रश्न पूछे थे।

''उस पुस्तक पर सरकारी रिपोर्ट में एक 'नोट' मुक्तानन्द का भी लिखा हुआ है। उन्होंने पुस्तक के विषय में तो कुछ नहीं लिखा था। हाँ, तुम्हारे विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखा था कि तुम एक बार पहले भी रैग्यूलेशन 1818 के अधीन पकड़े जा चुके हो और किसी गैबी सिफारिश के कारण छोड़ दिए गए थे। यह भी लिखा था कि तुम उग्रवादी क्रांतिकारी हो।

"मैंने तुम्हारी सफाई में एक लम्बा-चौड़ा वक्तव्य दिया है। मैं तुमको वे सब बातें बताना नहीं चाहता जो मैंने तुम्हारे विषय में लिखी थीं। हाँ, मुझे तुमको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि तुम्हारा केस फाईल हो गया है।"

"मैं अपने विषय में इस अच्छी राय के लिए आपका आभारी हूँ।"

"इसकी आवश्यकता नहीं मधु! तुम्हारी पुस्तक में सबसे तीव्र डंक काँग्रेस के नेताओं पर है। और यही कारण है कि सरकार से अधिक ये तुम्हारे शत्रु हो रहे हैं।"

"यह मैं जानता हूँ।" मधु ने गंभीर हो कहा, "इनके पाँव तले से मिट्टी निकल रही है और ये अपनी डूबती नौका को बचाने के लिए हाथ-पाँव मार रहे हैं।"

"पर क्या तुम उग्रवादियों की नीति को ठीक मानते हो?"

"श्रीमान्! राजनीति में पारिभाषिक शब्द और सामान्य नारे सदा मिथ्या दृश्य उपस्थित करते हैं। ये नरम और उग्र ऐसे ही भ्रममूलक शब्द हैं।"

"मैं यदि नाम रखूँ तो इन नरम दल वालों को तो यह कहूँगा कि ये यूरोपियन सभ्यता और संस्कृति के शिष्य हैं और अपने गुरुओं से भी अधिक भ्रम में फँसे हुए हैं। ये सरकार से भी अधिक सरकार के भक्त हैं। ये अंग्रेज़ों से भी अधिक अंग्रेज़ियत के उपासक हैं। ये शासकों से भी अधिक अपने भाइयों से घृणा करने वाले हैं।

"श्रीयुत् बाल गंगाधर तिलक ने इनको ऐसा धक्का दिया है कि ये समझ नहीं पा रहे कि किस प्रकार अपनी प्रतिष्ठा स्थिर रख सकते हैं।"

"खैर, तुमको इस व्यक्ति से सावधान रहना चाहिए।"

"मेरे सावधान रहने का कुछ भी अर्थ नहीं। मैं कोई ऐसी बात नहीं कर रहा जिस पर किसी को भी आपत्ति हो, परन्तु सावधान तो सरकार को रहना चाहिए कि इस प्रकार के लोगों के कहने पर वह अन्याय न कर बैठे। यह अन्याय सरकार की नौका को डुबाए बिना नहीं रहेगा।"

इधर ये लोग बातें कर रहे थे उधर माणिक अपनी विवाहिता को लेकर चन्द्रावती की मेज़ पर आ गया था और अपनी पत्नी का उनसे परिचय करा उससे चन्द्रावती इत्यादि सबको घर पर आने का निमन्त्रण दिलवा रहा था।

चन्द्रावती ने कहा, "मैं तो केवल इस दावत के लिए गाँव से आई हूँ और आज ही लौट जाने वाली हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो माताजी! बहन रेशम तो आ ही सकेंगी। मैं इस घर में अकेली अनुभव करती हूँ। मेरी इच्छा है कि भले घरों की स्त्रियों से परिचय प्राप्त करूँ जिससे दिल बहलता रहे।"

इस समय माणिक की माँ पद्मा को ढूँढती हुई वहाँ आ गई। उसने आते ही कहा, "पद्मा! सब लोग तुमको आशीर्वाद देने के लिए आ रहे हैं और तुम इधर-उधर भागती फिरती हो।"

"माँजी! ये जिधर लिये जाते हैं, मैं चल देती हूँ।" इस समय माणिक की दृष्टि मीना और इन्द्रा पर जा पड़ी। वह माँ से बोला, "माँ! ज़रा ठहरो। पद्मा का विशेष परिचय एक-दो और स्त्रियों से करा लूँ। तदनंतर तुम इसे जहाँ चाहो ले जाना।"

इतना कह वह पद्मा की बाँह में बाँह डालकर उसे मिस्टर आयंगर की मेज़ पर ले गया। कस्तूरी लड़के और बहू को जाते देखती रह गई।

माणिक पद्मा को लेकर आयंगर की मेज़ पर जा पहुँचा। आयंगर और श्रीमती आयंगर से पद्मा का परिचय करा उसने वहाँ सब बैठे हुओं का परिचय पद्मा से करा दिया। मीना का परिचय कराते हुए उसने बताया, "ये रेशम बहन की भाभी हैं। इनको भी विशेष निमंत्रण देना चाहिए। ये हैं मधुमोहन। मीना भाभी के पति। सुना है बहुत ही योग्य लेखक हैं।"

पद्मा ने मीना और इन्द्रा को भी उसके घर आने का निमन्त्रण दिया, फिर अपने पति माणिक के साथ अपनी सास के पास लौट गई।

जब ये चले गए तो आयंगर ने कहा, "यह तो वही मूर्ख है जिसके दर्शन आपकी दुकान पर हुए थे।"

"जी। पर यह अपने को एक महा-पंडित मानता है। सदा साइंस की बात करता है और सुना है कि यह अपनी श्रेणी में थर्ड डिवीजन में उत्तीर्ण हुआ था।"

"यह तो है ही। थोथा चना बाजे घना।"

"मैं इसका ट्यूटर भी रहा हूँ। यह मुझसे बहुत प्रसन्न था। इसलिए कि मैं इसको कहानियाँ सुनाया करता था और यह कहानियों का अभिप्राय न समझ पति-पत्नी के सम्बन्धों के विषय में विचार करता रहता था। आखिर मैंने इसको छोड़ा, तो यह मुझसे नाराज़ हो गया था।"

"अच्छा मधुमोहन! मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी श्रीमती को लेकर कभी-कभी आया करो।"

इस प्रकार दावत समाप्त हुई तो घोड़ागाड़ी में चन्द्रावती, रेशम, मीना और मधु घर लौट पड़े। मार्ग में ही माणिक की पत्नी पर चर्चा चल पड़ी। चन्द्रावती ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया, "मुझे तो कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि बेचारी निर्दोष बकरी कसाई के हाथ में फँस गई है और वह इसके गले में रस्सा बाँधे कस्साबखाने की ओर लिये जा रहा है।"

मधु को पंडित भुवनचन्द्र की उक्ति स्मरण हो आई। वह विचार करने लगा था कि क्या यह बकरी भी कसाई के हाथ से छूट सकेगी?

इस पर मीना ने कह दिया, "इन्द्रा बता रही थी कि माणिक लाल की माँ बेचारी अपने पति की संगत से महीनों ही नहीं वरन वर्षों वंचित रहती है और इसके भी भाग्य में यही बदा मालूम होता है।"

"यह है भी तो बहुत ही साधारण रूप-रेखा की स्त्री।" चन्द्रावती का कथन था।

"पर माँजी!" मीना ने कहा, "इसका मन और आत्मा अति सुन्दर प्रतीत होते हैं। यह सर्वथा सरल स्वभाव प्रतीत होती है।"

मधु अभी भी बकरी और कस्साब के उदाहरण पर विचार कर चुप बैठा था। एकाएक उसका ध्यान श्रीमती आयंगर पर चला गया। उसने मीना से पूछ लिया, "बहुत बातें करती रही हो मिसेज आयंगर से। कैसी लगी है वह औरत?"

"बहुत ही बुद्धिशील और पढ़ी-लिखी स्त्री है। अपने बच्चों के विषय में बता रही थी। उसके तीन बच्चे हैं। तीनों विदेश में शिक्षा प्राप्त करने गए हैं। सबसे बड़ा आई०सी०एस० की परीक्षा में बैठा है। दूसरी लड़की है। वह बैरिस्टर बनेगी। तीसरा लड़का है, वह इंजीनियर बनने के लिए गया है।

"वह कहती थी कि वह तीनों से निराश है। अपने पिता की भलमनसाहत का तो उनमें अंशमात्र भी नहीं।"

इस पर रेशम ने कह दिया, "संसार एक विचित्र स्थान है। यहाँ वे भी असंतुष्ट हैं जिनको सब-कुछ प्राप्त है और वे भी असंतुष्ट हैं जिनको सब ओर से अभाव घेरे हुए हैं। माणिक को किस बात का अभाव है? यह भी अपने-आप से संतुष्ट नहीं है।"

"यह इसलिए रेशम बहन!" मधु ने कह दिया, "कि संतोष उनको होता है जो अपने से नीचे वालों को देख अपनी उनसे तुलना करते हैं। वे जो अपने भाग्य को अपने से ऊँचों की तुलना में देखने लगते हैं, वे सदा असन्तुष्ट रहते हैं। परन्तु असंतोष किसी प्रकार भी अवांछित स्थिति नहीं। इस असंतोष के साथ-साथ एक अन्य भावना देखी जाती है। वह है संताप की। यही सब दुःखों और संसार में दुर्व्यवहार का कारण है। जो लोग इस संताप से बच नहीं सकते, उनको सदा संतोष प्राप्त करने का मार्ग अपनाना चाहिए। जो यह मार्ग स्वीकार करना नहीं चाहते, अर्थात् जो अपने से ऊँची स्थिति वालों को देखने का अभ्यास करते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको इस संताप से बचने का भी उपाय करना चाहिए।''

''पर मधु भैया!'' रेशम ने अपने मन के संशय का वर्णन कर दिया, ''अपने से उच्च स्थिति में देखना बुरा है क्या?''

''नहीं। मैं तो यह भी कह रहा हूँ कि इसे देखने से अपनी स्थिति से असंतोष भी अवांछनीय नहीं। अवांछनीय तो इस असंतोष से उत्पन्न होने वाला संताप है।''

''यह संताप स्वाभाविक नहीं क्या?''

''परन्तु रेशम! स्वभाव भी तो एक निर्मित स्थिति है। किसी कार्य अथवा विचार को बार-बार करने अथवा मन में लाने से स्वभाव बनता है। जैसे विचार मन में लाए जाएँगे और जैसे कार्य किए जाएँगे, स्वभाव वैसा ही बन जाएगा।''

''तो क्या किया जाए जिससे संताप न हो?''

इस पर चन्द्रावती ने पूछ लिया, ''रेशम! तुमको किसी बात से संताप हो रहा है?''

''माँजी! असन्तोष तो है। अब उससे कुछ ऐसा अनुभव होने लगा है, जिसे मधु भैया संताप का नाम दे रहे हैं।''

''किस बात का असन्तोष है?''

''तो यह आपको आज जीवन के पच्चीस वर्ष उपरान्त बताना होगा?'' इससे तो चन्द्रावती और मधु गम्भीर हो रेशम का मुख देखने लगे। रेशम आँखें बन्द किए गाड़ी की पीठ से ढासना लगाए बैठी थी और उसकी आँखों से आँसू ढुलकने लगे थे।

गाड़ी घर के द्वार पर पहुँची तो मीना ने रेशम की बाँह में बाँह डाल उसे गाड़ी से उतारा और घर के भीतर ले गई।

:: 9 ::

यूरोप में युद्ध आरम्भ हो चुका था। आस्ट्रिया, हंगरी ने स्लोवाकिया पर आक्रमण किया तो फ्रांस और इंग्लैंड ने आस्ट्रिया, हंगरी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी ने आस्ट्रिया, हंगरी का साथ देना उचित समझा। रूस ने इंग्लैण्ड और फ्रांस का साथ दिया। टर्की ने जर्मनी का साथ दिया। इटली अंग्रेज़ों की तरफ हो गया।

अंग्रेज़ों ने टर्की पर आक्रमण कर दिया। भारतीय सेनाएँ टर्की तक पहुँचने के लिए इराक में घुस गईं।

इस युद्ध का भारत की राजनीतिक स्थिति पर भारी प्रभाव पड़ा। इंग्लैण्ड जैसे बहुत ही छोटी जनसंख्या वाले देश को रणभूमि पर लड़ने-मरने के लिए एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत बड़ी संख्या में सिपाही चाहिए थे। कनाडा, आस्ट्रिया और दक्षिणी अफ्रीका के उपनिवेश कुछ अधिक संख्या में सिपाही नहीं दे सके। सिपाही भरती करने के लिए हिन्दुस्तान एक उपयुक्त क्षेत्र समझा गया।

पश्चिमी एशिया में लड़ने के लिए हिन्दू सिपाहियों की आवश्यकता थी। अतः हिन्दुओं ने भारत में स्वराज्य की माँग को प्रबल कर दिया। काँग्रेसी नरम दल के लोग इस बदली परिस्थिति से बहुत घबराए। वे हृदय से चाहते थे कि अंग्रेज़ी राज्य भारत में बना रहे। परन्तु देश में बदल रही राजनीतिक हवा को देखकर उन्हें भी करवट लेनी पड़ी।

उन्होंने दो बातें कीं। एक तो मुसलमानों से उन्हीं शर्तों पर समझौता कर लिया जिन पर सरकार मुसलमानों से समझौता कर चुकी थी। दूसरे, तिलक आदि नेताओं को मात करने के लिए उन्होंने भी स्वराज्य का नारा लगा दिया।

ये दोनों बातें तत्कालीन परिस्थिति में सरकार के पक्ष में थीं। मुसलमानों को हिन्दुओं से विशेषाधिकार प्राप्त होने पर उनका ध्यान टर्की से बदलकर हिन्दुस्तान की ओर लग गया और टर्की के साथ युद्ध में अंग्रेज़ों को अधिक सुविधा हो गई।

दूसरे, उन्हें सरकारी कामों में हिन्दुस्तानियों का अधिक सहयोग लेने का आश्वासन देना पड़ा। इससे कहे जाने वाले नरम दल के काँग्रेसियों को और अधिक उत्तरदायित्व के स्थानों पर लेना पड़ा। कम-से-कम कुछ समय के लिए सरकारी काम शान्ति से चलने लगा।

न तो उग्रवादी मुसलमान और न ही हिन्दू सन्तुष्ट हुए। वे अपनी धुन में लीन रहे। मुसलमान टर्की पर आक्रमण का विरोध करते रहे और तिलक आदि नेतागण स्वराज्य-आन्दोलन को सेना में ले जाने का यत्न करने लगे।

क्रान्तिकारी भी सक्रिय होने लगे। नरम दल के काँग्रेसियों की सरकार में पुनः सुनवाई होने लगी और उन्होंने सरकार-विरोधी तत्वों की सफाई करने में अपने यत्न तेज कर दिए।

मुसलमानों में अली भाई पकड़ लिये गए। उनके साथ कुछ अन्य लोग भी पकड़े गए। हिन्दू गरम दल में भी तिलकजी थे। उनकी विचारधारा के लोगों को जेलों में ठूँसना आरम्भ कर दिया गया।

सरकार ने 'डिफ़ैन्स ऑफ इण्डिया ऐक्ट' के अधीन बिना मुकद्दमे के लोगों को पकड़ना आरम्भ कर दिया। उन देशभक्तों को, जो किसी कारण से विदेशों में थे, भारत आने से रोक दिया गया।

इस स्थिति में मधुमोहन की तीसरी पुस्तक 'हाऊ टू विन फ्रीडम' (स्वराज्य कैसे प्राप्त हो) प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में पिछले सत्तर वर्ष के हिन्दुस्तान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतन्त्रता प्राप्त करने के प्रयत्नों का उल्लेख कर स्वतन्त्रता के लिए क्या करना चाहिए, पर कई अध्याय और उपाय वर्णन किए गए। अनेक युक्तियाँ और प्रमाण भी दिए गए थे।

अन्त में पुस्तक का निष्कर्ष था, स्वतन्त्रता की चाबी शक्ति है। जिसके पास शक्ति होगी, वह राजा बन सकेगा। राजा बनने के लिए अर्थात् स्वराज्य-प्राप्ति के लिए शक्ति का संचय अनिवार्य है। शक्ति है सेना, शस्त्रास्त्र, जनमत और फिर जनमानस में देश, जाति और संस्कृति के सम्मान के लिए उत्कट भावना पैदा करना।

यह पुस्तक बहाना बन गई। नरम दल के लोगों ने तिलक के एक शिष्य को जेल में ठूँस देने का यत्न आरम्भ कर दिया।

माणिकलाल के विवाह की पार्टी के बाद जब मीना रेशम बहन को मकान में ले गई तो उसे कमरे में ले जाकर पूछने लगी, ''अपनी वर्तमान स्थिति पर बहुत संताप हो रहा है, बहन ?''

रेशम आज फूट पड़ी। बोली, ''मैं समझती हूँ कि पूर्ण जीवन ही नीरसता में व्यतीत हो गया है।''

''क्या रस चाहती हो तुम, जिसको तुम प्राप्त नहीं कर सकतीं ?''

''मीना ! तुम मेरा इतिहास जानती नहीं। कदाचित् मेरे साथ हुए व्यवहार में सबसे बड़े अपराधी ने अपनी करतूत का वर्णन नहीं किया।''

''तो तुम हरि के पिता की बात कर रही हो ? मैं समझती हूँ कि उन्होंने मुझसे किसी भी बात को छिपाकर नहीं रखा।''

''भला क्या बताया है मुझसे हुई दुर्घटना के विषय में ?''

''बताया था कि रेशम बहन और वे अपने वास्तविक सम्बन्धों की अज्ञानता में विवाह कर बैठे थे। जब पता चला तो उन्होंने अपने व्यवहार में संशोधन कर लिया। वे अपनी भूल का प्रायश्चित्त करते रहे हैं। प्रायश्चित्त कराने वाले मेरे पिताजी थे। इस प्रायश्चित्त में वे कई वर्ष पर्यन्त जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान, धारण और समाधि में लीन रहे हैं। वे कभी-कभी अब भी समझते हैं कि उनको इस घोर अनाचार के लिए अभी और तपस्या करनी चाहिए।''

रेशम इस स्वीकारोक्ति को सुन गम्भीर हो बोली, ''इसमें उनकी अपनी बात ही है। तस्वीर का दूसरा पक्ष नहीं है। वह यह है कि दूसरा पक्ष इसको न तो भूल समझता था न ही अज्ञानता। वह इसको एक स्वाभाविक अभिलाषाओं का प्रतीक मानता था। वह अब भी इसको यही मानता है। इस स्वाभाविक क्रिया-कलाप को समाज की कड़ी प्रथाओं पर बलिदान चढ़ाकर एक बकरी को कसाई के हाथ में पकड़ा दिया गया। उस कसाई ने इस बकरी के मन के भावों की हत्या कर दी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु जीजा श्रीचन्द्र के विषय में कौन जान सकता था कि वे क्या बनने वाले हैं? अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ ईमानदारी से नेक समझकर बनाए दामाद अति क्रूर और आततायी सिद्ध हुए हैं। ऐसी स्थिति में सन्तोष के अतिरिक्त क्या किया जा सकता है?"

"ठीक है मीना! तुमको सब सुख प्राप्त हैं। इस कारण तो भाग्य का नाम लेकर तुम दूसरों की आँखें पोंछ सकती हो। परन्तु ये मन की व्यथा को शान्त नहीं कर सकते।"

"पर बहन! तुम क्या चाहती थीं?"

"तुम्हारे पति की मैं पत्नी बन चुकी थी। मुझे बलपूर्वक उससे पृथक् किया गया था।"

"परन्तु तुमने इसका विरोध श्रीचन्द्र से विवाह के पूर्व किया था क्या? जहाँ तक मुझे बताया गया है तुम और तुम्हारी माता षड्यन्त्र करने श्रीचन्द्र के घर चले गए थे।"

"षड्यन्त्र का तो उस समय कोई विचार नहीं था। मैं अल्प आयु थी और इन विषयों में कुछ जानती नहीं थी। यह तो रघुवीर के जन्म के उपरान्त पता चला कि मैं कटी हुई पतंग की भाँति हो गई हूँ। तब से इसी भाँति हूँ। मुकद्दमा तो माताजी के दामाद और माताजी के बीच हुआ था।"

"परन्तु तुमने इसके विपरीत कभी शिकायत की थी क्या?"

"अवसर ही नहीं मिला।"

"परन्तु जब रघुवीर के नाम एक-तिहाई ज़मींदारी की गई थी, तब भी तो तुमने यह नहीं बताया कि तुम कुछ और चाहती हो। अब क्या हो गया है कि तुम आज से पच्चीस वर्ष पुरानी बातें याद करने लगी हो?"

"आज मैं देख रही हूँ कि तुम कितनी सुखी और प्रसन्न हो। मुझे तुम से ईर्ष्या होने लगी है। इसी को तुम्हारे धूर्त पति और मुझे बहन कहने वाले अनाचारी भाई संताप का नाम देने लगे हैं।"

मीना समझ रही थी कि रेशम निरुत्तर हो रही है। इससे उसने कहा, "तो यह असन्तोष और उससे उत्पन्न होने वाला संताप आज ही पता चला है?"

"इस पर रेशम कुछ देर तक आँखें मूँद विचार करती हुई बैठी रही। फिर आँखें खोल बोली, "हाँ। है तो बात यही। मैं जब रात को तुम्हें अपने पति की संगत में देखती हूँ तो मुझे दुःख होता है।"

"तो बहन! तुमको यहाँ आए चार मास होने जा रहे हैं। तुमने पहले क्यों नहीं बताया? खैर, तुमने अब बताया है तो बताओ कैसे तुम्हारे दुःख का निवारण किया जा सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं नया विवाह करना चाहती हूँ।"

"तो इसमें किसी ने बाधा डाली है क्या?"

"बाधा डाली तो नहीं। हाँ, बाधा की आशंका है।"

"किससे?"

"मीना! तुमसे। तुम्हारी सास से।"

"मैं समझती हूँ कि इसमें तुम्हारा भ्रम है। हम रेशम बहन के सुख-वर्धन में कभी भी बाधक नहीं हो सकते। बताओ, किससे विवाह करना चाहती हो?"

"यह अभी नहीं बताना चाहती। हाँ, यही आश्वासन तुम्हारी सास से चाहती हूँ।"

"वैसे तो उनके मन का मुझे अनुमान है कि किसी भी धर्मयुक्त काम में बाधक नहीं होंगी। इस पर भी कहो तो मैं तुम्हारे लिए पूछ सकती हूँ।"

"हाँ। मुझे एक-दो दिन में बताना। यदि उनको आपत्ति हुई तो उसमें कारण भी बता देना।"

:: 10 ::

मीना ने रेशम से हुई बात अपने पति को बताई। मधु ने कह दिया, "मीना, यही तो तुम चाहती थीं। इसीलिए तुम उसे यहाँ लाई थीं, परन्तु इस समय वह चालीस वर्ष की आयु की है। भला किससे विवाह करेगी वह?"

"मुझे तो सन्देह है कि वह आपसे अपना सम्बन्ध बनाना चाहती है।"

"मुझे तो कुछ और सन्देह है। उस मूर्ख माणिकलाल ने उसे किसी प्रकार का झूठा-सच्चा आश्वासन दिया है। विस्मय करने की बात यह है कि यह उसके सम्पर्क में कहाँ आई है?"

इस पर मीना कुछ विचार कर बोली, "वह घर से बाहर जाती तो है। भगवान् जाने दोनों कहाँ मिले हैं?"

"परन्तु यह सब अस्वाभाविक प्रतीत होता है। वह इस समय पचीस-छब्बीस वर्ष की आयु का युवक है।"

"मैंने रेशम बहन से उसका नाम पूछा था जिससे वह विवाह करना चाहती है। माणिक से विवाह तो अस्वाभाविक ही नहीं वरन असम्भव भी है।"

"मुक्तानन्द और माणिकलाल के लिए कुछ भी अस्वाभाविक नहीं। वे मनोद्गारों के आदेश पर चलते हैं। मन की आँखें हैं बुद्धि। वह उन दोनों में है नहीं। इस विचार से वे दृष्टि विहीन प्राणी अन्धे मन के अधीन जीवन चला रहे हैं।"

मीना ने फिर विचार कर कहा, "मेरे मन में तो बार-बार यही विचार आता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है कि वह आपसे सम्बन्ध बनाना चाहती है।''

''आशा नहीं कि वह अभी भी कुछ वैसा ही विचार करती हो। इस पर भी यह असम्भव है।''

''मैं कल माताजी से इस विषय में बात करूँगी।''

''कर लेना।''

बात हुई और चन्द्रावती का निश्चित मत था, ''रेशम जो भी धर्म-युक्त व्यवहार अपनाएगी, वह उसे अस्वीकार कर नहीं सकती। वह अब विधवा है। दूसरा विवाह कर सकती है। केवल इतना स्मरण रखना चाहिए कि बाल-बच्चों के इस घर में अधर्मयुक्त विवाह कर वह रह नहीं सकेगी। शेष जो कुछ ज़मींदारी से उसे मिलेगा वह बन्द नहीं होगा।''

इस शर्त के साथ स्वीकृति रेशम को बता दी गई। मीना ने जब बताया तो रेशम बहुत देर तक आँखें मूँद विचार करती रही। कुछ विचार कर उसने पूछा, ''इस धर्मयुक्त का अर्थ क्या है?''

''धर्म वेद, शास्त्र, विद्वान, सच्चरित्र व्यक्तियों के व्यवहार और प्रथा के अनुसार कार्य है। इस पर भी प्रथा की अवहेलना करने पर कोई दण्डनीय नहीं होता। विद्वानों द्वारा मान्य रीति-रिवाज के विपरीत कार्य करने वाला निन्दा का पात्र ही होता है। परन्तु वेद, शास्त्र का विरोध करने वाला आचरण अधर्मयुक्त है।

''माताजी तो यह कहती हैं कि वेद, शास्त्र के विरुद्ध भी तुम विवाह कर सकोगी। केवल उस अवस्था में तुम बाल-बच्चों में नहीं रह सकोगी।''

''वेद, शास्त्र विवाह के विषय में क्या कहता है?''

''यह तुम अपने भाई, हरि के पिता से पूछ लेना। मैं तुमको इस विषय पर बता नहीं सकती। मेरा ज्ञान वहाँ तक नहीं जाता।''

''क्या एक चालीस-पचास वर्ष का पुरुष किसी बीस-बाईस वर्ष की लड़की से विवाह करे तो यह धर्म है अथवा अधर्म?''

''यह प्रथा और विद्वानों के मान्य व्यवहार के विपरीत तो है, परन्तु जहाँ तक मैं समझी हूँ, अधर्म नहीं।''

''तो यह हरि के पिता से पूछूँगी।''

इसे पूछने में देर होती गई। सम्वत् 1973 आ गया। यूरोप का युद्ध ज़ोरों से चलने लगा था। मित्र राष्ट्रों में अमेरिका सम्मिलित हो गया था और जर्मनी अपनी विजय को स्थिर रखने के लिए जी-जान की बाजी लगाए हुए था।

हिन्दुस्तान में मुसलमान काँग्रेस के साथ स्वराज्य की माँग करने लगे थे। काँग्रेस ने मुसलमानों के लिए राजनीति में विशेष प्रतिनिधित्व की बात स्वीकार कर ली थी। जहाँ सरकार गांधी इत्यादि काँग्रेसी नेताओं से सेना में भरती कराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए सहायता माँग रही थी, वहाँ उग्रवादियों और क्रान्तिकारियों पर दमन-चक्र चला रही थी। श्रीमती ऐनि बिसैन्ट पकड़ी गई थीं और कुछ अन्य राजनीतिक कार्यकर्त्ता पकड़े जा रहे थे। इनमें प्राय: वे लोग थे जो काँग्रेस की नीति को पसन्द नहीं करते थे।

मधुमोहन अपने लिखने के कार्य में संलग्न था। इस पर भी देश की अवस्था देख वह चिन्ताग्रस्त रहता था।

एक दिन नीलकण्ठ कहीं बाहर से आया तो मधु के स्टडी रूम में पहुँचकर बोला, ''मधु भैया!''

''हाँ, दादा।''

''आज कुछ संदिग्ध सूरत-शक्ल के लोग छापाखाना के बाहर बैठे हैं और जब मैं दुकान पर आया तो यहाँ भी वैसे ही लोग दिखाई दिए हैं।''

''तो क्या समझे हो इससे ?''

''मुझे यह सन्देह हो रहा है कि चिर-प्रतीक्षित बात आज रात हो जाएगी।''

''तब तो ठीक है। तुम सावधान रहो। मैं तो पिछले दो वर्ष से तैयार बैठा हूँ।''

''इस पर भी मेरा विचार है कि तुम्हारा घर पर से पकड़ा जाना ठीक रहेगा।''

''हाँ।'' तो मैं आज घर पर सोऊँगा।''

घर पर एक अन्य समस्या पर चर्चा हो रही थी। चन्द्रावती, रेशम और मीना एक कमरे में पृथक् बैठी बातचीत कर रही थीं। रेशम प्रसन्न थी और मीना तथा चन्द्रावती गम्भीर बैठी थीं।

मधु आया तो उसने कमरे के बाहर से पूछ लिया, ''यह गोष्ठी केवल स्त्रियों की ही है अथवा कोई पुरुष भी इसमें आ सकता है ?''

तीनों विस्मय में मधु का मुख देखने लगीं। मधु कमरे के द्वार के बाहर खड़ा प्रतीक्षा करता रहा। रेशम ने ही उत्तर दिया, ''यह विचारगोष्ठी थी तो केवल स्त्रियों के विषय की, परन्तु आप आ सकते हैं। आपको विशेष स्वीकृति दी जा सकती है।''

मधु भीतर चला आया और पूछने लगा, ''गोष्ठी का अध्यक्ष कौन है ?''

''वह तो माँजी हैं। परन्तु बात मेरी हो रही है, इस कारण मैं आपको इस गोष्ठी में सम्मिलित होने की स्वीकृति देती हूँ।''

''क्यों माँ! बहन ठीक कहती है क्या ?''

''मधु! मैं तो सठिया गई हूँ और स्वतन्त्र रूप से किसी निर्णय के योग्य नहीं रही। यह कहती है तो तुम भी बैठ जाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु बैठा नहीं। वह खड़ा रहा। उसे बात का सिर-पैर समझ नहीं आ रहा था। चन्द्रावती ने बात जारी रखी—

"कल गाँव में रेशम का पत्र मिला था और मैं आज आ पहुँची हूँ। वहाँ की बात तो मध्याह्न भोजन के समय तुमको बता चुकी हूँ। यहाँ की बात तुम्हारे जाने के उपरान्त हुई है। मैंने रेशम से पूछा कि इसके पत्र का क्या अर्थ है? इसने बताया है कि इसको दिन चढ़ गए हैं।"

मधु कुछ इसी दिशा में बात की आशा कर रहा था, यद्यपि वह बच्चे की आशा नहीं करता था। इस पर भी वह रेशम के किसी पुरुष से अविवाहित सम्बन्ध की सूचना की आशा कर रहा था।

मधु ने कहा, "एक वर्ष हुआ है। रेशम ने स्वयं चर्चा चलाई थी, परन्तु फिर बात को स्थगित कर दिया था। पिछले मास मैं हरिद्वार मीना के पिताजी से मिलने गया था तो पंडितजी ने कहा था कि हमारे घर में किसी अति भाग्यशाली जीव का आगमन होने वाला है।

"मैंने यह कह बात टाल दी थी, पंडितजी! भगवान् की जैसी इच्छा होगी, वह हम अस्वीकार कैसे कर सकते हैं।

"मेरा विचार था कि मीना इस दिशा में अग्रसर होने जा रही है। इसकी लड़की तीन वर्ष की हो रही है। पंडितजी ने मेरे कहने का अर्थ क्या समझा, मैं कह नहीं सकता। उन्होंने केवल यह कहा था कि तनिक सावधानी से रहना चाहिए। भले लोगों का जीवन सदा संकट में रहता है।

मैं केवल मुस्करा दिया। और बात समाप्त हो गई। माँ! आज यह समाचार सुन मुझे पंडितजी की भविष्यवाणी स्मरण हो आई है।"

मधु की बात सुन रेशम, जो अभी तक प्रसन्नवदन प्रतीत होती थी, गम्भीर हो गई। चद्रावती तो गम्भीर बनी रही, परन्तु मीना प्रसन्न हो हँस पड़ी।

चन्द्रावती ने मधु को शेष बात से अवगत कराने के लिए कह दिया, "मैंने रेशम से पूछा है कि यह किसका बच्चा है? इसने बताने से इनकार कर दिया है। मैंने इसे कहा है कि इस अवस्था में तो गर्भपात करा देना चाहिए। मीना मेरी सम्मति का विरोध कर रही है। रेशम कह रही है कि वह गाँव में प्रसव के लिए जाना चाहती है।"

"क्यों रेशम! तुम बच्चे के बाप का नाम किसलिए नहीं बतातीं?"

"बच्चे के बाप की आज्ञा नहीं।"

"तो प्रसव का प्रबन्ध वह क्यों नहीं करता? गाँव में जाकर माँजी को कष्ट देने की क्या आवश्यकता है?"

"यह प्रस्ताव मेरा है। मैं वहाँ यह बता दूँगी कि मैंने विवाह कर लिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वहाँ कोई झूठा नाम बता दूँगी। वह मैं आपके सामने नहीं बता सकती। गाँव में प्रसव के लिए जाने का प्रयोजन यह है कि वहाँ इन बच्चों से दूर रहूँगी।''

मधु गम्भीर हो गया। उसने कहा, ''मेरी सम्मति है कि इस विषय में पंडितजी से राय करनी चाहिए। माँ! मैं एक बात कहने आया हूँ।''

तीनों स्त्रियाँ उत्सुकता से मधु का मुख देखने लगीं। मधु ने कुछ विचार कर कहा, ''कुछ ऐसे लक्षण प्रतीत होते हैं कि मैं शीघ्र ही पकड़ा जाने वाला हूँ। छापाखाना, दुकान और घर पर सफेदपोश पुलिस वाले देख-रेख कर रहे हैं। मैं दुकान से आया हूँ और एक आदमी मेरे पीछे-पीछे यहाँ तक आया है।''

इस सूचना से तो तीनों औरतें अवाक् मधु का मुख देखती रह गईं। इस पर रेशम ने पूछा, ''क्या इस बार भी ज़मींदारी इत्यादि के जब्त होने की आशंका है?''

''कहा नहीं जा सकता। छापाखाना नीलकण्ठ के नाम है। दुकान हरिमोहन के नाम है और ज़मींदारी माँ के नाम है। मेरा कानून से कुछ भी नहीं। हाँ, कहीं जब्ती की आज्ञा आई तो इन सबको मुकद्दमा करना पड़ेगा। इस सब प्रबन्ध का ज्ञान चरणसिंह को है। कागज़ात भी उसके पास रखे हैं। अत: उससे सहायता लेनी चाहिए।''

''अब की बार कितने वर्ष तपस्या करनी पड़ेगी ?'' माँ का प्रश्न था।''

''माँ! मालूम नहीं किस धारा के अधीन वारण्ट हैं। सम्भव है 'डिफेंस ऑफ़ इण्डिया ऐक्ट' का कुठार चलेगा। यदि यह है तो युद्ध समाप्त होने तक तो बन्दी रहना ही होगा।

''इस बार रैग्युलेशन के अधीन पकड़ने की बात प्रतीत नहीं होती।''

''तो अब तुम क्या करना चाहते हो ?''

''मैंने समझा है कि माँ गाँव से यहाँ आई हुई है। इस कारण सबको मिलने की सुविधा है। मैं घर पर ही पकड़े जाने की प्रतीक्षा करूँगा।''

इस समाचार ने गोष्ठी समाप्त कर दी।

:: 11 ::

रात का भोजन पूर्ण परिवार ने इकट्ठे किया। गौरांग और कादम्बिनी को खाने के बाद मधु ने प्यार दिया और कहा, ''हमने घर के सम्बन्ध में कुछ विचार करना है, तुम जाकर सो जाओ।'' हरिमोहन को बैठा रहने दिया गया। वह कालिज में छुट्टियों के कारण आया हुआ था।

मधु ने बताया, ''मीना के पिताजी का विचार है कि मैं अभी जीवित बन्दी-गृह से लौटूँगा। एक बात वे कहते थे कि मेरे पुण्य कर्मों और विरोधी शक्तियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
संघर्ष चल रहा है। यह संकट टल भी सकता है। परन्तु आज की सरकारी कार्यवाही से यही समझ आया है कि संकट टल नहीं रहा।

''देखो हरि! मेरा अनुमान है कि युद्ध अभी दो वर्ष तक तो चलेगा और तब तक तुम माताजी और अपनी दादा माँ की आज्ञा से काम करना। यदि दुकान और छापाखाना बच गया तो नीलकण्ठ उनका प्रबन्ध करेगा।''

मधु तो इस बात के लिए तब से तैयार था जब से युद्ध आरम्भ हो 'डिफैंस ऑफ़ इण्डिया ऐक्ट' पास हुआ था। वह सदा विस्मय किया करता था कि जब पकड़ना ही है तो सरकार अभी तक मुख किसका देख रही है।

अतः आज वह मन में सन्तुष्ट, परन्तु उत्सुकता से पुलिस के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। एक घण्टा-भर घर के प्रबन्ध इत्यादि पर बातचीत कर मधु सोने के लिए चला गया। उसका विचार था कि रात के दो बजे के उपरान्त पुलिस उसे ले जाने के लिए आएगी।

मीना से बातचीत में रेशम की बात आई तो मीना ने पूछ लिया, ''आप क्या चाहते हैं?''

''रेशम को घर से निकालने की आवश्यकता नहीं। उसे प्रसव के लिए कहीं भेज देना चाहिए। पीछे वह घर में आ जाएगी। यदि तुम्हारे पिताजी इसका प्रबन्ध कर सके तो बहुत अच्छा होगा।''

''मैं विचार करती हूँ कि मैं भी पिताजी के पास चली जाऊँ।''

''बच्चों का क्या होगा? लड़के तो पढ़ते हैं।''

इस पर मीना चुप रह गई। मधु ने कह दिया, ''दुकान इत्यादि के विषय में जो कुछ सरकार करेगी उस पर चरणसिंह से राय कर लेना।''

मधु लगभग एक बजे रात के सोया। मीना लेट तो गई, परन्तु उसे नींद नहीं आई। वह उठ सोने के कमरे में ही एक कुर्सी पर बैठी भगवती का चिन्तन करती रही। सोने के कमरे के बाहर बैठक में क्लाक लगा था, जो घण्टे और आधे घण्टे का समय बजा रहा था। दो बजे। मधु गहरी नींद सो रहा था। मीना सतर्क हो गई। वह अब किसी भी समय पुलिस के आने का समाचार सुनने के लिए कान खड़े कर बैठी रही। अब चिन्तन असम्भव हो गया था। वह उठी और अपने सोए हुए पति का मुख शान्त और प्रसन्न देखने के लिए उसके पलंग के पास जा खड़ी हुई। हरे रंग की बत्ती के धीमे प्रकाश में वह चुपचाप खड़ी उसके मुख पर देखती रही।

इस समय उसका धैर्य टूट गया। जब से पुलिस के बाहर खड़े होने का समाचार सुना था, उसके मस्तिष्क पर एक प्रकार का बोझ-सा था और वह अपने को उस बोझ के नीचे दबी जाती अनुभव कर रही थी। अब घटना का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल अति समीप देख वह बोझ को सहन न कर सकी और उसके मुख से चीख की आवाज़ निकल ही जाने वाली थी कि वह पति की सुखमय नींद को भंग करने के भय से भागकर कमरे के बाहर चली गई। बैठकघर में अँधेरा था। उसने एक बत्ती जला ली और कुर्सी पर बैठ व्याकुलता से आँसू बहाने लगी।

घड़ी ने ढाई बजाए। वह अब बेचैन हो उस बैठकघर में इधर-उधर टहलने लगी। चिन्ता और अनिश्चितता के कारण टाँगों में शिथिलता हो जाने से वह टहल नहीं सकी।

वह बैठ गई। पुनः दुर्गा के मंत्र का जाप करने लगी। कभी तो चित्त स्थिर हो जाता था और फिर कभी बेचैनी आ दबाती थी।

इसी प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। तीन बजे, फिर साढ़े तीन और चार बज गए। बैठक के बाहर खटका हुआ। वह कुर्सी पर से ऐसे उठी मानो उसे बिच्छू ने डंक मारा है। वह बैठक के द्वार की ओर देखने लगी। यह चन्द्रावती थी।

मीना के मुख से निकल गया—''माँजी....''

चन्द्रावती ने बैठक के एक कोने में मीना को खड़े देखा तो उसके पास आ गई। मीना ने पूछ लिया, ''तो वे आ गए हैं?''

''नहीं। और तुम पुलिस की प्रतीक्षा कर रही हो?''

''नींद नहीं आई। सारी रात इसी प्रकार निकाल दी है। वे तो गहरी नींद सो रहे हैं।''

''तो सोने दो। तुम मेरे कमरे में आ जाओ। मेरा चित्त भी स्वस्थ नहीं।''

दिसम्बर मास था और दिन चढ़ने में अभी दो घण्टे थे। पतोहू सास के साथ उसके सोने के कमरे में चली गई। दोनों के मन आशंकाओं से भर रहे थे। वे नहीं जानती थीं कि एक ही क्षण में क्या से क्या होने वाला है।

जब घड़ी ने पाँच बजाए तो घुसमुसा प्रकाश बाहर हो गया था। वे उठकर कमरे से बाहर खुली छत पर आ गईं। अभी भी आकाश में तारे दिखाई दे रहे थे। दोनों पूर्वाभिमुख खड़ी हो गईं और सूर्योदय की प्रतीक्षा करने लगीं।

साढ़े पाँच बजे तक किसी प्रकार का विघ्न प्रस्तुत नहीं हुआ। मीना अपने सोने के कमरे में जा पहुँची। मधु अभी भी सो रहा था। रात सोने के समय वह अपने चित्त से सब प्रकार की चिन्ताओं का निवारण कर सोया था और वह स्वप्न-रहित अखण्ड नींद सो रहा था। मीना ने यह उचित समझा कि उसको जगा देना चाहिए। वह उसके समीप लेट उसका आलिंगन करने लगी।

''मधु की नींद खुली। कौन?'' उसने पूछा और फिर कहा, ''ओह, मीना! तो पुलिस आ गई?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। कदाचित् आज रात पकड़ने का विचार स्थगित हो गया है।"

मधु उठा और बोला, "यह तो ठीक नहीं।"

दोनों पलंग से नीचे उतर आए और मधु ने अंगड़ाई ले शरीर से सुस्ती निकालते हुए कहा, "दिन-भर चक्की पीसने की तैयारी होनी चाहिए।"

इस समय बाहर हलचल हुई। चन्द्रावती ने शयनागार के द्वार पर खड़े हो कहा, "मधु! छापेखाने का चपरासी आया है।"

"क्या कहता है?"

"वह बाहर बैठक में खड़ा है।" मधु उसी प्रकार सोने के कपड़ों में बैठक में आ गया। चपरासी ने हाथ जोड़ प्रणाम किया और बोला, "बाबू साहब! पुलिस नीलकण्ठजी को पकड़कर ले गई है। उनके सोने के कमरे और कार्यालय की तलाशी हुई है।

"मैं तो स्वयं अथवा भीखू को पहले ही आपके पास भेजने वाला था, परन्तु मोरे साहब ने मना कर दिया था। अब पुलिस मोरे साहब को और कार्यालय के कुछ कागज़-पत्र लेकर चली गई है तो भीखू को वहाँ बैठा, मैं पता देने आ गया हूँ।"

मधु इस सूचना से अनिश्चित मन:स्थिति में खड़ा रह गया। उसने चपरासी को कहा, "तुम चलो और मेरे आने तक सावधान रहना।"

स्वयं वह कुर्सी पर बैठ विचार करने लगा। "क्या विचार कर रहे हो?" माँ ने पूछ लिया।

"यह सब समझ नहीं आया।"

"वह क्यों पकड़ा गया है?"

रेशम भी चपरासी के द्वार खटखटाने से जागी थी और वह कपड़े बदल बैठक में आ गई थी। उसका विचार था कि पुलिस बैठक में खड़ी होगी और मधु जाने वाला ही होगा।

जब उसने चपरासी की बात सुनी तो वह पीत मुख खड़ी रह गई। फिर एकाएक घूमी और अपने कमरे का द्वार बन्द कर लेट रही।

मधु को अपना कर्तव्य निश्चय करने में दस-पन्द्रह मिनट ही लगे। वह शौचादि से निवृत्त हो वस्त्र पहन छापाखाना चला गया।

घर में चन्द्रावती और मीना प्रसन्न थीं। उनको विश्वास हो रहा था कि वर्तमान कठिनाई तो टल गई है, आगे की देखी जाएगी।

मधु कह गया था कि वह छापेखाने से लौटकर अल्पाहार लेगा।

बच्चे जागे तो माँ ने हरिमोहन को छापेखाने में पिताजी का पता करने भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु और हरि ग्यारह बजे के लगभग आए। वे अल्पाहार के लिए बैठ गए। एकाएक मधु ने पूछा, ''माँ, तुमने अल्पाहार ले लिया है?''

''नहीं। अभी किसी ने भी नहीं लिया। केवल बच्चों ने खाया है।''

मीना तो सामने खड़ी थी। इस कारण मधु ने पूछ लिया, ''रेशम बहन ने भी नहीं खाया?''

इस समय उसकी याद आई तो मीना रेशम को बुलाने उसके कमरे में चली गई। द्वार भीतर से बन्द था। मीना ने द्वार खटखटाया।

रेशम ने द्वार खोला तो उसकी आँखें फूली हुई थीं। वह रोती रही प्रतीत होती थी। ''बहन! यह क्या?'' मीना ने पूछा।

''कुछ नहीं। ऐसे ही चित्त खिन्न हो उठा था।''

''तुम्हारे भाई साहब अल्पाहार के लिए बुला रहे हैं।''

''तो अभी तक अल्पाहार नहीं हुआ?''

''नहीं। मोरेजी के पकड़े जाने से सब अव्यवस्था हो गई है।''

''अच्छा, मैं आई।'' वह मुख धोने स्नानागार की ओर चली गई।

मीना ने बाहर आ जब रेशम की फूली आँखों की बात बताई तो मधु ने कह दिया, ''मैं उसकी बात समझता हूँ।''

''क्या?'' चन्द्रावती ने पूछ लिया, ''उसे तुम्हारे न पकड़े जाने का ज्ञान तो हो गया था।''

''पर माँ! वह मोरे के पकड़े जाने पर रो पड़ी है। उसके होने वाले बच्चे का वही पिता है।''

''कैसे कहते हो यह?''

''मोरे की मेज़ की दराज़ में मेरे नाम का एक पत्र निकला है। बाकी बातें तो प्रैस के विषय में लिखी हैं। एक बात यह भी लिखी है कि आपकी बहन की रक्षा में मेरी विशेष रुचि है। वह इस विषय में स्वयं बताएगी।''

चन्द्रावती और मीना भौंचक्की हो मुख देखती रह गईं। इस समय रेशम आ गई। सब चुपचाप अल्पाहार लेते रहे।

अल्पाहार समाप्त होने पर मधु ने रेशम को सम्बोधन कर कहा, ''रेशम बहन! मन और बुद्धि का झगड़ा सब जगह चल रहा है। प्रायः मन बुद्धि से प्रबल होता है। पर स्वाभाविक बात यह है कि बुद्धि मन से प्रबल होनी चाहिए। यह बल आत्मा की शक्ति से ही प्राप्त होता है।''

●●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R089.9143 GUR-P आगत संख्या 167943

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

खण्ड-10

गंगा की धारा

(मुगल काल पर उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की
कुछ चुनी हुई रचनाएँ

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की प्रतिनिधि रचनाएं

श्री गुरुदत्त की सशक्त लेखनी से लिखी 200 के लगभग अनुपम उपन्यासों में से चुनकर दस खण्डों में प्रकाशित रचनाएँ!

खण्ड-1

मेघवाहन, सागर तरंग, विक्रमादित्य साहसांक

(ऐतिहासिक उपन्यास)

खण्ड-2

सहस्त्रबाहू, गगन के पार, अन्तरिक्ष में

(वैज्ञानिक उपन्यास)

खण्ड-3

कला, कामना, अनदेखे बन्धन

(सामाजिक उपन्यास)

खण्ड-4

एक और अनेक, मानव

(भावनाप्रधान सामाजिक उपन्यास)

Central Library
167943
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

खण्ड-5

परित्राणाय साधूनाम्

(सम्पूर्ण महाभारत कथा उपन्यास रूप में)

खण्ड-6

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक

(राजनीतिक शृंखला के प्रथम उपन्यास)

081
167943

खण्ड-7

स्वराज्यदान, दासता के नए रूप

(राजनीतिक शृंखला की दो कड़ियाँ)

खण्ड-8

देश की हत्या, विश्वासघात

(राजनीतिक शृंखला के अन्तिम उपन्यास)

खण्ड-9

प्रभातवेला, कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएँ

(पौराणिक उपन्यास)

खण्ड-10

गंगा की धारा

(मुगल काल पर उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की कुछ चुनी हुई रचनाएँ

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

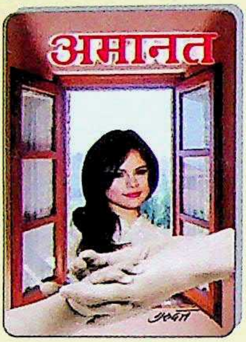

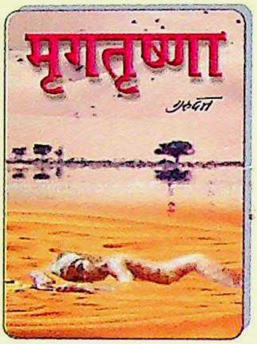

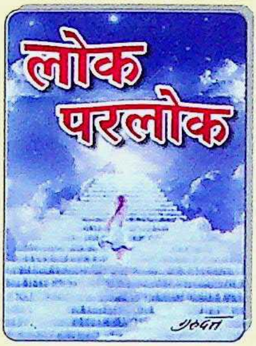

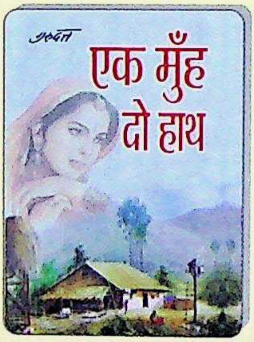

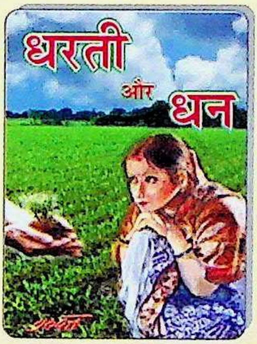

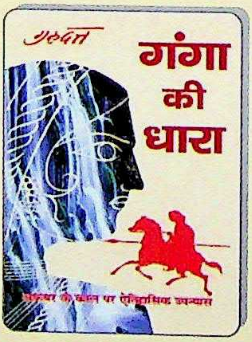

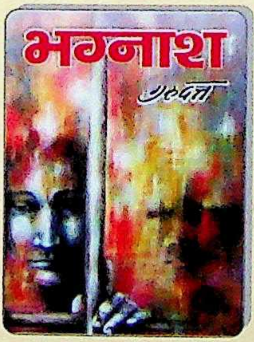

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

ISBN 978-81-932968-2-0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar